LIBRARY

इति पञ्चमाध्यायः॥

अथ षष्ठाध्यायः॥

इति षष्ठाध्यायः॥

अथ सप्तमाध्यायः॥

इति सप्तमाध्यायः॥

(इति प्रथमखण्डः)

अथ तृतीयाध्यायः ॥

अथ चतुर्थाध्यायः ॥

अथ पञ्चमाध्यायः ॥

अथ षष्ठाध्यायः ॥

इति षष्ठाध्यायः ॥

अथ सप्तमाध्यायः ॥

इति सप्तमाध्यायः ॥

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
अथ अष्टमाध्यायः॥	
अवलेह व लेहकी कल्पना ...	१३८
हिचकी, कास व श्वासादिकोंपर भटकटैयावलेह	१३९
क्षयादिकों पर च्यवनप्राशावलेह	१३९
रक्तपित्त पर कूष्माण्डपाक	१४१
अर्श (ववासीर) पर खण्डकूष्माण्डावलेह ...	१४२
क्षयपर अगस्त्यहरीतकी ...	१४२
ववासीर पर कुरैयावलेह ...	१४२
बकरी के दुग्धादिकों से इसका अनुपान ...	१४३
सर्वातीसार पर कुरैयाष्टक ...	१४३
इति अष्टमाध्यायः॥	
अथ नवमाध्यायः॥	
घृत व तैलादिकों का साधन ...	१४४
पिलहीआदिकोंपर क्षीरषट्पल	१४६
संग्रहणी, अतीसार पर चाङ्गेरी घृत	१४६
अतीसारादिकों पर मसूरघृत ...	१४७
रक्तपित्त पर कामदेवघृत ...	१४७
अपस्मारादिकों पर कल्याणघृत	१४८
वातरक्तपर अमृतादिघृत ...	१४९
वातकुष्ठादिपर महातिक्तादिघृत	१४९
कुष्ठ, दाह व खाजपर कासीसादिघृत	१५०
घावों पर जात्यादिघृत ...	१५०
उदररोग पर विन्दुघृत ...	१५१
नेत्ररोगादिकोंपर त्रिफलादिघृत	१५१
घावोंपर गौर्य्यादिघृत ...	१५२
शिरोरोग पर मयूरघृत ...	१५२
वन्ध्यारोग पर फलघृत ...	१५३
योनिदोषों पर त्रिफलादिघृत ...	१५३
विषमज्वर पर पञ्चतिक्तघृत ...	१५४
इति नवमाध्यायः॥	

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
अथ दशमाध्यायः॥	
तैलसाधनप्रकार ...	१५४
लाक्षादितैल	१५४
सर्ववातपर नारायणतैल ...	१५५
वातपर बरियारातैल ...	१५६
वातकफजन्य विकार व वादी पर प्रसारिणीतैल	१५७
ग्रीवास्तम्भादिकोंपर माषादितैल	१५७
शूल व वातादिकों पर शतावरी तैल	१५८
ववासीर पर कासीसादितैल ...	१५९
वातरक्त पर पिण्डतैल ...	१६०
खुजलीआदिकों पर मदारतैल	१६०
कुष्ठादिकों पर मरिचादितैल	१६०
व्रणों पर त्रिफलादितैल ...	१६०
पलितरोग पर निम्बबीजतैल ...	१६०
बालआनेपर मुलेठीतैल ...	१६१
इन्द्रलुप्त पर करञ्जादितैल ...	१६१
पलितादिरोगों परनीलिकादितैल,	१६१
पलितादि रोगोंपर भृङ्गराज तैल	१६१
मुखदन्तादिरोगों पर इरिमेदादि तैल ...	१६२
कर्णशूल पर हिंग्वादितैल ...	१६२
बधिरत्वपर बिल्वादितैल ...	१६२
कानवहनेपर क्षारतैल ...	१६२
पीनसरोग पर पाठादितैल ...	१६३
नासिकारोग पर भटकटैयातैल ...	१६३
छींक आनेपर कुष्ठादितैल ...	१६३
नासार्श पर गृहधूमादितैल ...	१६३
सपकुष्ठों पर वज्रतैल ...	१६४
लोमशातनपर करवीरादितैल ...	१६४
अथ आसवकल्पना	१६४
शीधुआदि मद्योंका भेद ...	१६५
रक्तपित्तादिकों पर उशीरासव ...	१६६
क्षयपर पिप्पल्यासव ...	१६६

इति द्वादशाध्यायः॥

(इति मध्यखण्डः)

अथ उत्तरखण्डः॥

इति प्रथमाध्यायः ॥

अथ द्वितीयाध्यायः ॥

इति द्वितीयाध्यायः ॥

अथ तृतीयाध्यायः ॥

इति तृतीयाध्यायः ॥

अथ चतुर्थाध्यायः ॥

इति चतुर्थाध्यायः ॥

अथ पञ्चमाध्यायः ॥

अथ द्वादशाध्यायः ॥

अथ त्रयोदशाध्यायः ॥

इति श्रीमत्कुलशक्तिधरविरचितशार्ङ्गधरसंहितायाः सूचीपत्रसमाप्तिमगादितिशिवम् ॥



शार्ङ्गधरसंहिता ॥

भाषाटीकासमेता ॥

श्रियंसदद्याद्भवतांपुरारिर्यदङ्गतेजःप्रसरेभवानी ।
विराजतेनिर्मलचन्द्रिकायां महौषधीवज्वलिताहिमाद्रौ १

श्रियमिति स कहे सो श्रीके देनवारे होहु सो पुरारि कैसे हैं जिनके तेजप्रसा-रित अंग में भवानी विराजमान हैं कैसी हैं भवानी जिनके निर्गत निर्मलमुख मयङ्ककी चन्द्रिकाकहे चादनी प्रकाश करिरही है कामिव कानीनाई जैसे हिमकहे पाला अद्रिकहे पर्वत हिमाद्रि विषे महाओषधि संजीवन्यादि ज्वलितकहे प्रकाशित होइ रहीहै यह अर्द्धांगी अनुपम स्वरूप निराकार निर्विकार जगदाधार सदाशिव परमेश्वर ने अनादिरचनादि एकत्वलोपकरि अनेकत्व प्रकाशकरन इच्छामय अदृश्य प्रकृति पुरुषसंयुक्त दृश्यमान अर्द्धांगीस्वरूप धारण किया है इस स्वरूप की महिमा वा उपमा वेदशास्त्र पुराण काव्यादि नहीं कहिसके काहेसे कि एकही रूपहै इस स्वरूप की उपमा उपमाविना है रूपसंयुक्त किये नहीं होसक्ती है और द्वै उपमासे द्वैत भासित होता है इसलिये परमेश्वर की उपमा हिमाद्रि परमेश्वरी की उपमा महौषधि करते भये फिर हिमाद्रिगुण शीतलता भगवती के मुखचन्द्र की चन्द्रिका में घटितकरी और ओषधिन की प्रज्वलिता भगवान् के तेजमें घटित करी अथवा तेज चन्द्रिका का एक ठौर होना असंगत है परन्तु इहां दोनों समान प्रकाश करते हैं क्योंकि भगवती की शीतल चन्द्रिका करिके सदा शांतिमूर्ति स-तोगुणी श्वेत कर्पूरवर्ण विश्वनाथ शोभित हैरहे हैं और श्रीभगवान् के तेजकरिकै त्रैलोक्यजननी श्रीपार्वतीजी काञ्चनवर्ण दीप्यमान है रही है अर्थात् दोनों उपमा

प्रसिद्धयोगामुनिभिः प्रयुक्ताश्चिकित्सकैर्ये बहुशाऽनुभूताः । विधीयतेशार्ङ्गधरेणतेपांसुसंग्रहस्सज्जनरञ्जनाय २ हेत्वादिरूपाकृतिसात्म्यजातिभेदैः समीक्ष्यातुरसर्व्वरोगान् । चिकित्सितंकर्षणबृंहणाख्यंकुर्व्वीतवैद्योविधिवत्सुयोगैः ३ दिव्योषधीनांबहवःप्रभेदा वृन्दारकाणामिवविस्फुरन्ति । ज्ञात्वेतिसन्देहमपास्यधीरैस्सम्भावनीयाविविधप्रभावाः ४ स्वाभाविकागन्तुककायिकान्तरारोगाभवेयुः

अर्द्धांगी सूचित भई क्योंकि प्रकृति की उपमा के गुण पुरुष में पायेगये पुरुष की उपमा के गुण प्रकृति में पायेगये पुनरर्थः प्रथम कविलोग अपने इष्टदेवसे मंगलाचरण में यान्यमानहोइ ग्रंथको घटित करते हैं कि महादेवजीका तेज उष्ण पित्ताधिपति पार्वतीजी की चन्द्रिका शीतल श्लेष्माधिपति और प्रसारणधर्म वा व्याल भूषण करिकै वाय्वधिपति जैसे गौरीशङ्कर को शोभारूपी गुणसहित सेइरहे तैसे शार्ङ्गधरवेत्ता वैद्यों की सेवा में श्रीयशके देनेवाले होहिंगे कैसा है शार्ङ्गधर जैसे हिमाद्रि महाओषधीन करिकै ज्वलित कहे प्रकाशित होइरहाहै तैसे शार्ङ्गधर महौषधीयुक्त है ॥ १ ॥ शार्ङ्गधर जू कहते हैं कि मैं सज्जन मनुष्यन के मनोरंजन के निमित्त सुश्रुत चरकादि मुनि और श्रेष्ठ प्राचीन वैद्यों के निश्चित किये प्रसिद्ध योग या शार्ङ्गधर में संग्रहकरि ग्रन्थित करताहूं ॥ २ ॥ प्रथम वैद्य इन पंचप्रकारमें व्युत्पन्नहोय हेतु १ आदिरूप २ आकृति ३ सात्म्य ४ जातिभेद ५ तब पीड़ित रोगी की निदानपूर्वक कर्षण बृंहणादि चिकित्साकरै कर्षण कहे घटावना बृंहणकहे बढ़ावना वातादि दोषन को घटावै हेत्वादिलक्षण हेतु कहे निदान आदिकारण *जिससे रोगकी उत्पत्ति है १ आदिरूप कहे प्रथम रोगी की* देहटूटना जँभाईआवना २ आकृति कहे चेष्टा मलिनहोना तृष्णा मूर्च्छा सम्भ्रम दाह निद्रानाश ३ सात्म्य कहे रोगीकी अपेक्षा जिस वस्तुको मन चाहै यथा गर्मीलगै पवनप्यासे में पानी वा हितकारक जैसे जाड़ालगै वस्त्र हित करै ४ जाति कहे इन्द्रियपरिज्ञान अपने अङ्गमें सावधान वा विह्वलता ॥ ३ ॥ जैसे वृन्दारक कहे देवतनमें बहुत श्रेष्ठ गुण विस्फुरित कहे प्रकाशित हैं तैसेही दिव्यकहे उत्तम ओषधिन में भी भासित है सो ज्ञात्वा कहे जानिकै धीर वैद्य सन्देह छोड़िकै ऐसी सम्भावना करैं कि मेरे निश्चय से भी अधिक गुण और प्रभाव ओषधिन में है ॥ ४ ॥ और स्वाभाविक

किलकर्मदोषजाः । तच्छेदनार्थंदुरितापहारिणःश्रेयोमया न्योगवरान्नियोजयेत् ५ प्रयोगानागमात्सिद्धान्प्रत्यक्षाद नुमानतः । सर्व्वलोकहितार्थायवक्ष्याम्यनतिविस्तरात् ६ प्रथमंपरिभाषास्याद्भैषज्याख्यानकन्तथा । नाडीपरीक्षा दिविधिस्ततोदीपनपाचनम् ७ ततःकालादिकाख्यानमा हारादिगतिस्तथा । रोगाणांगणनाचैवपूर्व्वखण्डोऽयमी रितः ८ स्वरसःक्वाथफाण्टौचहिमःकल्कश्चचूर्णकम् । तथै वगुटिकालेहौ स्नेहसन्धानमेवच ९ धातुशुद्धिरसाश्चैव खण्डोऽयंमध्यमःस्मृतः । स्नेहपानंस्वेदविधिर्वमनंचविरे चनम् १० ततस्तुस्नेहवस्तिःस्यात्ततश्चापिनिरूहणम् ।

आगन्तुक कायिक आन्तरिक इन चारों से वा तीनों दोषन से वा प्रारब्धकर्म से रोग होइ ताके नाश करिवे को दुरित कहे पातक प्रहार करनवारे श्रेष्ठ योग वैद्य करै स्वभावादिलक्षण स्वाभाविक विहाराहार विषमता यथा क्षितुधा गतक्षुधा-राम या हीन विपरीत भोजन वा निर्भोजन थोड़ी तृषा और जन्म ते मरणपर्य्यन्त अवस्थासे विपरीत कर्म्म होना १ आगन्तुक शस्त्रापघात पतन प्रहार विष मद सर्प पशु पीड़ितादि २ कायिक व्यायाम श्रम मैथुनादि धातुन्यूनाधिकत्वसे दोषत्र कुपित होना ३ अन्तर मनमें खेद क्रोध चिन्ता शोक मूर्च्छा संन्यास श्वासनिरो-धादि ४॥५॥ प्रत्यक्षसे औ अनुमानसे शास्त्रसे जे प्रसिद्धयोग सो लोकके हितार्थ संक्षेप करि कहता हूं॥ ६ ॥ या शार्ङ्गधर के तीन खण्ड हैं ताके प्रथमखण्ड में पहिले परिभाषा कहे ओषधि की तोलकी फिरि भैषज्याख्यान कहा औषधिभ-क्षणविधि फिरि नाड़ीपरीक्षा स्वप्न शकुन विचार अरु दीपन अग्निज्वलित क-रना पाचन जो मलको भस्म करि पचावै ॥ ७ ॥ ताके पीछे ओषधिभक्षण समय फिर आहार अन्तरप्रवेश गति कही और रोगोंकी संख्या कही इतनी बातें प्रथम खण्डमें हैं ॥ ८॥ (अथ मध्यखण्डेऽनुक्रमणिका) द्रव्यनका रस क्वाथ कही काढ़ा फाण्ट कही द्रव पदार्थ का अग्नियोगसे फाड़ना रातिकी भिजोई ओषधि का प्रातः जल लेइ इसे हिम कहिये कल्ककहे पीठी चूर्ण गोली अवलेह कही चटनी तेल ॥ ९ ॥ धातुशुद्धिरसक्रिया ये मध्यखण्ड में कहीं (अथोत्तरखण्डानुक्र-मणिका) घृततेल पीना स्वेदविधिकरना और ओषधियों से पसीना निकालना

ततश्चाप्युत्तरोवस्तिस्ततोनस्यविधिर्मतः ११ धूमपा
नविधिश्चैव गण्डूषादिविधिस्तथा । लेपादीनांविधिः
ख्यातस्तथाशोणितविस्रुतिः । नेत्रकर्मप्रकारश्चखण्डः
स्यादुत्तरस्त्वयम् १२ द्वात्रिंशत्प्रमिताध्यायैर्युक्तेयंसंहिता
स्मृता । षड्विंशतिशतान्यत्रश्लोकानांगणितानिच १३॥

परिभाषा॥ नमानेनविनायुक्तिर्द्रव्याणांजायतेक्वचित् ।
अतःप्रयोगकार्यार्थंमानमत्रोच्यतेमया १४जालान्तरगते
भानौयत्सूक्ष्मंदृश्यतेरजः ।तस्यत्रिंशत्तमोभागःपरिमाणुः
सउच्यते १५ त्रसरेणुर्बुधैःप्रोक्तस्त्रिंशतापरिमाणुभिः।त्रस
रेणुस्तुपर्यायेर्नाम्नावंशीनिगद्यते १६ जालान्तरगतेरसूर्य
करैर्वंशीनिगद्यते । षड्वंशीभिर्मरीचिःस्यात्ताभिःषड्भिस्तु
राजिका । तिसृभीराजिकाभिश्चसर्षपःप्रोच्यतेबुधैः १७
यवोऽष्टसर्षपैःप्रोक्तोगुञ्जास्यात्तच्चतुष्टयम् । षड्भिस्तुरक्ति
काभिःस्यान्माषकोहेमधान्यकौ। माषैश्चतुर्भिःशाणःस्या

वमन कही उद्धार विरेचन कही दस्त ॥ १० ॥ स्नेहवस्ति कहे गुदमार्ग से पिच-कारी देना निरूहण कहे काढ़ा दूसरी पिचकारी देना उत्तरवस्ति कहे पिचकारी का विधान अनन्तर नासविधि ॥ ११ ॥ धुवां पीनेकी विधि गण्डूषविधि जिसे पवनकुल्ला कहते हैं लेपादि की विधि अरु शोणितविस्रुति कही रक्त निकालना नेत्रांजन ये सब उत्तरखण्ड में कहे हैं ॥ १२ ॥ यह बत्तिस अध्याय में कहा इस में दो सहस्र छःसौ श्लोक हैं ॥ १३ ॥

(परिभाषा) बिनतुली ओषधि अयोग्यहै इसलिये प्रयोगके निमित्त मैं मागध परिभाषाको कहताहूं ॥१४॥ झरोखोंके छिद्रोंमें जो सूर्यकी आभासे रजकणउड़ते देखपड़ते हैं उनके तीसवें भागको परिमाणु कहते हैं॥१५॥ किसी २ के मतसे जो छिद्रमें सूर्यकी किरणे दिखाई पड़ती हैं उस ३० परिमाणुका एक त्रसरेणु होताहै इसीको वंशी कहते हैं या छः वंशीकी एक मरीचीछः मरीचीकी एक राई तीन राई की एक सरसों॥ १६ । १७॥ आठ सरसोंका एक यव चार यवकी गुंजा अर्थात् घुंघची छः रत्तीका एकमाशा सोई हेम औ धान्यक कहा है चारमाशेका एक

ध्वरणःसनिगद्यते १८ टङ्कःसएवकथितस्तद्द्वयंकोलउ. च्यते। क्षुद्रःकोलवटश्चैवद्रङ्क्षणस्सनिगद्यते १९ कोलद्व यंचकर्षःस्यात्सप्रोक्तापाणिमानिका। अक्षःपिचुःपाणित लंकिञ्चित्पाणिश्चतिन्दुकम् २० बिडालपदकंचैवतथा षोडशिकामता। करमध्यंहंसपदंसुवर्णंकवलग्रहः २१ उ दुम्बरश्चपर्यायैःकर्षएवनिगद्यते। स्यात्कर्षाभ्यामर्द्धपलं शुक्तिरष्टमिकातथा २२ शुक्तिभ्यांचपलंज्ञेयं मुष्टिराम्रंच तुर्थिका। प्रकुञ्चःषोडशीबिल्वंपलमेवात्रकीर्त्यते २३ पलाभ्यांप्रसृतिर्ज्ञेयाप्रसृतश्चनिगद्यते। प्रसृतिभ्यामञ्ज लिःस्यात्कुडवोर्द्धशरावकः २४ अष्टमानंचसंज्ञेयंकुडवा भ्यांचमानिका। शरावोष्टपलंतद्वज्ज्ञेयमत्रविचक्षणैः २५ शरावाभ्यां भवेत्प्रस्थश्चतुष्प्रस्थैस्तथाढकम्। भाजनं कांस्यपात्रंचचतुःषष्टिपलंचतत् २६ चतुर्भिराढकैर्द्रोणः कलशोनल्वणोर्म्मणः। उन्मानश्चघटोराशिर्द्रोणपर्याय संज्ञितः २७ द्रोणाभ्यांशूर्पकुम्भौचचतुःषष्टिशरावकः।

शाण यही धरण ॥ १८ ॥ औ टङ्क कहाताहै दो टङ्कका एक कोल उसीको क्षुद्र, कोलवट, द्रंक्षण कहतेहैं ॥ १९ ॥ दो कोलका कर्ष होताहै उसे पाणिमानिका, अक्ष, पिचु, पाणितल, किञ्चित्पाणि, तिंदुक, ॥ २० ॥ बिडालपदक, षोडशिका, करमध्य, हंसपद, सुवर्ण, कवलग्रह ॥ २१ ॥ और उदुम्बर कहतेहैं ये सब कर्षके पर्यायहैं दोकर्ष को अर्द्धपल, शुक्ति व अष्टमिका कहते हैं ॥ २२ ॥ दो शुक्तिको एकपल औ मुष्टि, आम्र, चतुर्थिका, प्रकुञ्च, षोडशी, बिल्व कहतेहैं ये सब पलकी पर्याय कहिये ॥ २३ ॥ और दोपलकी एक प्रसृति जानना चाहिये औरप्रसृतभी कहते है दो प्रसृतको अञ्जलि, कुडव और अर्धशराव कहतेहैं ॥ २४॥ और अष्टमान भी कहते हैं दोकुडवको मानिका उसीको जो सद्वैद्य हैं अष्टपल कहते हैं ॥ २५ ॥ दो शरावकी एक प्रस्थ संज्ञा है ४ प्रस्थ वा आठ शराव वा चौसठि पल की आढक संज्ञाहै इसे भाजन औ कांस्यपात्र भी कहते हैं ॥ २६ ॥ चार आढकको एक द्रोण इसके सात नाम हैं कलश, नल्वण, अर्म्मण, उन्मान, घट, राशि द्रोण ॥ २७ ॥ दो द्रोणका एक

शूर्पाभ्यांचभवेद्द्रोणीवाहोगोणीचसास्मृता २८ द्रोणी चतुष्टयंखारी कथितासूक्ष्मबुद्धिभिः । चतुःसहस्रपलिका षण्णवत्यधिकाचसा २९ पलानांद्विसहस्रंचभारएकःप्रकीर्तितः । तुलापलशतंज्ञेयंसर्वत्रैवैषनिश्चयः ३० माषटङ्काक्षबिल्वानिकुडवःप्रस्थमाढकम् । राशिर्गोणीखारिकेति यथोत्तरचतुर्गुणाः ३१ गुञ्जादिमानमारभ्ययावत्स्यात्कुडवस्थितिः । द्रवार्द्रशुष्कद्रव्याणांतावन्मानंसमंमतम् ३२ प्रस्थादिमानमारभ्यद्विगुणंतद्द्रवार्द्रयोः । मानंतथातुलायास्तुद्विगुणंनक्वचित्स्मृतम् ३३ मृदस्तुवेणुलोहादेर्भाण्डं यच्चतुरङ्गुलम् । विस्तीर्णंचतथोच्चंचतन्मानंकुडवंवदेत् ३४ यदौषधन्तुप्रथमंयस्ययोगस्यकथ्यते । तन्नाम्नैवसयोगोहिकथ्यतेऽत्रविनिश्चयः ३५ ॥ इति मागधपरिभाषा ॥

स्थितिर्नास्त्यवमात्रायाः कालमग्निंवयोबलम् । प्रकृतिंदोषदेशौच दृष्ट्वामात्रांप्रकल्पयेत् ३६ यतोमन्दाग्न

शूर्प, कुम्भ इसे चौंसठि शरावभी कहते हैं दोशूर्पकी एकद्रोणी और वाह और गोणी भी कहते हैं ॥ २८ ॥ चारद्रोणी की एक खारी चारिसहस्र छानवे पलकी खारी संज्ञाहै ॥ २९ ॥ दोसहस्र पलको भार कहिये सौपलको तुला कहिये सब ठौर यही निश्चय जानो ॥ ३० ॥ माशे से चौगुना टङ्क टङ्कते चौगुना अक्ष अक्षते ४ बिल्व बिल्वते ४ कुडव कुडवते चौगुना प्रस्थ प्रस्थते ४ आढक आढकते ४ राशि राशिते ४ गोणी गोणीते ४ खारी एकते एक चौगुनी जानो ॥ ३१ ॥ गुञ्जाते कुडवलौं सजलवस्तु सम लेना ॥ ३२ ॥ कुडवते तुलालौं सजली दूनीलेना तुला ते ऊपर ओदी द्रव्य दूनीलेना ॥ ३३ ॥ चारि अंगुल चौड़ा वा ऊंचा समान बासन माटी या लोहादि किसीका होय उसकी कुडवसंज्ञा जानो ॥ ३४ ॥ जिस रोगपर जो औषध कहैंगे तिस में जिस द्रव्यका प्रथम नाम आवै उसीको योग निश्चित करते हैं जो रास्नादिकाथ इसमें प्रथम नाम रास्नाहै ॥ ३५ ॥ इति मागधपरिभाषा ॥

(अथ कलिंगपरिभाषा) मात्राका कुछ प्रमाण नहीं स्थितकिया समय अग्नि अवस्था बल प्रकृति रोग देश देखकर वैद्य मात्राका प्रमाण करै ॥ ३६ ॥ क्योंकि

प्रोक्तस्वाहीनसत्त्वानराःकलौ । अतस्तुमात्रातद्योग्याप्रो च्यतेसुश्रसम्मता ३७ यवोद्वादशभिर्गौरसर्षपैःप्रोच्य तेबुधैः । यवद्वयेनगुञ्जास्यात्त्रिगुञ्जोवल्लउच्यते ३८ मा षोगुञ्जाभिरष्टाभिःसप्तभिर्वाभवेत्क्वचित् । स्याच्चतुर्माषकैः शाणःसनिष्कष्टङ्कएवच ३९ गद्यानोमाषकैःषड्भिःकर्षः स्याद्दशमाषकः । चतुष्कर्षैःपलंप्रोक्तंदशशाणमितंबुधैः । चतुष्पलैश्चकुडवंप्रस्थाद्याःपूर्ववन्मताः ४० कालिङ्गंमा गधंचेति द्विविधंमानमुच्यते । कालिङ्गान्मागधंश्रेष्ठमि तिमानविदोविदुः ४१ नवान्येवहियोज्यानि द्रव्याण्य खिलकर्मसु । विनाविडङ्गकृष्णाभ्यां गुडधान्याज्यमाक्षि कैः ४२ गुडूचीकुटजोवासाकूष्माण्डश्चशतावरी । अ श्वगन्धासहचरो शतपुष्पाप्रसारणी । प्रयोक्तव्यास्सदै वार्द्राद्विगुणानैवकारयेत् ४३ शुष्कन्नवीनंयद्द्रव्यंयोज्यं सकलकर्मसु । आर्द्रञ्चद्विगुणंयुञ्ज्यादेषसर्वत्रनिश्चयः ४४ कालेऽनुक्तेप्रभातंस्यादङ्गेऽनुक्तेजटाभवेत् । भागेऽनु

कलियुगमें मनुष्य मन्दाग्नि लघुशरीर और बलहीन होयगे इससे सद्वैद्योंका मतहै कि मात्रा रोगी को यथायोग्य देनी ॥ ३७ ॥ बारह गौर सरसों का एक यव दो यव की एक गुंजा तीन गुंजाका एक वल्ल कहाताहै ॥ ३८ ॥ आठ गुंजा वया सात गुंजाका माशा चार माशे का शाण उसी को निष्क और टंकभी कहते हैं ॥ ३९ ॥ छःमाशे का गद्यान दश माशे का कर्ष चार कर्षका पल उसे दश शाणभी कहते हैं चारि पलका कुडव और प्रस्थादिकोंको प्रथम कही रीतिसे जानो ॥ ४० ॥ कलिंगमान से मागधमान सद्वैद्य उत्तम मानते हैं ॥ ४१ ॥ सर्वकर्मों में सब औषध नवीन लेना विना पीपरि, विडंग, धनियां, घी और शहदके ॥ ४२ ॥ गुर्च, कुरैया, रूसा कुम्हडा, श्वेतशतावरि, असगन्ध, पात कटसरैया, कृष्णकटसरैया, सौंफ, गंधप्रसारणी ये द्रव्य ओदी दूनी न लेना और सूखी द्रव्य सकल प्रयोगमें नवीन लेना और ओदी द्रव्य सूखी से दूनी देना यह सर्वत्र निश्चयहै ॥ ४३ । ४४ ॥ जिस औषधिके खान पानका काल नहीं कहा उसका प्रातःकाल जानना और जिस औषधिके अंग

क्वचस्तान्तस्यात्पात्रेऽनुक्तेचमृन्मयम् ४५ एकमप्यौषधं योगे यस्मिन्यत्पुनरुच्यते। मानतोद्विगुणंप्रोक्तंतद्द्रव्यं तत्त्वदर्शिभिः ४६ चूर्णस्नेहासवालेहाः प्रायशश्चन्दनान्विताः। कषायलेपयोःप्रायोयुज्यतेरक्तचन्दनम् ४७ गुणहीनंभवेद्वर्षादूर्ध्वंतद्रूपमौषधम्। मासद्वयात्तथाचूर्णं हीनवीर्यत्वमाप्नुयात् ४८ हीनत्वंगुटिकालेहौलभेतेवत्सरात्परम्। हीनाःस्युर्घृततैलाद्याश्चतुर्मासाधिकास्तथा ४९ ओषध्योलघुपाकाःस्युर्निर्वीर्यावत्सरात्परम्। पुराणाःस्युर्गुणैर्युक्ताआसवाधातवोरसाः ५० व्याधेरयुक्तंयद्द्रव्यंगुणोक्तमपितत्त्यजेत्। अनुक्तमपियुक्तंयद्योजयेत्तत्रतद्बुधः॥ आग्नेयाविन्ध्यशैलाद्याःसौम्योहिमगिरिर्मतः ५१ अतस्तदौषधानिस्युरनुरूपाणिहेतुभिः। अन्येष्वपिप्ररोह

का नाम नहीं लिखा तहा मूल लेना जहां कई ओषधि हैं और भागभेद नहीं है वहा समभाग लेना जहा ओषधि बनाने के पात्र की जाति नहीं लिखी तहा माटीकाही पात्र लेना जहा ओषधि को गीली करना होय और रस वा पानी वा दूध सिरका या मूल कुछ नहीं लिखा तहा जान लेना॥ ४५॥ जिस प्रयोगमें ग्रंथकार जहा एकही ओषधि को दोवार लिखें तहा यही ओषधि के दोभाग लेना यह प्रकार तत्त्वदर्शी वैद्य कहते हैं॥ ४६॥ और चूर्ण, तेल, घृत हिम अर्क अवलेह आदिकन में केवल चन्दन लिखा हो तहां श्वेत लेना काढ़े और लेपमें लालचन्दन लेना॥ ४७॥ वर्षभर ओषधिमेंगुण रहता है फिर कम होजाताहै दोमास बीते चूर्ण क्षीणताको प्राप्त होताहै॥ ४८॥ वर्षबीते गोली अवलेह का गुणहीन होनाहै सोलह मास बीते घी, तेल गुणरहित होते हैं॥ ४९॥ वर्षबीते लघुपाक निर्गुण होतेहैं जैसे मेथी, मोदक और दारू, धातु, रस पुराने गुणदायकहोतेहैं॥५०॥ जो ओषधि रोगको अवगुणदायकहो उसे ग्रंथकी लिखी भी त्यागदेइ और जो रोगको हितकरै सो अनलिखी भी ग्रहणकरै॥ ५१॥ दक्षिणके विंध्याचलादि पर्वत उष्णप्रकृति हैं उनपर उत्पन्न ओषधि भी उष्णप्रकृति होती हैं उत्तर के हिमाचलादि पर्वत शीतल हैं उनपरकी उत्पन्न ओषधि भी ठण्ढी होतीहै और वन

न्ति वनेषूपवनेषुच ५२ गृह्णीयात्तानिसुमनाः शुचिः प्रा
तःसुवासरे। आदित्यसम्मुखोमौनीनमस्कृत्यशिवंहृदि॥
साधारणंधराद्रव्यं गृह्णीयादुत्तराश्रितम् ५३ वल्मीककु
त्सितानूपश्मशानोपरमार्गजाः। जन्तुवह्निहिमव्याप्ता
नौषध्यःकार्यसाधकाः ५४ शरद्यखिलकार्यार्थं ग्राह्यंसर
समौषधम्। विरेकवमनार्थंचवसन्तान्तेसमाहरेत् ५५ अ
तिस्थूलजटायास्तुतासांग्राह्यास्त्वचोबुधैः। गृह्णीयात्सू
क्ष्मसूलानिसकलान्यपिबुद्धिमान् ५६ न्यग्रोधादेस्त्वचो
ग्राह्यासारःस्याद्बीजकादितः। तालीसादेश्चपत्राणिफलं
स्यात्त्रिफलादितः॥ धातक्यादेश्चपुष्पाणिस्नुह्यादेःक्षी
रमाहरेत्५७॥इतिशार्ङ्गधरेपरिभाषाऽध्यायःप्रथमः १॥

वन में जो द्रव्य होती हैं सो जैसा उस पृथ्वीका स्वभाव होताहै वैसाही उसकी उत्पन्न द्रव्यका भी स्वभाव होताहै ॥ ५२॥ मनुष्य प्रातःकाल पवित्रहो शुभदिन मौनहोके हृदयमें शिवका ध्यानकरि सूर्यके सन्मुखहो औषधिलावै साधारण जगहकी द्रव्य उत्तर मुखही होके लेना॥ ५३॥ और इतनी जगहकी द्रव्य न लेना सर्पकी बांबी कुत्सितभूमि जहां रणभयाहो श्मशानकी ऊसर जहां रेह चूना निकलता होइ खरमार्ग की जहां गदहे लोटते हैं और मार्गकी दलदल कृमिस्थान की दग्धभूमि की पाला मारी हुई इत्यादि भूमिकी द्रव्य कार्य साधक नहीं हैं॥ ५४॥ सर्व कार्य अर्थ शरद्ऋतु में औदी औषधि लावै और वमन विरेचन के अर्थ वसन्त के अन्त में औदी वस्तुलावै॥ ५५॥ और अतिस्थूल वृक्षके जड़की छाल सद्वैद्य लेते हैं और सब छोटे वृक्षन की जड़ ग्राह्य है॥ ५६॥ और बरगदादि वृक्षनकी छाल ग्राह्यहै विजयसारादि वृक्षका हीर लीजै तालीसादि वृक्षकी पाती लीजे त्रिफलादिक का फल लीजै धवआदिकके पुष्प लीजै सेंहुड़ादिक का दूध लीजै इस रीति से वही ग्रहणकरै जहां केवल वृक्षका नाम है अङ्ग नहीं है॥ ५७॥

इति श्रीशार्ङ्गधरव्याख्यायांपरिभाषाऽध्यायःप्रथमः॥ १॥

भैषज्यमभ्यवहरेत्प्रभातेप्रायशोबुधः । कषायश्चविशेषेणतत्रभेदस्तुदर्शितः १ ज्ञेयःपञ्चविधःकालोभैषज्यग्रहणेनृणाम् । किञ्चित्सूर्योदयेजातेतथादिवसभोजने ॥ सायन्तनेभोजनेचमुहुश्चापितथानिशि २ प्रायःपित्तकफोद्रेकेविरेकवमनार्थयोः । लेखनार्थंचभैषज्यंप्रभातेतत्समाचरेत् ॥ एवंस्यात्प्रथमःकालोभैषज्यग्रहणेनृणाम् ३ भैषज्यंविगुणेपाने भोजनाग्रेप्रशस्यते । अरुचौचित्रभोज्यैश्चमिश्रंरुचिरमाहरेत् ४ समानवातेविगुणेमन्दाग्नावग्निदीपनम् । दद्याद्भोजनमध्येचभैषज्यंकुशलोभिषक् ५ व्यानकोपेचभैषज्यंभोजनान्तेसमाहरेत्। हिक्काक्षेपककम्पेषुपूर्वमन्तेचभोजनात्॥एवंद्वितीयःकालश्चप्रोक्तोभैषज्यकर्माणि ६ उदानेकुपितेवातेस्वरभङ्गादिकारिणि। ग्रासेग्रासान्तरेदेयंभेषज्यंसान्ध्यभोजने ७ प्राणेप्रदुष्टेसान्ध्यस्यभु

वैद्यलोग ओषधि सबेरे खवावैं और कषायादि विशेष प्रातःकाल में फांट हिम स्वरस कल्क आवश्यक देना और जो ओषधि देने का समय है सो आगे कहता हूं ॥ १ ॥ ओषधि खानेके पांच समय हैं प्रथमकाल किञ्चित् सूर्योदयमें दूसरा दिनके भोजन समय में तीसरा संध्याको चौथा निशिमें भोजनके समय पांचवां रात्रिमें सोने के समय ॥ २ ॥ जिस मनुष्यको पित्त और कफका वेगहो उसे रेचन वा वमनकर्ता उद्धार वा लेखनक्रिया प्रातःकाल करै लेखन कहे चमड़ेकी पट्टी माथेपर बांधिकै ओषधि भरे पित्त के अधिकार में वमन कफके अधिकार में रेचन और लेखन यह ओषधि करनेका प्रथम कालबांधा ॥ ३ ॥ अपानवायुके बिगरे में भोजनके प्रथम ओषधिदेय अरुचि में विचित्र भोजनके संग रुचिकारक ओषधि खवावे ॥ ४ ॥ सद्वैद्य समानवायु और मन्दाग्नि में अग्निज्वलित कारक द्रव्य भोजन के मध्यमें देय ॥ ५ ॥ व्यानवायु के कोपमें भोजन के अन्त में ओषधि खवावे और हिचकी आक्षेपक कम्पवायु में भोजनके आदि अन्त में देय यह दूसरा कालहै ॥ ६ ॥ स्वरभंगादि करनेवाली उदानवायु के कोप में सन्ध्या समय ग्रास ग्रासके अन्त में ओषधि देइ ॥ ७ ॥ प्राण वायु के कोप में

क्तस्यान्तेचदीयते। औषधंप्रायशोधीरैःकालोयंस्यात्तृतीयकः ८ मुहुर्मुहुश्चतट्छर्दिहिकाश्वासगरेषुच। सान्नञ्च भेषजंदद्यादितिकालश्चतुर्थकः ९ ऊर्ध्वजत्रुविकारेषुलेखनेबृंहणेतथा। पाचनंशमनंदेयमनन्नंभेषजंनिशि ॥ इतिपञ्चमकालस्स्यात्प्रोक्तोभैषज्यकर्मणि १० द्रव्येरसोगुणोवीर्य्यं विपाकःशक्तिरेवच। सम्बन्धेनक्रमादेताःपञ्चावस्थाःप्रकीर्तिताः ११ मधुरोऽम्लःपटुश्चैव तिक्तःकटुकषायकः। इत्येतेषड्रसाख्यातानानाद्रव्यसमाश्रिताः १२ धराम्बुद्मानलजलज्वलनाकाशमारुतैः। वाय्वग्निक्ष्मानिलैर्भूतद्वयैरसभवःक्रमात् १३ गुरुस्निग्धश्च तीक्ष्णश्च रूक्षोलघुरितिक्रमात्। धराम्बुवह्निपवनव्योम्नां प्रायोगुणाःस्मृताः। एष्वेवान्तर्भवन्त्यन्येगुणेपुगुणसञ्चयाः १४ वीर्य्यमुष्णंतथाशीतंप्रायशोद्रव्यसञ्चयम्। तत्सर्वमग्निषोमीयं दृश्यतेभुवनत्रये ॥ अत्रैवान्तर्भवि्ष्य

सांझको भोजन के अन्त में देइ यह तृतीय काल बांधा ॥८॥ और बार बार प्यास छर्दि हिचकी श्वास मे और विषपीड़ित को अन्न के संग ओषधि देइ यह चौथा काल बांधा ॥ ९ ॥ हसली के ऊपर कर्णरोग नेत्र मुख नासिका के रोगनमें लखनके निमित्त रातको विना अन्नपाचन समय ओषधि देइ यह पञ्चम काल जानना ॥ १० ॥ ओषधि के पांच अधिकार है रस १ गुण २ वीर्य ३ विपाक ४ शक्ति ५ ॥ ११ ॥ सब द्रव्यों में छःस्वादु हैं मधुर १ खट्टा २ लवण ३ तीक्ष्ण ४ कडुआ ५ कषाय ६ ॥ १२ ॥ पृथ्वी और जलमे मधुर रस होताहै १ पृथ्वी पवनसे खट्टा होताहै २ जल और अग्निसे लवण होताहै ३ आकाश और वायु से तीक्ष्ण होताहै ४ वायु और अग्नि से कडुआ होताहै ५ पृथ्वी और अग्नि से कसैला होताहै ६ यों दो तत्त्व मिलके एकरस होताहै ॥ इति रसोत्पत्तिः॥ १३ ॥ (अथ गुण) पृथ्वीका गुण भारी है जलका चिकना अग्निका तेज वायु का रूखा और आकाश का गुण हलका है ये पांचों तत्त्व के पांच गुण हैं और जो गुणादि भी इनके मेल से होते है सो अनुमान से जानना॥ इति गुण ॥ १४ ॥

न्तिवीर्य्याण्यन्यानियान्यपि १५ मिष्टःपटुश्चमधुरमम्ले ऽम्लंपच्यतेरसः । कषायकटुतिक्तानां पाकःस्यात्प्रायशःकटुः १६ मधुराज्जायतेश्लेष्मापित्तमम्लाच्चजायते। कटुकाज्जायतेवायुःकर्माण्येतानिपाकतः १७ प्रभावस्तु यथाधात्री लकुचश्चरसादिभिः। समोपिकुरुतेदोषत्रितयस्यविनाशनम् १८ क्वचित्तुकेवलंद्रव्यं कर्मकुर्यात्प्रभावतः । ज्वरंहन्तिशिरोबद्धासहदेवीजटायथा १९ क्वचिद्रसोगुणोवीर्य्यंविपाकःशक्तिरेवच। कर्म्मस्वंस्वंप्रकुर्वन्ति द्रव्यमाश्रित्ययेस्थिताः २० चयकोपसमायस्मिन्दोषा

(अथ वीर्य्य)सब द्रव्यका स्वभाव गर्म या ठंढा होताहै सो सूर्य्य वा चन्द्रमा करिके उष्ण शीतहै इन्हीं दोनों से तो मधुरादि स्वादु द्रव्य के अन्तर उत्पन्न होताहै ॥ इति वीर्य्य ॥१५॥(अथ विपाक) मीठे लुनखरे से मधुर रस होताहै खट्टा विपाकपर भी खट्टा रहताहै, कषाय कटु तिक्त ये तीनों विपाक पर कडुये होते हैं ॥१६॥ मधुररस से कफ होताहै अम्ल से पित्त होताहै कडुवे से वायु होताहै रसोंके पाक से तीनों दोष होते हैं ॥इति विपाकः ॥ १७ । (अथ प्रभावगुण) आंवरेका रस गुणवीर्य विपाक अधिकारते समान गुण हैं यद्यपि दलकाहै तौ भी त्रिदोष नाश कहै कहीं लकुचस्य ऐसा पाठहै (आंवरेका गुण) वीर्य्य विपाक त्रिदोषनाशकहै और बड़हलका गुण ॥ वीर्य्य विपाक त्रिदोषकारकहै जो दोनों मिलायकै देइ तो भी आंवरा अपने प्रभावसे त्रिदोष नाश करताहै यह राजनिघण्टुका मतहै ॥१८॥ कोई कोई केवल द्रव्य के प्रभावसे रोग दूर होजाते हैं जैसे सहदेई की जड़ माथे पर बांधने से ज्वर छूटजाताहै ॥इति प्रभाव॥ १९॥ किसी ओषधि का रस किसी का गुण किसी का वीर्य्य किसी का विपाक किसीकी शक्ति ये सब द्रव्य के आधीनहैं अपनी अपनी प्रकृति के अनुसार गुण करती हैं गुरचका रस कडुवा औ गर्म है तौ भी पित्त नाश करता है ॥ इति रस उदाहरण (गुण उ०) मूली कडुई है तौभी कफ करती है (वीर्य्य उ०) बड़े पञ्चमूल का क्वाथ कडुहै तौभी वातशमन करताहै क्योंकि उष्ण वीर्य्य विपाकहै ॥ सोंठि तीक्ष्णहै तौभी वातशमनहै क्योंकि मधुर विपाकी (शक्ति उ०)जैसे सुश्रुतमें कहाहै खैर कुष्ठको नाश करताहै ॥२०॥ वात पित्त कफ के बढ़ानेवाली औ कुपित करनेवाली सम करनेवाली ऋतु का

णांसम्भवन्तिहि । ऋतुषट्कंतदाख्यातंरवेराशिषुसङ्क्रमात् २१ग्रीष्मोमेषवृषौप्रोक्तौप्रावृट्मिथुनकर्कयोः। सिंहकन्येस्मृतावर्षातुलावृश्चिकयोःशरत्।धनुर्ग्राहौचहेमन्तोवसन्तःकुम्भमीनयोः २२ ग्रीष्मेसञ्चीयतेवायुःप्रावृट्कालेप्रकुप्यति । वर्षासुचीयतेपित्तंशरत्कालेप्रकुप्यति २३ हेमन्तेचीयतेश्लेष्मावसन्तेचप्रकुप्यति । प्रायेणप्रशमंयातिस्वयमेवसमीरणः २४ शरत्कालेचहेमन्तेपित्तंप्रावृतौकफः । कार्त्तिकस्यदिनान्यष्टावष्टावाग्रहणस्यच । यमदंष्ट्रासमाख्याताअल्पाहारीसजीवति २५ चयकोपसमादोषाविहाराहारसेवनैः । समानैर्यान्त्यकालेपिविपरीतैर्विपर्य्ययम् २६ लघुरूक्षमिताहारादतिशीताच्छ्रमात्त

प्रमाण संक्रांति सेहै॥२१॥मेषकी संक्रांति से वृषकी संक्रांतिताईं ग्रीष्मऋतुहै मिथुनते कर्कताईं प्रावृट्है सिंहते कन्याताईं वर्षा है तुलाते वृश्चिकताईं शरदहै धनते मकरताईं हेमन्त है कुम्भते मीनपर्यंत वसन्तहै यौंयौं दो दो मासकी एक एक ऋतु होतीहै॥२२॥ग्रीष्म में वायु संचित कहे इकट्ठीहो प्रावृट् में कोप करती है वर्षा में पित्त बढ़के शरद् में कोप करताहै॥ २३॥ हेमन्त कहे शिशिर में कफ इकट्ठा हो वसन्त में कोप करताहै और वायु इन महीनों के बीते आपसे आप पांचवें महीने में समान होजाती है॥२४॥शरद्ऋतु औ हेमन्तऋतु में पित्त सम होजाताहै और प्रावृट्ऋतु पाइकै कफ समवर्ती होताहै और कात्तिकशुक्लाष्टमी कृष्णा से अगहन कृष्ण अष्टमीताईं सोलहदिन पर्यंत इनदिनों की यमदंष्ट्रा संज्ञाहै इस यमदंष्ट्राभर सूक्ष्म आहार करनेवाला मनुष्य सुखी रहताहै क्योंकि इन दिनों में पित्त के कोपसे विशेष अग्नि दीप्तहो रुचि बढ़ाताहै तो भोजन विशेष करताहै विशेष भोजन अग्नि सन्तुष्ट करदेताहै तिस के आगेकी ऋतु में कफ संचय होताहै उससे अग्नि मन्द होतीहै तब अन्नके परिपाक न होनेसे रोग उत्पन्न होते हैं और जो यमदंष्ट्रा के दिनोंमें अग्नि सन्तुष्ट न हो तो वर्षभर अग्नि दीप्त रहै॥ २५॥ जे मनुष्य आहार विहार के समयका सेवन करतेहैं उनके दोष सम रहतेहैं और जो समय से विपरीत करते हैं उनके दोष बढ़ने घटने कोप करने समहोते रहते हैं॥ २६॥ और हलके, रूखे, थोड़े, ठंढे, आहार और श्रम सन्ध्याके समय मैथुन

था। प्रदोषेकामशोकाभ्यांभीचिन्तारात्रिजागरैः २७ अभिघातादपाङ्गाहाज्जीर्णेन्नेधातुसङ्क्षयात्। वायुःप्रकोपंयात्येभिःविपरीतैश्चशाम्यति २८ विदाहिकटुकाम्लोष्णभोज्यैरत्युष्णसेवनात् । मध्याह्नेक्षुत्तृषारोधाज्जीर्यत्यन्नेर्द्धरात्रके। पित्तंप्रकोपंयात्येभिःविपरीतैश्चशाम्यति २९ मधुरस्निग्धशीतादिभोज्यैर्दिवसनिद्रया । मन्देग्नौतुप्रभातेच भुक्तमात्रेतथाश्रमात् । श्लेष्मा प्रकोपंयात्येभिः प्रत्यनीकैश्चशाम्यति ३० ॥ इति श्रीदामोदरसूनुशार्ङ्गधरेण विरचितायांसंहितायांसूत्रस्थाने भैषज्याख्यानकद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ अथ नाडीपरीक्षा ॥

करस्याङ्गुष्ठमूले या धमनीजीवसाक्षिणी। तच्चेष्टया सुखंदुःखं ज्ञेयंकायस्यपण्डितैः १ नाडीधत्तेमरुत्कोपे जलौकासर्पयोर्गतिम् । कुलिङ्गकाकमण्डूकगतिंपित्तस्यकोपतः । हंसपारावतगतिं धत्तेश्लेष्मप्रकोपतः २ लावतित्तिरवर्त्तीनागमनंसन्निपाततः । कदाचिन्मन्दग

अरु शोक भय चिन्ता रातिके जागने से ॥ २७ ॥ चोट से पैरने से बासीभोजन से धातुक्षय से बात कोप करताहै जो इनते बचै तो वायु समहै ॥ इति वायुः ॥ २८ ॥ दाहवाली वस्तु कटु, खट्टी, गरम, अतिगरम वस्तु सेवन दोपहरी को भूख प्यास रोकना आधी रात्रि के भोजन इनसे पित्त कुपित होताहै इनसे सावधान रहै सम होताहै ॥ इति पित्त ॥ २९ ॥ मीठा खटमिट्ठा ठंढे दिनमें निद्रा भूखे रहना सबेरे खाना अनश्रम इनसे कफ कुपित होताहै ॥ इति कफ ॥ ३० ॥ इति श्रीदामोदरसूनु शार्ङ्गधरेणविरचितायांसंहितायांसूत्रस्थानेभैषज्याख्यानकद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

(अथ नाडीपरीक्षा) हाथके अगूठे की जड़ में जो नाड़ी चलतीहै सो जीव की साक्षीहै वैद्य उसकी चेष्टा देखिकै दुःख सुख पहिचान लेइ ॥ १ ॥ वायुप्रधान नाड़ी जोंक सर्पकी नाई चलती है पित्तप्रधान नाड़ी गौरा और मेड़ककी चाल चलती है कफप्रधान नाड़ी हंस और कबूतर की चाल चलती है ॥ २ ॥ सन्निपात

मनाकदाचिद्वेगवाहिनी ॥ द्विदोषकोपतोज्ञेया हन्तिच स्थानविच्युता ३ स्थिरत्वास्थिरत्वाचलातियासास्मृताप्राण नाशिनी । अतिक्षीणाचशीताचजीवितंहन्त्यसंशयम् ४ ज्वरकोपेनधमनीसोष्णावेगवतीमता । कामक्रोधाद्वेगव हाक्षीणाचिन्ताभयप्लुता ५ मन्दाग्नेःक्षीणधातोश्चनाडी मन्दतराभवेत् । असृक्पूर्णाभवेत्कोष्णागुर्वीसामागरीय सी ६ लध्वीवहतिदीप्ताग्नेस्तथावेगवतीमता । सुखित स्यस्थिराज्ञेयातथाबलवतीस्मृता ॥ चपलाक्षुधितस्य स्यात्तृप्तस्यवहतिस्थिरा ७ ॥ अथ दूतलक्षणम् ॥ दूताः स्वज्ञातयोऽव्यङ्गाः पटवोनिर्मलाम्बराः । सुखिनोश्ववृ षारूढाः शुभ्रपुष्पफलैर्युताः ८ सुजातयस्सुचेष्टाश्चस जीवदिशिसंश्रिताः । भिषजंसमयेप्राप्तारोगिणस्सुखहेत वे ९ ॥ इति दूतलक्षणम् ॥ वैद्याह्वानायदूतस्यगच्छतो रोगिणःकृते । न शुभं सौम्यशकुनं प्रदीप्तंच सुखाव

की तीतर व बटेर की चाल चलती है द्वन्द्वज दो दोषकी नाड़ी कहीं धीरे कहीं जल्दी चलती है और जो नाड़ी अपने स्थानको त्यागदे तो प्राणकी हरनेवाली है ॥ ३ ॥ जो नाड़ी दश पांचबेर चलके बन्दहोके चलै वा रुकके धीरी चलै औ अतिठण्डीहो तो रोगी न जिये ॥ ४ ॥ ज्वर की नाड़ी गरम है जल्द चलती है कामातुर और क्रोधीकी नाड़ी जल्दी चलती है चिन्ता औ भयकी नाड़ी क्षीण होतीहै ॥ ५ ॥ मन्दाग्नि औ धातुक्षीण भये नाड़ी धीरेधीरे चलती है रक्तविकार की कुछ गरमहो पत्थरसी भारी चलतीहै आंवसंयुक्त तके भारीपनकी गति होती है ॥ ६ ॥ जिसकी अग्नि दीप्तहै उसकी नाड़ी हलकी औ जल्दी चलती है आ-रोग्यकी स्थिर बलवान् होतीहै भूखेकी चपल अघानेकी स्थिर चलती है ॥ ७ ॥ इति नाड़ीपरीक्षा (अथ दूतलक्षणम्) अच्छी जाति वा अपनी जाति अंगशुद्ध श्वेताम्बरधारी चतुर सुखी घोड़ेपर सवार श्वेत फूल फलसंयुक्त दूतहो सो श्रेष्ठ दूतजानिये ॥ ८ ॥ अपनी जाति होय सुन्दरहो औ वैद्यकी चलत श्वासा की ओर बैठे वैद्यके पास शुभ समय जाय तो रोगी सुखी होय ॥ ९ ॥ इति दूतलक्ष-

हम् १० चिकित्सांरोगिणःकर्तुंगच्छतोभिषजःशुभम् । यात्रायांसौम्यशकुनंप्रोक्तंदीप्तंनशोभनम् ११ नारीपुत्रवतीमार्गेकुमारीदीपमालिका । ज्वलतोग्नेश्शुभाश्शब्दामङ्गलंशङ्खनादिकम् १२ मृदङ्गादिध्वनिःपूर्णाकलशोदधिमृत्तिका । फलंचमदिरामांसंमत्स्यादिकुङ्कुमादिकम् १३ गजाश्वरथताम्बूलंचामरंकनकादिकम् । शुभंस्याद्गच्छतोमार्गेवैद्यस्यलाभदायकम् १४ ॥ इति शकुनम् ॥ निजप्रकृतिवर्णाभ्यांयुक्तस्सत्वेनसंयुतः । चिकित्स्योभिषजारोगीवैद्यभक्तोजितेन्द्रियः १५ ॥ इति रोगिलक्षणम् ॥ कुचैलःकर्कशस्स्तब्धःकुग्रामीस्वयमागतः ॥ पञ्चवैद्यानपूज्यन्तेधन्वन्तरिसमाअपि १६ वैद्यःस्याद्गुरुसन्निधानकुशलःपीयूषपाणिः शुचिर्दक्षःकालवयोव

णम् ॥ और दूतरो वैद्यके बुलाने जाते समय राहमें शुभशकुनते शुभ अशुभते शुभ जानो ॥ १० ॥ जब वैद्य रोगीके यहां यात्राकरै और उस समय यदि सौम्य शकुनहोय तो शुभहै और दीप्त शुभ नहींहै ॥ ११ ॥ जो मार्गमें पुत्रवती स्त्री मिलै तथा दीपककी माला ग्रहण कियेहुये कन्या मिलै, प्रज्वलित अग्निशिखा शंख मृदंगादिकी ध्वनि होती सन्मुख दृष्टिपरे तथा कुम्भ दही मिट्टी फल मदिरा मांस मछली आदिक केशर आदि सुगन्ध पदार्थ हाथी घोड़ा रथ पान चामर सुवर्णादि पदार्थ यदि जातेहुये मार्गमें मिलें तो शुभहै ॥ १२ । १४ ॥ इति शकुनविचारः ॥ चिकित्सायोग्य जिस रोगीकी प्रकृति और वर्ण जैसेका तैसाहो और सत्त्वसंयुक्तहो और रोगीको वैद्यसे भक्तिहोय अर्थात् वैद्यके वाक्यमें निश्चय होय और जितेन्द्रिय अर्थात् कुपथ्यसेवी न होय इन्द्रिनके संयममें सावधानहो ऐसा रोगी चिकित्साके योग्यहै ॥ १५॥ इति रोगीलक्षणम् ॥ कुचैल कही जो मैले कुचैले कुत्सितवस्त्र धारणकरै और विवादी कलही जड कुग्रामवासी होय और विना बुलाये आपही आवै ये पांच वैद्य यदि धन्वन्तरि के भी समान होयँ तौभी पूज्य नहीं हैं ॥ १६ ॥ जिस वैद्यने सद्गुरु से शास्त्राध्ययन कियाहोय और जिसकी ओषधिसे प्रायशः रोगी आरोग्य होतेहोयँ अर्थात् जिसके हाथकी दीहुई ओषधि अमृत सरीखा गुणकरे व जो पवित्र व दक्ष कही

लौषधिगदज्ञानोदीतःशास्त्रवित् । धीरान्तःकरणःक्रियासु
कुशलःकारुण्यपूर्णोस्पृहायुक्तोभूतनियन्त्रमन्त्रचतुरोवा
ग्मीप्रगल्भःसुखी १७ इतिवैद्यलक्षणम् ॥ स्वप्नेषुनग्नान्मु
ण्डांश्चरक्तकृष्णाम्बराद्वृतान् । व्यङ्गांश्चविकृतान्कृष्णा
न्सपाशान्सायुधानपि १८ बध्नतोनिघ्नतश्चापिदक्षिणांदि
शमाश्रितान् । महिषोष्ट्रखरारूढान्स्त्रीपुंसोयस्तुपश्यति ।
सस्वस्थोलभतेव्याधिं रोगीयात्येवपञ्चताम् १९ अधोयो
निपतत्युच्चाज्जलेऽग्नौवाविलीयते । श्वापदैर्हन्यतेयोपिम
त्स्याद्यैर्गिलितोभवेत् २० यस्यनेत्रेविलीयेतेदीपोनिर्वा
णतांव्रजेत् । तैलंसुरांपिबेद्वापिलोहंवालभतेतिलान् २१ प
क्वान्नंलभतेऽश्नातिविशेत्कूपंरसातलम् । सस्वस्थोलभते
रोगंरोगीयात्येवपञ्चताम् २२ दुःस्वप्नानेवमादींश्चदृष्ट्वान्नब्रू
यात्कस्यचित् । स्नानंकुर्य्यादुषस्येवदद्याद्धेमतिलानिच
२३ पठेत्स्तोत्राणिदेवानांरात्रौदेवालयेवसेत् । कृत्वैवंत्रि

मनीष तथा काल पराक्रम वयोनुसार रोगका यथार्थ ज्ञान करिके ओषधिकरै और शास्त्रवेत्ता अत्यन्तधीर क्रियामें कुशल कही मनीष और दयालु तथा धनादि वाञ्छारहित यंत्र मंत्रमें अतिही चतुर-अत्यन्त प्रगल्भ प्रसन्नचित्त धनी सम्पूर्ण सुखकरके सहित सर्वदा मधुर संभाषणकरै-ऐसे वैद्यकी ओषधि सर्वदा श्रेयस्कर होतीहै ॥ १७ ॥ इति वैद्यलक्षणम् ॥ रोगी स्वप्नमें नंगा शिरमुंडा रक्त कृष्णवस्त्र पहिरे भयंकर अंगभंग काला व फांसी और शस्त्रभी धरे ॥ १८ ॥ बांधता मारता किसीको दक्षिण लियेजाता आता देखे वा भैंस ऊंट व गधेपर सवार नारी पुरुष कोई देखै तो आरोग्यके रोगहोय और रोगीहो तो मरिजाय ॥ १९ ॥ और ऊंचेसे नीचे गिरा जलमेंडूबा अग्निमें जलता पिचविमें पड़ा या कुत्तेने काटाहो या मित्र बांधव वा मकरादि के मुखमें लीलताहुआ देखे ॥ २० ॥ नेत्रसे अन्ध भए दीखें दीपक बुझता देखे तैल सुरापिये स्वप्नमें लोहा वा तिलपावै ॥ २१ ॥ पकान्नपातेवखातेकुयां में गिरै वा रसातल जाय ऐसे स्वप्नदेखनेवाला अच्छाहो वो रोगीहो रोगीहो तो मरै ॥ २२ ॥ ऐसे २ स्वप्नोंको देखिकर किसीसे न कहै

दिनंमर्त्योदुःस्वप्नात्परिमुच्यते २४ स्वप्नेषुयःसुरान्भूपा ञ्जीवतःसुहृदोद्विजान् । गोसमिद्धाग्नितीर्थानिपश्यन्सुख मपाप्नुयात् २५ तीर्त्वाकलुषनीराणिजित्वाशत्रुगणानपि। आरुह्यसौधगोशैलकरवाहान्सुखीभवेत् २६ शुभ्रपुष्पा णिवासांसिमांसमत्स्यफलानिच । दृष्ट्वातुरःसुखीभूयात्स्व स्थोधनमवाप्नुयात् २७ अगम्यागमनंलेपोविष्ठायारुदि तंमृतम् । आममांसाशनंस्वप्नेधनारोग्याप्तयेविदुः २८ जलौकाभ्रमरीसर्पोमक्षिकावापियंदशेत् । रोगीसभूया दारोग्यःस्वस्थोधनमवाप्नुयात् २९ इति श्रीशार्ङ्गधर संहितायांसूत्रस्थाने[1] नाडीपरीक्षादिस्वप्नलक्षणदूतशकु नरोगिलक्षणवैद्यप्रशंसाख्यानं नामाध्यायोयंतृतीयः३ ॥

पचेन्नामंवह्निकृच्चदीपनंतद्यथामिशिः । पचत्यामंनव ह्निचकुर्याद्यत्तद्धिपाचनम् । नागकेसरवद्विद्याच्चित्रोदीप

सवेरे नहाके सोना तिल वपत्रदानकरै ॥ २३ ॥ वतीन दिन भाणी देवताओं के स्तोत्रादिकों का पाठकरै और रात्रिको देवस्थानमें रहै तो दुःस्वप्नके फलसे छूटजाताहै ॥२४॥ (अथसुस्वप्न ,स्वप्नमें जो देवता औ राजा औजीवत, मित्र, ब्राह्मण, गऊ, यज्ञ व तीर्थादि ऐसा स्वप्नदेखै तो वह सुखको प्राप्तहोय॥२५॥ और मलिन जलमें पैरत शत्रुको सेना जीतै अटारी वा पर्वत वा हाथी वा घोडा इनसबन पर चढा देखै तो सुखहोय ॥ २६ ॥ श्वेतफूल, सूक्ष्म वस्त्र, मांस, मछरी व फलों को रोगी स्वप्नमें देखै तो रोगसे निर्मुक्तहोय जो आरोग्य होय दीखै तो धनप्राप्त होय ॥ २७ ॥ अगम्यागमन कहे जिन स्त्रीन से गमन अयोग्यहै तिनकागमन करै, मललपेटै, रोता, मरता, कच्चामांस खाता देखै वा बातैंकरै तो रोगी आरोग्य होय, और अच्छेको द्रव्य मिलै ॥ २८ ॥ और जोंक, भौंरी, सर्प, माखी इन्हें डसे देखै तो रोगी आरोग्य होय और आरोग्य द्रव्य पावै ॥ २९ ॥

इति दामोदरसूनुशार्ङ्गधरविरचितसंहितायांभाषाटीकायांसूत्रस्थाननाडीपरीक्षा स्वप्नलक्षणदूतशकुनरोगिलक्षणवैद्यप्रशंसाख्यानन्नामाध्यायोऽयंतृतीयः ३ ॥

(अथ दीपनपाचन) आमको न पचवै व अग्नि ज्वलितकरै उसे दीपन कहतेहैं

---

[1] । वैद्यपुरोगम । सप्तामसंज्ञकोऽयं सर्वदोषप्रकोपनः ॥

नपाचनः १ नशोधयतिनद्वेष्टिसमान्दोषांस्तथोद्धतान् । शमीकरोतिविषमाञ्छमनंतद्यथामृता २ कृत्वापाकंमलानांयद्भित्त्वाबन्धमधोनयेत् । तच्चानुलोमनंज्ञेयंयथाप्रोक्ता हरीतकी ३ पक्तव्यंयदपक्त्वैवश्लिष्टंकोष्ठेमलादिकम् । नयत्यधःस्रंसनंतद्यथास्यात्कृतमालकः ४ मलादिकमबद्धंवद्धंवापिण्डितंमलैः । भित्त्वाधःपातयति तद्भेदनंकटुकी यथा ५ विपक्वंयदपक्वंवामलादिद्रवतांनयेत् । रेचयत्यपि तज्ज्ञेयंरेचनंत्रिवृतायथा ६ अपक्वपित्तश्लेष्माणौबलादूर्ध्वं नयेत्तुयत् । वमनंतद्धिविज्ञेयंमदनस्यफलंयथा ७ स्थानाद्बहिर्नयेदूर्ध्वमधोवामलसञ्चयम् । देहसंशोधनंतत्स्याद्देवदालीफलंयथा ८ श्लिष्टान्कफादिकान्दोषानुन्मूलयतियद्बलात् । छेदनंतद्यवक्षारोमरिचानिशिलाजतु ९ धातून्मलान्वादेहस्यविशोष्योल्लेखयेच्चयत् । लेखनंतद्यथा

यथा सौंफ और आंवको पचावै अग्नि न बढ़ावै उसे पाचन कहते है यथा नागकेसर और चीता ये दोनों दीपन व पाचन कहाते हैं ॥ १ ॥ जो द्रव्य कोठे को न शुद्ध करै व मल न बांधै और बढ़ेदोष को शमन करै उसे शमन कहते हैं यथा गुर्चि ॥ २ ॥ और जो द्रव्य मलको पकाय भेदनकर गिरावै उसको अनुलोमन कहते हैं यथा हड़ ॥ ३ ॥ जो वस्तु पकनेयोग्य अनपची होय कोठे में लपटिकै रहिगई हो तिसे अधोमार्ग से गिरावै उसे स्रंसन कहते हैं यथा अमलतास ॥ ४ ॥ जो मल वातादिक दोष से बँधा होय वा गोटे पड़गये हों उसे फोरिकै अधोमार्ग से गिरावै तिस द्रव्यको भेदन कहते हैं यथा कुटकी ॥ ५ ॥ जो मल वातादि दोषसे विशेष पकगया हो या अपक्वहो उसे पतलाकरि बहावै उसको रेचन कहतेहैं यथा निशोथ ॥ ६ ॥ जो द्रव्य कच्चा पित्त कच्चा कफ ऊर्ध्वमार्ग से निकालै उसे वमन कहतेहैं यथा मैनफल ॥ ७ ॥ जो द्रव्य दुष्टमल वा पित्त कफ स्थान छुड़ाकर ऊर्ध्व मार्ग या अधोमार्ग से गिरावै उसे शरीरशोधन कहते हैं ऐसी शरीरशोधनी कौन द्रव्यहै यथा देवदाली कहे बनतोरई ॥ ८ ॥ जो [illegible] गोपनको ग्र शक्तिकरि निकारै उसे छेदन कहते हैं यथा यवाखारादि और सोंठि, मिर्च, पीपरि,

क्षौद्रंनीरमुष्णंवचाथवा: १० दीपनंपाचनंयस्यादुष्णत्वा द्रसशोषकम्। ग्राहितच्चयथाशुण्ठीजीरकंगजपिप्पली ११ रौक्ष्याच्छैत्यात्कषायत्वाल्लघुपाकाच्चयद्भवेत् । वातकृत्स्त म्भनंतत्स्याद्यथावत्सकटुण्टकौ १२ रसायनञ्चतज्ज्ञेयंयज्ज राव्याधिनाशनम् । यथाऽमृतारुदन्तीचगुग्गुलुश्चहरी तकी १३ यस्माद्द्रव्याद्भवेत्स्त्रीषुहर्षोवाजीकरञ्चतत् । यथानागबलाद्याःस्युर्बीजंचकपिकच्छुजम् १४ सद्यःशु क्रकरंयच्चतद्वृष्यंस्याद्यथापयः । देहस्थूलकरंयच्चबृंह णंतद्यथामिषम् । यस्माच्छुक्रस्यवृद्धिःस्याच्छुक्रलञ्चतदु च्यते । यथाश्वगन्धामुशलीशर्कराचशतावरी १५ दुग्धं माषाश्चभल्लातफलमज्जामलानिच । प्रवर्त्तकानिकथ्य न्तेजनकानिचरेतसः १६ प्रवर्तनंस्त्रीशुक्रस्यरेचनंबृहती फलम्। जातीफलंस्तम्भनञ्चशोषणीचहरीतकी १७ दे हस्यसूक्ष्मच्छिद्रेषुविशेद्यत्सूक्ष्ममुच्यते।तद्यथासैन्धवंक्षौ

शिलाजीत इति छेदन ॥ ९ ॥ रसादि धातु और शरीरके मल तिन्हैं सुखा के देहको दुर्बल करे उसे लेखन कहते हैं यथा उष्णजल वच यव ॥ १० ॥ जो दीपन और पाचन करै और गर्मी करिवै कफ धातुमल इनके रसको सुखावै तिसे ग्राही कहते हैं यथा सोंठि श्वेतजीरा और गजपीपरि ॥ ११ ॥ जो द्रव्य रूखाहो और ठण्ढाहो कषायहो और पाचनशक्ति तीक्ष्णहो उस वातकृत द्रव्यको स्तंभन कहते हैं यथा कुँरैया और (स्योनाक) सोनापाठा ॥ १२ ॥ जो द्रव्य जरा व्याधिके रोगन को दूरकरै उसे रसायन कहते हैं यथा गुर्च, रुद्रवन्ती, गुग्गुल ॥ १३ ॥ जिसद्रव्यसे मैथुनमें विशेष सुखहो उसे वाजीकरण कहतेहैं यथा बरियारा कियाचमोंगी ॥ १४ ॥ जो शीघ्रही शुक्र कहीं वीर्यको बढावै उसे वृष्य कहतेहैं यथा दूध—और जो देहको स्थूल करी हृष्ट पुष्ट मोटाकरै उसे बृंहण कहते हैं यथा आमिष कही मास—जो धातुको बढावै उसे शुक्रल कहते हैं यथा असगन्ध, मुशली, शर्करा और शतावरि॥ १५ ॥ और जो धातुकी वृद्धिकरै उसे रेतजन्य कहतेहैं यथा, दूध, उर्द भिलौ और आंवरा ॥ १६ ॥ शुक्रको प्रकट करनेवाला स्त्रीकी धातुको रेचन करनेवाला बड़ी

द्वीन्निम्बतैलंरुबूद्भवम् १८ पूर्वंव्याप्याखिलंकायंततःपाक ञ्चगच्छति। व्यवायितद्यथाभङ्गाफेनंचाहिसमुद्भवम् १९ सन्धिबन्धास्तुशिथिलान्यत्करोतिविकाशितत् । विश्ले ष्यौजश्चधातुभ्योयथाक्रमुककोद्रवः २० बुद्धिंलुम्पन्ति यद्द्रव्यंमदकारितदुच्यते । तमोगुणप्रधानञ्चयथाम द्यंसुरादिकम् २१ व्यवायिचविकाशिस्यात्सूक्ष्मंछेदिमदा वहम् । आग्नेयंजीवितहरंयोगवाहिस्मृतंविषम् २२ नि जवीर्येणयद्द्रव्यंस्रोतोभ्योदोषसञ्चयम् । निरस्यतिप्र माथिस्यात्तद्यथामरिचंवचा २३ पैच्छिल्याद्गौरवाद्द्रव्यं रुद्ध्वारसवहाःसिराः। धत्तेयद्गौरवंतत्स्यादभिष्यन्दियथा दधि २४ ॥ इति श्रीदामोदरसूनुशार्ङ्गधरविरचितसं हितायांचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

धात्वाशयान्तरस्थस्तुयःक्लेदस्त्वधितिष्ठति । देहोष्म णाविपक्वोयःसाकलेत्यभिधीयते । कलास्सप्ताशयास्सप्त

भटकटैया का फल है और वीर्यस्तंभी जायफल है और बीजों पक इद कहाते हैं ॥ १७ ॥ जो वस्तु रोममार्ग से शरीरमें पैठै उसे सूक्ष्म कहते हैं जैसे सैंधव शहद, नींब और रेंड़ीका तेल ॥१८॥ प्रथम शरीरको व्याप्तकर पीछे पाक हो उसे व्यवायी कहते हैं यथा भांग और अफीम ॥ १९ ॥ देहके सन्धि बंधनोंको ढीला करके धातु और शुक्रको क्षीणकरै उसेविकाशी कहतेहैं जैसे सुपारी और कोदव ॥२०॥ जो वस्तु बुद्धिको संभ्रमकरै मदकरै और जिसमें तमोगुण अधिक हो सो तमोगुणीहै जैसे सुरादि नशा ॥२१॥ व्यवायी, विकाशी, सूक्ष्म, छेदनकर्ता, मदकर्ता, अग्निवर्द्धक और मृत्यु कारक ये सब द्रव्य जिस ओषधिकासंग पावैं उसीका सा गुणकरैं ऐसा विष होता है ॥ २२ ॥ जो द्रव्य अपने पराक्रमसे संचित दोषोंको निकाल डारै उसे प्रमाथी कहतेहैं यथा मरिच और वच ॥२३॥ जो पदार्थ आपसे चिकनाईगुणकरके रसवा हिनी सिराओंको निरोधकरै और शरीरको भारीकरै उसे अभिष्यन्दी कहतेहैं यथा दही॥२४॥ इति श्रीशार्ङ्गधरभाषाटीकायांप्रथमखण्डे चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

जो आर्द्रपदार्थ धातु और आमाशय के अन्दर में स्थित और देहकी उष्मासे

धातवस्सप्ततन्मलाः १ सप्तोपधातवस्सप्तत्वचस्सप्तप्र
कीर्तिताः। त्रयोदोषानवशतंस्नायूनांसन्धयस्तथा। द
शाऽधिकंचद्विशतमस्थ्नांचत्रिशतंमतम् २ सप्तोत्तरंमर्म
शतंसिरास्सप्तशतंतथा। चतुर्विंशतिराख्याताधमन्योर
सवाहिकाः। मांसपेश्यःसमाख्यातानृणांपञ्चशतंबुधैः३
स्त्रीणांचविंशत्यधिकाःकण्डराश्चैवषोडश। नृदेहेदशरन्ध्रा
णिनारीदेहेत्रयोदश। एतत्समासतःप्रोक्तंविस्तरेणाधुनो
च्यते ४ मांसासृग्मेदसांतिस्रोयकृत्प्लीह्नोश्चतुर्थिकाः।
पञ्चमीचतथान्त्राणां षष्ठीचाग्निधरामता। रेतोधरास
प्तमीस्यादितिसप्तकलाःस्मृताः५ श्लेष्माशयः स्यादुरसि
तस्मादामाशयस्त्वधः। ऊर्ध्वमग्न्याशयोनाभेर्वामभागे
ऽव्यवस्थितः ६ तस्योपरितिलंज्ञेयं तदधःपवनाशयः।
मलाशयस्त्वधस्तस्य वस्तिर्मूत्राशयस्त्वधः। जीवरक्ता

विपक हो उसका कलानाम है (अथ शारीरक) शरीरमें कला ७ स्थान ७ धातु ७ धातुमल ७ ॥ १ ॥ उपधातु ७ त्वचा ७ दोष ३ सूक्ष्म नस ९०० जोड़ २१० हड्डी ३०० ॥ २ ॥ मर्मस्थान १०७ मध्यमनस ७०० शूलनाड़ी २४ पुरुष के मासग्रंथि ५०० ॥ ३ ॥ स्त्रीके मासकी गांठि ५२० पुष्टनसे फैलने समिटने वाली १६ पुरुषके शरीर में छेद १० स्त्रीके १३ यह संक्षेप कहा आगे विस्तारसे कहेंगे ॥४॥ (अथ शरीर की सात कला पहिले कहते हैं) मासकोधारण करनेवाली मासधरा पहलीकला रक्तको धारण करनेवाली रक्तधरा दूजी कला २ मेदको धारे वह मेदोधरा तीसरी ३ कफको धारण करनेवाली चौथी यकृत्प्लीहा ४ अन्न धारणेवाली पाचवीं पुरीषधरा ५ अग्निधारिणी छठीकला पित्तधरा ६ शुक्रधारणी सतई कला रेतोधरा ७ ये सातों कला है ॥ ५ ॥ छातीमें कफस्थान है तिससे कुछ नीचे आमस्थान है नाभि के ऊपर बाईओर अग्निस्थानहै ॥ ६ ॥ तिस अग्निस्थानके ऊपर तिलहै उसे क्लोम कहतेहैं वही प्यासस्थान कहतेहैंऔर अग्निस्थान के तरे पवनाशयहै उसे वायुस्थान कहते है उसी के नीचे वामभाग में मलस्थान है जिसे पक्वाशय कहते हैं और उसी पवनाशय के नीचे दक्षिणभाग

शयमुरोज्ञेयास्सप्ताशयास्त्वमी ७ पुरुषेभ्योधिकाश्चा
न्येनारीणामाशयास्त्रयः । धरागर्भाशयःप्रोक्तःस्तनौस्त
न्याशयौमतौ ८ रसासृङ्मांसमेदोस्थिमज्जाशुक्राणि
धातवः । जायन्तेन्योन्यतःसर्वे पाचिताःपित्ततेजसा ९
जिह्वानेत्रकपोलानांजलंपित्तंचरञ्जकम् । कर्णविड्रसनाद
न्तकक्षामेढ्रादिजंमलम् १० नखानेत्रमलंवक्त्रेस्निग्धत्वंपि
टकास्तथा। जायन्तेसप्तधातूनांमलान्येतान्यनुक्रमात् ११
कफपित्तमलश्चैव प्रस्वेदोनखरोमच । स्नेहाक्षित्वग्वसो
जश्चधातूनांक्रमशोमलाः । रसाद्रक्तंततोमांसंमांसान्मे
दःप्रजायते १२ मेदसोऽस्थिततोमज्जामज्जायाःशुक्र
संभवः । स्तन्यंरजश्चनारीणांकालेभवतिगच्छति ।
शुद्धमांसभवःस्नेहो यस्सासिद्धींत्वतिवसा १३ स्वेदोदं

तास्तथाकेशास्तथैवौजश्च सप्तमम् । ओजःसर्वशरीरस्थं शीतं स्निग्धं स्थिरंमतम् । सोमात्मकं शरीरस्य बलपुष्टिकरंमतम् । इति धातुभवा ज्ञेया एते सप्तोपधातवः १४ ज्ञेयावभासिनीपूर्व्वा सिध्मस्थानं च सा मता । द्वितीयालोहिताज्ञेया तिलकालकजन्मभूः १५ श्वेतातृतीयासङ्ख्याता स्थानञ्चर्म्मदलस्यसा । ताम्राचतुर्थीविज्ञेया किलासश्वित्रभूमिका १६ पञ्चमीवेदिनीख्याता सर्व्वकुष्ठोद्भवाचसा । विख्यातालोहितापष्ठी ग्रन्थिगण्डापचीस्थितिः १७ स्थूलात्वक्सप्तमीख्याता विद्रध्यादेः स्थितिश्चसा । इति सप्तत्वचः प्रोक्ताः स्थूलाव्रीहिद्विमात्रया १८ वायुः पित्तं कफो दोषा धातवश्च मलास्तथा । तत्रापि पञ्चधा ख्याताः प्रत्येकं देहधारणात् १९ पवनस्तेषुबलवान्विभागकरणान्मतः । रजोगुणमयः

धातुकी उपधातु रजजो स्त्रीके काल पाय होती है यह कालही पाय जाती रहती है शुक्र मांसकी उपधातु, वसा मेदकी उपधातु पसीना अस्थिकी उपधातु, दांत मज्जाकी उपधातु, बल पुरुषार्थ ऐसेही सातों धातुनमे सातों उपधातु होती हैं ॥१३। १४॥ (अथसप्तत्वक्) पहली अवभासिनी ऊपरकी खाल जिसमें सेहुआंकी जन्मभूमिहै १ दूजी लोहिता तिसमें तिलकालक रोम होते हैं॥१५॥ तीजी श्वेतामें दाह होताहै ३ चौथी ताम्रा जिसमें किलास कुष्ठ होताहै ४ ॥१६॥ पञ्चमी वेदिनी सर्वकुष्ठभूमि है ५ छठी लोहिता में गण्डमाला ग्रंथि अपची ये रोगहोते हैं ६ ॥ १७॥ सतईं स्थूला में जहरवात नासूर भगंदरादि होते हैं ये सातों मिलकै दो यव समान मुटाई पाती है यह चरक कहते हैं जहां मांसविशेष मोटा होता है यहां इतनी मोटी होती है ॥१८॥ (अथ तीनों दोष) वात, पित्त, कफ ये प्रत्येक देहधारी के प्रसिद्ध हैं सो रसादिक धातुन का मलिन करते हैं इससे इनका नाम मल भी है सो पांच पांच प्रकारके सुश्रुत में लिखेहैं (संस्कृत) तत्रप्रस्पन्दनोद्वहनपूरणविवेकधारणलक्षणोवायुः ॥ १९ ॥ वायु सर्वनसुन को निज निज स्थानमें पहुँचा देता है इस कारण तीनों दोष में वायुही प्रबलहै और रजोगुणी सूक्ष्म ठंढी रूखी

सूक्ष्मःशीतोरूक्षोलघुश्चलः-। शरीरदूषणाद्दोषाधातवो देहधारणात् २० वातपित्तकफाज्ञेया मलिनीकरणान्म लाः । पित्तंपङ्गुःकफःपंगुःपङ्गवोमलधातवः । वायुनाय त्रनीयन्तेतत्रगच्छन्तिमेघवत् २१ मलाशयेचरन्कोष्ठे वह्निस्थानेतथाहृदि । कण्ठेसर्वाङ्गदेशेषुवायुःपञ्चप्रकार तः । अपानःस्यात्समानश्चप्राणोदानौतथैवच २२ व्या नश्चेतिसमीरस्यनामान्युक्तान्यनुक्रमात् । हृदिप्राणोगु देऽपानःसमानोनाभिसंस्थितः। उदानःकण्ठदेशस्थोव्या नस्सर्वशरीरगः २३ पित्तमुष्णंद्रवंपीतंनीलंसत्त्वगुणोत्तर म् । कटुतिक्तरसंज्ञेयंविदग्धंचाम्लतांव्रजेत् । अग्न्याशये भवेत्पित्तमग्निरूपंतिलोन्मितम् २४ त्वचिकान्तिकरंज्ञेयं लेपाभ्यङ्गादिपाचकम् । दृश्यंयकृतियत्पित्तंतद्रसंशोणितं नयेत् । यत्पित्तंनेत्रयुगलेरूपदर्शनकारितत् २५ यत्पित्तं हृदयेतिष्ठन्मेधाप्रज्ञाकरञ्चतत् । पाचकंभ्राजकञ्चैवरञ्ज

कालोचकेतथा । साधकंचैवपञ्चैवपित्तनामान्यनुक्रमात्
२६ कफःस्निग्धोगुरुःश्वेतःपिच्छिलःशीतलस्तथा। तमो
गुणाधिकःस्वादुर्विदग्धोलवणोभवेत् २७ कफश्चामाश
येमूर्द्धिकण्ठेहृदिचसन्धिषु । तिष्ठन्करोतिदेहेषुस्थैर्यंसर्वा
ङ्गपाटवम् २८ क्लेदनःस्नेहनश्चैवरसनश्चावलम्बनः ।
श्लेष्मणश्चेतिनामानिकफस्योक्तान्यनुक्रमात् २९ स्ना
यवोबन्धनंप्रोक्तादेहेमांसास्थिमेदसाम् । सन्धयश्चाङ्गस
न्धानाद्देहेप्रोक्ताःकफान्विताः । आधारश्चतथासारःकाये
स्थीनिबुधाविदुः ३० मर्माणिजीवाधाराणिप्रायेणमुनयो

और धारणा चैतन्यता रखता है ताकी पांच नाम से स्थिति जानना पाचक १ भ्राजक २ रंजक ३ आलोचक ४ साधक ५ इसप्रकार पित्तके पांच स्थान व पांच नाम क्रमसे जानना चाहिये ॥ २६ ॥ (अथ कफ) कफ चिकना, भारी, लसलसा श्वेत, ठण्ढा, तमोगुणी विशेष है और मधुर है दग्धभये नुनखरा होजाता है अन्य मतवाले हलका कहते हैं कि पानी पर तिरताहै सो कारण यहहै कि स्निग्धता करिके पानी में प्रवेश नहीं करता वास्तव गुरुही है ॥ २७ ॥ और आम स्थान में माथेमें कण्ठमें हृदयमें संधिन में ऐसे देहमें स्थितहो पुष्ट रखता है ॥ २८ ॥ तिसके नाम क्लेदन १ स्नेहन २ रसन ३ अवलम्बन ४ और श्लेष्मण ५ ये नाम स्थानक्रमसे जानना यथा आमस्थाने क्लेदन इसप्रकार से ॥ २९ ॥ नौसै संधिवाली नसैं मास हाड़ चरबीको लपटी रहती हैं और देहमें अंग २ प्रति संधिरूहै जो उसे कफसे लपटे हैं सो संधि दोप्रकारकी है चर और अचर चरतो ठोढी कमर शाखा कण्ठ की हैं और अंगनकी अचर रहते हैं जैसे तेलके संयोग से रथके पहिया अपने ठौरमें फि-रते हैं तैसे कफके संयोगसे हड्डी विना श्रम फिरा करती हैं और बुधजन कहते हैं कि अस्थिन के आधार देहहै ताते देहका सारहै ॥ ३० ॥ और मर्मस्थान मुनि जीवाधार कहते हैं सो पाचप्रकारकाहै मांसमर्म ११ सिरामर्म ४१ स्नायुमर्म २७ अस्थिमर्म ८ संधिमर्म २० सब मर्म १०७ हैं संधिबंधनी सिरा दोष और धातुवाहकहैं सो २४ हैं तिनमें दश नाभिस्थानमें हो नीचेजाती हैं वात, मूत्र, मल, शुक्र, अन्नपान रसका नीचे पहुँचाना उनका कर्महै और दश ऊर्ध्वगतहै सो शब्द, रस, गन्ध, श्वास, जमुहाई और क्षुधा, तृषा, हँसि, डकार इन सबनको अपने २ स्थान में दीपन करती हैं और चार

जगुः। सन्धिबन्धनकारिण्योदोषधातुवहाःसिराः ३१ धम
न्योरसवाहिन्योधमन्तिपवनंतनौ। मांसपेश्योबलायस्युर
वष्टम्भायदेहिनाम् ३२ प्रसारणाकुञ्चनयोरङ्गाणांकण्डरा
मताः। नासानयनकर्णानांद्वेद्वेरन्ध्रेप्रकीर्तिते ३३ मेहना
पानवक्त्राणामेकैकंरन्ध्रमुच्यते। दशमंमस्तकेप्रोक्तंरन्ध्राणी
तिनृणांविदुः ३४ स्त्रीणांत्रीण्यधिकानिस्युःस्तनयोर्गर्भ
वर्त्मनः। सूक्ष्मछिद्राणिचान्यानिमतानित्वचिजन्मिनाम्
३५ तद्वामेफुप्फुसंप्लीहादक्षिणाङ्गेयकृन्मतम्। उदानवायो
राधारःफुप्फुसंप्रोच्यतेबुधैः ३६ रक्तवाहिसिरामूलंप्लीहा
ख्यातोमहर्षिभिः। यकृद्रञ्जकपित्तस्यस्थानंरक्तस्यसंश्र
यम् ३७ जलवाहिसिरामूलंतृष्णाच्छादनकंतिलम्। त्व

जिनकी तिर्छी गतिहैं सो अगणित शाखाहो सर्वागमें जालेकी नाई रोम २ प्रति पूरित हैं उन्हीं के मुखों से स्वेद देहके बाहर रोमों में होके आताहै और उसी मार्गहो लेपन मर्दनादि पदार्थ प्रवेश करते हैं ॥ ३१ ॥ और रसवाहिनी धमनी, को नाड़ी कहतेहैं वे वायुको अपने वेगसे शरीरमें पहुंचाती हैं सो सिरा दोमकार की है सूक्ष्म और स्थूल तिनकी जड़ नाभिमें है वहां होके तले ऊपर दहिने बायें आगे पीछे सर्वत्र फैलतीहैं ये चालिसहैं ४० वातवाहिनी १० पित्तवाहिनी १० कफवाहिनी १० रक्तवाहिनी १० सब ४० वातवाहिनी सिराके समीप दूसरी बात चारी १७५ नसें हैं ऐसे दश २ चारों के पास उतनी२है इसतरह सातसै७००हैं और देह में फैलीहैं सो बलके और रोकने के लियेहै ॥ ३२ ॥ अंगके फैलने समेट-ने को कंडराहै और दो छिद्र नाक मेंदो नेत्रमें दो कान में कहेहैं ॥ ३३ ॥एक मुख एक गुदा एक लिङ्ग एक मस्तक के ऊपर ये दशछिद्रहैं ॥३४॥ स्त्रीके तीन छिद्र विशेषहैं दो पयोधरपर एक गर्भस्थान और अतिसूक्ष्म छिद्र त्वचामें अगणितहैं ॥ ३५ ॥ हृदयके वामभागमें फुप्फुस और प्लीहाहै दक्षिणभाग में यकृत्है फुप्फुसको उदानवायुके आश्रित वैद्यलोग कहते हैं ॥ ३६ ॥ और रुधिरवाही सिराओंकी जड़को प्लीहा कहतेहैं और यकृत्को सद्वैद्य रंजक पित्तका स्थान कहतेहैं और रक्तका आधारहै ॥ ३७॥ शोणितकी कीटसे उत्पन्न हुआ दक्षिणभागमें यकृत् के पास तिलहै उसे क्लोम कहिये सो जलवाहि सिराकी जड़में रहिके प्यास लगाताहै और

क्रौपुट्टिकशौप्रोक्तौजठरस्थस्यमेदसः ३८ बीजवाहिसिरा
धारौवृषणौपौरुषावहौ।गर्भाधानकरंलिङ्गमयनंवीर्य्यमूत्र
योः।त्रिविधःसोपिसञ्जातोरजस्सत्त्वतमोगुणैः। तस्मात्स
त्त्वरजोयुक्तादिन्द्रियाणिदशाभवन्। हृदयंचेतनास्थानमो
जसश्चाश्रयंमतम् ३९ सिराधमन्योनाभिस्थास्सर्वाव्या
प्यस्थितास्तनुम् । पुष्णन्तिचानिशंवायोस्संयोगात्सर्व
धातुभि ४० नाभिस्थःप्राणपवनःस्पृष्ट्वाहृत्कमलान्तरम्।
कण्ठाद्बहिर्विनिर्याति पातुंविष्णुपदामृतम् ४१ पीत्वा
चाम्बरपीयूषंपुनरायातिवेगत । प्रीणयन्देहमखिलंजी
वंचजठरानलम् ४२ शरीरप्राणयोरेवंसंयोगादायुरु
च्यते । कालेनतद्वियोगाच्चपञ्चत्वंकथ्यतेबुधैः ४३ न
जन्तुःकश्चिदमरः पृथिव्यांजायतेक्वचित् । अतोमृत्युर
वार्य स्यात्किन्तुरोगान्निवारयेत् ४४ याप्यत्वंयातिसा
ध्यश्चयाप्योगच्छत्यसाध्यताम् । जीवितंहन्त्यसाध्य

जठरमें जो मेद और रक्तहै सो एक पुट्टिकारक गोलाकार दोनों कोहैं ॥ ३८ ॥
बीजवाही सिराके आधार पुरुषार्थ करनेवाले वृषणहैं और गर्भ धारण करनेवाला
लिङ्गवीर्य और मूत्रका मार्गहै सो लिङ्ग हृदय गलेको ग्राहक चारि कण्डराकार मरोह
है और चेतनाका स्थान हृदय बलका आश्रयहै ॥३९॥ और नाभिमें स्थित चौबीस
सिरानाम धमनी सो सब शरीर में व्याप्त होके वायुके संयोगते रसादि धातुन की
सेंचिकै सदा शरीर को पुष्ट करती हैं ॥ ४० ॥ नाभिवासी प्राणवायु हृदयकमल
को स्पर्श करिकै विष्णुपदामृत पीनेको कण्ठते बाहिरहो शिरपै जाइकै ब्रह्माण्ड
से गिरताहुआ अमृत पीके फिर उसी मार्गसे आयके सब शरीरको सन्तुष्टकरती
हुई अग्निको पाचनशक्ति देती है ॥ ४१ । ४२ ॥ पूर्वभाषित शरीर और प्राणके
संयोग रहनेको बुधजन आयु कहते हैं और शरीर प्राण के वियोग होने को
काल कहते हैं ॥ ४३ ॥ पृथ्वी में कोई शरीर अमर नहीं है इसी से मरने की
औषधि नहीं है रोगनिवारणीय औषधि हैं ॥ ४४ ॥ जो मनुष्य औषधि नहीं
करते सो सुखसाध्य रोगको कष्टसाध्य करते हैं कष्टसाध्य ते असाध्य होते हैं।

स्तुनरस्याप्रतिकारिणः ४५ अतोरक्ष्यस्तनुर्देनरः कर्मविपाकवित्। धर्मार्थकाममोक्षाणां शरीरंसाधनंच यत् ४६ धातवस्तन्मलादोषानाशयन्त्यसमास्तनुम्। समाःसुखायविज्ञेया बलायोपचयायच ४७ ॥ इति कलादिकथनम् (अथ सृष्टिक्रमः) जगद्योनेरनिच्छस्यचिदानन्दैकरूपिणः। पुंसोस्तिप्रकृतिर्नित्याप्रतिच्छायेवभास्वतः ४८ अचेतनापिचैतन्ययोगेनपरमात्मनः। अकरोद्विश्वमखिलमनित्यंनाटकाकृति ४९ प्रकृतिर्विश्वजननीपूर्वंबुद्धिमजीजनत्। इच्छामयींमहद्रूपामहङ्कारस्ततोभवत् ५० त्रिविधःसोपिसञ्जातोरजस्सत्त्वतमोगुणैः। तस्मात्सत्त्वरजोयुक्तादिन्द्रियाणिदशाभवन्। मनश्चजातं तान्याहुःश्रोत्रंत्वङ्नयनंतथा ५१ जिह्वाघ्राणत्वचोहस्तपादोपस्थगुदानिच।पञ्चबुद्धीन्द्रियाण्याहुःसंप्रोक्तानीतराणिच। कर्मेन्द्रियाणिपञ्चैवकथ्यन्तेसूक्ष्मबुद्धिभिः५२तमः

असाध्य होके प्राण देते हैं ॥ ४५ ॥ जिससे कि धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इनका साधनहेतु शरीर है इससे शुभाशुभ ज्ञाता पुरुष अवश्य शरीर की रक्षाकरै ॥ ४६ ॥ घटे,बढ़े रसादिक धातु वा धातुमल वा वात पित्त कफ देहके हन्ता हैं जब ये सम रहते हैं तब सुख देते हैं व बल और पुष्टिको करते हैं ॥ ४७ ॥ इति कलादिकथनम् ॥ (अथ सृष्टिक्रमः) जगद्योनि इच्छारहित ज्ञानधर्मका एकही रूपहै ऐसे विष्णुकी नित्यप्रकृति सूर्यकी छायाकी नाईं है ॥ ४८ ॥ सो प्रकृति चेतनरहित चैतन्य इन्द्रजालकी नाईं परमात्मा के योगकरिकै अनित्य संसार रचती भई ॥ ४९ ॥ ऐसी विश्वजननी प्रकृतिने पहिले बुद्धिको उत्पन्न किया सो इच्छामयी महद्रूपा कहे सूक्ष्मरूपा है उसी बुद्धिसे अहङ्कार होताहै सो भी अहङ्कार रजः सत्त्व तमोगुणों से तीन प्रकारका हुआ ॥ ५० ॥ इन तीनों अहङ्कारे सहित पूर्व अहङ्कार से दशइन्द्रिय और मनभया सो इन्द्रिय दोप्रकारकी कहताहों श्रवण त्वचा, नेत्र ॥ ५१ ॥ जीभ, नाक ५ वाणी, हाथ, पाँय, लिंग, गुदा ५ पहिले

१ पूर्वजन्मकृतंपापव्याधिरूपेणबाधते। यतोदानादिकंकुर्यात्सततंस्वविघ्नघ्न इति ॥

सत्त्वगुणोत्कृष्टादहङ्कारादथाभवत्। तन्मात्रंपञ्चकंतस्यना
मान्युक्तानिसूरिभिः ५३ शब्दतन्मात्रकंस्पर्शतन्मात्रंरू
पमात्रकम्। रसतन्मात्रकंगन्धतन्मात्रंचेतितद्विदुः ५४त
न्मात्रपञ्चकात्तस्मात्सञ्जातंभूतपञ्चकम्।व्योमानिलान
लजलक्षोणीरूपंषतन्मतम् ५५ शब्दस्पर्शश्चरूपंचरस
गन्धावनुक्रमात्। तन्मात्राणांविशेषास्स्युःस्थूलभावमुपा
गताः ५६ बुद्धीन्द्रियाणांपञ्चैवशब्दाद्याविषयामताः। क
र्मेन्द्रियाणांविषयाभापादानविहारतः। आनन्दोत्सर्गकौ
चैवकथितास्तत्त्वदर्शिभिः ५७प्रधानंप्रकृतिःशक्तिर्नित्या
चाविकृतिस्तथा। एतानितस्यानामानिशिवमाश्रित्यया
स्थिता ५८ महानहङ्कृतिःपञ्चतन्मात्राणिपृथक्पृथक्।
प्रकृतिंविकृतिंचैवसप्तैतानिबुधाजगुः ५९ दशेन्द्रियाणि
चित्तञ्चमहद्भूतानिपञ्चच। विकाराःषोडशज्ञेयाःसर्वंव्या
प्यजगत्स्थिताः ६० एवंचतुर्विंशतिभिस्तत्त्वैः सिद्धंवपु

कहीहुई ज्ञानइन्द्रिय जानो पीछे कही पांच कर्मेन्द्रियहैं ॥ ५२ ॥ सत् और तम से उत्कृष्ट रजोगुणी अहंकार भया जिसमें पंचतन्मात्रा भई उनका नाम पण्डितजन कहते हैं ॥ ५३ ॥ शब्द तन्मात्रा १ स्पर्श २ रूप ३ रस ४ गन्ध ५ ये पंचतन्मात्राहैं सो पांचों ज्ञानइन्द्रिन के लक्ष्य हैं लक्ष्य यह कि जिसकी जो तन्मात्रा है उसी का उस इन्द्रियको ज्ञानहै ॥ ५४ ॥ तिन तन्मात्रासे पंचभूत भये आकाश १ वायु २ अग्नि ३ जल ४ पृथ्वी ५ ॥ ५५ ॥ इनको क्रमसे जानना सो शब्दादिक क्रमसे स्थूलभाव को प्राप्तहोके ये पांचों विशेष हैं ॥ ५६ ॥ ज्ञानेन्द्रिन के शब्दादिक पांच विषय माने हैं सोई कर्मेन्द्रिन के वचन १ गहिलेना २ चलना ३ सुखी ४ मल त्याग ५ पण्डित कहे हैं ॥ ५७ ॥ प्रधान १ प्रकृति २ शक्ति ३ नित्या ४ अविकृत५ ये प्रकृति के नामहैं इसी रीति से जानना जोकि परब्रह्मका आश्रयकेरि स्थितहैं ॥ ५८ ॥ महत्तत्त्व अहंकार और पंचतन्मात्रा इन सातों को पण्डितजन प्रकृति व विकृति कहते हैं ॥ ५९ ॥ और दशइन्द्रिय एक चित्त पंचमहाभूत ये सोलह विकार जानना ये सब जगत् में व्याप्तहो स्थितहैं ॥ ६० ॥ इन चौबिस तत्त्वनसहित देहमें

गेहे। जीवात्मानियतोनित्यंवसतिस्वान्तदूतवान् ६१
सदेहीकथ्यतेपापपुण्यदुःखसुखादिभिः। व्याप्तोबद्धश्च
मनसा कृत्रिमैःकर्म्मबन्धनैः ६२ कामक्रोधौलोभमोहाव
हङ्कारश्चपञ्चमः। दशेन्द्रियाणिबुद्धिश्चतस्यबन्धायदे
हिमः ६३ आप्नोतिबन्धमज्ञानादात्मज्ञानाच्चमुच्यते। तं
दुःखयोगकृद्व्याधिरारोग्यंतत्सुखावहम् ६४॥इतिश्रीशा
र्ङ्गधरेकलादिकाख्यानेपञ्चमोऽध्यायः ५ ॥

यात्यामाशयमाहारः पूर्वंप्राणानिलेरितः। माधुर्यंफेन
भावञ्चषड्रसोपिलभेतसः १ अथपाचकपित्तेनविदग्ध
श्चाम्लतांव्रजेत्। ततःसमानमरुताग्रहणीमभिधीयते २
ग्रहण्यां पच्यते कोष्ठवह्निनाजायतेकटुः। रसोभवतिस
म्पक्कादपक्कादामसम्भवः ३ वह्नेर्बलेनमाधुर्यं स्निग्धतांया
तितद्रसः। पुष्टिःपित्तधरानामसाकलापरिकीर्त्तिता४पक्का
माशयमध्यस्थाग्रहणीत्यभिधीयते। पुष्णातिधातूनखि

जीवात्मा सदैव स्थित रहताहै और जो मनहै सो उसका दूत है ॥६१॥ व उसीको देही कहते हैं जो पाप,पुण्य,दुःख व सुख करिकै व्याप्तहै सो मनके करे कर्मनके संग बँधाहै॥६२॥काम,क्रोध,लोभ,मोह,अहङ्कार ५इन्द्रिय १०और बुद्धि ये सोलह देह बन्धनके हेतु हैं ॥ ६३ ॥ जीवात्मा अज्ञान करिकै इनमें बँधारहताहै और ज्ञान करिकै बन्धनते मुक्त होजाताहै अज्ञानते दुःखके योगमें दुःखपाताहै और ज्ञान करिकै सुख पाताहै ॥इति सृष्टिक्रमः॥६४॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेकलादिकाख्यानेपञ्चमोऽध्यायः ५

(अथाहार) जो कछु भोजनकिया सो प्राणवायुसे प्रेरित प्रथम आमाशयमें जाताहै षड्रस में कोई रसहो मधुर और फेनासा होजाताहै॥ १ ॥"अन्यग्रन्थों में लिखाहै कि कफाशयमेंहो आमाशयमें जा फेनभाव होजाताहै इति,, सो फेनभाव हो पाचक पित्त में दग्धमय खट्टाहोजाताहै तब समानवायुका प्रेरित ग्रहणीमें पड़ता है॥ २ ॥ फिर ग्रहणीसे अग्निकोष्ठमें पाचकै कड़ुवा होजाताहै जो अग्नि आमाशय में अच्छीतरह पचा तो रसहुआ अरु जो अपक्करहा तो आंव होगया ॥३॥ वोन रस अग्निके बलसे पचिकै मधुर और चिकना होजाताहै सोवह पित्तरा पुष्टिकला

लान्सम्यक्पक्कोऽमृतोपमः ५ मन्दवह्निविदग्धश्च कटु
श्चाम्लोभवेद्रसः।विषभावंव्रजेद्वापिकुर्याद्वारोगसङ्करम् ६
आहारस्यरसःसारःसारहीनोमलद्रवः। सिराभिस्तज्जलं
नीतंवस्तौमूत्रत्वमाप्नुयात्।तत्किट्टंचमलंज्ञेयंतिष्ठेत्पक्वाश
येचतत् ७ बलित्रितयमार्गेणयात्यपानेननोदितम्। प्रवा
हिनीसर्जनीचग्राहिकेतिबलित्रयम् ८ रसस्तुहृदयंयातिस
मानमरुतेरितः। रञ्जितःपाचितस्तत्रपित्तेनायातिरक्तता
म् ९ रक्तंसर्वशरीरस्थंजीवस्याधारमुत्तमम्। स्निग्धंगुरु
चलंस्वादुविदग्धंपित्तवद्भवेत् १० पाचिताःपित्ततापेनर
साद्याधातवःक्रमात्।शुक्रत्वंयान्तिमासेनतथास्त्रीणांरजो
भवेत् ११ कामान्मिथुनसंयोगेशुद्धशोणितशुक्रजः।गर्भः
सञ्जायतेनार्याःसजातोबालउच्यते १२आधिक्याद्रजसः

कहातीहै और पक्वाशय आमाशय के मध्यमें स्थित ग्रहणी कही जातीहै सो अच्छी तरह पकारस अमृतकी तुल्य अखिल धातुनको पोषताहै॥४।५॥ जो मन्दाग्नि करि अपक्वरहा तब कडुवा खट्टा विषसमान बहुतरोग उत्पन्न करताहै॥६॥सोरस आहारका सार है जब आहार से रस भिन्नभया सो सारहीन आहार मल और जल रहगया उस जलको मूत्रवाहिनी सिराने लेके वस्ती जो मूत्रकी थैली तिस में छोड़ा सो मूत्रहै तिसके नाम उसीको कीटमलहो पक्वाशय में रहताहै॥ ७॥ सो मल अपानवायुप्रेरित त्रिवली में हो निकलताहै त्रिवली कहै मलमार्ग जिस में तीन वल शंखकी नांई हैं तिसके नाम प्रवाहिनी,सर्जनी,ग्राहिका ३॥ ८॥ सो रस समानवायुप्रेरित हृदय में जाताहै व रंजित पित्तते पचिकै रक्त होजाताहै॥९॥ वह रक्त उत्तम जीवाधार सर्व शरीरमें स्थितहै और चिकनाहै गुरुहै चरहै स्वादुहै व जब दग्ध होताहै तब पित्तसम कटु होजाताहै॥ १०॥ पित्तकी आंचसे पचिकै मासभरे में रसादिक धातु क्रमसे शुक्रको प्राप्तहोतीहै तथा स्त्रीके शरीरमें उसी क्रम से रज होताहै इसरीतिसे एक दिनमें भोजनका रस फिर रस पचिकै पांचदिनमें रु धिर ऐसे प्रतिधातु पांच दिनमें पचि पचिकै महीनाभर में शुक्र होताहै॥ ११॥ जब स्त्री पुरुषकी कामना से संयोगद्वारा शुद्ध रक्त वीर्यमिश्रित होताहै तब स्त्री

कन्यापुत्रःशुक्राधिकेभवेत् । नपुंसकंसमत्वेनयथेच्छापार
मेश्वरी १३ अस्थीनिमज्जाशुक्रंचपितुरंशास्त्रयोमताः ।
शुक्राश्रितोभवेच्छयावोगौरश्चरजसाश्रितः १४ बालस्य
प्रथमेमासिदेयाभेषजरक्तिका । अवलेहीकृतैकैवक्षीरक्षौद्र
सिताघृतैः १५ वर्द्धयेत्तावदेकैकांयावद्भवतिवत्सरः । माषै
र्वृद्धिस्तदूर्ध्वंस्याद्यावत्षोडशवत्सरः १६ ततःस्थिराभवे
त्तावद्यावद्वर्षाणिसप्ततिः । ततोबालकवन्मात्राह्रसनीया
शनैःशनैः । मात्रेयंकल्कचूर्णानांकषायाणांचतुर्गुणा १७
अञ्जनंचतथालेपःस्नानमभ्यङ्गकर्म्मच । वमनंप्रतिमर्श
श्चजन्मप्रभृतिशस्यते १८ कवलःपञ्चमाद्वर्षादष्टमान्न
स्यकर्मच । विरेकःषोडशाद्वर्षाद्विंशतेश्चैवमैथुनम् १९
बाल्यंवृद्धश्छविर्मेधात्वग्दृष्टिःशुक्रविक्रमौ । बुद्धिकर्मेन्द्रि

यंचैतोजीवितंदशतोह्सेत् २० (इति आहारपाकगर्भो त्पत्तिकुमारपोषणानि) अल्पकेशःकृशोरूक्षो वाचाल श्चलमानसः। आकाशचारीस्वप्नेषु वातप्रकृतिकोनरः २१ अकालेपलितैर्व्याप्तो धीमान्स्वेदी च रोषणः। स्वप्ने षुज्योतिषांद्रष्टापित्तप्रकृतिकोनरः २२ गम्भीरबुद्धिः स्थू लाङ्गःस्निग्धकेशोमहाबलः। स्वप्नेजलाशयालोकीश्ले ष्मप्रकृतिकोनरः २३ ज्ञातव्यामिश्रचिह्नैश्चद्वित्रिदोषो ल्वणानराः। कौमारंयौवनंवार्द्धंप्राणिनांत्रिविधंवयः। क फपित्तानिलप्रायंक्रमतःप्रकृतिस्त्रिधा २४ (इतिहितोपदे शात्)तमःकफाभ्यांनिद्रास्यान्मूर्च्छापित्ततमोभवा।रजः पित्तानिलैर्भ्रान्तिस्तन्द्राश्लेष्मतमोनिलैः २५ग्लानिरोज क्षयाद्दुःखादजीर्णाच्चश्रमाद्भवेत्।यःसामर्थ्येप्यनुत्साहस्त

धारणशक्ति पचासतक त्वचा साठतक दृष्टि सत्तरलों वीर्य अस्सीतक बल नव्वे लों बुद्धि सौतक कर्मेंद्रिय चलनशक्ति एकसौ दशतक चेत एकसौ बीसतक जीवत्व दश दशवर्ष प्रति यह क्रम जानना ॥ २० ॥ इति आहारपाकगर्भोत्पत्तिकुमारपोषणानि (वातप्रकृतिलक्षण) सूक्ष्मकेश दुर्बल रूखा बकवादी मनस्थिर नहीं आकाशचारी स्वप्न देखै ये वातप्रकृति नरके लक्षणहैं॥२१॥(पित्तप्रकृति)लघुवयसमें केश पकैं बुद्धितीव्र स्वेद बहुत निकरै क्रोधी अग्नि नक्षत्रादि स्वप्न में देखै ये पित्तप्रकृति मनुष्य के लक्षणहैं ॥२२॥ (कफप्रकृतिलक्षण)गम्भीर बुद्धि स्थूलशरीर चिकने केश अधिक बल जलादि स्वप्नमें देखे ये कफप्रकृति पुरुषके लक्षणहैं॥२३॥(अथ द्वित्रिदोषप्रकृतिलक्षण)जो दो दोषके लक्षणहों तौ द्विदोषजप्रकृति जानो तीनोंके लक्षणहोंयतौ त्रिदोषजप्रकृति जानो कौमार- यौवन- वृद्ध यह तीनप्रकारकी अवस्थाहै-और कफपित्त वायुकी आधिक्यता से प्रकृतिभी तीनप्रकारकी है ॥ २४ ॥ इति हितोपदेशात् ॥ तमोगुण और कफ मिलके नींद आती है इसे स्वप्नावस्था कहते हैं पित्त में तमोगुण मिलने से अचेत होताहै तिसे मूर्च्छा कहते हैं रजोगुण पित्तवात मिलेसे संभ्रम होता है तमोगुण कफवात संयुक्त होनेसे तंद्रा होतीहै तन्द्रावहै निद्रा स्थित न होय ॥ २५ ॥ बलहानिसे दुःखसे

दालस्यमुदीर्यते २६ चैतन्यशिथिलत्वाद्यःपीत्वैकंश्वास मुद्धरेत् । विदीर्णवदनःश्वासंजृम्भांसाकथ्यतेबुधैः २७ उदानप्राणयोरूर्ध्वयोगान्मौलिकफस्रवात् । शब्दस्सञ्जायतेतेनक्षुतंतत्कथ्यतेबुधैः २८ उदानकोपादाहारस्सुस्थिरस्वाच्चयद्व्रजेत् । पवनस्योर्ध्वगमनंतमुद्गारंप्रचक्षते २९ इति प्रकृतिलक्षणानि ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेषष्ठोऽध्यायः ६॥

रोगाणांगणनापूर्वंमुनिभिर्याप्रकीर्तिता । सयात्रशोच्यतेसैवतद्भेदाबहवोमताः १ पञ्चविंशतिरुद्दिष्टाज्वरास्तद्भेदउच्यते । पृथग्दोषैस्त्रिधाद्वन्द्वभेदेनत्रिविधःस्मृतः २ एकश्चसन्निपातेनतद्भेदाबहवस्स्मृताः।प्रायशःसन्निपातेनपञ्चस्युर्विषमज्वराः ३ सन्ततःसततश्चैव अन्येद्युष्कस्तृतीयकः । चातुर्थिकश्चपञ्चैतेकीर्तिताविषमज्वराः ४ तथागन्तुज्वरोप्येकस्त्रयोदशविधोमतः । अभिचारग्रहावे

अजीर्ण से ग्लानि होतीहै सामर्थ्य रखकर कृत न करै उसे आलस्य कहतेहैं ॥२६॥ चैतन्य स्थानकी शिथिलता से एकश्वासको खैंचिकै मुख फैलायके छोड़ै उसे जंभाईकहतेहैं ॥ २७ ॥ उदान और प्राणवायु के ऊपर चढने से शिरका कफ गिराताहै उसके शब्दको छींक कहते हैं ॥ २८ ॥ जब आहार अपने स्थान में गया वहां की भरीहुई उदानवायु कोपकरि ऊपर निकलती है उसे डकारकहतेहैं ॥२९॥

इति श्रीशार्ङ्गधरसंहितायामाहारकथननामषष्ठोऽध्यायः ६ ॥

प्रथम मुनियोंकी कहीहुई रोगों की गणना सो इस ग्रन्थ में मैं कहताहूं रोगोंके बहुत भेद हैं ॥ १ ॥ पचीस भांति के ज्वरका भेद कहाहै व तीनप्रकार के भिन्न भिन्न हैं वातज्वर कफज्वर औ दो दो दोष से तीनिप्रकार के हैं वातपित्तज्वर वातकफज्वर कफपित्तज्वर ऐसे कहते हैं ॥ २ ॥ और एक सन्निपातज्वरहै तिसकेबहुतसे भेद कहे हैं बहुधा सन्निपातसे पांचप्रकार के विषमज्वर उत्पन्न होते हैं ॥ ३ ॥ वा जो ज्वर सदैव बनारहै उसे सन्तत कहते हैं १ एक वसा है दूसरा किसीबेर फिर आवै उसे सतत कहतेहैं २ दूसरे दिन आवे उसे अन्तरिया कहते हैं ३ तीजे दिनवाले को तिजरिया कहैं ४ चौथे दिन आवे उसे चातुर्थिक कहैं ५ ये पांच वि-

शंशापैरागन्तुकस्त्रिधा ५ श्रमाच्छेदात्क्षताद्दाहाच्चतुर्धाघा तजोज्वरः। कामाद्भीतेःशुचोरोषाद्विषादौपधगन्धतः। अभिषङ्गज्वराःपट्स्युरेवंज्वरविनिश्चयः ६ पृथग्दोपैःसमस्तैश्चशोकादामाद्भयादपि। अतीसारस्सप्तधास्याद्ग्रह

पमज्वरहै ॥ ४ ॥ एकप्रकारका आगन्तुकज्वरहै सो तीन कारण करके तेरह प्रकारका होताहै अभिचार कहे टोना मन्त्रादि से १ ग्रहदशा से २ शाप से ३ ये तीन प्रकार हैं ॥ ५ ॥ श्रमसे १ चोटसे २ क्षतसे ३ व जलनेसे ४ ये चारप्रकार आघातके कहै कामचेष्टा में स्त्रीका अभाव भये अथवा चित्तासक्त स्त्रीके वियोग से १ डर से २ शोकसे ३ क्रोधसे ४ विषसे अथवा विषगन्ध से ५ प्रबलओषधिसेवनसे ६ ये छः अभिषंगज्वरहैं ये सब ज्वर २४ निश्चय कियेगयेहैं॥६॥ अब १२ प्रथम कहे और तेरह आगन्तुक पचीसों के लक्षण कहताहूं ज्वर के आनेसेदेहकांपै ज्वर आनेका कोई समय बन्धन नहीं ॥दोहा॥ मूखहोठ गरनींदनहिं थंभुतिरुस मुखफीक। शिरहृदि शूलोदरफुले मलबधजृम्भालीक ॥ इति वातज्वर ॥ वेगदस्त भ्रमहउबकि कण्ठघ्राणमुखपाक। श्वेतप्रलापी मूढ कटु मूर्च्छादाहप्रदाक ॥ तृष्णा पियरो मूत्रमल नयनत्वचान्हसुपीत। वचन भुलाने भ्रमसहित सो पित्तज्वर नीत ॥२॥ इति पित्तज्वर ॥ शीतलता संकुचिततन आलस मध्य सताय। श्वेत मूत्रमलमीठगुरु गुरुताअरुचिजड़ाय ॥ जाड़ारोमांचौउबकि अतिनिद्रा तन पीर। रोध नासिका श्रवणहल प्रबलमूत्र गम्भीर॥ सूक्ष्मस्वेद लघुउष्णता अपचनासिद्रवकासु । अरुचिनयन सितनयनरँगकफज्वर कहियेतासु ॥ इति कफज्वर ॥ तृष्णा मूर्च्छा दाहभ्रमनींद नमस्तकपीर। रोमहर्षगरमुखसुखैधुंधअरुचिउपकीर ॥ कांटि भांति पीड़ाकरै वात पित्तज्वर जान॥ इति वातपित्तज्वर ॥ संकुच शीतल जकड़ तन खांसी नींद प्रधान। सन्धिपीर मस्तक जकड़ घ्राण द्राव अतिस्वेद। मध्यमज्वरसंतापयुतवातकफज्वरखेद ॥ इति वातकफ ॥कटुलसलसमुख दन्तक्षत हिक्काकासरुप्यास। खनजाड़ाखनहीअरुचिकफपित्तज्वरत्रास॥ इतिकफपित्त॥खन जाड़ा खनदाहपुनि अस्थिमाथमेंपीर। लालनयनजल श्रवणमेंशब्दविलक्षणचीर तंद्राकंटककंठगत मोहप्रलापप्रकास। श्वासअरुचिभ्रमजम्भखरदग्धसदृशआभास॥ तनमस्तकरतवतअधिररक्तसुपित्तकफन। प्यासअनिद्राहृदयभय दुष्टस्वेद मनहैन॥ अति दुर्बलतावातनहिं घरघर कण्ठहि होइ। उष्णगात फिरकीअसित दाभकलेवरमोर ॥ गुंगकाण पक पेटगुरु दोष बहुत दिनपाक। दोषत्रदैपाकघटैलक्षणस

णीपञ्चधामता७पृथग्दोषैःसन्निपातात्तथाचामेनपञ्चमी।
प्रवाहिकाचतुर्द्धास्यात् पृथग्दोषैस्तथास्रतः ८ अजीर्णं

त्रिनिशाक ॥ कहि असाध्य लक्षण सकल कष्टसाध्यजोनाट । थोरेलक्षण साध्य ये जो लघु सरितापाट ॥ इति सन्निपात ॥ सातकि दश द्वादश दिवस घटैनसंतत ताप। सततचढै द्वैवार नित कहत वैद्य निष्पाप॥ इतिसंततसततज्वर॥ चढैअन्येद्युः वारइक दिकैचढीउश्वास। अंतरिया दिन बीचदै तिजरी द्वैतनित्रास ॥ चातुर्थिक दिनत्रै बिते कहते सकल रुजहार । भूत प्रेत विपरीतजप होमजनित अभिचार ॥ राक्षसादि पीडाजनित कहिज्वरग्रह आवेश ॥ वृद्ध सिद्धद्विजगुरु शपित कहतशाप ज्वर देश ६॥ अतिसारसप्तप्रकार। प्रतिदोष दोषविकार॥ पुनिशोकआंवहराय। ग्रहणीपुंचकहाय॥ प्रतिदोषसंतोश्राम । रक्तिजातजोभुगखाम ७ (अथातीसार रोग) अतीसार सातप्रकारकेहैं वातातीसार, पित्तातीसार, कफातीसार, त्रिदोषातीसार,शोकातीसार,आमातीसार और भयातीसार७(लक्षण) जिसकेमलमेंआंव वा फेनामिला पतला गिरै लालरंग रूखा वा हलका होय वारबार वेग होवे भर-भराहटसे शूल से होवे वातातीसारके लक्षण हैं ॥ पीत व नीला व ताम्रमल गिरै मूर्च्छा होय गुदा में जलन और गुदा पक जाय प्यास ये पित्तातीसारके लक्षणहैं॥ श्वेतरंग गाढा कफसहित निसेदी गंधमलठंढादेहमेंरोमहर्षहोय इति कफातीसार ॥ सूकर मेना तथा मांस गोवन सा मल गिरै और वातादि दोषातीसारनके लक्षण मिलैं उसे त्रिदोषातीसार जानिये बहुत कठिनसाध्यहैं ॥ इति ॥ जो धन पुत्रादि वा प्रतिष्ठादि हानिके शोकसे भोजन न करे उसके शोककी उष्णता ओझडी में हो अग्निको विकल करती है उसके तेज से रुधिर उफना ताम्ररंगहोय मलकेसाथ गिरै वा केवल रुधिर गिरै औ आमगन्ध हो वा अतिदुर्गन्ध हो उसे शोकातीसार कहते हैं सो भी अतिही कष्टसाध्य है अतिउष्णचीज औ पित्तकचीज खाने से वा व्रतसे गरमी होके निरे रुधिर का झाड़ा होता है उसे रक्तातीसार कहतेहैं और मूलव्याधि अर्श शोक से भी निरारक्त गिरताहै इति रक्तातीसार॥ और अन्न व रसके परिपाक न होनेसे आंवहोतीहैसोमलकेसंगअनेकरंगहो गिरतीहैऔरशूल करती है उसे आमातीसार कहतेहैं भयसे अतीसार होता है भयसेतीनों दोषकोप करते हैं जिस दोष के लक्षण मिलैं उसी दोषका कोपजानना ॥ इति अतीसार-लक्षण (अथ ग्रहणीरोग) पांचतरहकी ग्रहणी होतीहै॥७॥ वातग्रहणी, पित्त-ग्रहणी, कफग्रहणी,त्रिदोषग्रहणी,आमग्रहणी५ (ग्रहणीलक्षण) जब अग्न्याशय

त्रिविधंप्रोक्तंविष्टब्धंवायुनामतम्। पित्ताद्विदग्धंविज्ञेय कफेनामंतदुच्यते ६ विषाजीर्णरसादेकंदोषैः स्यादल सस्त्रिधा। विसूचीत्रिविधाप्रोक्ता दोषैःसास्यात्पृथक्पृथक्॥ दण्डकालसकश्चैवमेकैकंस्याद्विलम्बिका १० अ

में वातादिकदोष स्थित होके कोपकरतेहैं उससे उत्सर्गसंग्रहणीरोग होताहै उससे आंव गिरता है दुर्गन्धसमेत वा वायुकरिके रुधित शूल के झाड़ा नहीं होता औ पित्त करिके क्षणक्षण भर में दिशालगती है तब कभी आंव या जितनी पकै उत नी गिरती है शक्ति घटतीहै आलस्य बढ़ताहै अग्नि मन्दहोती है उससे अन्नका पाक अच्छीतरह नहीं होता और वही आंव शरीरको जड़ करती है यह संग्रहणी का प्रथम रूपहै वायु के कुपितभये शूल, पेटफूलना, खांसी, और श्वास होता है उसे वातसंग्रहणी कहिये–पित्तके कुपितभये खट्टीडकारआतीहै छाती कंठ जलता है रुचि न होइ उसे पित्तसंग्रहणी कहतेहैं–कफ केकुपित भये उबासी, मुखमीठा, लिबलिबा, खांसी, नाकबहना, आलस्य ये कफसंग्रहणी के लक्षण जानिये– जिसमें तीनोंदोष के लक्षण होवैं वह सन्निपातसंग्रहणी है आमवातसेहो सो आम संग्रहणी और संचितहोके अठयें चौथेदिन गिरै तिसे आमातीसार कहतेहैं और प्रवा- हिका चार भांतिकी है सो अतीसारके भेद जानो वातसे पित्तसे कफसे व रक्तसे इन चारों से होताहै वायु कोप करिके ओझड़ीमें कफसंचयकरै फिर कुपथ्यके कारण पाके कफ मल में मिल पतला करि बहताहै उसे प्रवाहिका कहते हैं जो वायुहोतो शूल हो और मलके संग फेन गिरै यह वातप्रवाहिकाहै और दाहहो पीतमल गिरै सो पित्तप्रवाहिका है जो देह टूटै आलस्य होके कफमिश्रित पांडुरंगमलगिरै उसे कफप्रवाहिका कहतेहैं जो रुधिर मिल पतलामलबहै फेननहीं उसे रक्तप्रवाहिकाकह- तेहैं॥८॥ अजीर्ण के तीन भेदहैं किया हुआ भोजन यथ योग्य न पचै उसे अजीर्णक हतेहैं जो वायु करके कोष्ठबद्ध होता है तब शरीरमें शूल, हड़फूटन, पेटफूलै. उसे विष्टब्ध अजीर्ण कहते हैं जो सम्भ्रम, मूर्च्छा, दाह, देहपीर, खट्टी डकारआवै जो पायुकरके कोष्ठबंधे उसे पित्तविदग्धाजीर्ण कहते हैं जो उबकाई, डकार, देहभारी, देहसूजन उसे कफ आमाजीर्ण कहते हैं॥९॥ जो अन्नभोजनकरि रस होताहै उससे एक विषाजीर्ण होताहै जो रस न पचै सो विष तुल्य होके मरणावस्थाके अनेक रोगको संचय करताहै सो तीनप्रकारकाहै विसूची, दण्डालस, विलंबिका, लक्षण) झाड़ा जल्दी २ आवै मूर्च्छा, तृषाकी शूल, भ्रम, देह में दाह, जृम्भा, देहधुनना

र्शांसिषड्विधान्याहुर्वातपित्तकफास्रतः। सन्निपाताच्च संसर्गात्तेषांभेदोद्विधास्मृतः। सहजोत्तरजन्मभ्यांतथाशुष्कार्द्रभेदतः ११ त्रिधैवचर्मकीलानिवातात्पित्तात्कफादपि। द्वाविंशतिप्रकारेणक्रमयःस्युर्द्विधोच्यते १२ वाह्यास्तथाभ्यन्तराःस्युस्तेषुयूकावहिश्चराः १३ लिख्याश्चान्येभ्यन्तरास्स्युःकफात्तेहृदयादकाः। अन्त्रादाउदरावेष्टाश्चुरवश्चमहागुहाः १४ सुगन्धादर्भकुसुमास्तथारक्ताश्चमातरः। सौरसालोमविध्वंसारोमद्वीपाह्युदुम्बराः १५ केशादाश्चतथैवान्येशक्रुज्जातामकेरुकाः। लेलिहाश्चमलूनाश्च

अतिस्वेद इसे विसूचिका कहतेहैं कोई इलका कहतेहैं शरीर देहाकारहो अकड़ जाय प्यास डकार इसे दण्डालस कहतेहैं व अधो ऊर्ध्ववायुरुँधके पेटस्तम्भहो फूले शूलहो इसे विलम्बिका व गुमशीतरस व बन्द हैजा कहतेहैं ॥ १० ॥ अर्शकहे बवासीर छःप्रकारकी है वातार्श, पित्तार्श, कफार्श, सन्निपातार्श, रक्तार्श व संसर्गार्श ६ इनके दो भेदहैं एक शरीरसे होताहै जिसे शुष्क कहतेहैं दूसरा विपरीताहार विहार से होताहै जो शंखाकार चक्र मलमार्गमें साढे पांच अंगुलकाहै उसमें वातादिक के कोपसे मांसका अंकुर उभर आताहै (लक्षण) माथेमें शूल, कटिपीड़ा, मन्दाग्नि ये लक्षण वातार्शकेहैं ज्वर, दाह, स्वेद, मूर्च्छा ये लक्षण पित्तार्शकेहैं श्वासभेद, अरुचि, माथाभारी औ अंकुरफूलके पीड़ाकरै बैठने में क्लेश ये लक्षण कफार्शकेहैं ऐसेही सन्निपातार्शहै और अति गरमी से रक्त गिरै देह पीली बलक्षीण यह रक्तार्शहै मलके वेगसे अंकुर रक्तदेह कांटेसे गड़ै ये संसर्गार्श के लक्षणहैं॥११॥चर्मकील तीनि भांतिकी होतीहै वातज, पित्तज व कफज देहमें बाईसतरह के कृमिहैं तीन ऊर्ध्ववासी जुंवा चीलहर किलनी ये केश वस्त्रकी मलिनता से होवैहैं और अठारह अन्तरवासीमें सात भेदहैं सो कफसे होतेहैं हृदयादिक १ अंत्राद २ उदरावेष्ट ३ चुरव (चिलूना) ४ महागुह ५ सुगन्ध ६ दर्भकुसुम ७ ये कफाशय से आमाशय पर्यंत होते हैं कुपित होके ऊर्ध्वमार्गे अधोमार्ग हो निकलतेहैं श्वेतवर्ण, ताम्रवर्ण, मोटे, लम्बे तथा धानसमान लक्षण मन्दाग्नि छर्दी ज्वर नाभिलाल ॥१२॥१३॥ और छः रक्तसे होते हैं मातर १ सौरस २ लोमविध्वंस ३ रोमद्वीप ४ उदुम्बर ५ ॥ १५ ॥ और केशाद ६ ये रक्तवाही सिराके स्थानमें होतेहैं (लक्षण) लाल अतिसूक्ष्म जो

सौसुरादामकेरुकाः। तथान्येकफरक्ताभ्यांसञ्जाताःस्नायुकाःस्मृताः १६ व्रणस्यकृमयश्चान्येविषमाबाह्ययोनयः। पाण्डुरोगाश्चपञ्चस्युर्वातपित्तकफैस्त्रिधा १७ त्रिदोषैर्मृत्तिकाभिश्चतथैवकामलास्मृता। स्यात्कुम्भकामलाचैकातथैवचहलीमकम् १८ रक्तपित्तंत्रिधाप्रोक्तमूर्ध्वगंकफसम्भवम्। अधोगंमारुताज्ज्ञेयंतद्वयेनद्विमार्गगम् १९ कासाःपञ्चसमुद्दिष्टास्तेत्रयःस्युस्त्रिभिर्मलैः। उरःक्षताच्चतुर्थःस्यात्क्षयाद्धातोश्चपञ्चमः २० क्षयाःपञ्चैव विज्ञेयास्त्रि

देख नहीं पर वह कष्ट उत्पन्न करतेहैं और मकेरुक,लेलिह, मन्नून, सौसुराद व मकेरुक ये पाच अन्तलतर कृमि मलमें होतेहैं कचे मलमें रहते हैं श्वेत पीत दीर्घ मोटे कभी मुखसे कभी मलकेसंग गिरतेहैं अग्निमन्द पीड़नादि उपद्रव होते हैं कफ और रक्तसे उत्पन्न होतेहैं उसे स्नायुक (नाहरू)कहते हैं ॥ १६,॥ और बहुत विषम व बाह्ययोनि ये व्रणके कृमिहैं(अथ पाण्डु) पाण्डुरोग पांच भातिका होताहै वातज, पित्तज,कफज,त्रिदोषज,माटी भक्षण से ५ (लक्षण) मुख कांतिहीन भ्रान्तर कंप सूजन पेट पजावा आलस्य ये पाडुस्वरूपहैं और कमलपाडु कुभकपाडु हलीमकपाडु इनके(लक्षण)नीतचमरा, हल्दीसा मूतनाल मल उष्ण बलहीन ये कमल पाडुदेह कृष्ण वा पीत कभी हरित सामर्थ्यहानि अग्निमन्द सूक्ष्मज्वर नपुंसकतात्रासी ये कुंभकपाडु के लक्षणहैं ऐसेही लक्षण हलीमकपाडुके हैं॥१७॥ रक्तपित्तके तीन भेद जानो निदान उसका यहहै परिश्रम शोकमार्गगमन व मैथुनइत्यादि अति करनेसे रुधिर उफनाय मुख और दिशासे गिरैउसे रक्तपित्त कहतेहैं जब वह उफना रुधिर निदान उसका यहहै कफ कोपताहै तो मुखसे गिरताहै जो वायु कोपताहै तौ मलमार्गसे गिरता है अग्निकोपसे नाकमे गिरताहै और कफवात दोनोंसे मुख और दिशासे गिरताहै॥ १८।१९॥कासकहे खासी पाच प्रकारकीहै वातसे,पित्तसे, कफसे,कलेजेके विकारसे व धातुक्षीणसे५पेटकोप हृदय मस्तकपीड़ा सूखी खास खोखी ये वातकासके लक्षण हैं॥ज्वर,मस्तकदाह,उमेर,पीतकफ निकलना ये पित्तकासके लक्षणहैं॥ खुजरी,कफसे देह जकड़ना ये कफकासके लक्षणहैं॥ और वातसे करेजेमें घाव से सूखी खासीकेपीछे रक्तआना,पसुरीपीडाये क्षतकासके लक्षणहैं॥ धातु क्षयसे कृश सर्वसन्धिपीड़ाकारिकै खासी उत्पन्न होतीहै यह धातु क्षयकालक्षणहै॥२

भिर्दोषैस्त्रयश्चतोचतुर्थस्सन्निपातेनपञ्चमःस्यादुरःक्षता
त् २१ शोषाःस्युःषट्प्रकारेणस्त्रीप्रसङ्गाच्छुचोव्रणात् । अ
ध्वश्रमाच्च्यायामाद्वार्द्धक्यादपिजायते २२ श्वासाश्च
पञ्चविज्ञेयाःक्षुद्रस्स्यात्तमकस्तथा । ऊर्ध्वश्वासोमहाश्वा
सश्छिन्नश्वासश्चपञ्चमः २३ कथिताःपञ्चहिक्कास्तुता
सुक्षुद्रान्नजातथा । गम्भीरायमलाचैवमहतीपञ्चमीत
था २४ चत्वारोग्निविकाराःस्युर्विषमोवातसम्भवः।तीक्ष्णः

पांचप्रकारकी क्षयीकहते हैं वातक्षय, पित्तक्षय, कफक्षय, सन्निपातक्षय, उरःक्षय इनका चरकके मतसे निदान कहताहूं भुजा कोखैं जलना, हाथ पावें जलना, ज्वर, व्यथा, कंठस्वर विपरीत, हाथ पावें गिराना, खांसी ये वातजक्षयके लक्षणहैं दाह होना, ज्वररहना, अतीसार, रक्तसहित मल गिरना यह पित्तक्षय के लक्षण हैं कोष्ठमें पीड़ाहोइ, कफगिरै, ज्वर होइ, खांसी यह कफक्षयके लक्षण हैं ज्वर रहै, खांसीरहै, अन्तर्दाहहोइ यह सन्निपातक्षय के लक्षण हैं कण्ठ घरघराना, ज्वर होना, खांसी आना, अग्निमन्द, दुर्गंधि सहित कफकी गांठिगिरै यह उरःक्षतक्षय के लक्षण हैं ॥ २१ ॥ शुष्करोग छःप्रकारका अतिमैथुनसे, शोचसे, क्षतसे, अति चलने से, अतिपरिश्रम से, अति बुढ़ापे से जब रसादिक सात धातु शरीर को सुखाती हैं ॥ २२ ॥ श्वास कहे (दमा) पांच प्रकारका है क्षयीश्वास, तमक श्वास, ऊर्ध्वश्वास, छिद्रश्वास, महाश्वास वायुकोप से ऊर्ध्वश्वास चढ़ती है देह में मंद पीर ये क्षयीश्वास साध्यलक्षण हैं कंठ घरघराना, पसुरी पीर, अतिदुःख से कफ निकलै, दमचढ़ै ये तमकश्वासके लक्षण हैं बहुत ऊंची श्वासखींचै उसे ऊर्ध्वश्वास कहते हैं घरघराके जोरसे श्वासआवै विह्वलहो खांसने की शक्ति न रहे उसे महाश्वास कहतेहैं हृदयमें जाड़ा, मूर्च्छा, प्रलाप (अतिबक) श्वास टूटना यह ऊर्ध्वश्वास असाध्यहै ॥ २३ ॥ हिक्काकहे हिचकी पांच प्रकारकी है क्षुद्रा, अन्नजा, गम्भीरा, यमला, महती जो बारबार वायु मंदवेग से ऊर्ध्वगमनकरै उसे क्षुद्रहिक्का कहते हैं विशेष खाने पीनेसे अन्नजा हिक्का होती है भारी शब्दसे हिचकी आवे उसे गंभीरा कहतेहैं रहि रहिके आवै उसे यमला कहते हैं देह कांपिके निरंतर हिचकी आवै तिसको महाहिक्का कहतेहैं ॥ २४ ॥ जठराग्नि के चार प्रकारके विकार हैं वातकोपसे हो उसे विषम कहतेहैं पित्तसेहो उसे तीक्ष्ण कहतेहैं कफसे हो उसे मन्दाग्नि कहते हैं वातपित्तसे हो उसे भस्माग्नि कहते हैं (अथलक्षण)

पित्तात्कफान्मन्दोभस्मकोवातपित्ततः २५पञ्चैवारोचका ज्ञेयावातपित्तकफैस्त्रिधा। सन्निपातान्मनस्तापाच्छर्दयःस प्तधामताः २६ त्रिभिर्दोषैःपृथक्त्रिःकृमिभिःसन्निपाततः। घृणायाश्चतथास्त्रीणांगर्भाधानाच्चजायते २७ स्वरभेदाः षडेवस्युर्वातपित्तकफैस्त्रयः। मेदसासन्निपातेनक्षयात्षष्ठः प्रकीर्तितः २८ तृष्णाचषड्विधाप्रोक्तावातात्पित्तात्कफाद् पि। त्रिदोषैरुपसर्गेणक्षयाद्धातोश्चषष्ठिका २९ मूर्च्छाच तुर्विधाज्ञेयावातपित्तकफैःपृथक्। चतुर्थीसन्निपातेनतथै कश्चभ्रमःस्मृतः। निद्रातन्द्राचसंन्यासोग्लानिश्चैकैक शःस्मृतः। क्षे०मदास्सप्तसमाख्यातावातपित्तकफैस्त्रयः।

जो अन्न कभी पचै कभी न पचै यह विषमाग्नि है व भोजनपर भोजनकरै उसे तीक्ष्णाग्नि कहते हे व थोडा भोजन करने से भी न पचै उसे मंदाग्नि कहते हैं जो वारनार भोजनकरै अन्नपचै और देहमें न लगै उसे भस्माग्नि कहते हैं ॥ २५ ॥ अरुचिके पांचभेदहैं वातसे,पित्तसे,कफसे,सन्निपातसे,संतापसे (लक्षण) दांतखट्टे, मुँहफीका, हृदयपीड़ा यह वातरोचक है मुँहकडुवा, स्वादहीन ये पित्त अरुचिहैं मुँह फीका व चिकना यह कफ अरुचि है तीनों लक्षणहों तो सन्निपात अरुचि है मन संतापहो तिसमें जो दोष अधिकहो वही लक्षण जानो छर्दिकहे वमन सो सातप्रकारका है ॥ २६ ॥ या छर्दि कहे वार २ उलांत वातछर्दि, पित्त छर्दि, कफछर्दि, सन्निछर्दि, कृमिछर्दि व घृणाछर्दि तथा स्त्रीके गर्भधारण समय सातवीं छर्दि होतीहै (अथ लक्षण) हृदय मस्तक पीडा मुखसूखै नाभि शूल उवाकी फेनयुक्त डकार देह पीत ये वातछर्दि, उबकाई पीत हरित दाहयुक्त ये पित्तछर्दि, कफ संयुक्त उपकाईहो सो कफछर्दि जो उबकाई खट्टी नीली लाल दाहयुक्तहो तो सन्निछर्दि, जो निरंतर जीमिचलाय विशेष थूंकै तो कृमिछर्दि जो कुवस्तु देखकै कुछ घृणितहै तो घृणाछर्दि कहै अन्य ग्रंथकारका मतहै कि स्त्रीकी जैसी पित्त प्रकृतिहो उतनी छर्दिहो ॥ २७ ॥ स्वरभेद छःप्रकारका है वातस्वर पित्तस्वर कफस्वर गलेमें विशेष भेदसे सन्निसे व धातुक्षयसे ॥ २८ ॥ तृषा छः प्रकारकी है वातज, पित्तज, कफज, त्रिदोषज घावलगे से, धातुक्षयसे ॥ २९ ॥ मूर्च्छा चार प्रकारकी है वातमूर्च्छा पित्तमूर्च्छा कफमूर्च्छा सन्निपातमूर्च्छा (लक्ष-

त्रिदोषैरसृजोमद्याद्विषादपिचसप्तमः ३० मदात्ययश्च तुर्धास्याद्वातात्पित्तात्कफादपि । त्रिदोषैरपिविज्ञेयएकः परमदस्तथा ३१ पानाजीर्णतथैवैकंतथैकःपानविभ्रमः। पानात्ययस्तथाचैकोदाहास्सप्तमतास्तथा ३२ रक्तपित्ता त्तथारक्तात्तृष्णायाःपित्ततस्तथा । धातुक्षयान्मर्मघाता द्रक्तपूर्णोदरादपि ३३ उन्मादाःषट्समाख्यातास्त्रिभिर्दोषैश्चयश्चते । सन्निपाताद्विषाज्ज्ञेयः षष्ठोदुःखेनचेतसः ३४ भूतोन्मादाविंशतिःस्युस्तेदेवाद्दानवादपि। गन्धर्वा त्किन्नराद्यक्षात्पितृभ्योगुरुशापतः ३५ प्रेताच्चगुह्यकाद्वृ

क्षणं) संज्ञा कहे चेष्टाकी बहानेवाली जो नाड़ी सो वातादिक से रुधिरहोके अकस्मात् तमोगुणको माप्तहो तमोगुण कहे दुःख सुखका तिरस्कार करनेवाला काष्ठवत् भूमिपर गिरादेताहै उसे मूर्च्छा कहतेहैं और भ्रम एक प्रकारका (तिसका लक्षण) संदेह सहित घुमेर आना निद्रा एक प्रकारकी है तन्द्रा एक प्रकारकी है (लक्षण) कुछ जगै कुछ सोवै संन्यास एक प्रकार का (लक्षण) हाथ पाँव चलैं नहीं मृतक समान पड़ारहै उसे संन्यास कहतेहैं संन्यासरोगमें बहुत जल्दी प्रयत्न करै तो मनुष्य तुरत मरजाइ इससे हाथ पाँवकी कलाई में सूचीछेद रुधिर निकालै मस्तक में फस्तदे रुधिर निकालै तो जिये ग्लानि एक प्रकारकी है (सो०) मदरोग सात प्रकारका है वातमद, पित्तमद, कफमद, सन्निपातमद, रक्तके कोपसे अधिक मद्य सेवनेसे, विषखानेसे, कच्ची सुपारी खानेसे, कोदव खानेसे, धतूराखाने सेजैसे मद होताहै ऐसाही वातादिक कुपितहो मनको विभ्रम करते हैं उसे मदकहते हैं ॥ ३० ॥ मदात्ययरोग कहते हैं अतिमद से चार विधिके रोगहैं वातसे, पित्तसे, कफसे, त्रिदोषसे एक परममद कहतेहैं मनुष्यकी बुद्धिभ्रंशहो अनेक भांति चिह्न करै प्राण विकलरहै उसे मदात्यय कहते हैं ॥ ३१ ॥ पानाजीर्ण एक प्रकार एक पानविभ्रम एकप्रकार पानात्यय दाह सातप्रकारका है ॥ ३२ ॥ रक्तपित्तसे, प्याससे, पित्तसे, धातुक्षयसे, मर्मघातसे, मारखानेसे, हृदयमें रुधिर संचित होनेसे ॥ ३३ ॥ उन्माद रोग छःप्रकारका है वातोन्माद, पित्तोन्माद, कफोन्माद, विषसेवन से, शोकसे (लक्षण) गर्वबातादि दोष बढ़िके स्वमार्ग छोड़ि नाड़ीमार्गमें जाके चित्त को भ्रमकरें उसे उन्माद कहतेहैं तब हँसै रोवै नाचै कालाहोजाइ अजीर्ण वस्त्र त्याग बुद्धिस्मृति मांस भोजन में अरुचि ॥ ३४ ॥ भूतोन्मादरोग बीसतरहके हैं

द्धात्सिद्धाद्भूतात्पिशाचतः। जलाधिदेवतायाश्चनागाच्च
ह्मराक्षसात्।राक्षसादपिकूष्माण्डात्कृत्यवैतालयोरपि ३६
अपस्मारश्चतुर्धास्यात्समीरात्पित्ततस्तथा। श्लेष्मणोपि
तृतीयःस्याच्चतुर्थःसन्निपाततः ३७ चत्वारश्चामवाताः
स्युर्वातपित्तकफैस्त्रिधा । चतुर्थःसन्निपातेनशूलान्यष्टौतु
धाजगुः ३८ पृथग्दोषैस्त्रिधाद्वन्द्वभेदेनत्रिविधान्यपि ।

देवसे, दानव से, गंधर्व से, किन्नर से, यक्षसे, पितर से, गुरुशापसे ॥ ३५ ॥प्रेत से, गुह्यक से, वृद्ध और सिद्ध शापसे, भूतसे, पिशाच से, जलदेवता से, सर्पसे, ब्रह्मराक्षस से, राक्षस से, कूष्मांड से, कर्त्तव्य से (लक्षण) संतुष्ट, पवित्रता, सुगंध माला धारण, संस्कृत भाषा ये देवोन्माद–ब्राह्मण, गुरु, देवताकी निंदा, निर्भय ये गंधर्वोन्माद–किन्नर, गंधर्व, आपको जाने, लाल आंखि, मलिन, रक्त वस्त्रप्रिय, दंभ, पितृक्रियारहित, मांस, तिल, गुड़पर विशेष इच्छा करै ये पितृ उन्माद गुरुशाप से गुरुशापोन्माद वृद्ध सिद्ध गुरुवत् भूत प्रेत गुह्यक बुद्धि अनुमानें से जानो ऊर्ध्व वायु होय बड़बड़ाय अमंगल भाषै दुर्गंधयुक्त रहै तो पिशाचोन्मादी जानो जलधि, देवता, श्मशान देववत् जो ओंठ भोजनमें गाइ जीभ्से चाटै तो सर्पोन्माद है देव, गुरु, वेद, शास्त्र व ब्राह्मण को निंदै तौ ब्रह्मराक्षसोन्माद जानो मद मांस विषयातुर निर्लज्जा यह राक्षसोन्माद है अरु अनुमान से जानना ॥ ३६ ॥ अपस्मार कहे (मृगी) के चार भेद हैं वातज, पित्तज, कफज, त्रिदोषज (लक्षण) तनकंप, दांतकड़कड़ाना, श्वासथरथराना यह वातापस्मार है जो मुखसे फेन पीला उगलै सो पित्तापस्मार है हाथ पांव थरथराना देह सफेद और ठंढी हो तो कफापस्मार है तीनों दोपलक्षण मिलें, तो सन्निपातापस्मार है असाध्य जानना ॥ ३७ ॥ आमवात चार प्रकार का है वातज, पित्तज, कफज, त्रिदोषज वातादि दोष कोप करके जठराग्नि को मंदकरै तो भोजन अपक्व रहै सो आंव होजाय तिससे देहमें पीर ज्वर अरुचि गात्र अकड़े सूतै सामान्य लक्षण हैं जिस में देह पीड़ा विशेष हो तो वातज है दाहहो तो पित्तसे पित्तज कफसे आमवात है देह अकड़ जाय खुजली हो तो कफ आमवात है तीनों लक्षणहों तो सन्निपातामवात है शूलके आठ भेद हैं ॥ ३८ ॥ वातसे, पित्तसे, कफसे, वात पित्तसे, पित्तकफसे, कफवात से, आंवसे, सन्निपात से इसका मुख्य कारण वायु है सो सूखी रूखी द्रव्य सेवनसे कुपितहोय हृदय पसुरी संधिनमें पीडै शूल उपजाती

आमेनसप्तमंप्रोक्तं सन्निपातेनचाष्टमम् ३९ परिणामभवं
शूलमष्टधापरिकीर्त्तितम् । मलैर्यैःशूलसङ्ख्यास्यात्तैरेवंप
रिणामजम् । अन्नद्रवभवंशूलंजरत्पित्तभवंतथा ४० एकैकङ्ग
णितंसुज्ञैरुदावर्तास्त्रयोदश । एकःक्षुन्निग्रहात्प्रोक्तस्तृष्णा
रोधाद्द्वितीयकः ४१ निद्राघातात्तृतीयःस्याच्चतुर्थःश्वास
निग्रहात् । मूत्ररोधात्पञ्चमःस्यात्षष्ठःक्षवथुनिग्रहात् ४२
जृम्भारोधात्सप्तमःस्यादुद्गारग्रहतोष्टमः । नवमःस्यादश्रु
रोधाद्दशमःशुक्रधारणात् ४३ मूत्ररोधान्मलस्यापिरोधा

द्वातविनिग्रहात् उदावर्त्तास्त्रयश्चैते घोरोपद्रवकारकाः ४४ आनाहो द्विविधो ज्ञेय एकः पक्वाशयोद्भवः । आमाशयोद्भवश्चान्यः प्रत्यानाहस्स कथ्यते ४५ उरोग्रहस्तथा चैको हृद्रोगाः पञ्च कीर्त्तिताः । वातादयस्त्रयः प्रोक्ताश्चतुर्थः सन्निपाततः ४६ पञ्चमः कृमिसञ्जातस्तथाष्टावुदराणि च । वातात्पित्तात्कफात्त्रीणि त्रिदोषेभ्यो जलादपि । प्लीह्नः क्षता द्बद्धगुदादष्टमं परिकीर्त्तितम् ४७ गुल्मास्त्वष्टौ समा

निरोध से डकार विशेष मरोर होना पेट फूलना १२ वायुनिरोध से नानाप्रकार के उदर रोग १३ ॥ ४४ ॥ आनाह रोग दो तरह का होताहै एक जो पक्वाशय का होके पेट फुलाताहै उसे आनाह कहते हैं एक आमाशय से होताहै उसे प्रत्यानाह कहते हैं (तस्यलक्षणम्) कटिमें पीडा, मलस्तंभ, आलस्य, पेट फूलना ये आनाहके लक्षण हैं आमाशय में शूल, मुख से लार, डकार यह प्रत्यानाह है ॥ ४५ ॥ उरोग्रह एकप्रकारका है रक्त, मांस, प्लीहा और यकृत् इन सबों के बढ़ने से उरोग्रह होताहै हृद्रोग पांचप्रकारके हैं वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज, कृमिज ५ हृदयमें सुईसी चुभना, दण्डसे कुचना, कुल्हाडी से फारना, आरीसे चीरना ऐसा दर्दहो तो वातज है हृदय में ग्लानि, मूर्च्छा, मुखशोष, डकार ये पित्तजहैं देह भारी, खासी, अरुचि ये कफज हैं जो तीनों दोषके लक्षणहों तो हृदय में विशेष पीडाहो तो त्रिदोषजहै ॥ ४६ ॥ उबकाई, शूल, मुखमें लार, थुकथुकी ये कृमिज लक्षणहैं उदररोग आठ भांतिके हैं वातोदर, पित्तोदर, कफोदर, त्रिदोषोदर, जलोदर, प्लीहोदर, क्षतोदर, बद्धगुदोदर (अस्यलक्षणम्) हाथ, पांव, नाभि व कोखमें शोथ संधिपीडा, पेटशूल, पेट गुडगुडाना ये वातोदर हैं ज्वर, मूर्च्छा, दाह, खुजली, अतीसार, शरीर पीत वा ताम्र ये पित्तोदर हैं शरीर ग्लानि, निद्रा, देहगुरु, खासी अरुचि, श्वास यह कफोदर है विवेकशून्य, दुर्बुद्धि, नख, केश, मूत्र, मल स्त्री लोभवश्यहेतु पुरुषको खिलादेती तिससे त्रयदोष कुपित होताहै मूर्च्छा, मोह, पाण्डुवर्ण शरीर दुर्बल, तृषातुर यह त्रिदोष है पेट चिकना, फली नहीं दीखै, प्यास अधिक, देहकृश यह जलोदर है पेटकडा, कोखें कृश, मंदज्वर, पेट पत्थर सदृश पाण्डुवर्ण ये प्लीहोदर हैं पेट और नाभिके मध्यमें पीडा, अतिदेहकृश, मल पित्तसा पानीसा मिला गिरै वा लार दिखाजाय यह क्षतोदर है जो मल रुकाहुआ अतिकष्ट से थोडा थोडा कालके गिरै यह बद्धगुदोदर लक्षण है ॥ ४७ ॥ गुल्म आठ प्रकारका है वात

ख्याता वातपित्तकफैस्त्रयः । द्वन्द्वभेदात्त्रयः प्रोक्ताः सप्तमः सन्निपाततः ४८ रक्तादष्टमकः ख्यातो मूत्रघातास्त्रयोदश । वातकुण्डलिकापूर्वं वाताष्ठीला ततः परम् ४९ वातबस्तिस्तृतीयः स्यान्मूत्रातीतश्चतुर्थकः । पञ्चमं मूत्रजठरं षष्ठो मूत्रक्षयः स्मृतः ५० मूत्रोत्सर्गः सप्तमः स्यान्मूत्रग्रन्थिस्तथाष्टमः । मूत्रशुक्रं च नवमं विड्घातो दशमः स्मृतः ५१ मूत्रासादश्चोष्णवातो बस्तिकुण्डलिका तथा । त्रयोप्येते मूत्रघाताः पृथग्घोराः प्रकीर्तिताः ५२ मूत्रकृच्छ्राणि चाष्टौ स्युर्वातात्पित्तात्कफात्त्रिधा ५३ सन्निपाताच्चतुर्थः स्यान्मू

गुल्म, पित्तगुल्म, कफगुल्म, वातपित्तगुल्म, कफवातगुल्म, त्रिदोषगुल्म, रक्तगुल्म, वातादि कोप करि पेट में गाठि सा गुल्म पाच तरहके उत्पन्न करता है दो दोनों पार्श्व में एक नाभिमें एक हृदय में एक, पेडूमें होताहै कभी चलके और ठौर पीड़ा करै कभी कभी कहीं अडकै पीडाकरै मूत्रघात तेरह प्रकार का होता है वातकुंडलिका, वाताष्ठीला ॥ ४८ । ४९ ॥ वातबस्ति, मूत्रातीत, मूत्रजठर, मूत्रक्षय ॥ ५० ॥ मूत्रोत्सर्ग, मूत्रग्रन्थि, मूत्रशुक्र, विड्घात ॥ ५१ ॥ मूत्रासाद, उष्णवात, बस्तिकुण्डलिका इस में से तीन मूत्रघात, उष्णवात, बस्तिकुण्डलिका ये प्राणसकट उपद्रव करतेहैं (लक्षणं) चिनगहोके थोडा २ मूत्रस्राव हो जो वातकुंडलिका है अति पीड़ाहो मलमूत्र बन्द रहै सो वाताष्ठीला जानो पेडू, कोष्ठमें अधिक पीड़ाहो और मल मूत्र बन्द रहै तौ वातबस्तिहै जो मूत्र रुका बनी रहै उतरै नहीं तौ मूत्रातीत है पेडू फूलै पीडाकरै मूत्र न द्रवै तौ मूत्रजठरहै शूलदाह हो मूत्र न गिरे तो मूत्रक्षय है चिनगहो कांखनेसे रक्तसमै थोडा २ मूत्रद्रावहो तौ मूत्रोत्सर्ग है मूत्राशयके मुँह पर गाठिपर पीडाकरै तौ मूत्रग्रंथिहै जो मूत्रत्यागके आदि वा अन्त मूत्र रातधोवन सा गिरै तो मूत्रशुक्र जानो मूत्रमें मलकी गंधहो तौ विड्घात जानो जो दाहयुक्त गोरोचन शंखचूर्ण के रंग मूत्रहोके सूखनेपर जिस दोषकी रंगत होजाय तौ उसी दोषको मूत्रसाद जानो जो मूत्र पीला या शुद्ध या रक्त या खारकष्टसे थोडा गिरै तो उष्ण वात जानो जो मूत्रकी थैली के मुखपर सूजनहो, धीरे २ पीला या लालमूत्र गिरै ये बस्तिकुडलिका के लक्षणहैं ॥ ५२ ॥ मूत्रकृच्छ्रके आठभेद है वातमूत्रकृच्छ्र पित्तकृच्छ्र कफकृच्छ्र ॥ ५३ ॥ सन्निकृच्छ्र शुक्रकृच्छ्र विट्कृच्छ्र अश्मरीकृच्छ्र ये आठ

त्रकृच्छ्रञ्चपञ्चमम् । विट्कृच्छ्रंषष्ठमाख्यातंघातकृच्छ्रंच सप्तमम् ५४ अष्टमंचाश्मरीकृच्छ्रंचतुर्धाचाश्मरीमता । वातात्पित्तात्कफाच्छुक्रात्तथामेहाश्चविंशतिः ५५ इक्षुमेहस्सुरामेहः पिष्टमेहश्चसान्द्रकः ५६ शुक्रमेहोदकाख्यौचलालमेहश्चशीतकः । सिकताख्यःशनैर्मेहोदशैते कफसम्भवाः ५७ मञ्जिष्ठाख्योहरिद्राख्योर्नीलमेहश्चरक्तकः । कृष्णमेहःक्षारमेहःषडेतेपित्तसम्भवाः ॥ हस्तिमेहोवसामेहो मज्जामेहोमधुप्रभः । चत्वारोवातजामेहाइतिमेहाश्चविंशतिः ५८ सोमरोगस्तथाचैकःप्रमेहपिट

हैं (अथैषांलक्षणम्)पेड़ू नाभि पीडा अधिक कांखरथोड़ा२ मूत्रहो तो वातकृच्छ्र है दाह चिनगहो लाल मूत्र द्रवै तौ पित्तकृच्छ्रहै पेड़ू भारी मूत्रस्वेद चिकना हो तो कफकृच्छ्र है तीनों के लक्षण हों तो सन्निपातकृच्छ्र है सो असाध्य जानो मूत्र धातु मिश्रित क्लेशसे उतरै तो शुक्रकृच्छ्र है जो कांखने से मूत्रद्रवै तो विट्कृच्छ्र है घावकी तरह श्वेत निश्चय हो और छरेछरापके मूत्रद्रावकै मूत्रद्रावहोय तौ घातकृच्छ्रहै पेड़ू या इंडीमें पीड़ा और शूलहो तौ अश्मरी कहिये ॥५४॥ अश्मरी कहे पथरीके चारभेदहैं वाताश्मरी, पित्ताश्मरी, कफाश्मरी शुक्राश्मरी (अथास्यालक्षणम्)वात पित्त कोपकरि मूत्रकी थैली के मुँहपर रसको सुखाय पथरीसी स्थिर करते हैं वही पथरी है पेड़ू और इंडीको फाडने लगती है मूत्र नहीं उतरता जब कांखने से पथरी कुछ हटती है तब दश बीस बूंद मूत्रगिरता है तौ वातपथरी है जो उष्णमलसा रा गले दाहके कनकेसे वा काली पथरीहो तो पित्ताश्मरी है पेड़ू भारी मूत्र श्वेत ठंढा कष्टसे हो तौ कफाश्मरी जानौ जब धातु सूखके पथरी परती है तब पेड़ूमेंपीर अंडकोश में सूजन ये शुक्राश्मरी के लक्षण हैं प्रमेहरोग बीस प्रकारका है ॥ ५५ ॥ इक्षुमेह, सुरामेह, पिष्टमेह, सांद्रमेह ॥ ५६ ॥ वा शुक्रमेह, उदकमेह, लालमेह, सिकतामेह, शनैर्मेह ये दश भेद कफसंभव हैं ॥ ५७ ॥ मंजिष्ठामेह हरिद्रा० नील० रक्त०कृष्ण० क्षारमेह ये छः पित्तसंभव है हस्तिमेह, वसामेह, मज्जामेह, मधुमेह ये चारि वातसंभवहैं सब मिलि के बीस प्रकार के हैं (अथास्यलक्षणम्) जो मूत्रमार्ग से ऊखरससा शुक्रगिरै तौ इक्षुमेह जानौ जिसमें मद गंध आवै वह सुरामेह जानौ पीठीसा गिरे तौ पिष्टमेह जानो जो

कादश। शराविकाकच्छपिका पुत्रिणीविनतालजी ५९
मसूरिकासर्षपिकाजालिनीचविदारिका। विद्रधिश्चदशै
ताःस्युःपिटकामेहसम्भवाः ६० मेदोदोषस्तथाचैकः शो
थरोगानवस्मृताः। दोषैःपृथग्द्वैस्सर्वैरभिघाताद्विषाद्

पि ६१ वृद्धयस्तसप्तगदितावातात्पित्तात्कफेनच । रक्तेन मेदसामूत्रादन्त्रवृद्धिश्चसप्तमः ६२ अण्डवृद्धिस्तथाचे क्तातथैकागण्डमालिका । गण्डापचीतिचैकास्याद्ग्रंथ

हो, अरुचि अग्निमन्द रातिमें पिराय ये कफशोथ हैं वातपित्त लक्षण होयतो वात पित्त पित्तकफ लक्षण हो तो पित्त कफ, जो कफवातलक्षण हो तो कफवातशोथ जो त्रिदोष लक्षण हो तो सन्निपात शोथ किसीभांति क्षतलगे सूजनहो तो अभिघात शोथ जानो विषधर जीवके दांत, डंक, पूंछ, पंजा, नख व दंष्ट्रा से क्षतहो सूजै तो विषशोथ जानो ॥ ६१ ॥ अंडवृद्धि वृषणफूलना उसे वृद्धकहते हैं तिसके सात भेद हैं वातवृद्ध, पित्तवृद्ध, कफवृद्ध, रक्तवृद्ध, मूत्रवृद्ध, आंतवृद्ध ये सातप्रकार हैं (अस्यान्लक्षणम्) जब वायु अंडकोशमें भरिके पीड़ा उत्पन्न करतीहै और रुखाई छायलेती है तो वातवृद्धहै जो पके गूलरके रंग दाहयुक्त पके फोड़े की नाई उष्ण हो तो पित्तवृद्ध जानो ठरहा भारी चिकना कठोर खुजलाय तुच्छ पीडाहो तो कफ अंडवृद्धि जानो जो कालेरंगकी फुडिया सहित पित्त लक्षण हों तो रक्तांडवृद्ध जानो जो तालफल से नीलगोल हों तो मेदवृद्ध है और एक अन्योक्त अंडवृद्ध को मांसवृद्ध कहते हैं उसका निदान यह है कि मूत्रवेग के रोके से दोनों ओरकी गोली फूलजाती है जब मूत्र रुकजाता है तब धीरे २ दोनों कौड़ीन में हलाइ २ पचता फिर वायुकोप से उतरिकै पीड़ा करताहै फूलताहै उसे मूत्रवृद्धि कहते हैं जो वायुके कोपसे नस अंडकोश में लटक आती है जब वह नस फिर वायुकोप पाइकै फूलती है उसमें आंत उतर आती है उसे अंत्रवृद्धि कहते हैं वह दबाने से फिर ऊपर चढ़िजाती है ॥ ६२ ॥ अंडवृद्धि कहे गलगंड गलेकी सन्धिन में अंडेसी गांठें फूलके बड़ी होरहें पीड़ से अंडवृद्ध एक प्रकारके हैं गंडमाला एकही प्रकारकी है गले में माला की नाई फोड़े होके पकें फूटें उसे गण्डमाला कहते हैं गलगंड एक प्रकार का है जिसे घेघा कहते हैं अपची एक प्रकारकी है गण्डमाला की नाई गांठें पकें फूटें वहै एक अच्छा होने न पावे दूसरा और हो उसे अपची कहते हैं और चरक में गले के छत्तीस तरह के रोग और कहे हैं ग्रन्थि कहे गांठिकी तरह नवभांति की होती हैं जिसे बतोरी कहते हैं वातग्रन्थि, पित्तग्रन्थि, रक्तग्रन्थि, शिरग्रंथि, व्रणग्रंथि, अस्थिग्रंथि, मांसग्रंथि ये नव प्रकार के ग्रंथिरोग हैं (अभास्य लक्षणम्) जो गांठि जूता के आकार हो भिलकि चिलकि उठे छूने से कठोर पिराय और भरन हो सरल के आकार हो रक्त बहे तो वातग्रंथि जानो जो ग्रंथि दाह

योनवधामताः ६३ त्रिभिर्दोषैस्त्रयोरक्ताच्छिराभिर्मेदसोव्र
णात्। अस्थ्नामांसेननवमःषड्विधंस्यात्तथार्बुदम् ६४वा
तात्पित्तात्कफाद्रक्तान्मांसाद्वापिचमेदसः। श्लीपदंचत्रि
धाप्रोक्तंवातात्पित्तात्कफादपि ६५ विद्रधिषड्विधःस्या
त्तोवातपित्तकफैस्त्रयः।रक्तात्क्षतात्त्रिदोषैश्चव्रणाःपञ्चद

करे फफोलेकीनाई भलाय और पकै नहीं कालान्तह रहै तौ वित्तग्रथिजानौ जो गाठि ठंढीहो कुछ पीडाकरे खुजली होय कठोर बहुत होय दिन में बढे पके से पीवदेइ तौ कफग्रथिजानौ जिसमें पित्तग्रथि के लक्षणहों रक्तवर्ण विशेषहोय रक्तग्रन्थिजानौ वटियासीहो-तौ शिराजग्रन्थि जानौ दबाने से इधर उधर टरै ऊंचीहो और मर्म स्थान में हो तौ असाध्य मेदग्रंथिजानौ जो हाड बढके हाडमें सट जाय और ग्रन्थि निकलआवै व पत्थरसी पीडाहो तौ हाडग्रथिजानौ सो भी असाध्य है जो गाठ कावै तो अच्छी हो जो मास से होती है उसे मासग्रथि कहते ह जो घावपरिकै ऊपर मासबढि कै गाठिउभरै उसे व्रणग्रन्थि कहते हैं कोई मासवृद्ध कहते है ॥ ६३॥ अर्बुद रोग छःप्रकारकाहै *वातार्बुद, पित्तार्बुद, कफार्बुद, मासार्बुद, मेदोर्बुद, रक्तार्बुद* जो प्रथमग्रंथि के लक्षण लिखआये हैं वैसेही हैं रक्तार्बुद और मासार्बुद ये कठिन हैं इन के लक्षण भिन्न २ कहताहू जो मास पिंडसाहो लालरग पकफूटकै अतिदु॰खदेताहै उसे रक्तार्बुद कहते हैं मास दुष्टहोके मास पीकुमार रादकी नाईहो चिकना लाल अतिकठिनता से पकै फूटकै हमेशह बहाकरै जल्दी अच्छा न हो जो मर्मस्थानमें हो तौ असाध्यहै और जगह साध्यहै यह मासार्बुदहै ॥ ६४ ॥ श्लीपद कहै फीलपाव सो तीनि भातिके हैं वातसे पित्तसे कफसे (अस्य लक्षणम्) जाघ के जोडकी सन्धिमें प्रथम छोटी गिलटी उभर के पीडा करती है फिर कुछ दिना में सब जोड की नसें तनजाती हैं चलने से समझ पडताहै फिर धीरे धीरे रुधिर सहित पीडा उतरिके पैरसे गाठितक फूलता है उसे फीलपाव कहते हैं और हाथमेंतथा अंग में भी होताहै तराई की भूमि में अधिक होताहै वातजमेंपीडा पित्तज में दाह कफजम चिकनी शोथ मद पीर ॥ ६५ ॥ विद्रधी छःप्रकारकी है वातज, पित्तज, कफज, रक्तज, क्षतज, त्रिदोषज ये छः विद्रधी है (*अथास्य लक्षणम्*) जो लाल वा पीली व नुकीली अतिपिटका युक्तहो तौ वातविद्रधी है जो दाहयुक्त लालहो तौ पित्तविद्रधी जो दीपकसी पाडुवर्ण पककै काली परजाय तौ कफविद्रधी रक्त विद्रधी के पित्तसम लक्षणहैं जो किसी भांति घाव संचरीहो तौ पित्तविद्रधी है

शोदिताः ६६ तेषांचतुर्द्धाभेदस्स्यादागन्तुर्देहजस्तथा। शुद्धोदुष्टश्चविज्ञेयस्ततसङ्ख्याकथ्यतेपृथक्। वातव्रणः पित्तजश्चकफजोरक्तजोव्रणः ६७वातपित्तभवश्चान्योवा तश्लेष्मभवस्तथा। तथापित्तकफाभ्यांचसन्निपातेनचाष्ट मः। नवमोवातरक्तेनदशमोरक्तपित्ततः ६८ श्लेश्मरक्त भवश्चान्योवातपित्तासृगुद्भवः। वातश्लेष्मासृगुत्पन्नःपि त्तश्लेष्मास्रसम्भवः। सन्निपातासृगुद्भूतइतिपञ्चदशव्र णाः६९सद्योव्रणस्त्वष्टधास्यादवक्लृप्तविलम्बिनौ।छिन्न भिन्नप्रचलिताघृष्टविद्धनिपातिताः७० कोष्ठभेदोद्विधाप्रो क्तश्छिन्नान्त्रोनिःसृतान्त्रिकः।अस्थिभङ्गोष्टधाप्रोक्तोभग्न

जिस में दाह, ज्वर, खुजली और विविध उपद्रवहों तौ त्रिदोषविद्रधी जानौ व्रण कहे पिटका फोडा सो पंद्रह प्रकारके हैं ॥ ६६ ॥ तिनमें भी चारभेद हैं आगंतुक, देहज, शुद्ध, दुष्ट तिसकी संख्या वातज, पित्तज, कफज, रक्तज ॥ ६७ ॥ वातज पित्तज, वातकफज, पित्तकफज, सन्निपातज, वातरक्तज, रक्तपित्तज ॥ ६८ ॥ कफ रक्तज, वातपित्तरक्तज, वातकफरक्तज, पित्तकफरक्तज, सन्निपातरक्तज (अथास्य लक्षणम्) जो चोट चपेट लगने से पके फूटे उसे आगंतुक व्रण कहते हैं वाता दिकके कोपसे हो उसे देहज कहते हैं जो जीभ के रंगहो छोटा या बड़ा चिकना पीड़ा न करै न पकै फूटै न कड़ाहो वह शुद्धव्रणहै जो दुर्गंध युक्त हमेशह ऊपर कठोर भीतर पुलपुला उसे दुष्टव्रण कहते हैं ॥ ६९ ॥ सद्योव्रण कहे आगंतुकव्रण सो आठ प्रकारकाहै अवक्लृप्त, विलंबिन, छिन्न, भिन्न, प्रचलित, घृष्ट, विद्ध, निपातित (अथास्य सामान्यलक्षणम्) नानाप्रकारके जो शस्त्र हैं तिनकी धारसे कटे या मुद्गरादिकी चोटसे घावहो या उदहल रक्त जमके पकै फूटै उसे आगंतुकव्रण कहते हैं ॥ ७० ॥ कोष्ठभेद कहे उदरक्षत लगना दो भांतिका है एक छिन्नांत्रक दूसरा निःसृतांत्रक पेटमें क्षत लगने से आंत कटिके बाहर निकरै सो छिन्नांत्रक है और जो बाहर निकरि परै वा बिना टूटे बाहर निकरै तिसे निःसृतांत्रक कहते हैं अस्थिभंग कहे हाड़ टूटना सो आठ भांतिका है भग्नपृष्ठ, विदारित, विवर्तित, विश्लिष्ट, तिर्यक्, अधोगत, ऊर्ध्वगत, संधिभंग (अथास्य लक्षणम्) जो हाड़ से हाड़ रगड़ खाय संधि पर सूजनहो पीड़ा करै तो भग्नपृष्ठ है जो संधि

पृष्ठविदारिते । विवर्तिश्चविश्लिष्टश्चतिर्यक्क्षिप्तस्त्वधोगतः।ऊर्ध्वगस्सन्धिभङ्गश्चैववह्निदग्धश्चतुर्विधः ७१ प्लुष्टोतिदग्धोदुर्दग्धःसम्यग्दग्धःप्रकीर्तितः ७२ नाड्यःपञ्चसमाख्यातावातपित्तकफैस्त्रिधा। त्रिदोषैरपिशल्येनतथाष्टौस्युर्भगन्दराः ७३ शतपोनस्तुपवनादुष्ट्रग्रीवश्चपित्ततः । परिस्रावीकफाज्ज्ञेयऋजुर्वातकफोद्भवः ७४ परिक्षेपीमरुत्पित्तादर्शोजःकफपित्ततः। आगन्तुजातश्चोन्मार्गीशङ्खावर्तस्त्रिदोषतः ७५ मेढ्रेपञ्चोपदंशास्स्युर्वातपित्त

चर्म फटिकै हाड़ निकरै तो विदारित है जो हाड़ बैठने में यथा स्थान न बैठे ऊपर नीचे होजाय उसे विवर्तित कहते हैं जो हाड़ हटनेसे सन्धि ढीली पै सूजन परिकै पीड़ाकरै तौ विश्लिष्ट जानौ हाड सरकना कहे हाड़की ठौर पलट जाना उसे तिर्यक् कहते हैं जो हाड अपने ठौरसे नीचेको सरक जाय तौ अधोगत कहिये जो ऊपर को सरकै तो उर्ध्वगत कहते हैं जो हाड टूटजाय उसे संधिभंग कहते है ॥ ७१ ॥ वह्निदग्ध चार प्रकार का है प्लुष्ट, अतिदग्ध, दुर्दग्ध, सम्यग्दग्ध ४ (अस्यलक्षणम्) जो अग्नि स्पर्श से त्वचा का रंग पलट जाय उसे प्लुष्ट कहते हैं जो चर्मजरिकै मास, नस व हाड़ टेरिपरे तो अतिदग्ध है जो देह जरि खाल उलट जाय दाह युक्त पीडाकरै तो दुर्दग्ध है जो सब देह जरि लुआठ समान होजाइ उसे सम्यग्दग्ध कहते हैं ॥ ७२ ॥ नाड़ीव्रण, पांच प्रकारका है वातनाड़ी, पित्तनाड़ी, कफनाड़ी, त्रिदोपनाड़ी, सन्निपातनाड़ी, (अथास्य लक्षणम्) व्रतसंबन्धी सूजन पकी वा कची को धोवे और शुद्ध न होइ वा व्रतके अंततक पाती न जाइ तौ बहुत पीड़ा करै और,बिल समान चमड़ेपर दीसै और भीतर नाड़ी कहे पुंगली सा सीधा या टेढ़ा वा लंबा हो और पीव देतारहै उसे नाड़ीव्रण नासूर कहते हैं शल्य एक प्रकार का है शल्य कहे शाल जो कील कांटा कांच चुभिकै रहिजाय तौ मांस पकादा नड़ [illegible] उसे शल्य नाड़ीव्रण कहते हैं ॥ ७३ ॥ भगंदर आठ प्रकारकाहै वायु से शतपोनक पित्तसे उष्ट्रग्रीव कफसे परिस्रावी वातकफ से ऋजु ॥ ७४ ॥ [illegible] से परिक्षेपी कफपित्त से अर्शोज आगंतु से उन्मार्गी त्रिदोषसे शंखावर्त (अथास्यलक्षणम्) गुदाके चारोंओर दो अंगुलतक जो फोड़ा [illegible] के भीतर ताईं छिद्र पर जाइ उसे भगंदर कहते हैं एक [illegible]

कफैस्त्रिधा । संनिपातेनरक्ताच्चमेढ्रेशूकामयास्तथा ७६ चतुर्विंशतिराख्यातालिङ्गार्शोग्रथितंतथा । निवृत्तमवमन्थश्चमृदितंशतपोनकः ७६ अष्ठीलिकासर्षपिकात्वक्पाकश्चावपाटिका । मांसपाकःस्पर्शहानिर्निरुद्धमणिरुद्धतः ७८ मांसार्बुदंपुष्करिकासम्मूढैःपिटकालजी । रक्तार्बुदंविद्रधिश्चकुम्भिकातिलकालकः । निरुद्धःप्रकशःप्रोक्तस्तथैवपरिवर्तिका ७९ कुष्ठान्यष्टदशोक्तानि वातात्कापालिकंभवेत् । पित्तेनौदुम्बरंप्रोक्तं कफान्मण्डलचर्चिके ८० मलापि

मलआताहै भगंदर एक भातिहो अनेकभाति पकिफूटिकै रहाकरताहै ॥ ७५ ॥ इन्द्रिय में पंच प्रकार का उपदंश होता है जिसे गरमी कहते हैं वातसे, पित्तसे, कफसे, त्रिदोषसे, रक्त से (अथास्य लक्षणम्) डंडी में क्षतलगै या कड़ेहाथ से या रोम टूटने से व रजस्वला प्रसंगसे होता है यह निदानका मतहै बुद्धि से यह समझपड़ता है कि यह रोग दुष्टयोनि के संयोगसे प्रथम डंडीमें घाव परिकै धीरे २ सब शरीर में घाव परजाते हैं ॥ ७६ ॥ इन्द्रियमें शूकजरोग चौबीस भातिका भी होता है यह अतिविषयाकांक्षी पुरुष स्थूलकरने को विषादि तीव्र औषध लगाते हैं तौ बालसमान सूक्ष्म समान सफेद किरौनासा होता है उसे शूक कहते हैं इसीके ये चौबीस भेद हैं लिंगार्श १ ग्रथित २ निवृत्त ३ अवमंथ ४ मृदित ५ शतपोनक ६ ॥ ७७ ॥ अष्टीलिका ७ सर्षपिका ८ त्वक्पाक ९ अव-पाटिका १० मासपाक ११ स्पर्शहानि १२ निरुद्धमणि १३ ॥ ७८ ॥ मांसार्बुद १४ पुष्करिका १५ संमूढपिटका १६ अलजी १७ रक्तार्बुद १८ विद्रधि १९ कुंभिका २० तिलकालक २१ निरुद्ध २२ प्रकश २३ परिवर्तिक २४ (अथास्यलक्षणम्) ये सबरोग इन्द्रिय पर होते हैं सो क्षुद्ररोग गिनेजाते हैं और और निदानमें कहते हैं कि ये रोग इन्द्रिय के मुखपर होते हैं मांसबढ़िकै कुंदरूकी तरह हो जाता है उस में फुंसी होती हैं और और भी अनेकप्रकारके उपद्रव संयुक्त होते हैं ॥ ७९ ॥ कुष्ठरोग अठारह प्रकारकाहै प्रथम वातजन्य कापालिक (लक्षणम्) कृष्णरंग या रक्तरंग माटी के खपरेकीनाईं रूखा खर्खरा चमड़ा पतला हो तौ कापालिक कहते हैं दूसरा औदुम्बर गूलरतुल्य दाहपीड़ा खुजलीयुक्तहो वह औदुम्बर कुष्ठ कहाताहै जो कुष्ठ सफेद चिकना चकत्तासाहो वह तीसरा कफजन्य मंडल-कुष्ठहै जो पाडु में काली कालीसी पिटकाहोकै फटफटकै वह खुजली करै वह चौथी

त्वादृक्षजिह्वंश्लेष्मवाताद्विपादिका। तथासिध्मैककुष्ठंचकिटिभंचालसंतथा ८१ कफपित्तात्पुनर्दद्रुःपामाविस्फोटकंतथा। महाकुष्ठंचचर्मदलंपुण्डरीकंशतारुकम् ८२ त्रिदोषैःकाकणंज्ञेयंतथान्यच्छ्वित्रसंज्ञकम्। तच्चवातेनपित्तेनश्लेष्मणाचत्रिधाभवेत् ८३ क्षुद्ररोगाःषष्टिसंख्यास्तेष्वादौशर्करार्बुदम्। इन्द्रवृद्धापनसिकाविवृतान्धालजीतथा ८४

विचर्चिका है ॥ ८० ॥ जो लालहो बीचमें काला पीड़ायुक्त व रीछकीसी जीभ सो वातपित्तजन्य ऋक्षजिह्वकुष्ठ पांचवां है जो गोड़के चन्द्र में पकिकै घाव परै या हाथकी हथेली में हो वह विपादिका छठवां कुष्ठ है जो सफेद ललाई लिये हो चमड़ा पतलाहो और उसमें भूटसा झरै वह सातवां सिध्मकुष्ठ है या छाती में होता है उसे सिहुवां कहते हैं कफ पित्त से उत्पन्नहै जो घाव होके काला परजाय वह कफवात जन्य है आठवां किटिभकुष्ठ है और जो लाल लाल पिटका होकै खुजआय वह अलसकुष्ठ नववां है ॥ ८१ ॥ जो श्याम चमड़ा होकै चिकना और नन्हीं पिटका संयुक्तहो और खुजलाय वह दशवां दद्रुकुष्ठ है उसे दाद भी कहते हैं जो देह में छोटी बड़ी पिटका पकिकै फूटें सहुआय एक अच्छी न हो और निकलै वह ग्यारहवां पामाकुष्ठ है और खुजली भी कहते हैं टेंटमें हो टेंटी कहते हैं कफ पित्त के जोर से सब देह लाल होके छोटी छोटी पिटका सब देह फोरिकै छालेकी नाईं निकलैं उसे विस्फोटक बारहवां कुष्ठ कहते हैं उसीको शीतला भी कहते हैं जो कुष्ठ शरीर की त्वचा को हाथी की खाल समान करदे और पसीना न निकरै वह तेरहवां महाकुष्ठ है उसे चर्मकुष्ठ और गजचर्म भी कहते हैं जो कुष्ठ लाल होकै पिराय सहुवाय के पिटकासा होजाय उसे चौदहवां कुष्ठ चर्मदल कहते हैं जो कुष्ठ कमलपत्र सम ऊंचा शरीरपर देख परै वह पुण्डरीक पन्द्रहवां कुष्ठ है जो कुष्ठ छोटा फोडा होकै बहुत छेद परजायँ वह शतारुक सोलहवां कुष्ठ है ॥ ८२ ॥ जो पकिके घाव काला होजाय अतिपीड़ा करै उसे काकणकुष्ठ कहते हैं यह सत्रहवां त्रिदोषजनित असाध्य है अठारहवां श्वित्रकुष्ठ सो कुष्ठ न फूटै सो त्रिदोष से तीनिप्रकारका श्वित्रकुष्ठ होता है जिसके हो उसे कोढ़ी कहते हैं वायु से रूखा और लाल चकत्तासा होता है पित्त मे ताम्रवर्ण दाहसहित चिकना होता है कफसे सफेद चकत्ता सघन कठोर होता है यह श्वेत कुष्ठ है ॥ ८३ ॥ या क्षुद्ररोग साठि प्रकार के हैं शर्करार्बुद १ इन्द्रवृद्धा २ पनसिका ३ विवृता ४

वाराहदंष्ट्रोवल्मीकंकच्छपीतिलकालकः। गर्दभीरकसा
चैवयवप्रख्याविदारिका ८५ कन्दरोमसकश्चैवनीलिका
जालगर्दभः। इरिवेल्लीजन्तुमणिर्गुदभ्रंशोग्निरोहिणी
८६ सन्निरुद्धगुदःकोठःकुनखोनुशयीतथा। पद्मिनी
कण्टकश्चिप्यमलसोमुखदूषिका ८७ कक्षावृषणकच्छूश्च
गन्धाःपाषाणगर्दभः। राजिकाचतथाव्यङ्गश्चतुर्धापरि
कीर्तितः ८८ वातात्पित्तात्कफाद्रक्तादित्युक्तंव्यङ्गलक्षण
म्। विस्फोटाःक्षुद्ररोगेषुनेऽष्टधापरिकीर्त्तिताः ८९ पृथग्दो
षैस्त्रयोद्वन्द्वैस्त्रिविधस्सप्तमोसृजः। अष्टमःसन्निपातेनक्षु
द्ररुक्षुमसूरिका ९० चतुर्दशप्रकारेणत्रिभिर्दोषैस्त्रिधाच
सा। द्वन्द्वजात्रिविधाप्रोक्तासन्निपातेनसप्तमी ९१ अष्ट
मीत्वग्गताज्ञेयानवमीरक्तजामता। दशमीमांसजाख्या

अंधालजी ५ ॥ ८४ ॥ वाराहदंष्ट्र ६ वल्मीक ७ कच्छपी ८ तिलकालक ९ गर्दभी १० रकसा ११ यवप्रख्या १२ विदारिका १३ ॥ ८५ ॥ कन्दर १४ मसक १५ नीलिका १६ जालगर्दभ १७ इरिवेल्ली १८ जंतुमणि १९ गुदभ्रंश २० अग्निरोहिणी २१ ॥ ८६ ॥ सन्निरुद्धगुद २२ कोठ २३ कुनख २४ अनुशयी २५ पद्मिनीकंटक २६ चिप्य २७ अलस २८ मुखदूषिका २९ ॥ ८७ ॥ कक्षा ३० वृषणकच्छु ३१ गंध ३२ पाषाणगर्दभ ३३ राजिका ३४ व्यंग कहे ताके चारि भेद हैं॥८८॥ वातज पित्तज कफज रक्तज ३८ विस्फोटक आठप्रकारका है परन्तु क्षुद्र रोगकी गिनती में है वातविस्फोटक, पित्तविस्फोटक, कफविस्फोटक, वातपित्त विस्फोटक, कफपित्तविस्फोटक, वातकफविस्फोटक, रक्तविस्फोटक, सन्निपात विस्फोटक॥८९॥ मसूरिकारोगभी क्षुद्रसंज्ञक है तिसके चौदहभेद हैं॥९०॥ वातम सूरिका, पित्तमसूरिका, कफमसूरिका, वातपित्तमसूरिका, कफपित्तमसूरिका, वातक फमसूरिका, त्रिदोषमसूरिका ॥ ९१ ॥ त्वचामसूरिका, मासमसूरिका इस से परे चार अतिकठिन हैं मेदमसूरिका, मज्जामसूरिका, अस्थिमसूरिका, धातुमसूरिका (अथास्य लक्षणम्) जो पिटका पकिके गाढा या पतला पानीसी बहै फिरि सूखि के त्वचा कठोरहो फटिके रुधिर बहै उसे शर्करार्बुद कहते हैं जो एक फुसी उठै उस

ताचतस्रोन्याश्चतुस्तरा।मेदोस्थिमज्जाशुक्रस्थाःक्षुद्ररो
गाइतीरिताः ९२ विसर्परोगानवधावातपित्तकफैस्त्रिधा।

के नीचे और छोटी २ बहुत फुंसी हों वह इन्द्रवृद्धहै जो पिटका कान के भीतरहो
उसे पनसिका कहते हैं जो गूलरसदृश हो घेरा अधिक बढ़ावै दाह विशेष करै
उसे विवृत्ता कहते हैं जिस फोड़ेका मुँह न देख परै अति ऊंचा अधिक घेर बांधै
वह अंधालजी है जो शरीर में गांठि सी कठिन उभरै बूढ़े दांतके रंगपीरहो ख-
जुआय वह वराहदंष्ट्रा है जो पिटका बुल्लासी होके बीच में खाली हो किनारे
मुँह करिके बढ़ै वह वल्मीक है जो पिटका बहुत कड़ी कटोरी की पेंदी समानहो
उस पिटकाको कच्छपिका कहते हैं जो देह में तिल समान हो देह से ऊंचा न हो
पीड़ा न करै उसे तिलकालक कहते हैं जो बटिया सम ऊंचीहो लालरंग उसमें और
पिटका निकलै पीड़ा करै वह गर्दभिका है जो फूल के पकै फूटै नहीं खजुरी हो
वह रकसाहै जो यव समान हो तौ यवप्रख्या है जो काख या छाती या अंड-
सन्धि में पताल में कोठा सी हो वह विदारिका है जो हाथ पाय में कांटा लगिकै
वसी ठौर गांठि परिरहिजाय उसे कदर कहते हैं गुल्लरूहै जो देहमें वरद सदृश नि-
कलिके रहिजाय पीड़ा न करै उसे मसक कहिये मस्साहै जो देहमें अनायास लाल
काली पड़जाय उभरै नहीं और कोई विकार न करै उसे नालिका कहते हैं लह-
सुनहै जो देह में सूजन होइके टेढ़ी मेढ़ी लम्बी सर्पाकार फूलिके नसजाल परि
जाइ और खाजहो अज्ञाय उसे जालगर्दभ कहते हैं जो बटियासी होतही अति
पीड़ा उत्पन्नकरै उसे वल्मिका कहते हैं जो देहमें देहके रंग ऊंचाहो पीड़ा न करै और
जन्मतेहो उसे जन्तुमणि कहते हैं और आचार्य चिह्न कहते हैं जिसके मलत्याग स-
मय कांच निकल आवै उसे गुदभ्रंश कहते हैं कांख कहे बगल में मास में जाला
समान होके फोड़ा होताहै अन्तर्दाह होके ज्वर आताहै सो दश पांच दिनमें म-
नुष्यको मारडालताहै वह अग्निरोहिणी है जिस रोग में मलमार्ग की वाईनस
रक्तको कोपकरिके मोटी परिके मलमार्गको संकीर्ण करै तो मल गाढ़ा और मोटा
बहुत क्लेश में गिरै वह सन्निरुद्ध गुद है कफ पित्त और रक्त के कोपकरिकै लाल
लाल चकत्ता शरीर में पड़ते हैं बहुत खजुरी करते हैं क्षण में होइ क्षण में मिटै
इसे रक्तपित्ती कहते हैं नख लगिके देहमें नकोटोजाइ उसे कुनख कहतेहैं जो पांय
में छोटी पिटका होके पकै फूटै सूजन हो सो अनुशयी है जो पीली बटिया हो
खजुआइ उसमें कांटा समान हो वह पद्मिनीकण्टकहै जो अंगियायके भालको
परै अथवा न तपकै फूटै उसके चेपलगे से उत्पन्न हो या आम्रादिक की चेप

त्रिधाचद्वन्द्वभेदेन सन्निपातेनसप्तमः। अष्टमोवह्निदाहेन नवमश्चाभिघातजः ९३ तथैकःश्लेष्मपित्ताभ्यामुदर्दःप रिकीर्त्तितः। वातपित्तेनचैकस्तुशीतपित्तामयःस्मृतः९४ अम्लपित्तंत्रिधाप्रोक्तं वातेनश्लेष्मणातथा। तृतीयंश्ले

लगे पकजाय उसे चिप्प कहते हैं जो पैर या हाथके गावाते पानी या खराब की चड़ या कोई विप या कोई विपमिश्रित माटी या विपधर कीट जन्तुके स्थानकी माटी या भल्लातादि वृक्षतरेकी माटी सड़िके स्पर्श से सड़िजाय और बहुत खजुरी करै उसे अलस कहते हैं खरवाहें और जो जवानीमें मुखपर काटे काटेसे बहुत होजाते हैं दोवने से खरखराते हैं और गड़ते हैं वह मुखदूपिकाहै लोग उसे मुहासा कहते हैं जो बगल में छोटी २ फुन्सिया परजाती हैं उसे कक्षा कहतेह जो गण्डकोशकी जड़पर छोटी २ पिड़का हों वह गर्दभ है जो शरीर में राई के समान फुन्सियां परजायँ उसे राजिका कहते हैं फुंदेया कहते हैं वायु पित्त कुपितहो मुँह परजाइ चमड़ा कालाकरै और पतलाकरै उसे व्यंगकहे झाई है और आठ विस्फोटक शीतला के भेदमें हैं सो क्षुद्ररोग की गनती में हैं और चौदह मसूरिकाये भी शीतला के भेद हैं क्षुद्रगनी हैं॥ ९२ ॥ विसर्परोगके नवभेद हैं वातविसर्प, पित्त विसर्प, कफविसर्प, वातपित्तवि०, कफवातवि०, कफपित्तवि०, सन्निपातवि०, अग्निदग्धवि०, ताड़नावि० (अथास्य लक्षणम्) जिसमें वातज्वरके लक्षण कंप विषम वेगादिक होकै सूजनहो और चमकशूल कोचनहो फूटै सो वातविसर्प है जिसमें कफज्वरके लक्षणहों और सूजन दाहयुक्त लाल रंगहो वह पित्त विसर्प है जिसमें कफज्वरके लक्षणहों और चिकनीहो सजुआय सो कफविसर्प है और द्वंद्वजमें जिन दो दोषोंके लक्षण मिलैं सोई द्वन्द्वजविसर्प जानौ जिसमें तीनों दोषके लक्षण हों वह सन्निपातविसर्पहै जो विसर्प आगिले जलनेसे हो उसके पित्तविसर्प के लक्षण होते हैं वह वह्निदाहविसर्प है जो घावलगे से हो वह अभिघात विसर्प है ॥ ९३ ॥ श्लेष्मवायु करिकै उदर्दरोग होताहै और वातपित्त करिकै शीतपित्त रोग होताहै कफवायुके कोपकरिकै शरीरमें लाल २ छोटे बड़े चकत्ते पड़ते हैं और बहुत खजुआतेह उसे उदर्द कहतेहैं जो वातपित्तके कोपकरिके होता तो पीड़ा अधिक खाज कम करता है उसे शीतपित्त कहते हैं और ज्वर उबकाई और दाहलक्षणआदि युक्तहोते हैं यह दोनों एकही भेदमें हैं॥९४॥ अम्लपित्तरोगके तीन भेद हैं पित्तज कफज, अम्ल पित्त और कफवातज अम्लपित्त ये विरुद्धभोजन ॥९५

ष्मवाताभ्यांवातरक्तंतथाष्टधा ९५ वाताधिक्येनपित्ताच्च कफाद्दोषत्रयेणचारक्ताधिक्येनदोषाणांद्वन्द्वेनत्रिविधःस्मृतः९६ अशीतिर्वातजारोगाःकथ्यन्तेमुनिभाषिताः।आक्षेपकोहनुस्तम्भऊरुस्तम्भशिरोग्रहः ९७ वाह्यायामोन्तरायामः पार्श्वशूलङ्कटिग्रहः। दण्डापतानकः खल्लीजिह्वास्तम्भस्तथार्दितः ९८ पक्षाघातःक्रोष्टुशीर्षमन्यास्तम्भश्चपङ्गुता।कलायखञ्जतातूनीप्रतितूनीचखञ्जता९९ पादहर्षोगृध्रसीच विश्वाचीचापबाहुकः। अपतानोव्रणायामो वातकण्ठोपतन्त्रकः १०० अङ्गभेदोङ्गशोषश्च मिन्मिनत्वञ्चगद्गदः। प्रत्यष्ठीलाऽष्ठीलिकाचवामनत्वञ्चकुब्जता १ अङ्गपीडाङ्गशूलञ्च सङ्कोचस्तम्भरूक्षताः। अङ्गभङ्गोङ्गविभ्रंशो विड्ग्रहोवद्धविट्कता २ मूकत्वमतिजृम्भास्यादत्युद्गारोन्त्रकूजनम्। वातप्रवृ

भोजन करने से होते हैं या वासी और जल अन्नके भोजन करनेसे पित्त कुपित होके खट्टीडकार लाता है और आहारका परिपाक अच्छीतरह नहीं होता उसे अम्लपित्त कहते हैं ॥ ९५ ॥ और वात पित्त आठ प्रकारकाहै जिस वात रक्तमें वायु विशेष है वह वातजवातरक्तहै जिसमें पित्त अधिकहै वह पित्तज वातरक्तहै और जिसमें कफ अधिक है वह कफज वातरक्तहै जो तीनों दोषके लक्षणहों तौ त्रिदोषज वातरक्त है जिसमें रक्त अधिकहो वह रक्तजवातरक्त है और तीनि द्वंद्व में जो दोष मिश्रितहो सो जानिये वातपित्तज वातकफज कफपित्तज ये आठप्रकारके वातरक्त हैं ॥ ९६ ॥ वातरोग अस्सीप्रकारके ऋषिलोग कहिगये हैं आक्षेपक, हनुस्तंभ, शिरोग्रह ॥ ९७ ॥ वाह्यायाम, अन्तरायाम, पार्श्वशूल, कटिग्रह, दंडापतानक, खल्ली, जिह्वास्तंभ, अर्दित ॥ ९८ ॥ पक्षाघात, क्रोष्टुशिरस, मन्यास्तंभ, पंगुता, कलायखंजता, तूनी, प्रतितूनी, खंजता ॥ ९९ ॥ पादहर्ष, गृध्रसी, विश्वाची, अपबाहुक, अपतान, व्रणायाम, वातकण्ठ, अपतंत्र ॥ १०० ॥ अंगभेद, अंगशोष, मिन्मिन, कृष्णता, प्रत्यष्ठीला, अष्ठीलिका, वामनत्व, कूबड ॥ १ ॥ अंगपीडा, अंगशूल, सकोच, स्तंभ, रूक्षता, अङ्गभङ्ग, अङ्गविभ्रंश, विड्ग्रह, वद्ध-

त्तिःस्फुरणं शिराणाम्पूरणन्तथा ३ कम्पःकार्श्यंश्यावता च प्रलापःक्षिप्रमूत्रता । निद्रानाशः स्वेदनाशो दुर्बलत्वं बलक्षयः ४ अतिप्रवृत्तिःशुक्रस्य कार्श्यंनाशश्चरेतसः । अनवस्थितचित्तत्वं काठिन्यंविरसास्यता । कषायवक्त्रताध्मानं प्रत्याध्मानंचशीतता ५ रोमहर्षश्चभीरुत्वं तोदकण्डूरसाज्ञता । शब्दाज्ञताप्रसुप्तिश्चगन्धाज्ञत्वं दृशःक्षयः ६ ॥ इति वातजरोगगणना ॥ अथ पित्तभवारोगाश्चत्वारिंशदिहोदिताः । धूमोद्गारोविदाहःस्यादुष्णाङ्गत्वंमतिभ्रमम् ७ कान्तिहानिःकण्ठशोषोमुख

विद्रकता ॥ २ ॥ मूकत्व, अतिजृंभा, अत्युद्गार, अंत्रकूजन, वातप्रवृत्तिस्फुरण, शिरापूरण ॥ ३ ॥ कंप,कार्श्य,श्यावता,प्रलाप,क्षिप्रमूत्र,निद्रानाश,स्वेदनाश, दुर्बलत्व,बलक्षय ॥४॥शुक्रातिप्रवृत्ति शुक्रकार्श्य,शुक्रनाश,अनवस्थित,चित्तकाठिन्य, विरसास्यता, कषायवक्त्र, आध्मान, प्रत्याध्मान, शीतता ॥ ५॥ रोमहर्ष, भीरुत्व, तोद,कंडू, रसाज्ञता, शब्दाज्ञता, प्रसुप्ति, गंधाज्ञत्व, दृशःक्षय ॥ ६ ॥ (अस्य लक्षणम्) जिस वायुमें हाथीके सवारकीनाई वारवार भ्रूमै वह आक्षेपकहै १ जिसमें ठोढी अकडकै मुख खुलारहै वह हनुस्तंभ है २ जिसमें कूलेकी नसैं जकड के निर्बलहों चल न सकैं वह ऊरुस्तंभ है ३ जो माथेकी शिराकहे नसैं निस्तेज होकै मस्तक में पीडारहै वह शिरोग्रह हैं असाध्य है ४ पीठ उभरकै जो मनुष्य धन्वाकार होजाय वह बाह्यायाम है ५ जो छाती ऊची होके धन्वाकार होजाय वह अन्तरायाम है ६ जो पसुरी में पीडाकरै वह पार्श्वशूल है ७ जो कमर जकड़ जाय वह कटिग्रहहै ८ जो देह दंडाकार होजाय वह दंडापतानकहै ९ जिस वायु में पाव या जाघ गुटना नितम्ब से और कमर में अधिक पीड़ाहो वह खल्ली है १० जो वायु जीभकी नस्ता न ले भोजन मुँह में कठिनता से लियाजावे वह जिह्वास्तभ है ११ जो वायु आधा मुँहको फेरदे माथा कम्पै जीभ से बोला न जाय दृष्टि तिरछी होजाय वह अर्दित है १२ जो आधाअङ्ग निर्बल होजाय उसे पक्षाघात (अर्धांग) कहते हैं १३ जो गोड़ की टिहुनी सूजजाय स्यार कैसा मूड़हो उसे क्रोष्टुशीर्ष तियारमुंड कहते हैं १४ जिसमें घींच तन जाइ मस्तकइत उत न डुलै वह मन्यास्तम्भ है १५ जो वायुकूलेकी मोटीनसोंको मानिले पाव को

फैलने सिकुड़ने न दे वह पंगु है १६ जो वायु मनुष्य के शरीर की चाल खंजरीट की नाईं करदे चलने में कांपै पांव इधर उधर परै वह कलयाखंज है १७ जो वायु गुद और इन्द्रि में चिलक उत्पन्नकरै वह तूनी है १८ जो गुद लिंग में चिलक उत्पन्न करिकै मूत्र मलाशयताईं चुभै सो प्रतितूनी है १९ जिसमें पंगुवायु के लक्षण हों पर एकै पांव लंगड़ा करै वह खंज है २० जो पैर में झुंझनी करै वह पादहर्ष है २१ जिसमें पीठ, कमर, कूला, जूतर, जांघ, पैर इन में उठने बैठने में क्लेशहो तौ गृध्रसी है जो वायु हाथ और कानकी नसें तानके हाथ ऊपर न उठने दे वह विश्वाची है २३ जिस में बांह तनिजाइ वह बाहुक है २४ जो वायु हृदय में प्रवेशकरि ज्ञानको नष्ट करै दृष्टिरोकै कण्ठ शब्द त्रिलक्षणकरै कभी सावधान कभी अचेतर है स्थिरचित्त न रहै वह अपतानकहै २५ जो वायु चोट लागिकै घाव और पीड़ा करै वह व्रणायाम है २६ जिसमें चलने के श्रम से या ऊंचे नीचे पैर परै या टेढ़ापरने से वायु घुटनों में उतरिकै सूजन और पीड़ा उत्पन्न करै वह वातकंटक है २७ जो वायु ऊर्ध्व गतिहोकै हृदय, मस्तक, कन्धा वा देह में पीड़ा करै और धनुष के आकार करिकै दृष्टिको रोकै कबूतर की नाईं बोलै मोह में पड़े वह अपतन्त्र है २८ जो सब शरीर में पीड़ा करै तो अंगभेद है २९ सबशरीरको शोषै सो अंगशोषहै ३० जो मिनमिनायके बोलै वह मिन्मिनत्व है ३१ जिसमें कण्ठ से स्पष्टशब्द न कढ़ै वह कृष्णता है ३२ जो नाभि के नीचे ऊंचा पत्थरसा करदे और मल मूत्र निरोध करि पेट में गांठि गांठिसी परिकै मंद २ पीड़ा करै वह अष्ठीलिका है ३३ जो अष्ठीलिका की नाईं गांठि टेढ़ी सूधी लंबीहो अधिक पीड़ादे उसे प्रत्यष्ठीलिका जानो जो पेटमें गांठि गांठिसी सरिकै मंद २ पीड़ाकरै वह अष्ठीलिका है ३४ जो वायु गर्भाशय में प्रवेशकरिगर्भ को संकुचित करै तो बालक छोटा उत्पन्नहो वह वामन है ३५ जो वायु दुष्टहो छाती पीठको संकुचित करै वह कुब्ज है ३६ जिसमें सब अंग में पीड़ाहो वह अंगपीड़ा है ३७ जिसमें शरीर विषे सूजासा गड़े वह अंगशूल है ३८ जो सर्वांग को संकुचितकरै वह संकोच है ३९ जो देहको क्षीणकरै वह स्तम्भ है ४० जो देह में रुखाई करै वह रुक्ष है ४१ जिसे कभी कोई अंग शिथिलहो कभी कोई वह अंगभंग है ४२ जो देह को काष्ठवत् अचेतकरै वह अंगविभ्रंश है ४३ जो मल निरोध करि अच्छी तरह न गिरनेदे वह विड्ग्रह है ४४ जो पक्वाशयमें मलसिंह और भिन्न भिन्न पिंडिसेकरै वह पक्वविड्कता है ४५ जो वायु शब्द निरोधकरै वह मूक कहै गुंग है ४६ जो अतिजंभुआई लावै वह अतिजृम्भहै ४७ जिसमें अधिक डकारैं आवैं वह अत्युद्गार है ४८ जो वायु आंतमें प्रवेशकरि बोलै वह अंत्रकूजनहै ४९ जो अतिउत्सर्गकरै अर्थात् गुदासे अधिक निकरै वह वातप्रवृत्ति है ५० जो शरीर जहां २

शोषोल्पशुक्रता ८ तिक्तास्यताम्लवक्त्रत्वंस्वेदस्रावो ङ्गपाकता। क्लमोहरितवर्णत्वमतृप्तिः पीतकायता ९ रक्तस्रावोङ्गदरणंलोहगन्धास्यतातथा। दौर्गन्ध्यंपीतमूत्रत्वमरतिःपीतविट्कता १० पीतावलोकनंपीतनेत्रता पीतदन्तता। शीतेच्छापीतनखता तेजोद्वेषोल्पनिद्रता ११ कोपश्चगात्रसादश्चभिन्नविट्कत्वमन्धता। उष्णो

फरकै वह स्फुरणहै ५१ जो जहा तहा नसोंको फुलावै वह शिरापूरण है ५२ जो सब देह कँपावै वह कंपवायुहै ५३ जो शरीरको दुर्बल करै वह कार्श्य है ५४ जो,शरीरको कृष्णकरै वह श्यावताहै ५५ जिसे मानुष असंभववोलै वह प्रलापहै ५६ जो मूत्र,वारवार आतुरता से हो तौ क्षिप्रमूत्रहै ५७ जिसमें नींद न आवै वह निद्रानाशहै ५८ जो पसीना निकरै वह स्वेदनाश ५९ जो शरीरको दुवलाकरै वह दुर्बलत्वहै,६० जो वायु शुक्र में प्रवेशकरि फारिकै,वहावै वह शुक्रातिप्रवृत्ति है ६१ जो,बलको घटावै वह बलक्षय है ६२ जो धातुको किंचित्क्षीणकरै वह शुक्रकार्श्य,है जो,चित्तको स्वस्थ न रक्खै वह अनवस्थितचित्तत्व है ६३ जो धातुको अतिक्षीण करै तौ शुक्रनाशहै ६४ जो देहको कठोरकरै वह काठिन्यहै ६५ जिसमें जीभका स्वाद न मिलै वह विरसास्यहै ६६ जो जीभ ऐंठजाय वचन न कहि सकै वह वायुकषाय वक्रताहै ६७ जो वायु पक्वाशयमें जाय पेटफुलाय गुड़गुड़करै वह आध्मान है ६८ जो वायु आशय में जाइ कफ से मिलि पेटफुलाय पीड़ाकरै वह प्रत्याध्मान है ६९ जो शरीर को ठंढारक्खै वह शीतताहै ७० जिसमें वारवार रोमाचहो वह रोमहर्षणहै ७१,जो भय उत्पत्ति करै वह भीरुत्वहै ७२ जो देह में सुईसी चुभै वह तोदहै ७३ जो खाज उत्पन्नकरै वह कंडूहै ७४ जिससे मधुरादिक रसका स्वाद न मिलै वह रसाज्ञता है ७५ जिससे कान से सुन न परै वह शब्दाज्ञता है ७६ जिसमें त्वचापर हाथधरे सजुभरै सो प्रसुप्ति है ७७ जिसमें गन्धज्ञान न हो वह गन्धाज्ञता है ७८ जिस में दृष्टि से सूझै नहीं वह दृक्क्षय है ७९ और पित्तजनित चालीसरोग हैं धूमोद्गार, विदाह, उष्णाग, मतिभ्रम ॥ ७ ॥ कांतिहानि, कंठशोष,मुखशोष,अल्पशुक्रत्व ॥ ८ ॥ तिक्तास्यता,अम्लवक्र, स्वेदस्राव, अंगपाकत्व,श्रम, हरितवर्णत्व,अतृप्ति,पीतकाय ॥ ९ ॥ रक्तस्राव,अंगदरण,लोहगंधास्य,दौर्गंध्य, पीतमूत्रता,अरति,पीतविट्कता ॥ १० ॥ पीतावलोकन,पीतनेत्रता,पीतदंतता, शीतेच्छा, पीतनखता, तेजोद्वेष,अल्पनिद्रता ॥ ११ ॥

च्छ्वासत्वमुष्णत्वंमूत्रस्यचमलस्यच ॥ १२ ॥ तमसोदर्शनंपीतमण्डलानांचदर्शनम् । निःसरत्वञ्चपित्तस्यच त्वारिंशद्रुजःस्मृताः ॥ १३ ॥ इति पित्तजरोगगणना ॥ कफस्यविंशतिःप्रोक्ता रोगास्तन्द्रातिनिद्रता । गौरवंमु

कोप, गात्रसाद, भिन्नविट्कता, अंधता, उष्णोच्छ्वासत्व, उष्णमूत्रता, उष्णमलता ॥ १२ ॥ तमोदर्शन, पीतमंडलदर्शन, निस्सरत्व ये चालीसरोग पित्तसेंभवहैं ॥ १३ ॥ (अस्य लक्षणम्) जिसे पित्तकोपसे धुआंसी डकारआवै वह धूमोद्गारहै १ जो अतिदाह करै वह विदाह २ जो देह गरम रहै वह उष्णाग है ३ जो बुद्धि स्थिर न रहै कभी कुछ समझै कभी कुछ न समझै वह मतिभ्रम है ४ जो देह मलिन करै वह कान्तिहानि है ५ जो कण्ठ व मुख सुखावै वह कण्ठशोष व मुखशोष है ६ जो शुक्रनाश करै स्त्रीप्रसंग में विना शुक्रपात शिथिल होजाय वह अल्पशुक्र है ७ जो मुख कडुवारहै वह तिक्तास्य है ८ जो मुख खट्टारहै तो अम्लवक्र है ९ जो पसीना अधिक आवै वह स्वेदस्राव है १० जो पित्त से अंग पकाता है वह अंगपाक है ११ जो ग्लानिसे अनेकपदार्थ ग्रहणकरते झझकै वह क्लमहै १२ जिसमें देह हरितहो वह हरितवर्णत्व है १३ देह पीली परजाय वह पीतकायता है १४ जिसे पित्त के कोपसे भोजन करनेसे तृप्ति न होइ वह अतृप्ति है १५ जिसमें गुदादि मार्ग से रक्त गिरै वह रक्तस्राव है १६ जो शरीर में त्वचा फटजायें वह अंगदरण है १७ जो लोहा घिसने से वा लोहा सड़ाय कसीस बने तिस कीसी बास आवै वह लोहगंधास्य है १८ जो देह में दुर्गंधि आवै वह दौर्गंध्य है १९ जिसमें मूत्र पीला आवै सो मूत्रहै २० जिस से सर्व पदार्थ में चित्त न चलै वह अरति है २१ जिसके मल पीला आवै वह पीतविट्कत्वहै २२ जिसमें सब पदार्थ पीले देख पड़ें वह पीतावलोक है २३ जिससे आंखि पीली पड़जायं वह पीतनेत्रहै २४ जो दांत पीले होजायँ वह पीतदन्त है २५ जो ठंढी चीजपरै इच्छा चलै वह शीतेच्छा है २६ जो पीले नखहोजायं तौ पीतनख २७ जो तेजोमय चीज देखि अच्छी न लगै वह तेजोद्वेष है २८ जो निद्रा कम आवै वह अल्पनिद्रा है २९ जो क्रोध अधिकहो वह कोप है ३० जो देह पीड़ित करै वह गात्रसाद है ३१ जो मल फटके फुटकीसा हो वह भिन्नविट्क है ३२ जो दृष्टिनाशकरै वह अन्धता है ३३ जो उष्णश्वास आवै सो उष्णोच्छ्वास है ३४ जो मूत्र अत्युष्ण हो वह उष्णमूत्रत्व है ३५ जो मल अत्युष्ण गिरै तो उष्णमल-

स्यमाधुर्य्यं मुखलेपःप्रसेकता १४ श्वेतावलोकनंश्वेतविट्कत्वंश्वेतमूत्रता। श्वेताङ्गवर्णताशैत्यमुष्णेच्छातिक्तकामिता १५ मलाधिक्यञ्चशुक्रस्य वाहुल्यंवहुमूत्रता। आलस्यंमन्दवुद्धित्वंतृप्तिर्घुर्घरवाक्यता। अचैतन्यञ्च गदिताविंशतिःश्लेष्मजागदाः १६॥ इति कफजरोगगणना॥ रक्तस्यचदशप्रोक्ताव्याधयस्तस्यगौरवम्। रक्तमण्डलतारक्तनेत्रत्वंरक्तमूत्रता १७ रक्तनिष्ठीवनारक्तपिटकानाञ्चदर्शनम्। औष्ण्यञ्चपूतिगन्धित्वं पीडापाकश्चजायते १८ चतुस्सप्ततिसङ्ख्यातामुखरोगास्तथोदितः। तेष्वोष्ठरोगागणिता एकादशमितावुधैः। वात

त्व है ३६ जो उजेरे में अंधेरा जानपरे वह तमोदर्शन है ३७ जो देहमें पीलेरङ्ग ठौर ठौर देख परे वह पीतमण्डल है ३८ जो देखने में पृथ्वीपर कहीं कहीं पीले धब्बे से देखपरें वह पीतमण्डलदर्शन है ३९ जो पित्त मुख से वा मलमार्ग से गिरै वह निस्सरत्व है ४० और बीसरोग कफसंभव हैं तन्द्रा, अतिनिद्रा, गौरव, मुखमाधुर्य, मुखलेप, प्रसेक॥ १४॥ श्वेतावलोकन, श्वेतविट्कत्व, श्वेतांगवर्णता, उष्णेच्छा, तिक्तकामिता॥ १५॥ मलाधिक्य, शुक्रबाहुल्य, बहुमूत्रता, आलस्य, मंदबुधित्व, तृप्ति, घुर्घरवाक्यता, अचैतन्य ये बीस प्रकार के कफरोग हैं (अल्पलक्षणम्) जिसमें आंखें झपीरहें निद्रा न परै वह तन्द्रा है जो निद्रा विशेषहो तौ अतिनिद्रा है जो शरीर भारीरहै वह गौरवहै जो मुख में गुड़कास्वाद बनारहै वह मुखमाधुर्य जो मुखमें लसलसाहटहो तौ मुखलेप जो लार गिराकरै तौ प्रसेक है जो सर्वत्र श्वेत देखपरै तौ श्वेतावलोकनहै जो श्वेत मलगिरै तौ श्वेतविट्कत्व है जो मूत्र श्वेतहो तौ श्वेत मूत्र है जो शरीर श्वेतहो तौ श्वेत मार्गवर्णत्व है, जो देह ठंढी बनीरहै तौ शैत्यताहै जो उष्णपदार्थपर इच्छारहै तौ उष्णेच्छा है जो कटुपदार्थपर चित्तचलै तौ आलस्य है मंदबुद्धि होजाय तौ मंदबुद्धिहै सूक्ष्माहार से तृप्तिहो तौ तृप्तिहै जो बोलने में गला घर्घराय तौ घुर्घरवाक्यहै मंद चेतनाहो तौ अचैतन्यहै॥ १६॥ रक्तविकारसे दशभांति के रोगहैं गौरव, रक्तमंडल, रक्तनेत्रत्व, रक्तमूत्रता॥ १७॥ रक्तष्ठीवन, रक्तपिटकादर्शन, उष्णत्व, पूतिगन्धित्व, पीड़ा, पाक ये दशरोग रक्तजन्य हैं इनके नामही सदृश लक्षण हैं॥ १८॥ अब मुखके जो

पित्तकफैर्मेदसात्रिदोषैरसृजस्तथा १९ क्षतंमांसार्बुदञ्चैव खण्डौष्ठश्चजलार्बुदम् । मेदोर्बुदञ्चार्बुदञ्च रोगाए कादशोष्ठजाः २० दन्तरोगादशाख्याता दालनःकृमिदन्तकः। दन्तहर्षःकरालश्चदन्तचालश्चशर्करा २१ अधिदन्तः श्यावदन्तो दन्तभेदःकपालिका । तथात्रयोदशमितादन्तमूलामयाःस्मृताः २२ शीतादोपकुशौद्दौतु दन्तविद्रधिपुप्पुटौ । अधिमांसोविदर्भश्च महासौषिर

चौहत्तर रोग हैं सो कहता हूं तिसमें ग्यारह ओष्ठरोग पण्डित कहते हैं वात से, पित्तसे, कफसे, त्रिदोषसे, रक्तसे ॥ १९ ॥ क्षतज मांसार्बुद, खण्डौष्ठ, जलार्बुद, मेदोर्बुद, अर्बुद ये ग्यारह ओष्ठरोग हैं जो ओष्ठ कठोर हो काला परजाइ गांठि परै पीडाकरै तन फूटै फटै वा खाल उखड़ै तौ वातज है जो छोटी फुन्सियां परैं पीड़ा दाहहो पीली परैं पकजायँ तो पित्तज है जो ओष्ठ श्वेत कछुक पीडायुक्त पिटका हो ठण्ढे रहैं तौ कफज है जो आठ पिटका पीड़ा सहित हों कभी श्वेत कभी काला पीलाहो सो त्रिदोपज है जो ओष्ठ खजूर फलके रंग हों फुन्सीयुक्त रक्त बहै मासकी गुत्थी निकसै ओष्ठ में कृमि उत्पन्न हों यह रक्तज ओष्ठ है जब ओष्ठ में क्षत लगे से खजुआय पकै घाव परै वह क्षत है मांस दुष्टहोके ओष्ठ मोटाहो व मासपिंडसा हो सो मांसार्बुद है जिस में ओष्ठ फटके बहै वह खण्डौष्ठ है जो मांसपिण्ड सा मोटाहो पानीसा बहै सो जलार्बुद है जो ओष्ठ श्वेतरहै श्वेत पानी बहै सो मेदोर्बुद है ओष्ठ में फकत गांठि परिजाय वह अर्बुद है ॥ २० ॥ अब दश दन्तरोग कहते हैं दालन, कृमिदन्त, दन्तहर्ष,कराल,दन्तचाल, शर्करा ॥ २१ ॥ अधिदन्त, श्यावदन्त,दन्तभेद और कपालिका ये दश दन्तरोग हैं (अस्य लक्षणम्) जो दन्तटीसैं सो दालनहै जो दांत कृमि परनेसे काले होजायँ पीड़ा करैं सो कृमिदन्त है जो ठण्ढा पानी दांत में लगे सो दन्तहर्ष है जो दांत टेढे बखुरे होजायँ तो कराल है जो दांत हलैं सो दंतचाल है जो दांत में मैल जमके खरखराहट हो सो शर्करा है जो दन्त के तरे दूसरा दांत जमके पीड़ा करे वह अधिदन्त है पित्तकोप से दांत काला नीला होजाय वह श्यावदंत है जो दांत हलके पीड़ा करै और हटके बाहर बटिया सी पडजाय वह दांत भेद है जो दांतसे परत उराड़ैं वह कपालिका है दंतमूलरोग दांतकी जड़में तेरह तरह का होता है ॥ २२ ॥ तिन तेरह के

खमाधुर्यं मुखलेपःप्रसेकता १४ श्वेतावलोकनंश्वेत विट्कत्वंश्वेतमूत्रता । श्वेताङ्गवर्णताशैत्यमुष्णेच्छाति क्तकामिता १५ मलाधिक्यञ्चशुक्रस्य बाहुल्यंबहुमूत्रता। आलस्यंमन्दबुद्धित्वंतृप्तिर्घुर्घरवाक्यता । अचैतन्यञ्च गदिताविंशतिःश्लेष्मजागदाः १६ ॥ इति कफजरोगगण ना॥ रक्तस्यचदशप्रोक्ताव्याधयस्तस्यगौरवम् । रक्तमण्ड लतारक्तनेत्रत्वंरक्तमूत्रता १७ रक्तनिष्ठीवनारक्तपिट कानाञ्चदर्शनम् । औष्ण्यञ्चपूतिगन्धित्वं पीडापा कश्चजायते १८ चतुस्सप्ततिसङ्ख्यातामुखरोगास्तथो दिताः । तेष्वोष्ठरोगागणिता एकादशमितावुधैः । वात

त्व है ३६ जो उजेरे में अंधेरा जानपरे वह तमोदर्शन है ३७ जो देहमें पीलेरङ्ग ठौर ठौर देख परे वह पीतमण्डल है ३८ जो देखने में पृथ्वीपर कहीं कहीं पीले धब्बे से देखपरें वह पीतमण्डलदर्शन है ३९ जो पित्त मुख से वा मलमार्ग से गिरै वह निस्सरत्व है ४० और बीसरोग कफसंभव हैं तन्द्रा, अतिनिद्रा, गौरव, मुखमाधुर्य, मुखलेप, प्रसेक ॥ १४ ॥ श्वेतावलोकन, श्वेतविट्कत्व, श्वेतांगव-र्णता, उष्णेच्छा, तिक्तकामिता ॥ १५ ॥ मलाधिक्य, शुक्रबाहुल्य, बहुमूत्रता, आलस्य, मंदबुधित्व, तृप्ति, घुर्घरवाक्यता, अचैतन्य ये बीस प्रकार के कफरोग हैं (अस्यलक्षणम्) जिसमें आंखें झपीरहैं निद्रा न परै वहतन्द्रा है जो निद्रा विशेषहो सौ अतिनिद्रा है जो शरीर भारीरहै वह गौरवहै जो मुख में गुड़कास्वाद बनारहै वह मुखमाधुर्य जो मुखमें लसलसासाहदहो तौ मुखलेप जो लार गिराकरै तौ प्रसेक है जो सर्वत्र श्वेत देखपरै तौ श्वेतावलोकनहै जो श्वेत मलगिरै तौ श्वेत-विट्कत्व है जो मूत्र श्वेतहो तौ श्वेत मूत्र है जो शरीर श्वेतहो तौ श्वेत मार्गवर्णत्व है जो देह ठंढी बनीरहै तौ शैत्यताहै जो उष्णपदार्थपर इच्छाहै तौ उष्णेच्छा है जो कटुपदार्थपर चित्तचले तौ आलस्य है मंदबुद्धि होजाय तौ मंदबुद्धिहै सूक्ष्माहार से तृप्तिहो तौ तृप्तिहै जो बोलने में गला घर्घराय तौ घुर्घरवाक्यहै मंद चेतनाहो तौ अचैतन्यहै ॥ १६ ॥ रक्तविकारसे दशभांति के रोगहैं गौरव, रक्तमंडल, रक्तनेत्रत्व, रक्तमूत्रता ॥ १७ ॥ रक्तष्ठीवन, रक्तपिटकादर्शन, उष्णत्व, पूतिगन्धित्व, पीड़ा, पाक ये दशरोग रक्तजन्य हैं इनके नामही सदृश लक्षण हैं ॥ १८ ॥ अब मुखके जो

पित्तकफैस्त्रेधात्रिदोषैरसृजस्तथा १९ क्षतंमांसार्बुदञ्चैव खण्डौष्ठश्चगलार्बुदम् । मेदोर्बुदञ्चार्बुदञ्च रोगाएकादशोष्ठजाः २० दन्तरोगादशाख्याता दालनःकृमिदन्तकः। दन्तहर्षःकरालश्चदन्तचालश्चशर्करा २१ अधिदन्तः श्यावदन्तो दन्तभेदःकपालिका । तथात्रयोदशमितादन्तमूलामयाःस्मृताः २२ शीतादोपकुशौष्ठौतु दन्तविद्रधिपुप्पुटौ । अधिमांसोविदर्भश्च महासौषिर

चौहत्तर रोग हैं सो कहता हूं तिसमें ग्यारह ओष्ठरोग पण्डित कहते हैं वात से, पित्तसे, कफसे, त्रिदोषसे, रक्तसे ॥ १९ ॥ क्षतज मांसार्बुद, खण्डौष्ठ, जलार्बुद, मेदोर्बुद, अर्बुद ये ग्यारह ओष्ठरोग हैं जो ओष्ठ कठोर हो काला परजाइ गांठि परै पीड़ाकरै सन फूटै फटै या खाल उसड़ै तौ वातज है जो छोटी फुन्सियां परैं पीड़ा दाहहो पीली परैं पकजायँ तो पित्तज है जो ओष्ठ श्वेत कछुक पीड़ायुक्त पिटका हो ठण्डे रहें तौ कफज है जो आठ पिटका पीडा सहित हों कभी श्वेत कभी काला पीलाहो सो त्रिदोपज है जो ओष्ठ खजूर फलके रंग हों फुन्सीयुक्त रक्त बहै मांसकी गुत्थी निकसै ओष्ठ में कृमि उत्पन्न हों यह रक्तज ओष्ठ है जब ओष्ठ में चत लगे से खजुआय पकै घाव परै वह क्षत है मांस दुष्टहोके ओष्ठ मोटाहो व मांसपिंडसा हो सो मांसार्बुद है जिस में ओष्ठ फटके बहै वह खण्डौष्ठ है जो मांसपिण्ड सा मोटाहो पानीसा बहै सो जलार्बुद है जो ओष्ठ श्वेतरहै श्वेत पानी बहै सो मेदोर्बुद है ओष्ठ में फकत गांठि परिजाय वह अर्बुद है ॥ २० ॥ अब दश दन्तरोग कहते हैं दालन, कृमिदन्त, दन्तहर्ष,कराल,दन्तचाल, शर्करा ॥ २१ ॥ अधिदन्त, श्यावदन्त,दन्तभेद और कपालिका ये दश दन्तरोग हैं (अस्य लक्षणम्) जो दन्तटीसैं सो दालनहै जो दांत कृमि परनेसे काले होजायँ पीड़ा करैं सो कृमिदन्त है जो ठण्डा पानीदांत में लगेसो दन्तहर्ष है जो दात टेढ़े बकुरे होजायँ तो कराल है जो दांत हलैं तो दंतचाल है जो दांत में मैल जमके खरखराहट हो सो शर्करा है जो दन्त के तरे दूसरा दांत जमके पीड़ा करे वह अधिदन्त है पित्तकोप से दांत काला नीला होजाय वह श्यावदंत है जो दांत हलके पीड़ा करै और हटके बाहर बटिया सी पड़जाय वह दांत भेद है जो दांतसे परत उराड़ै वह कपालिका है दंतमूलरोग दांतकी जड़में तेरह तरह का होता है ॥ २२ ॥ तिन तेरह के

सौषिरौ २३ तथैवगतयःपञ्च वातात्पित्तात्कफादपि । सन्निपाताद्गतिश्चान्यारक्तनाडीचपञ्चमी २४ तथाजिह्वामयाःषट्स्युर्वातपित्तकफैस्त्रिधा। अलसश्चचतुर्थःस्यादधिजिह्वश्चपञ्चमः। षष्ठश्चैवोपजिह्वःस्यात्तथाष्टौतालुजागदाः २५ अर्बुदन्तालुपिटकाकच्छपीतालुसंहतिः। गलशुण्डीतालुशोषस्तालुपाकश्चपुप्पुटः २६ गल

नाम शीताद, उपकुश, दंतविद्रधि,पुप्पुट, अधिमांस,विदर्भ, महासौषिर,सौषिर ॥ २३ ॥ इसमें वातादि दोषसे दंतनाड़ीरोग पांच प्रकारकाहै वात नाड़ी, पित्तनाड़ी, कफनाड़ी, सन्निपातनाड़ी,रक्तनाड़ी ये तेरह दंतमूल रोगहैं (अथास्यलक्षणम्) जो मसूढ़ा फटि जाय रक्तदे तौ शीतादहै जो मसूढ़ा में दाहहोय पकै दांत हलैं पीड़ा कमहो रक्त बहै फूलै मुखमें दुर्गंध आवै वह उपकुश है जो मसूढ़ा बाहर वा भीतर सूजै पिराय रुधिर पीबदेइ सो दंतविद्रधि है जो दो तीनदांत का मसूढ़ा विशेष फूलै वह पुप्पुट है जो चौहडके मसूढ़ा में पीड़ा अधिकहो वह अधिमांस है जो मसूढ़ा दांत गिराने के लिये दांत रगड़ाकरै वा व्रण उत्पन्नकरै वा सूजन विशेष उत्पन्नकरै दांत हिलावै वह विदर्भहै जिस मसूढ़ा में दांत हिलैं और तालू फटिजाय और मसूढ़ा गलिजाय वह महासौषिर है जो मसूढ़ा पिराय के सूजै लार बहावै वह सौषिर है जो मसूढ़ा में फोड़ाहोके पकै फूटै और पोलापर दुर्गन्ध आवै लांबी नाड़ीसी दाबने में समुझपरै वह नाड़ीहै इस नाड़ीमें जिसदोषका अधिकार जानिपड़े वह वही नाड़ी जानिये ॥ २४ ॥ अब जिह्वारोग कहते हैं जीभ में छःप्रकारके रोगहैं वातजन्य, पित्तज, कफज,अलस, अधिजिह्व,उपजिह्व ये छःनाम हैं (अथास्य लक्षणम्) जो जीभ फटिकै मधुरादि षट्रस का स्वादु परिज्ञान न होय जैसे मारवाड़देश में जिह्वा वृक्ष खरखराय तौ वातजह जो जीभ लाल वा पीली परजाय दाहकरै कांटेपरैं सो पित्तजहै जो जीभ में कारे२कांटेसेउठें और मोटेहों और श्वेतजीभहो तौ कफजहै जो जीभ अपनीजड़ की ओरखिचिजाइ और सूजनअधिकहो और जड़पकिजाइतौ अलसहै जो जीभकी नाकसम सूजन जीभ होइ पकिकै बहै तौ अधिजिह्व असाध्यहै जो जीभकी नोकसी सूजन नरेहो और लालहो खजुआय उसे उपजिह्व जानो ॥ २५ ॥ (अथाष्ट प्रकार तालुरोग) अर्बुद,तालुपिटका, कच्छपी,तालुसंहति, गलशुंडी,तालुशोष,तालुपाक,पुप्पुट(अस्यलक्षणम्) तालुके मध्यमें कमलांकुरसमान उत्पन्नहो और २

रोगास्तथाख्याताअष्टादशमिताबुधैः । वातरोहिणिका पूर्वैर्द्वितीयापित्तरोहिणी २७ कफरोहिणिकाप्रोक्तात्रिदोषैरपिरोहिणी। मेदोरोहिणिकावृन्दोगलौघोगलविद्रधिः। स्वरहातुण्डिकेरीचशतघ्नीतालुकोर्बुदम् २८ गिलायुर्वलयश्चापि वाताद्गण्डःकफात्तथा । मेदोगण्डस्तथैवस्यादित्यष्टादशकण्ठजाः २९ मुखान्तःसम्भवारोगाह्यष्टौख्यातामहर्षिभिःमुखपाकोभवेद्वातात्पित्तात्तद्वत्कफादपि३० रक्ताच्चसन्निपाताच्चपूत्यास्योर्ध्वगुदावपि। अर्बुदंचेतिमुखजाश्चतुस्सप्ततिरामयाः ३१ कर्णरोगास्समाख्याताअष्टा

क्तार्बुदके लक्षण मिलें सो तालुअर्बुदहैजो तनिके सूजै रक्तविकार सम पीडादाइ हो सो पिटकाहै जो कछुवा कीसी पीठ सूजआवै पीडा थोडीहो सो कच्छपिका है जो तालूके वीचमें लंबी सूजनहो पीडाकरै सो तालुसंहतिहै जो तालूकी जड लम्बी मोटी सूजजाय वह गलशुंडी है जो तालू फूटै फटै सो तालु शोष है जो पकिजाइ सो तालुपाक है जो झरबेरी के समान श्रौरे परिजाइ और मेदकेआश्रित हो सो पुप्पुटहै ॥ २६ ॥ (अथाष्टप्रकार कण्ठरोग) वातरोहिणी, पित्तरोहिणी ॥ २७ ॥ कफरोहिणी, त्रिदोषरोहिणी, वृंद, गलौघ, गलविद्रधी, स्वरहा, तुण्डिकेरी, शतघ्नी, तालुक, अर्बुद ॥ २८ ॥ गिलायु वलय, वातगण्ड, कफगण्ड और मेदोगण्ड ये अठारह प्रकारके कण्ठज रोगहैं (अथास्य लक्षणम्) जीभ की जड़के पास चनेके सम छोटीहो गलेके मार्गको रोधकरै इसमें त्रिदोष वा मेद जिसका विशेष लक्षण मिलै वही रोहिणी जानौ पांच रोहिणी तेरह औरहैं सो बहुतभांति गलेके भीतर क्षत गांठि सूजन होकै कंठरोध करि पीडा करतेहैं और तीनि गण्ड ऊपर होतेहैं जिसे घेघा कहते हैं सो तीनों दोष मे होतेहैं जिनका लक्षण मिलै वही प्रधान जानौ ग्रंथगौरव होनेके कारण इस ग्रंथमें नहीं लिखा ॥ २९ ॥ मुखके अन्त में आठ प्रकारके रोगहैं ये सब मिलिकै मुखके भीतर चौहत्तर भांतिके रोगहैं वातमुखपाक, पित्तमुखपाक, कफमुखपाक, ॥ ३० ॥ रक्तमुखपाक, सन्निपातमुखपाक, दुर्गन्ध, ऊर्ध्वगुद और अर्बुद ये आठ मुखके रोगहैं ॥ (अथास्य लक्षणम्) मुखके भीतर चारों ओर फुन्सी होवैं पीडाकरैं उन में जिस दोषके लक्षण पाये जावैं वही मुखपाक जानौ मुखमें फोडा होके दुर्गन्ध आवै सो दुर्गंधास्यहै मुखके भीतर फोडा होके विधर जाय सो ऊर्ध्वगुदहै मांस

दशमितावुधैः । वातात्पित्तात्कफाद्रक्तात्सन्निपाताच्चवि द्रधिः । शोथोर्बुदंपूतिकर्णः कर्णार्शःकर्णहल्लिका ३२ बा धिर्य्यंतन्त्रिकाकण्डूःशष्कुलीकृमिकर्णकः । कर्णनादःप्रती नाहइत्यष्टादशकर्णजाः ३३ कर्णपालीसमुद्भूतारोगाःस प्तइहोदिताः । उत्पातःपालिशोषश्चविदारीदुःखवर्द्धनः॥

की गांठि उत्पन्न होके पीडाकरै वह अर्बुद है ॥ ३१ ॥ वा कर्णरोग अठारह प्रकारके हैं वातज, पित्तज, कफज, रक्तज, विद्रधि ॥ ३२॥ कर्णशोथ, अर्बुद, पूति कर्ण, कर्णार्श, कर्णहल्लिका, बाधिर्य्य, तंत्रिका, कण्डू, शष्कुली, कृमिकर्णक, कर्ण· नाद, प्रतीत है ये अठारह नाम कानरोग के हैं (अथास्य लक्षणम्) कान में शब्द उठै पीडाहो और मल सूखिकै पानी बहै तो वातहै जो लाल सूजनहोके फटै दुर्गन्ध आवै और बहै वह पित्तजकर्णरोग है जो सूजनहो गुजाय और मद चिकनासा बहै कमसुनै पीड़ाकरै सो कफज कर्णरोगहै जिसमें कुछ पित्तके लक्षण मिलें वह रक्तज कर्णरोग है जो तीनों दोषके लक्षण पाये जाय वह सन्निपात कर्णरोगहै कानमें घाव या विद्रधि होकै वा फोडा होकै पीव वा रक्त बहै सो क· र्णविद्रधि है जो कानमें सूजनहो वो कर्णशोथ है जो कानमें गिलटी सी होके पिराय तो कर्णार्बुद है जो दुर्गन्धित पीव बहै तौ पूतिकर्ण है जो चनेकी घेंटी सीहो खजुआइ दाह पीड़ाकरै तौ कर्णार्श है जो कानमें कोई जंतु प्रवेशकरै उसके चलने से विकल होती है स्थिर रहनेसे स्वस्थ रहती है इसे कर्णहल्लिका कहते हैं जो सुनि न परै तौ बाधिर्य है जो कानमें पीन शब्दसा भनभनाहटहो तौ तन्त्रिक जो कान खजुआइ और कर्णमल सूखजाइ सो गुत्थी है पिटकाहो बहै सो श· ष्कुली है ग्रंथान्तर में कर्णस्राव कहते हैं जो कानमें कीडा परजाइ सोकृमिकर्ण है जो भेरि मृदंगादि कासा शब्द पूरित रहै तौ कर्णनाद है जो कर्णमल गलिकै बहै तौ प्रतिनाह है उसे आधाशीशी भी कहते हैं॥ ३३ ॥ कर्णपाली रोग सातप्रकार का है उत्पातपाली, शोषपाली, विदारी, दुःखवर्द्धन, परिपोट, लेही, पिप्पली (अथास्य लक्षणम्) कर्णरंध्रके ऊपर जो शूर्पाकार परदा है उसे पाली कहते हैं उसे भारी आभूषण पहिरने से वा खजुआने से वा दबजाने से कालपर पकै दाह पीड़ाकरै फिर सूजकै लाल होजाइ सो उत्पातहै जो पाली सूखिकै छोटी परिजाइ तौ शोषपाली है जो पाली फटिकै खजुआइ सो विदारी है जो कान की नस छिदजाइ वा विपरीत छेद हो तौ थिर बढनमें सूजै जलन हो पकै सो दुःखवर्द्धन है जो गहना पहिरने उतारने से सूजै कालापरै पकै

परिपोटश्चलेहीचपिप्पलीचेतिसंस्मृताः ३४ कर्णमूला मयाःपञ्चवातात्पित्तात्कफादपि।सन्निपाताच्चरक्ताच्चतथा नासाभवागदाः ३५ अष्टादशैवसङ्ख्याताःप्रतिश्याया स्तुतेष्वपिवातात्पित्तात्कफाद्रक्तात्सन्निपातेनपञ्चमः।आ पीनसःपूतिनासोनासार्शोभ्रंशथुःक्षवः। नासानाहःपूतिर क्तमर्बुदंदुष्टपीनसम्। नासाशोषोघ्राणपाकःपुटस्रावश्च दीप्तकः ३६ तथादशशिरोरोगावातेनार्द्धावभेदकः॥ शिर

सो परिपोट है जो पाली में नन्हीं २ फुंसी हो खजुआय जलन हो सो लेही है जो पाली में वेदनारहित ,सूजनहो स्तब्धहो सो पिप्पली है ग्रंथांतर में उन्मथ नाम है ॥ ३४ ॥ कर्णमूल पंचप्रकार के है वातज, पित्तज, कफज, त्रिदोषज, रक्तज (अथास्य लक्षणम्) कानकी जड़के नीचे सूजनको कर्णमूल कहते हैं वातसेपीड़ा पित्तसेदाह कफसे खाज त्रिदोष से तीनों लक्षण रक्तसे लालदाह संयुक्त ॥ ३५ ॥ नाकमें अठारह प्रकार के रोग हैं उनमें पांच प्रतिश्याय हैं वातप्रतिश्याय, पित्तप्रतिश्याय, कफप्रतिश्याय, रक्तप्रतिश्याय, सन्निपातप्रतिश्याय, पीनस, पूतिनास, नासार्श, भ्रंशथु क्षव नासानाह, पूतिरक्त, अर्बुद, दुष्ट पीनस, नासाशोष, घ्राणपाक, पूयस्राव, दीप्तक ये अठारह प्रकार हैं (अथास्य लक्षणम्) प्रतिश्याय कहै नाक बहना नाकबन्द होके फिर कुछ पानी बहै कण्ठ तालु ओठ सूखजाइ कनपटी में पीड़ाहो सो वातप्रतिश्याय है जो काला पीला पानी बहै सो पित्तप्रतिश्यायहै जो कफसा श्वेतपानी बहै माथा जकड़ारहै सो कफ प्रतिश्याय है जो रक्त बहै नेत्रलाल हो तौ वायुपट्टी रक्तप्रतिश्यायहै जो तीनों दोष मिलैं तौ सन्निपातप्रतिश्यायहै जो नाक सूखिकै चैली उखड़ै सुगंध दुर्गंधज्ञान परै श्वासघूरिसी आवै तौ पीनसहै जो नाक वा मुखसे दुर्गंध आवै तौ पूतिनास है जो मांसकी फुटकी उठआवै तौ नासार्श है नाकड़ा भी कहते हैं जो प्रथम कफ सूर्यास्त से अनायास गिरै तौ भ्रंशथु है जो छींक अधिक आवै तौ क्षव है जो श्वासावरोध हो तौ नासानाह है जो अभिघात से रक्त वा पीब बहै तौ पूतिरक्त है जो नाकके भीतर खुट्टियासी परिजाय तौ अर्बुदहै जो पीनस से अधिक कष्ट देइ तौ दुष्ट पीनस है इसे पीनस भी कहते हैं जो कष्ट करि सींचने से श्वासआवै जाय तौ नासाश्वास है जो नाक फुटिकै ऊपर से पीब बहै तौ घ्राणपाक है जो नाक से पीब वा कनकी बहै सो पुटस्रावहै जो नाक में दाहहोके देह संतप्तकरै

स्तापश्चवातेनपित्तात्पीडातृतीयका ३७ चतुर्थीकफजा पीडारक्तजासन्निपातजा। सूर्यावर्ताच्छिरःपाकात्कृमिभिः शङ्खकेनच ३८ तथाकपालरोगाःस्युर्नवतेषूपशीर्षकम्। अरूंषिकाविद्रधिश्चदारुणंपिटकार्बुदम् । इन्द्रलुप्तञ्च खालित्यंपलितंचेतितेनव ३९ तथानेत्रभवाः ख्याता

तौ दीप्तकहै ॥ ३६ ॥ माथेके दश प्रकारके रोगहैं अर्द्धावभेद, वातजशिरोभिताप, पित्तजशिरोभिताप ॥ ३७ ॥ कफजशिरोभिताप, रक्तजशिरोभिताप, सन्निजशिरोभिताप, सूर्यावर्तशिरोभिताप, शिरःपाक, कृमिजशिरोभिताप, शङ्खक ये दश रोग हैं जो वायु निज कोप वा कफकी सहायतासे अर्द्धमस्तकमें निरोधकरै व चिलक फुदारके प्रहार सम उत्पन्न होतीहो व उसी कनपटीमें कान नेत्र ललाटमें अधिक पीडा करती है व आंख भी लाल होती है सो अर्द्धावभेदक है उसे आधाशीशी भी कहते हैं जो रात्रिको व्यथा बढ़ै वह वातजशिरोभिताप है जो मस्तक आरासा चिरै नाकसे श्वास धुआंसीकढ़ै रात्रिको ठंढकरहै सो पित्तजहै जो माथा भारी हो रुंध जाय मुँहपर भरभराहट हो सो कफजहै जो पित्तलक्षणयुक्त माथा अति उष्ण रहै हाथ से छुआ न जाय सो रक्तजशिरोभिताप है जो तीनों दोष पाये जायँ जो सन्निपात शिरोभिताप है जो सूर्योदय से भौंह और आंखि में पीडा चढ़ती जाय और दुपहर से दिन उतरते उतरतीजाय सो सूर्यावर्त है जो माथे का रुधिर वा चरबी क्षय होजाय व छींक बहुत आवै पीडाकरै सो शिरपाक है जो मस्तक में कृमिपरै व भालासा कोंचै व माथेकी मज्जा चरलेवै व कनपटी में अति पीडा व सूजन हो तौ पित्तवायु रक्तकोप से शङ्खक होताहै सो विषसदृश माथा गलानिरोधकरि तीनदिनमें प्राण हरलेताहै इसमें वैद्य तीन दिन बीतजाने पर चिकित्सा करते हैं ॥ ३८ ॥ (अथ कपालरोग) नवप्रकारहै उपशीर्षक, अरूंषिका, विद्रधी, दारुण, पिटका, अर्बुद, इन्द्रलुप्त, खालित्य, पलित ये नवरोग हैं (अथास्यलक्षणम्) वातादि दोष कोपकरि कपालमें सूजन उत्पन्नकरै जो दोष अधिकहो वही उपशीर्षकहै जो कृमि करिकै बहुत छिद्रहो बहै सो अरूंषिकाहै जो मस्तक में ग्रन्थि परिकै पिराय सो विद्रधिहै जो माथा रूखाहो भूसी जमैं और खजुआय सो दारुणहै इसे रूसी भी कहते हैं जो माथे में बटिया सदृश ऊंचीहोय वह पिटकाहै जो पीडा संयुक्तहो व मस्तक में गांठिसी होकै पीडा करै तौ अर्बुदहै कफ रक्त कोपकरि रोकै छेदोंको रुधिरै गिराय देते हैं सोई इंद्रलुप्तहै और वह भी होनाहै

श्चतुर्नवतिरामयाः । तेषुवर्त्मगदाःप्रोक्ताश्चतुर्विंशति
सङ्ख्यकाः ४० कृच्छ्रोन्मीलःपक्ष्मशातःकफोत्क्लिष्टश्च
लोहितः । अरुग्निमेषःकथितो रक्तोत्क्लिष्टः कुकूणकम्
४१ पक्ष्मार्शःपक्ष्मरोधश्च पित्तोत्क्लिष्टश्चपोथकी । श्लि
ष्टवर्त्माचवहलः पक्ष्मोत्सङ्गस्तदार्बुदम् ४२ कुम्भिकासि
कतावर्त्मा लगणोञ्जननामिका । कर्दमःश्याववर्त्माच
विषवर्त्मातथालजी ४३ उत्क्लिष्टवर्त्मेतिगदाः प्रोक्ता
वर्त्मसमुद्भवाः । नेत्रसन्धिसमुद्भूतानवरोगाः प्रकीर्ति
ताः ४४ जलस्रावः कफस्रावो रक्तस्रावश्चपर्वणी । पूय
स्रावः कृमिग्रन्थिरुपनाहस्तथालजी ४५ पूयालसइति
प्रोक्ता रोगानयनसन्धिजाः । तथाशुक्लगतारोगाबुधैः
प्रोक्तास्त्रयोदश ४६ शिरोत्पातःशिराहर्षःशिराजालश्च
शुक्तिका । शुक्लार्मचाधिमांसार्म प्रस्तार्यर्मचपिष्टकः
४७ शिराजापिटकाचैव कफग्रथितकोर्जुनः । स्नाय्व
र्मचाधिमांसः स्यादितिशुक्लगतागदाः । तथाकृष्णसमु
द्भूताःपञ्चरोगाः प्रकीर्तिताः ४८ शुद्धशुक्रंशिराशुक्रंक्षत

उसे बादखोरा भी कहते हैं जो माथेके बार गिरकै चिकना होजाय सो खालित्य कहे चंदुवाहै जो काल वा अकालमें केश श्वेत होजाई सो पलितहै ॥ ३९॥ नेत्र मण्डल में ९४ रोगहैं उनमें वर्त्मगद २४ हैं ॥४०॥ कृच्छ्रोन्मील, पक्ष्मशात, कफोत्क्लिष्ट, लोहित, अरुग्निमेष, रक्तोत्क्लिष्ट, कुकूणक ॥ ४१ ॥ पक्ष्मार्श, पक्ष्मरोध, पित्तोत्क्लिष्ट, पोथकी, श्लिष्टवर्त्मा, बहल, पक्ष्मोत्संग, अर्बुद ॥ ४२ ॥ कुंभिका, सिकतावर्त्म, लगण, अञ्जननामिका, कर्दम, श्याववर्त्मा, विषवर्त्मा, अलजी ॥ ४३ ॥ उत्क्लिष्टवर्त्मा यह रोग वर्त्मसमुद्भूतहैं नेत्रकी संधिमें ९ रोगहैं ॥ ४४ ॥ जलस्राव, कफस्राव, रक्तस्राव, पर्वणी, पूयस्राव, कृमिग्रंथि, उपनाह, अलजी ॥ ४५ ॥ पूयालस ये नयनसंधिजरोगहैं, तथा नेत्रके सफेद भागमें तेरहरोगहैं ॥ ४६ ॥ शिरोत्पात, शिराहर्ष, शिराजाल, शुक्तिक, शुक्लार्म, अधिमांसार्म, प्रस्तार्यर्म, पिष्टक ॥ ४७ ॥ शिराजापिटका, कफग्रथितक, अर्जुन, स्नाय्वर्म, अधिमांस ये शुक्लगतरोगहैं नेत्रकी

शुक्रं तथाजकः। शिरासङ्गश्चसर्वेपिप्रोक्ताःकृष्णगता गदाः ४९ काचंचतुषड्विधंज्ञेयं वातात्पित्तात्कफादपि।स न्निपाताच्चरक्ताच्चषष्ठंसंसर्गसम्भवम् ५० तिमिराणिषडेवस्युर्वातपित्तकफैस्त्रिधा। संसर्गेणचरक्तेन षष्ठंस्यात्सन्निपाततः ५१ लिङ्गनाशः सप्तधास्याद्वातात्पित्तात्कफेनच। त्रिदोषैरुपसर्गेणरक्तात्संसर्गजस्तथा ५२ अष्टधादृष्टिरोगाः स्युस्तेषुपित्तविदग्धकम्। अम्लपित्तं विदग्धञ्च तथैवोष्णविदग्धकम् ५३ नकुलान्ध्यंधूसरान्ध्यं रात्र्यान्ध्यंह्रस्वदृष्टिकः। गम्भीरदृष्टिरित्येते रोगादृष्टिगता स्मृताः ५४ चत्वारश्चाधिमन्थाःस्युर्वातपित्तकफास्रतः। अभिष्यन्दाश्चचत्वारो रक्ताद्दोषैस्त्रिभिस्तथा ५५ सर्वाक्षिरोगाश्चाष्टौस्युस्तेषुवातविपर्ययः। अम्लशोफोन्यतोवातस्तथापाकात्ययःस्मृतः ५६ शुष्काक्षिपाकश्च तथा शोफोध्युषितएवच। हताधिमन्थइत्येतेरोगाः सर्वाक्षिसम्भवाः ५७ पुंस्त्वदोषास्तुपञ्चैव प्रोक्तास्तत्रेर्ष्यकः स्मृतः। आसेक्यश्चैवकुम्भीकस्सुगन्धिःषण्ढसञ्ज्ञकः ५८ शुक्रदोषास्तथाष्टौस्युर्वातपित्तकफेनच। कुणपंश्ले

काली जगह में ९ रोग हैं ॥ ४८ ॥ शुद्धशुक्र, शिराशुक्र, क्षतशुक्र, अजक, शिरासंग ये काली पुतलीके रोगहैं ॥ ४९ ॥ कांच ६ तरहकाहै वात, पित्त, कफ, संसर्ग, रक्त, सन्निपात ॥ ५० ॥ तिमिर छः प्रकारकाहै वात, पित्त, कफ, संसर्ग, रक्त व सन्निपात से ॥ ५१ ॥ लिंगनाश ७ प्रकारकाहै वात, पित्त कफ, त्रिदोष, उपसर्ग रक्त, संसर्ग से ॥ ५२ ॥ नेत्ररोग ८ प्रकारके हैं उसमें पित्तविदग्धक, अम्लपित्त, विदग्ध, उष्णविदग्धक ॥ ५३ ॥ नकुलांध्य, धूसरांध्य, रात्र्यान्ध्य, ह्रस्वदृष्टिक, गम्भीरदृष्टि ये दृष्टिगतरोगहैं ॥ ५४ ॥ चार अधिमन्थ हैं वात, पित्त, कफ, रक्तज, अभिष्यन्द ४ रक्तसे दाह से ३ ॥ ५५ ॥ सब नेत्ररोग ८ हैं उसमें वातविपर्यय, अम्लशोफ वात, पाकात्यय ॥ ५६ ॥ शुष्काक्षिपाक, शोफ, अम्लोषित ये अधिमन्थरोग नेत्र में उत्पन्नहोते हैं ॥ ५७ ॥ पुंस्त्वदोष पांचही

ष्मवाताभ्यां पूयाभंश्लेष्मपित्ततः ५९ क्षीणञ्चवात पित्ताभ्यां ग्रन्थिलंश्लेष्मरक्ततः। मलानांसन्निपाताच्च शुक्रदोषाइतीरिताः ६० अथस्त्रीरोगनामानि प्रोच्यन्तेपूर्व शास्त्रतः। अष्टावार्त्तवदोषास्स्युर्वातपित्तकफैस्त्रिधा। पूया भंकुणपंग्रन्थिक्षीणंमलसमन्तथा ६१ तथाचरक्तप्रदरं चतुर्विधमुदाहृतम्। वातपित्तकफैस्त्रेधाचतुर्थंसन्निपात तः ६२ विंशतिर्योनिरोगाःस्युर्वातात्पित्तात्कफादपि। स न्निपाताच्चरक्ताच्चलोहितक्षयतस्तथा ६३ शुष्काचवामि नीचैवषण्ढीचान्तर्म्मुखीतथा। सूचीमुखीविप्लुताचजात घ्नीचपरिप्लुता ६४ उपप्लुताप्राक्चरणामहायोनिश्चकर्णि का। स्यान्नन्दाचातिचरणायोनिरोगाइतीरिताः ६५ चतु र्विधंयोनिकन्दं वातपित्तकफैस्त्रिधा। चतुर्थंसन्निपातेन तथाष्टौगर्भजागदाः ६६ उपविष्टकगर्भःस्यात्तथानागो दरःस्मृतः। मक्कल्लोमूढगर्भश्च विष्टम्भोमूढगर्भजः। जरायुदोषोगर्भस्य पातश्चाष्टमकःस्मृतः ६७पञ्चैवस्त

हैं ईर्ष्यक, आसेक्य, कुम्भीक, सुगन्धि, षण्ढ ॥ ५८ ॥ और शुक्रदोष ८ हैं वात पित्त कफसे कुणप श्लेष्म और वातसे पूयाभ, श्लेष्म और पित्तसे॥५९॥ क्षीणवात पित्तसे ग्रंथिल, श्लेष्म और रक्तसे मलों के सन्निपात से ये शुक्रदोष कहे ॥ ६०॥ अब स्त्रियों के रोग कहते हैं ८ ऋतु से वात, पित्त, कफ से ३ प्रकारके पूयाभ, कुणप, ग्रन्थि, क्षीण तथा मलसम ॥ ६१ ॥ रक्तप्रदर४प्रकार का है वात, पित्त, कफ से तीन प्रकार का चौथा सन्निपात से ॥ ६२॥ बीस योनिरोग हैं वात, पित्त, कफ, सन्निपात, लोहित क्षय से ॥ ६३ ॥ शुष्का, वामिनी, षण्ढी, अंतर्म्मुखी, सूचीमुखी, विप्लुता, जातघ्नी, परिप्लुता ॥ ६४ ॥ उपप्लुता, प्राक्चरणा, महायोनि, कर्णिका, नन्दा और अतिचरणा ये बीस योनि रोगहैं ॥ ६५ ॥ चार प्रकार का योनिकन्द है वात पित्त कफ से ३ प्रकारका चौथा सन्निपात से ८ आठ रोग गर्भज हैं ॥ ६६ ॥ उपविष्टक, नागोदर, मक्कल्ल, मूढगर्भ, विष्टम्भ, मूढगर्भज, जरायुदोष, पात ये आठहैं ॥ ६७ ॥ अथपाच

नरोगाःस्युर्वातापित्तात्कफादपि । सन्निपातात्क्षताच्चैव तथास्तन्योद्भवागदाः ६८बालरोगेषुकथिताःस्त्रीदोषाश्च त्रयःस्मृताः। अदक्षपुरुषोत्पन्नःसपत्नीविहितस्तथा ६९ दैवाज्जातस्तृतीयस्तु तथायेसूतिकागदाः । ज्वरादयश्चिकित्स्यास्तेयथादोषंयथाबलम् ७० द्वाविंशतिर्बालरोगास्तेषुक्षीरभवास्त्रयः । वातात्पित्तात्कफाच्चैवदन्तोद्भेदश्चतुर्थकः । दन्तघातोदन्तशब्दोकालदन्तोहिपूतनम् ७१ मुखपाकोमुखस्त्रावोगुदपाकोपशीर्षकं । पार्श्वारुणस्तालुकण्ठोविच्छिन्नपारिगर्भिकः ७२ दौर्बल्यंगात्रशो-

प्रकार स्तनरोग,वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज, क्षतज जैसे ये पांच स्तन रोगहैं ऐसेही वातादि पांच रोग दूध उतरने में स्तनरोग बालरोग में कहे हैं दूध वाली वा विना दूधवाली स्त्रीके स्तनमें वातादि दोष कोपकरि मांस जो रक्त दूषित करै तो पांच प्रकार के रोग हों वे रक्तज विद्रधि के सब लक्षण युक्त होते हैं वातजमें वायुके ऐसे दोष प्रति जानना ॥ ६८ ॥ स्त्रीके दोष उत्पन्न करनेवाले तीन दोषहैं अदक्षपुरुष कहे स्त्रीके व्यवहारमें चतुरन होय उसके संताप करिके जो रोग उत्पन्न होय वह अदक्ष पुरुषोत्पन्न कहिये जो सवति की ईर्षा संताप कारण करके रोग होय वह पत्नी विहितहै जो निजस्त्रीसे पुरुष प्रसन्नतासे मत न देय औरही स्त्रीसे स्नेह रखता होय इस चिन्तासे कृशहोवै शरीरमें जो रोग उत्पन्न होताहै वह दैविक है ॥६९॥ अथ बालांत रोग जो बालक होने के अन्तमें रोग उत्पन्नहोय वह बालांतहै उसीको प्रसूति भी कहतेहैं इसमें ज्वरादिक दोष देखिके औररोग का बलाबल विचारिके चिकित्सा करना जिसमें देह पोड़े ज्वर, प्यास, सूजन, शूल, अतीसारहो सो असाध्य है जो केवल खाने पीनेसे हुआहै वह ज्वरादिक विशेष भयङ्करहै जो मकल्लरोग करिके शूल उत्पन्न करै और रक्त अवरोधनकरि सर्वदेहमें शूल उत्पन्न करै वह बहुत दुःखदायीहै वह शूलनामसे प्रख्यातहै ॥७०॥ अथ बाईस प्रकारके बालरोगहैं तिनमें तीन रोग माताके स्तनसम्बन्धी हैं वातज, पित्तज, कफज ये दूधसम्बन्धी हैं चार रोग दांतन के हैं दंतोद्भेद, दंतघात, दंतशब्द, अकालदंत ये ४ दंतरोग हैं एक पूतना ॥ ७१ ॥ मुखपाक,मुखस्राव, गुदपाक, उपशीर्षक, पार्श्वारुण, तालुकण्ठ, विच्छिन्न, पारिगर्भिक ॥ ७२ ॥

विंशतिःस्मृताः ७३ तथाबालग्रहाःख्याताद्वादशैवमुनीश्वरैः। स्कन्दग्रहोविशाखःस्यात्खग्रहश्चपितृग्रहः७४ नैगमेयग्रहस्तद्वच्छकुनिःशीतपूतनामुखमण्डितिकातद्वत्पू

पारिगर्भिकके लक्षण है जो शरीर बहुत कृश होजाय सो गात्रशोष और मुखशोषी भी कहते हैं इसमें उबकाई और अतीसार भी होताहै जो बालक अज्ञानहोके राति व दिनको बिछौना में मूते सो शय्यामूत्र है दुग्धदोषसे बालक की आंखकी पलकपर खाजहोके आंखिसे पानी बहताहै और बालक आंखि नाक मस्तक घसताहै उजारेमें आंखि नहीं खोले तो उसे कुकूणक कहतेहैं जो बालक विशेषरोवै उसका क्रम बंद रोवना देखिके अनुमान करिके रोग जानना यह रोदनहै कफ कोप से बालक के शरीर में मूंगासी पिड़की है शरीरके रंगमें मिल रहती है पीड़ा नहीं करती एकसे एक मिलके रहती है यह अजगल्ली है सो बालकके विशेषकै होताहै जवानके कम होताहै ॥ ७३ ॥ और बारह प्रकारके बाल ग्रह रोगहैं स्कंदग्रह, विशाखग्रह, खग्रह, पितृग्रह ॥ ७४ ॥ नैगमेय, शकुनि, शीतपूतना, मुखमंडितिका, पूतना, अंधपूतना, रेवती और शुष्करेवती ये बारह प्रकारहै (ग्रहस्य सामान्यलक्षणम्) स्कंदादि द्वादशग्रहग्रस्त बालक अनायास चौंकता है उठि २ बैठता है ओंठ दांत चबाता है मुखसे फेन गिरता है सोता नहीं हाथ पांव सूज जातेहैं मल पतला अच्छीतरह बोलता नहीं देहमें मछलीके रक्तकीसी गंध आतीहै दूध नहीं पीता सब ग्रहोंके सामान्य लक्षण जो बालक कुछ कांपै आंखि देहसे पानी बहै वा एक अंग कांपै ऊपरको देखै दांत चबाय मुंह टेढ़ा बनावै दूध न पिये कुछ रोवै वह स्कन्दग्रह है जिस ग्रहमें बालकको ज्वर और ऊर्ध्वदृष्टिहो वह विशाखग्रह है इसके विशेष लक्षण बालतंत्र में हैं जिस ग्रहमें बालक बेहोश होजाय मुंहसे फेनगिरै ज्वरादिक उपद्रवहों रोवै अधिक देहमें रक्तपीवकी गंध आवै उसे खग्रह कहते हैं ग्रंथांतर में स्कंदापस्मार कहतेहैं अग्निष्वात्तादि पितरों करि पीड़ित बालकको ज्वरादिक उपद्रव होते हैं वह पितृग्रहहै नैगमेयग्रह पीड़ित बालक तिसे उबकाई, कुछ कंप, कंठमुखशोष, मूर्च्छा, देहमें दुर्गंध, ऊर्ध्वदृष्टि, दांत चबाना यह नैगमेयहै जो बालक अंगगलितहो व भयङ्कररूप लक्षण उबकताहो देहमें पक्षीकीसी गंधआवै और विराय उबकाई व अतीसार देहमें दुर्गंध यह शीतपूतना है जिस बालक का मुख प्रसन्नहो शरीरकी नसें दिखिपरें अधिक खाय देहमें और मूत्रमें दुर्गन्ध आवै वह मुखमंडितिका है जिस बालकको ज्वर अतीसार, पियास, ऊर्ध्वदृष्टि, रोना, निद्राहीन, विह्वलता यह पूतनाहै जो बालक खांसै

तनाचान्धपूतना ७५ रेवती चैवसङ्ख्यातातिथास्याच्छु ष्करेवती। तथाचरणभेदास्तुवातरक्तादिकाश्चये। द्विच त्वारिंशदुक्तास्तेरोगेष्वेवमुनीश्वरैः ७६ द्विषष्टिर्दोषभे दास्स्युस्सन्निपातादिकाश्चये। तेपिरोगेषुगणिताः पृथ क्भोक्तानतेकचित् ७७ हीनमिथ्यातियोगानां भेदैः प ञ्चदशोदिताः। पञ्चकर्मभवारोगास्तेषुरोगेषुसञ्ज्ञिताः ७८ स्नेहस्वेदौतथाधूमोगण्डूषोञ्जनतर्पणे। अष्टादशैत ज्जाःपीडास्ताश्चरोगेषुलक्षिताः ७९ शीतोपद्रवएकःस्या

ज्वर पियास देहमें मेदगन्धरुदन विशेष दूध न पिये मल अधिकगिरै वहअंधपूतना जो बालक की देहमें पिड़की घाव घावसे रुधिर बहै देहमें दुर्गंध मल पतला ज्वर वह रेवती है जो बालक को ज्वर शूल अजीर्ण माथेमें पीड़ा मुखशोष सो शुष्करेवती है॥ ७५॥ वातरक्त करिके पांवके रोग सुप्तिपाद, स्तंभपाद, स्फुटन इत्यादिक पांवरोग मुनिलोग बयालीस कहिगये हैं सो ये रोग श्लीपदादिक रोगन में प्रथम कहिगये हैं सो जानना॥ ७६॥ सन्निपातादिक दोष करिके बासठ ६२ प्रकार के रोग हैं सो वातादिक दोष में भिन्न भिन्न रोग कहिचुके हैं परन्तु इन्हैं भिन्न करि कोई नहीं कहता ऐसा समझना॥ ७७॥ पंचकर्म वमन, विरेचन, निरूहणवस्ती, अनुवासनवस्ती, नस्य ये पांचों कर्म उत्तरख- ण्डमें कहेंगे और हीनयोग, मिथ्यायोग, अतियोग इन तीनोंप्रकारके भेद हैं सो भी उत्तर में कहेंगे वमन कहे ओषधि देकै उलकावना विरेचन कहे ओषधि क- रके मल गिराना निरूहणवस्ती अनुवासनवस्ती ओषधि की पिचकारी गुदा मार्ग से देनी नस्य कहे नाकमें ओषधि देनेका यत्न इस भांति पांचों कर्म जा- नना हीनयोग, मिथ्यायोग, अतियोग इन से नाना भांति के दुःख उत्पन्न होते हैं॥७८॥ स्नेहादि संग्रह भी उत्तरखण्ड में हैं स्नेहपान, स्वेदन, धूमपान, गंडूष, अंजन, तर्पण इन छहों में हीनयोग, मिथ्यायोग, अतियोग ये तीनों भेद करिकै अठारह भेद हैं उससे उत्पन्न जो रोग सो उक्त रोगमें संग्रह करि आये हैं ऐसे जानना स्नेहपान, स्वेद, धूमपान, गंडूषता, अञ्जन यह प्रथम परिभाषा में लिखगये हैं औषधादिक करिके धातुको वृद्ध करनेका प्रयोग उसे तर्पण कहते हैं अथवा नेत्रतृप्तकरने के प्रयोग उसे भी तर्पण कहते हैं॥७९॥ शीतादि चार उपद्रव बहुत ठंढा योग करसे मनुष्यको ठंढा उपद्रव उत्पन्न होताहै बहुत उष्ण

देकश्चोष्णोपतापकः । शल्योपद्रव एकश्च क्षीरश्चैकः स्मृतस्तथा ॥ ८० ॥ स्थावरं जङ्गमं चैव कृत्रिमं च त्रिधा विषम् । तेषां च कालकूटाद्यैर्नवधा स्थावरं विषम् ॥ जङ्गमं बहुधा प्रोक्तं तत्र लूता भुजङ्गमाः ॥ ८१ ॥ वृश्चिका मूषकाः कीटाः प्रत्येकं ते चतुर्विधाः । दंष्ट्राविषं नखविषं वालशृङ्गास्थिभिस्तथा ॥ ८२ ॥ मूत्रात्पुरीषाच्छुक्राच्च दृष्टेर्निश्वासतस्तथा । लालायाः स्पर्शतस्तद्वत्तथा शङ्काविषं मतम् ॥ ८३ ॥ कृत्रिमं द्विविधं प्रोक्तं गरदूषीविभेदतः । सप्तधातुविषं ज्ञेयं तथा सप्तोपधा

उपद्रव उत्पन्न होताहै शल्य कहे नख, केश, कांटा, हाड़, सींग, लांड़ा इनके लगने से वा इनमें से कोई वस्तु पेटमें जाय उससे जो रोगदोष वह शल्योपद्रव है मूढ़वैद्य जो संभलखार खुनातेहैं परन्तु कच्चा रहिजाताहै वह खिलाने से जो रोग उत्पन्न हो तो विष, अग्नि, शस्त्र वा वज्र इन्होंकी तरहसे मरताहै ऐसे चार भेदहैं ॥ ८० ॥ (अथ विषरोग) स्थावर, जंगम, कृत्रिम ये तीनप्रकारके विषहैं तिसमें स्थावर विषके नव भेदहैं और जंगम विष बहुत प्रकारकाहै तिसमें लूता, सांप ॥ ८१ ॥ बिच्छू, मूषा, कीट इसमें वात पित्त कफ सन्निपात करिके एक एकके चारचार भेद होजाते हैं किसीके दांत में विषहै किसीके नखमें किसीके धारमें किसीके सींगमें किसीके हाड़में ॥ ८२ ॥ मूत्रमें, मलमें धातुमें दृष्टिमें श्वास में लारमें स्पर्शमें ऐसे भिन्न भिन्न जाति प्रति विष है मन में विषकी शङ्का आने से वायु कुपितहो, ज्वरादि उपद्रव शरीरमें प्रकट करै सो शङ्काविषहै ॥ ८३ ॥ कृत्रिम विषके दो भेदहैं एक, बच्छनागादि एक दूषी संवत संपत्तिके निमित्त शत्रुता करिकै वा स्त्रीलोग नाना प्रकारकी चीज पसीना रज विनाई मल मूत्रइत्यादि अन्न के संग खिला देती है तौ पांडुरर ज्वरादि उपद्रव होता है या प्रमुक्तयुक्त भयेसे विरहोय है नींबू कपूर मिश्रित भयेते विष होय यह कृत्रिम विषहै और बच्छनागादि कृत्रिम विष एकही बार देहको जीर्णकरि प्राणलेताहै जिसमें कम पराक्रम है सो प्राण नहीं नाश करसक्ता परन्तु ज्वरादि उपद्रव करिकै देशकाल अन्न वा दिवादि निद्रा करिकै पीड़ित करता है और सप्तरसादि धातुनको दूषित करता है इसी कारण दूषित विष कहते हैं ये दो प्रकारके कृत्रिम विष हैं विषको भेद सुवर्णादिक अशुद्ध सप्तधातुकी भस्म खाने से वा हरतालादि सप्तउ-

तुजम् ८४ तथैवोपविषेभ्यश्चजातंसप्तविधंविषम् । दुष्टनीरंविषंचैकंतथैकंदिग्धजंविषम् ८५ कपिकच्छुभ चाकण्डूर्दुष्टनीरभवात्तथा । तथासूरणकण्डूश्चशोथोभल्ला तजस्तथा ८६ मदश्चतुर्विधश्चान्यःपूगभङ्गाक्षकोद्र वैः । चतुर्विधोन्योद्रव्याणांफलत्वङ्मूलपत्रजम् ८७ इ तिप्रसिद्धागणिता येकिलोपद्रवाभुवि । असङ्ख्याश्चाप रेधातुमूलजीवादिसम्भवाः ८८ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरसंहि तायांरोगगणनायांसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

इति शार्ङ्गधरस्यप्रथमखण्डस्समाप्तः ॥

धातुकी भस्म खाने से सप्त मदादिक अशुद्ध उपविष खाने से विषसमान पीड़ाहो- ती है उसकी विषसंज्ञाहै (अथ दुष्टनीर) जिस पानी में कीचड़ सेवाल पत्ता- दिक जन्तु वा मेंढकके मल मूत्रसे पानी बिगड़ जाताहै उसे दुष्टनीर कहते हैं उसके नहाने से पीने से विषसमान पीड़ित होताहै शस्त्रादिक में विष के पानी को चढ़ाते हैं उस शस्त्रके घातका घाव नहीं अच्छाहोवे और विष सदृश उपद्रव होता है सो दिग्धविष है ॥ ८४ । ८५ ॥ अथ चारिप्रकार आगंतुक उपद्रव वनकिमाच दुष्ट पानी सूरन अङ्कके छूनेसे देह खजुआय भिलावांसे देह सूजआवे इसप्रकार से चारिभेद हैं और भी चारि प्रकार हैं सुपारी भांग बहेड़ा की मींगी कोदंव धान्य इन चारों के खाने से चारि प्रकारके मद होते हैं इसीप्रकार और भी जानना ८६ । ८७ ॥ ओषधि वनस्पति फूल डार पात मूल इनके खाने से चारप्रकार के मद होते हैं इसप्रकार जो पृथ्वी में प्रसिद्ध रोगोपद्रव हैं तिनकी संख्या निश्चय करिगये हैं इससे वा सुवर्णादि धातु हरतालादि उपधातु नानाप्रकारकी वनस्पति वा ओषधि वा जीवादिक करिकै अनेक उपद्रव उत्पन्न होते हैं सो उपद्रव असंख्य हैं अनुमान से जानना ॥ ८८ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरव्याख्यायांनिर्मितशार्ङ्गधरसुधाकर नामसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

इति शार्ङ्गधरस्यप्रथमखण्डस्समाप्तः ॥

॥ श्रीगणाधिपतये नमः ॥

शार्ङ्गधरसंहिता ॥

मध्यखण्डवार्त्तिकतिलकसहिता ॥

अथातः स्वरसः १ कल्कः २ क्वाथश्च ३ हिम ४ फाण्ट ५ को । ज्ञेयाःकषायाःपञ्चैते लघवः स्युर्यथोत्तरम् १ आहतात्तत्क्षणोत्कृष्टाद्द्रव्यात्क्षुण्णात्समुद्भवः । वस्त्रनिष्पीडतोयःस्यात्स्वरसोरसउच्यते २ कुडवंचूर्णितंद्रव्यं क्षिप्तंचद्विगुणेजले । अहोरात्रास्थितंतस्माद्भवेद्वा रसउत्तमः ३ आदायशुष्कद्रव्यञ्चस्वरसानामसम्भवे । जलेष्टगुणितेसाध्यंपादशेषञ्चगृह्यते ४ स्वरसस्यगुरुत्वाच्चपलमर्द्धंप्रयोजयेत् । निशशोषितंचाग्निसिद्धंपलमात्रंरसंपिवेत् ५ मधुश्वेतागुडक्षाराञ्जीरकंलवणंतथा । घृतंतैलंचचूर्णादीन्कोलमात्रान्सेक्षिपेत् ६ अमृतायारसःक्षौद्रयुक्तःस

अथ मध्यखण्डःप्रारभ्यते ॥ अथ क्वाथ जिसे काढा कहते हैं सो पांच प्रकारकाहै स्वरसकहे अङ्गरस १ कल्क २ क्वाथ ३ हिम ४ फाट ५ एकसे एक गुणमें न्यून है यथा स्वरससे लघु कल्क ॥ १ ॥ उत्तम भूमिसे तुरतकी उखारी ओषधि जल विना कूटिकै वस्त्रमें डारि निचोरि लेय उस रसको स्वरस कहते हैं ॥ २ ॥ सोई द्रव्य कुडव कहे सोलह तोले कूटिकै दुगुने पानी में दिनराति भिजोइराखे उसके रसको भी स्वरस कहते हैं ॥ ३ ॥ जो द्रव्यहरा न मिलै तौ सूखाद्रव्य अठगुणे पानी में औटै जब चौथाई रहै तब लैलेइ ॥ ४ ॥ ओदी द्रव्यका रस गरुआहै इसकारण कार्य में आधापल लेना और सूखी द्रव्य रातकी भींजीका रस हलकाहै इससे पल भर लेना ॥ ५ ॥ स्वरस व क्वाथ व यन्त्रका निकाला रस इनमें शहद, शकर, गुड, खार, जीरा, लोन, घृत, तैल और चूर्ण ये सब आठमाशे युक्त करना ॥ ६ ॥

र्वंप्रमेहजित् ।हरिद्राचूर्णयुक्तोवारसोधात्र्याःसमाक्षिकः ७ वासारसस्वरसःपेयोमधुनोरक्तपित्तजित् । ज्वरकासक्षयह रःकामलाश्लेष्मपित्तहा ८ त्रिफलायारसःक्षौद्रयुक्तोदा र्वीरसोथवा । निम्बस्यवागुडूच्यावापीतोजयतिकामलाम् ९ पीतोमरिचचूर्णेनतुलसीपत्रजोरसः । द्रोणपुष्पीरसो प्येवंनिहन्तिविषमज्वरान् १० जम्ब्वाम्रामलकीनाञ्च पल्लवोत्थोरसोजयेत् । मध्वाज्यक्षीरसंयुक्तोरक्तातीसारमु ल्बणम् ११ स्थूलबब्बूलिकापत्ररसःपानादृव्यपोहति । सर्वातिसाराञ्चश्योनाककुटजत्वग्रसोथवा १२ आर्द्रकस्व रसःक्षौद्रयुक्तोवृषणवाततुत् । श्वासकासारुचीर्हन्तिप्रति श्यायंव्यपोहति १३ बीजपूररसःपानान्मधुक्षारयुतोज

गुर्चे का रस शहद युक्त खाने से, सब प्रमेह नाश होय हैं आंवरे का रस हल्दी का चूर्ण शहद मिश्रित करि खिलाने से भी प्रमेह नाश होता है ॥ ७ ॥ (अथ वासास्वरस रक्तपित्तादि पर) रूसेका स्वरस शहद मिलायके पियेसे रक्तपित्त नाशहोय और ज्वर, खांसी, क्षयी, कमल, कफ और पित्त इनरोगों को भी नाश करै ॥ ८ ॥ (अथ त्रिफलादिस्वरस कमलपर) त्रिफले का रस शहद वा बड़ी हल्दी का रस शहद व नींबका रस शहद वा गुर्चे का रस शहद युक्त पिये तौ कमल रोगको नाश करै ॥ ९ ॥ (अथ तुलसी आदि रस विषम ज्वर पर) तुलसी का रस मरिचका चूर्ण वा गूमाका रस मरिच साथ पिये तौ विषमज्वर नाशहोय ॥ १० ॥ (अथ जम्ब्वादिरस रक्तातीसार पर) जामुन, आंब, आंवरा इन तीनों की पत्ती का रस शहद घृत व दूध सहित पिये तौ दिनी रक्तातीसार दूरहोय ॥ ११ ॥ (अथ बबूरादिस्वरस अतीसार पर) बबूरकी छालका रस शहदयुक्त मिलावै तौ सात भांतिका अतीसार जाय वा कुरैया का रस वा करीलका रस शहद संङ्ग पिये तौ अतीसार जाय ॥ १२ ॥ (अथार्द्रकस्वरस अण्डकोश और श्वासपर) अदरक का रस शहद संग पिये तौ वातांडवृद्धि पचै श्वास, खांसी, अरुचि, नाक बहना ये सबरोग मुक्त होयं ॥ १३ ॥ अथ बीजपूररस पार्श्वादि शूलपर) बिजौरा नींबू का रस शहद और जवाखार सहित पिये तौ पसुरी की शूल, हृदयकी शूल, पेडू

येत् । पार्श्वहृद्बस्तिशूलानि कोष्ठवायुञ्चदारुणम् १४
शतावर्याश्चमधुना पित्तशूलहरोरसः । निशाचूर्णयुतः
कन्यारसःप्लीहाऽपचीहरः १५ अलम्बुषायाःस्वरसःपीतो
द्विपलमात्रया। अपचीगण्डमालानां कामलायाश्चनाश
नः १६ रसोमुण्ड्याःसकोष्णोवा मरिचैरवधूलितः । जये
त्सप्तदिनाभ्यासात्सूर्यावर्तार्द्धभेदकौ १७ ब्राह्मीकूष्मान्ड
षड्ग्रन्थाशङ्खिनीस्वरसःपृथक् । मधुकुष्ठयुतःपीतःसर्वो
न्मादापहारकः १८ कूष्माण्डकस्यस्वरसोगुडेनसहयोजि
तः। दुष्टकोद्रवसञ्जातं मदंपानाद्व्यपोहति १९ खड्गा
दिच्छिन्नगात्रस्यतत्कालपूरितोव्रणः । गाङ्गेरुकीमूलरसै
र्जायतेगतवेदनः २० पुटपाकस्यकल्कस्य स्वरसोगृह्य
तेयतः । अतस्तुपुटपाकानां युक्तिरत्रोच्यतेमया २१ पु
टपाकस्यमात्रेयं लेपस्याङ्गारवर्णता । लेपञ्चद्व्यङ्गुलं

शूल व कोष्ठबद्ध इन सब रोगनसे निर्मुक्तहोय ॥ १४ ॥ (अथ शतावरीरस पित्तशूलपर) शतावरि रस शहद पिये तौ पित्तशूल हरै (अथ घीकुवार रस प्लीहा पर) घीकुवाररस हल्दी चूर्ण पिये तौ पित्त, अपची, पेटकी गाठि दूरहोय ॥ १५ ॥ (अथ मुण्डीरस गण्डमाला अपचीपर) मुंडीरस आठ तोले पिये तौ गंडमाला, अपची, कावररोग मिटै ॥ १६ ॥ (अथ मुंडीरस सूर्यावर्तादि पर) मुंडीस्वरस उष्णकरि मरिच चूर्णयुत सात दिन पिये तौ सूर्यावर्त्त आधाशीशी अच्छीहोय ॥ १७ ॥ (अथ ब्राह्म्यादिस्वरस उन्मादपर) ब्राह्मी, श्वेत कुम्हड़ा, कचूर व वच कौड़्याला इनका स्वरस भिन्न भिन्न शहद और कूटके सङ्ग पिये तौ सब उन्मादजायँ ॥ १८ ॥ (श्वेतकुम्हड़ाका रस उन्माद पर) सफेद कुम्हड़े का रस पुराने गुडसंयुत पिये तौ दुष्ट कोदवका उन्माद नाशहोय ॥ १९ ॥ (अथ वरियारारस घाव पर) शस्त्रके लगेके घाव में तुरन्त वरियारे का रस लगावै तौ घाव अच्छा होय ॥ २० ॥ (अथ पुटपाक के रसकी विधि) पुटपाक का रस लेते हैं इससे उसका यत्न कहते हैं ॥ २१ ॥ कोई ओदी द्रव्यहो उसे पीसिकै गोली बाधै तिस पर रेंड वा

स्थूलंकुर्याद्द्व्यङ्गुष्ठमात्रकम्। काश्मरीवटजम्ब्वादिपत्रैर्वे
ष्ठनमुत्तमम्। पलमात्ररसोग्राह्यःकर्षमात्रंमधुक्षिपेत्। क
ल्कचूर्णद्रवाद्यास्तुदेयाःस्वरसवद्बुधैः २२ तत्कालाकृष्ट
कुटजत्वचंतण्डुलवारिणा। पिष्टांचतुष्पलमितां जम्बूप
ल्लववेष्टिताम् २३ सूत्रेणबद्ध्वागोधूमपिष्टेनपरिवेष्टिताम्।
लिप्तांचघनपङ्केन गोमयैर्वह्निनादहेत् २४ अङ्गारवर्णां
चमृदं दृष्ट्वावन्हेःसमुद्धरेत्। ततोरसंगृहीत्वा च शीतं
क्षौद्रयुतं पिबेत् २५ जयेत्सर्वानतीसारान्दुस्तरान्सुचि
रोत्थितान्। कण्डितंतण्डुलपलं जलेऽष्टगुणितेक्षिपेत्। भा
वयित्वाजलंग्राह्यं देयंसर्वत्रकर्मसु २६ अरलुत्वकृतश्चै
वपुटपाकोग्निदीपनः। मधुमोचरसाभ्यांचयुक्तस्सर्वाति
सारजित् २७ न्यग्रोधादेश्चकल्केनपूरयेद्गौरतित्तिरेः।
निरन्त्रमुदरंसम्यक्पुटपाकेनतत्पचेत्। तत्कल्कस्स्वरसः

बरगद वा जामुनका पत्ता लपेटै फिर कपरौटी करि दो अंगुल मोटी माटी लेसै तब अग्नि में धरै जब लालहो तब निकारिकै उसका रस निचोरि ले इसे पुटपाकरस कहते हैं तब चार रुपया भर रस रुपयाभर शहद संयुक्त पिये और जो कल्क चूर्ण पतली द्रव्य मिश्रित करनीहो तौ पुटरसको यथायोग्य देना॥ २२॥ (अथ कुरैयापुटपाक सर्वातीसारपर) चार तोले कुरैयाकी छाल ताजी चावल के धोवन में पीसिकै गोला बांध जामुन के पत्ते लपेटै॥२३॥ फिर सूत से बांधि मोद के आटा सों लेपकरि माटी लगावै तब गौरा के गोइठामें फूंकि कै अंगार होजाय तब आगिसे निकाल निचोरि ठण्ढाकरि शहद डारि पियै तौ बहुत दिनका कठिन अतीसार जाय २४।२५॥ (चावल धोवनकी क्रिया) चार रुपयाभर शुद्धचावल अठगुने पानी में धोवै यही धोवन सर्वत्र देव॥२६॥

क्षौद्रयुक्तःसर्वातिसारनुत् २८ पुटपाकेनविपचेत्सुपक्वंदा
डिमीफलम्। तद्रसोमधुसंयुक्तःसर्वातीसारनाशनः २९
बीजपूरस्यजम्बूनांपत्राणिजटाःपृथक्। विपचेत्पुटपा
केनक्षौद्रयुक्तश्चतद्रसः। छर्दिनिवारयेद्घोरांसर्वदोष
समुद्भवाम् ३० पिष्टानांवृषपत्राणांपुटपाकरसोहिमः।
मधुयुक्तोजयेद्रक्तपित्तकासज्वरक्षयान् ३१ पचेत्क्षुद्रांस
पञ्चाङ्गांपुटपाकेनतद्रसः। पिप्पलीचूर्णसंयुक्तःकासश्वास
कफापहः ३२ बिभीतकंफलंकिञ्चिद्घृतेनाभ्यज्यलेपयेत्।
गोधूमपिष्टेनाङ्गारैर्विपचेत्पुटपाकवत् ३३ ततःपक्वंसमुद्धृ
त्यत्वचंतस्यमुखेक्षिपेत्। कासश्वासप्रतिश्यायस्वरभङ्गा
ञ्जयेत्ततः ३४ चूर्णंकिञ्चिद्घृताभ्यक्तंशुण्ठ्याएरण्डजैर्दलैः
वेष्टितंपुटपाकेनविपचेन्मन्दवह्निना ३५ ततउद्धृत्यतच्चू
र्णंग्राह्यंप्रातःसितान्वितम्। तेनयान्तिशमंपीडाआमाती
सारसंभवाः ३६ शुण्ठीकल्कंविनिक्षिप्यरसैरेरण्डमूलजैः।

गोला निकाल रसनिचोरले सो रस शहद संयुक्त देय तौ सब अती सारजायँ॥२८॥ पुनः चार पके अनारका पुटपाक बनाइ तिसका रस शहद मिलाय कै देय तौ सब अतीसार नाश होय॥२९॥(अथ बिजौरा पुटपाक उलटी पर) बि-जौरा नींबू जामुन की पाती वा जड़के पुटपाक का रस शहदयुत देइ तौ सब दोष की छर्दि जाय॥३०॥(अथ वासापुटपाक रक्तपित्त कासज्वर पर) रूसे के पुटपाक का रस अरु शहद पिये से रक्तपित्त कास छर्दि व ज्वरजाय॥ ३१ ॥(अथ भटकटैया का पुटपाक कासश्वास पर)भटक टैया के पंचाग का पुटपाक रस पीपरिका चूर्ण डारि कै दे तो कासश्वास कफ जाय॥ ३२॥(अथ बिभीतकपुटपाक कास श्वासपर) बहेरे पर घी लगाइ पिसान से लेप अंगार पर पुटपाक करै॥३३॥ उसका छिलका मुखमें राखने से कास, श्वास, प्रतिश्याय, स्वरभंग ये रोगजाय॥ ३४ (अथ सोंठि पुटपाक आमातीसार पर) सोंठ चूर्ण घी सि पुक्तसे बटी बनाय एरंडपात में लपेट मन्दाग्नि में पुटपाक करै॥ ३५ ॥ उस चूर्णको सबेरे शक्कर संग खाय तो

विपचेत्पुटपाकेनतद्रसःक्षौद्रसंयुतः। आमवातसमुद्भूतां पीडांजयतिदुस्तराम् ३७सौरणंकन्दमादायपुटपाकेनपाचयेत्। सतैललवणस्तस्यरसश्चार्शोविकारनुत् ३८ शरावसम्पुटेदग्धंशृङ्गंहरिणजंपिबेत्। गव्येनसर्पिषापिष्टंहृच्छूलंनश्यतिध्रुवम् ३९ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेमध्यखण्डे चिकित्सास्थाने स्वरसादिकल्पनाऽध्यायः॥ १॥

पानीयंषोडशगुणंक्षुण्णेद्रव्यपलेक्षिपेत्। मृत्पात्रेक्वाथयेद्ग्राह्यमष्टमांशावशेषितम् १ तज्जलंपाययेद्धीमान्कोष्णंमृद्वग्निसाधितम्। शृतःक्वाथःकषायश्चनिर्यूहःसनिगद्यते२आहाररसपाकेचसञ्जातेद्विपलोन्मितम्।वृद्धवैद्योपदेशेनपिबेत्क्वाथंसुपाचितम् ३ क्वाथेक्षिपेत्सितामंशैश्चतुर्थाष्टमषोडशैः।वातपित्तकफातङ्केविपरीतंमधुस्मृतम्४ जीरकंगुग्गुलुक्षारंलवणंचशिलाजतुम्।हिङ्गुत्रिकटुकंचैवक्वाथेशाणोन्मितंक्षिपेत्. ५ क्षीरंघृतंगुडंतैलंमूत्रंचान्य

आमातीसारकी पीडा मिटै ॥ ३६ ॥ पुनः सोंठ चूर्ण एरंडकी जड के रस में सानि पुटपाक करि रस निकारि शहद संग खाइ तौ आमवात की पीडा जाय ॥ ३७ ॥ (अथ सूरन पुराना बवासीर पर) पुटपाक करि पका जमीकंद, लोन, तेल साथ खाइ तौ अर्शनाश होय ॥ ३८ ॥ (हरिण शृंग पुराना हृदयशूल पर) हरिणसींग शराव संपुट में जराइ गौ के घीमें डारि पिये तौ हृदय की शूल जाय ॥ ३९ ॥ इति शार्ङ्गधरेप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

(अथ क्वाथ) चार रुपया भर द्रव्य चौंसठ रुपया भर पानी माटीके पात्रमें भरि मंदाग्निमें औटै जब आठ रुपये भरिरहै तब उतारि लेय ॥ १ ॥ कुछ उष्ण रहै तब पिवै क्वाथके चार नाम हैं शृत, क्वाथ, कषाय, निर्यूह ॥ २ ॥ आहार का रस पके पर वृद्ध वैद्य के उपदेश से दोपल काढा पिये ॥ ३ ॥ क्वाथमें मधु मिश्री डारनेका प्रमाण प्रधान हो तौ मिश्री थोड़ी देना पित्तमें अष्टमांश कफमें षोडशांश शहद वायुमें षोडशांश पित्तमें अष्टमांश कफमें चौथा अंश देना ॥ ४ ॥ जीरकादि अनेक वस्तु डालनेका प्रमाण जीरा,गूगल, खार, सैंधव, शिलाजीत, हींग व त्रिकटु काढे में चारिमासे के या बलं समय देखिकै ॥ ५ ॥ दूध, घी, गुड़, तेल, गोमूत्र,

द्रवंतथा। कल्कंचूर्णादिकंक्वाथेनिक्षिपेत्कर्षसम्मितम् ६ गुडूचीधान्यकारिष्टपद्मकंरक्तचन्दनम्।गुडूच्यादिगणक्काथःसर्वज्वरहरःपरः। दीपनोदाहहल्लासतृष्णाछर्द्यरुचीर्जयेत् ७ गुडूचीपिप्पलीमूलं नागरैःपाचनंस्मृतम्। दद्याद्वातज्वरेपूर्णलिङ्गेसप्तमवासरे ८ शालपर्णीबलारास्नागुडूचीशारिवातथा। आसांक्वाथंपिबेत्कोष्णं तीव्रवातज्वरच्छिदम् ९ काश्मरीशारिवारस्नात्रायमाणामृताभवः। कषायःसगुडःपीतो वातज्वरविनाशनः १० कट्फलेन्द्रयवाम्बष्ठातिक्तामुस्तैःश्रृतंजलम्। पाचनंदशमेऽह्नि स्यात्तीव्रपित्तज्वरेनृणाम् ११ पर्पटोवासकस्तिक्ता किरातोधन्वयासकः। प्रियङ्गुश्चकृतःक्वाथएषांशर्करयायुतः। पिपासादाहपित्तास्रयुक्तंपित्तज्वरंजयेत् १२ द्राक्षाहरीतकीमुस्तकटुकाकृतमालकः। पर्पटश्चकृतःक्वाथएषांपित्त

और क्वाथादि लुगदी चूर्णादि ये सब दश माशे पल समय देखिकै देना॥ ६॥ (गुर्चादिकाढ़ा सब ज्वरपर) गुर्च, धनिया, नींबकी छाल, पद्माख, रक्तचन्दन इस गुर्चादि क्वाथसे सब ज्वर नाश होय हैं यह दीपनहै दाह,तृष्णा, लार, उबकाई ये रोग दूर होयँ॥ ७॥ (गुर्चादि पाचन वातज्वरपर) गुर्च, पीपरामूल व सोंठ इनका काढ़ा वातज्वर में सतयें दिन देय यह पाचन है॥ ८॥ (वातज्वर पर) शालपर्णी कहे पनउर्दी, बरियारा, रासन, गुर्च, सरिवन इनका काढ़ा पिये से तीव्र वातज्वर जाय॥ ९॥ (दूसरा काढ़ा वातज्वर पर) संभारी सरिवन, रासन, त्रायमाण, गुर्च इनका काढ़ा गुड़ डारिकै पिये तौ वातज्वर जाय॥ १०॥ (कटफलादि पाचनपित्तज्वरपर) कायफर,इन्द्रयव, पाढ़ा, कुटकी और नागरमोथा इन पाचोंका काढ़ा तीव्र पित्तज्वरमें मनुष्योंको दशयें दिन देइ॥ ११॥ (पित्तपापरादि क्वाथ पित्तज्वरपर) पित्तपापरा, रूसा कुटकी, चिरायता, जवासा, प्रियंगुदाना पीतसरसों सा होताहै यह काढ़ा चीनी के संग पिये तौ तृषा दाह व रक्तपित्तज्वर ये मुक्त होयँ॥ १२॥ (दूसरा) दाख, हड़, मोथा, कुटकी, अमलतास और पित्तपापड़ा इनका क्वाथ पित्तज्वर नाश करै है और तृष्णा, मूर्च्छा, दाह व रक्तपित्त इन्हें शमन और

ज्वरापहः। तृण्मूर्छादाहवित्तासृक्छमनोभेदनःस्मृतः १३ बीजपूरशिवापथ्यानागरग्रन्थिकैः शृतम्। सक्षारंपाचनं श्लेष्मज्वरेद्वादशवासरे १४ भूनिम्बनिम्बपिप्पल्यःशटी शुण्ठीशतावरी। गुडूचीबृहतीचेति क्काथोहन्यात्कफज्वरम् १५ पटोलत्रिफलातिक्ताशटीवासामृताभवः।क्काथोमधुयुतःपीतोहन्यात्कफकृतंज्वरम् १६ पर्पटाब्दामृताविश्वकिरातैःसाधितंजलम्।पञ्चभद्रमिदंज्ञेयं वातपित्तज्वरापहम् १७ क्षुद्राशुण्ठीगुडूचीनांकषायःपौष्करस्यच। कफवाताधिकेपयोज्वरेवापित्रिदोषजे।कासश्वासारुचिकरेपार्श्वशूलविधायिनि १८ आरग्वधकणामूलंमुस्तातिक्ताभयाकृतः। क्काथःशमयतिक्षिप्रंज्वरंवातकफोद्भवम्। आमशूलप्रशमनोभेदीदीपनपाचनः १९ अमृतारिष्टकटुकामुस्तेन्द्रयवनागरैः। पटोलचन्दनाभ्यांचपिप्पलीचूर्णयुक्छतम्। अमृताष्टकमेतच्च पित्तश्लेष्मज्वरापहम्। छर्दि

भेदन करै॥ १३ ॥ (बिजौरा पाचक कफ ज्वर पर) बिजौरा की जड़, हड़, सोंठ, पिपरामूल, जवाखार डारिकै कफ ज्वर के बारहें दिन काढ़ा पिये तौ जल्दी पाचन करै ॥ १४ ॥ (पुनःक्काथ) चिरायता नीमकीछाल, पीपरि, कचूर, सोंठ, शतावरि, गुर्च व भटकटैया यह काढ़ा कफज्वरको विनाशताहै ॥ १५ ॥ (पुनःक्काथ) पटोलपत्र, त्रिफला, कुटकी, कचूर, रूसा व गुर्च इनका काढ़ा मधुयुक्त पीने से कफज्वर का नाश होता है ॥ १६ ॥ (पित्तपापरा काथ वातज्वर पर) पित्तपापरा, नागरमोथा, गुर्च, सोंठ व चिरायता इसपञ्चभद्र काढ़े से वातपित्तज्वर जाता है॥ १७ ॥ (छोटी भटकटैया काथ कफ वात ज्वर पर) भटकटैया, सोंठ, गुर्च, पुष्करमूल यह काढ़ा कफ वातज्वर नाश करै और संन्निपात ज्वर में पिये तौ कास, श्वास, अरुचि और पसुड़ी की पीड़ा हरै॥ १८ ॥ (अमलतासादि काथ वातकफज्वर पर) अमलतास का गूदा, पिपरामूल, मोथा, कुटकी और बड़ीहड़ इनका काढ़ा वातकफज्वर वेगही नाश करै आमशूल शमन करै और गोटा गिरावै व अग्निदीपन पाचन करै॥ १९ ॥

रोचकहृल्लासदाहतृष्णानिवारणम् २० कण्टकारीद्वयंशुण्ठीधान्यकंसुरदारुच। एभिःशृतंपाचनंस्यात्सर्वज्वरविनाशनम् २१ शालपर्णीपृष्ठपर्णीबृहतीद्वयगोक्षुरैः। बिल्वाग्निमन्थश्योनाककाश्मरीपाटलायुतैः २२ दशमूलमितिख्यातंक्वथितंतज्जलंपिबेत्। पिप्पलीचूर्णसंयुक्तंवातश्लेष्मज्वरापहम् २३ सन्निपातज्वरहरंसूतिकादोषनाशनम्। शोषशैत्यभ्रमस्वेदकासश्वासविकारनुत्। हृत्कण्ठग्रहपार्श्वार्तितन्द्रामस्तकशूलनुत् २४ अभयामुस्तधान्याकरक्तचन्दनपद्मकैः। वासकेन्द्रयवोशीरगुडूचीकृतमालकैः २५ पाठानागरतिक्ताभिःपिप्पलीचूर्णयुक्छृतम्। पिबेत्त्रिदोषज्वरजित्पिपासादाहकासनुत् २६ प्रलापश्वासतन्द्राघ्नंदीपनंपाचनंपरम्। विषमूत्रानिलविष्टम्भवमीशोषारुचिजयेत् २७ किरातकटुकीमुस्ताधान्येन्द्रयवनागरैः। दश

(अथ अमृताष्टक क्वाथ) गुर्चि, नीमकी छाल, कुटकी मोथा, इन्द्रयव, सोंठ, पटोल और रक्तचन्दन इनका क्वाथ पीपरिका चूर्ण डारिकै पीने से पित्तकफज्वर नाशहोय तथा उवकाई, अरुचि, हृल्लास, दाह और तृषा इनको निवारै ॥ २० ॥ (भटकटैयादि क्वाथ सबज्वरन पर) दोनों भटकटैया, सोंठ, धनियां, देवदारु यह पाचनक्वाथ सब ज्वर हरै ॥ २१ ॥ (दशमूलक्वाथ वातकफ पर) धनउर्दी वनमूंग, दोनों भटकटैया, गुखुरू, बेलकी जड, अग्निमंथ, सोहनजरा, खंभारी, पादा ॥ २२ ॥ इन दशोंकी जडका काढा पीपरि के चूर्ण के संग पिये तौ वातकफज्वर नाशहोय ॥ २३ ॥ सन्निपातज्वर, सूतिकादोष, मुख सूखना, शीतल अङ्ग, भ्रम, पसीना कास, श्वास नाश करैं हृदयशूल, पार्श्वपीड़ा, तंद्रा, मस्तकशूल ये सब दूर होवें ॥ २४ ॥ (हरीतकीक्वाथ सन्निपात ज्वर पर) बड़ीहड, नागरमोथा, धनियां, रक्तचन्दन पद्मकाख, रूसा, इन्द्रयव, खस, गुर्चे, अमलतास ॥ २५ ॥ पादे की जड़, सोंठ, कुटकी, पीपरिका चूर्ण समेत काढा पिये तौ सन्निपातज्वर, तृष्णा, दाह, कास हरै ॥ २६ ॥ भ्रम, श्वास, तन्द्राहरै दीपन पाचन करै वायु से मलमूत्ररोध, वमन, कंठशोष, अरुचि इन उपद्रवों को नाश

मूलमहादारुगजपिप्पलिकायुतैः २८ कृतःकषायःपार्श्वा तिसन्निपातज्वरंजयेत् । कासश्वासवमीहिक्कातन्द्राहृद्ग्रह नाशनः २९ कट्फलाम्बुदभार्गीभिर्धान्यरोहिषपर्पटैः । वचाहरीतकीशृङ्गीदेवदारुमहौषधैः ३० काथःकासंज्वरंह न्तिश्वासश्लेष्मगलग्रहान्।काथोजीर्णज्वरहरंगुडूच्याःपि प्पलीयुतः । तथापर्पटजःकाथः पित्तज्वरहरः परः ३१ निदिग्धिकामृताशुण्ठीकषायंपाययेद्भिषक् । पिप्पलीचूर्ण संयुक्तंश्वासकासार्दितापहम्। पीनसारुचिवैस्वर्यशूलाजी र्णज्वरापहम् ३२ क्षुद्राधान्यकशुण्ठीभिर्गुडूचीमुस्तपद्म कैः।रक्तचन्दनभूनिम्बपटोलवृषपौष्करैः३३कटुकेन्द्रयवा रिष्टाभार्गीपर्पटकैःसमैः । काथंप्रातर्निषेवेतसर्वशीतज्वर च्छिदम्३४मुस्ताक्षुद्रामृताशुण्ठीधात्रीकाथःसमाक्षिकः। पिप्पलीचूर्णसंयुक्तोविषमज्वरनाशनः ३५ पटोलत्रिफला

करै ॥२७॥ (पुनरष्टांगदशमूलकाथ) चिरायता, कुटकी, नागरमोथा, धनियां, इन्द्रयव, सोंठ, दशमूल, देवदारु, गजपीपरि समेत काथपिये तौ पसुरीपीड़ा, सन्निपातज्वर, कास, श्वास, वमन, हिचकी, तन्द्रा, हृदय रोग ये नाशहोयँ॥ २८ । २९ ॥ (कायफर कासज्वर पर) कायफर, नागरमोथा, भारंगी, धनियां, खस, पित्तपापड़ा, वच, हड़, काकड़ासींगी, देवदारु, सोंठ इस काढ़े से कासज्वर नाशहोय श्वास कफ कंठरोग मिटैं गुर्चेका काढ़ा पीपरि युक्त पीनेसे जीर्णज्वर छूटै पित्तपापड़ेका काथ पीपरियुक्त पीनेसे पित्तज्वर जाइ ॥ ३० । ३१ ॥ पुनःभटकटैया में गिलोय, सोंठ व पीपरि डारि पिये तौ श्वास, कास, अर्दितवायु, पीनस, अरुचि, गला बैठब, शूल, जीर्णज्वर ये रोग दूरहोयँ ॥ ३२ ॥ (सर्व शीतज्वर पर भटकटैया काथ) भटकटैया, धनियां, सोंठ, गुर्च, नागरमोथा, पद्माख, रक्तचन्दन, चिरायता, पटोल, रूसा, मोचरस, कटुकी, इन्द्रयव, नींब, भारंगी और पित्तपापड़ा इनका काथ प्रातःकाल पिये तौ सब शीतज्वर नाशहोयँ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ (विषमज्वर पर मोथाकाथ) नागरमोथा, भटकटैया, गुर्च, सोंठ, आंवला इनका काढा शहद पीपरियुक्त पिये तौ विषमज्वर मुक्तहोय ॥ ३५ ॥

निम्बद्राक्षाशम्याकवासकैः। क्राथः सितामधुयुतो जयेदेका
हिकं ज्वरम् ३६ गुडूचीधान्यमुस्ताभिश्चन्दनोशीरनाग
रैः। कृतं काथं पिबेत्क्षौद्रं सितायुक्तं ज्वरातुरः ३७ तृतीयज्वर
नाशाय तृष्णादाहनिवारणम्। देवदारुशिवावासाशाल
पर्णीमहौषधैः ३८ धात्रीयुक्तैः शृतं शीतं दद्यान्मधुसितायुत
म्। चातुर्थिकज्वरे श्वासे कासे मन्दानले तथा ३९ गुडूची
धान्यकोशीरशुण्ठीवालकपर्पटैः। विल्वप्रतिविषापाठारक्त
चन्दनवत्सकैः ४० किरातमुस्तेन्द्रयवैः क्वथितं शिशिरं पिबे
त्। सक्षौद्रं रक्तपित्तघ्नं ज्वरातीसारनाशनम् ४१ नागरं कूट
जो मुस्तममृतातिविषा तथा। एभिः कृतं पिबेत्काथं ज्वरा
तीसारनाशनम् ४२ धान्यनागरबिल्वाब्दबालकैः साधि
तं जलम्। आमशूलहरं ग्राह्यं दीपनं पाचनं परम् ४३ धान्य
नागरजः क्राथः पाचनो दीपनस्तथा। एरण्डमूलयुक्तश्च ज

(नित्य आते ज्वरपर पटोलक्काथ) पटोल, त्रिफला, नींबकीछाल, दाख, अमलतास और रूसा इनका क्वाथ शहद व खांड युक्त पिये तो एकाहिकज्वर छूटै ॥ ३६॥ (तृतीयक ज्वरपर गुडूच्यादिकाथ) गुर्च, धनियां, नागरमोथा, रक्तचन्दन, खस और सोंठ इनका काढा शकर शहद युक्त पिये तौ तृतीयक ज्वर, प्यास, दाह ये उपद्रव निर्मुक्तहोयँ ॥ ३७॥ (चातुर्थिकज्वरपर देवदारु क्वाथ) देवदारु, बडी हड, रूसा, शालपर्णी सोंठ और आवला इनका काढा शहद व मिश्री युक्त पिये तौ चातुर्थिक ज्वर जाय और श्वास, कास, मंदाग्नि ये सब दूरहोयं ॥ ३८ । ३९ ॥ (ज्वरातीसार पर गुडूच्यादिक्काथ) गुर्च, धनिया, खस, सोंठ, सुगंधवाला, पित्तपापडा, बेल, अतीस, पाढा, रक्त चन्दन, कुरैया, चिरायता, मोथा, इन्द्रयव यह काढा ठंढाकरि शहद मिश्रितकर पिये तौ ज्वरातीसार व रक्तपित्तका नाशहोय ॥ ४० । ४१ ॥ (पुन.) सोंठ, कुरैया, मोथा, गुर्च, अतीस इस काढेसे ज्वरातीसार जाय ॥ ४२॥ (आम-शूलपर धान्यपञ्चककाथ) धनियां, सोंठ, बेल, मोथा, नेत्रवाला इनके काथ से आमशूलजाय व ग्राही, दीपन, पाचनहै ॥ ४३ ॥ सहित धनियां सोंठ

येदामानिलव्यथाम् ४४ वत्सकातिविषाबिल्वमुस्तैर्वाल
कमाशृतम् । अतीसारंजयेत्सामंचिरजंरक्तशूलजित् ४५
कुटजातिविषापाठाधातकीलोध्रमुस्तकैः । ह्रीवेरदाडिम
युतैःकृतःक्राथःसमाक्षिकः ४६ पेयामोचरसेनैवकुटजाष्ट
कसञ्ज्ञकाः।अतीसाराञ्जयेद्घातरक्तशूलामदुस्तरान् ४७
ह्रीवेरधातकीलोध्रपाठालज्जालुवत्सकैः । धान्याकाति
विषामुस्तागुडूचीबिल्वनागरैः ४८ कृतःकषायःशमयेद
तीसारंचिरोत्थितम् । अरोचकामशूलास्रज्वरघ्नःपाचनः
स्मृतः ४९ धातकीबिल्वलोध्राणिवालकंगजपिप्पली । ए
भिःकृतंशृतंशीतंशिशुभ्यःक्षौद्रसंयुतम् । प्रदद्याद्वलेहंवा
सर्वातीसारशान्तये ५० शालपर्णीबलाबिल्वधान्यशुण्ठी
कृतंशृतम् । आध्मानशूलसहितांवातजांग्रहणींजयेत् ५१
गुडूच्यतिविषाशुण्ठीमुस्तैःक्राथःकृतोजयेत् । आमानुषक्तां

ग्रहणींग्राहीपाचनदीपनः ५२ यवधान्यपटोलानांक्वाथः सक्षौद्रशर्करः । योज्यस्सर्वातिसारेषुविल्वाम्रास्थिभवस्तथा ५३ त्रिफलादेवदारुश्चमुस्तामूषककर्णिका । शिग्रु रेतैःकृतःक्वाथःपिप्पलीचूर्णसंयुतः । विडङ्गचूर्णयुक्तश्च कृमिघ्नःकृमिरोगहा ५४ फलत्रिकामृतातिक्तानिम्बकैरात वासकैः । जयेन्मधुयुतःक्वाथः कामलांपाण्डुतांतथा ५५ पुनर्नवाभयानिम्बदार्वीतिक्तापटोलकैः । गुडूचीनागरयुतैः क्वाथोगोमूत्रसंयुतः । पाण्डुकासोदरश्वासशूलसर्वाङ्गशोथहा ५६ वासाद्राक्षाभयक्वाथःपीतः सक्षौद्रशर्करः । निहन्तिरक्तपित्तार्तिश्वासकासान्सुदारुणान् ५७ रक्तपित्तक्षयं कासं श्लेष्मपित्तज्वरंतथा । केवलोवासकक्वाथःपीतःक्षौद्रेणनाशयेत् ५८ वासाक्षुद्रामृताक्वाथःक्षौद्रेणज्वरकासहा ।

ग्रहणी दूर करै व ग्राहीहो दीपन पाचन करै ॥ ५२ ॥ (सर्वातीसार पर) इन्द्रयव, धनिया और पटोल इनका काढ़ा खाड़ शहद संग खाइ तो छर्दि, अतीसार जाय व आमकी गुठली बेलका काढ़ा शहद मिश्रीयुक्त पिये से सब अतीसार जायँ ॥ ५३ ॥ (कृमिपर त्रिफलाक्वाथ) त्रिफला, देवदारु, मोथा, मूसाकरणी, सहिंजनेकीछाल, पीपरि, विडंगयुक्त पियेसे कृमि और कृमिज उपद्रव सब जायँ ॥ ५४ ॥ (कामलापर त्रिफलादि क्वाथ) त्रिफला, गुर्च, कडुकी नींब, चिरायता और रूसा इनमें काथको शहद समेत पिये तो कामला व पाडु रोग नाशहोय ॥ ५५ ॥ (पांडुपर गदापुरैनाक्वाथ, शोथादिक कासपर) गदापुरैना, हड़, नींबकी छाल, दारुहलदी, कडुकी, पटोल, गुर्च और सोंठ इनका काढ़ा पिये तो पांडु, कास, उदररोग, श्वास, उदरशूल और सर्वांग सूजन अच्छी हो ॥ ५६ ॥ (रक्तपित्तपर रूसाक्वाथ) रूसा, दाख, हड़ इसका काढ़ा शहद वा मिश्री युक्त पिये तो रक्तपित्त पीडा दारुण कास श्वास जाय ॥ ५७ ॥ (पुनः) रूसे का काढ़ा शहद संग पियेसे रक्तपित्त, क्षयी, कास, कफ पित्तज्वर नाश होवैं ॥ ५८ ॥ (कासज्वर पर वासाकाढ़ा) रूसा, भटकटैया और गुर्च इनका काथ शहदयुक्त पीनेसे ज्वर कास मिटै जो भटकटैया का काढ़ा पीपल

कासघ्नःपिप्पलीचूर्णयुक्तःक्षुद्राशृतस्तथा ५९ क्षुद्राकुलित्थावासाभिर्नागरेणचसाधितः । क्वाथःपौष्करचूर्णाढ्यःश्वासकासौनिवारयेत् ६० रेणुकापिप्पलीक्वाथोहिङ्गुकल्केनसंयुतः । पानादेवहिपञ्चापि हिक्कानाशयतिक्षणात् ६१ बिल्वत्वचोगुडूच्यावाक्वाथःक्षौद्रेणसंयुतः । जयेत्रिदोषजांछर्दिंपर्पटःपित्तजांतथा ६२ हिङ्गुपौष्करचूर्णाढ्यंदशमूलशृतंजयेत् । गृध्रसींकेवलःक्वाथश्शेफालीपत्रजस्तथा ६३ रास्नामृतामहादारुनागरैरण्डजंशृतम् । सप्तधातुगतेवाते सामेसर्वाङ्गगेपिबेत् ६४ रास्नागोक्षुरकैरण्डदेवदारुपुनर्नवाः।गुडूच्यारग्वधौचैवक्वाथएषांविपाचयेत् ६५शुण्ठीचूर्णेनसंयुक्तंपिबेज्जङ्घाकटीग्रहे।पार्श्वपृष्ठोरुपीडायामामवातेसुदुस्तरे ६६ रास्नाद्विगुणभागास्यादेकभागास्तथापरे।धन्वयासबलैरण्डदेवदारुशटीवचाः६७

चूर्ण संयुक्त दे तौ खांसी मिटै ॥ ५९ ॥ (कासश्वासपर क्षुद्रादिकाढ़ा) भटकटैया, कुलथी, रूसा व सोंठ इनका काढा पुष्करमूल का चूर्णयुक्त पिये से कास, श्वास जाय ॥ ६० ॥ (हिचकीपर मेवड़ीकाढ़ा) मेवड़ीकाबीज, पीपरि, हींगभुनी युक्त पिये से पाचों प्रकारकी हिचकी जायँ ॥ ६१ ॥ (उप-काई पर बिल्वादि काढ़ा) बेलकी छाल वा गुर्चे का काढ़ा शहदयुक्त पिये तो त्रिदोषजन्य छर्दि मिटै जो पित्तपापड़ा शहदयुक्त पियेसे पित्तछर्दि जाय ॥ ६२ ॥ (गृध्रसी वायुपर दशमूलक्काथ) हींग, पुष्करमूल का चूर्ण प्रथम करे दशमूल क्काथ में युक्तकरिपिये तौ गृध्रसी वायुजाय जो मेवड़ीकाथमें हींग व रेंडमूल चूर्णयुक्त पिये तौ तुरंत गृध्रसीवायुमिटै ॥ ६३ ॥ (वायुपर रासनपंचककाढ़ा) रासन, गुर्चे, देवदारु, सोंठ, रेंडमूल यह काढ़ापिये से सप्तधातुगत वात सब अंगवायु दूरहो ॥ ६४ ॥ (वायुपर रास्ना सप्त) रासन, गुखुरू, रेंड, देवदारु, गदापुरैना, गुर्चे और अमलतास इनका काढा सोंठ चूर्ण डारिकै पिये से जांघ, कटि , पसुरी, पीठ, छाती और भारी आमवात मिटै ॥६५।६६ ॥ (सम्पूर्ण वायुपर महारास्नादि काढ़ा) दो भाग रासन और सब एक

वासकोनागरंपथ्याचव्यामुस्तापुनर्नवा। गुडूचीवृद्धदारु इचशतपुष्पाचगोक्षुरः ६८ अश्वगन्धाप्रतिविषाकृतमाल इशतावरी। कृष्णासहचरश्चैवधान्यकंबृहतीद्वयम् ६९ए भिःकृतंपिबेत्क्काथंशुण्ठीचूर्णेनसंयुतम्। कृष्णाचूर्णेनवायो गराजगुग्गुलनाथवा ७० अजमोदादिनावापितैलेनैरण्ड जेनवा॥सर्वाङ्गकम्पेकुब्जत्वेपक्षाघातेपबाहुके ७१ गृध्रस्या मामवातेचश्लीपदेचापतानके। अण्डवृद्धौतथाध्मानेजङ्घा जानुगतेर्दिते ७२ शुक्रामयेमेदरोगेवन्ध्यायोन्याशयेषुच। महारास्नादिराख्यातोब्रह्मणागर्भकारणम् ७३ एरण्डोबी जपूरश्चगोक्षुरोबृहतीद्वयम्।अश्मभेदस्तथाबिल्वएतन्मू लैःकृतःशृतः७४एरण्डतैलहिङ्ग्वाढ्योयवक्षारःससैंधवः स्तनस्कन्धकटीमेढ्रहृदयोरथव्यथांजयेत् ७५ नागरैरण्ड योःक्काथःक्काथइन्द्रयवस्यवा॥हिङ्गुसौवर्चलोपेतोबालशू लनिवारणः ७६ त्रिफलारग्वधक्काथःशर्कराक्षौद्रसंयुतः।

भागमें जवासा, वरियारा, रेंड, देवदारु, कचूर, वच, खसा, सोंठ, हड़, चाव, मोथा गदापुरैना, गुर्च, विधारा, सौंफ, गुखुरू, असगन्ध, अतीस, अमलतास, शतावरि पीपरि, इन्द्रयव, धनिया और दोनों भटकटैया इनका काढा सोंठि चूर्ण डारि पाक वा पीपरिका चूर्ण वा योगराजगुग्गुलुसाथ अजमोदादि चूर्णकेसंग वा रेंड़ी के तेलके संग तौ सर्वांग कंप, कूबड़, पक्षाघात, अपबाहुक गृध्रसी, आमवात, पीलपावँ, अपतान, अन्नवृद्धि, पेट फूलना, जंघापीड़ा, धातुरोग, बंध्याकी योनि दुष्टता यह महारास्नादि काढा ब्रह्माने कहाहै इसमें बहुत मनुष्य एक ओषधिका दूना रासन लेते हैं सो अनुचितहै ॥६७।७३॥ (छाती की वायुपर अरण्ड का ससक) रेंड, बिजौरा की जड़, गुखुरू, दोनों भटकटैया, पाषाणभेद और बेलकीगिरी इन सब जड़नका काढा रेंड़ीका तेल, हींग, पँवार, सेंधव युक्त पिये तौ स्तनपीड़ा, कण्ठ मेढ्र व हृदय की सब पीडामिटै॥७४।७५॥ (वातशूल पर शुंठीकाढा) सोंठ, रेंडमूल व इन्द्रयव का काढ़ा, भुनीहींग, कालानोन युक्त पिये से वातशूलजाय ॥ ७६ ॥ (पित्तशूल पर त्रिफलाकाढ़ा)

रक्तपित्तहरोदाहपित्तशूलनिवारणः ७७ एरण्डमूलंद्विपलं जलेष्टगुणितेपचेत्। तत्काथोयावशूकाढ्यःपार्श्वहृत्कफशूलहा ७८ दशमूलकृतःकाथोयवक्षारःससैन्धवः। हृद्रोगगुल्मशूलार्त्तिकासंश्वासंचनाशयेत् ७९ हरीतकीदुरालम्भाकृतमालकगोक्षुरैः। पाषाणभेदसहितैःकाथोमाक्षिकसंयुतः॥विबन्धेमूत्रकृच्छ्रेचसदाहेसरुजेहितः ८० वीरतरुर्द्वेक्षवेदाकाशस्सहचरत्रयम्। कुशद्वयंनलोगुन्द्रावकपुष्पोग्निमन्थकः ८१ मूर्वापाषाणभेदश्चश्योनाकोगोक्षुरस्तथा। अपामार्गश्चकमलंब्राह्मीचेतिगणोवरः ८२ वीरतर्वादिरित्युक्तःशर्कराश्मरिकृच्छ्रहा। मूत्राघातंवायुरोगान्नाशयेन्निखिलानपि ८३ एलामधूकगोकण्टरेणुकैरण्डवासकाः। कृष्णाश्मभेदसहिताःकाथएषांसुसाधितः। शिलाजतुयुतःप्रेयःशर्कराश्मरिकृच्छ्रहा ८४ समूलगोक्षुरकाथःसितामाक्षिक

त्रिफला, अमलतास इस काढे में शक्कर शहद युक्त करि पिये से रक्तपित्त दाह पित्त शूलजाय ॥ ७७ ॥ (कफ शूलपर रंडमूल काढा) रंडकी जड़ दोपल सोलह पल पानी में काढा करि जवाखार डारि पियेसे कफजन्य पार्श्वपीड़ा हृदयपीड़ाका नाश होय ॥ ७८ ॥ (हृदयरोगपर दशमूलकाढा) दशमूल का काढा जवाखार सैंधव युक्त पिये से हृद्रोग, वायुगोला, कास और श्वासका नाशहोय ॥ ७९ ॥ (मूत्रकृच्छ्रपर हरीतकी काढा) हड, जवासा, अमलतास, पाषाणभेद और गुखुरू इनका काढा शहदसंयुक्त पिये से मलमूत्ररोध दाहसहित सब रोग अच्छेहोंय (मूत्रकृच्छ्रपर अर्जुनकाथ) आकाशबवरि काशमूल तीनों कटसरैया मूल दोनों कुश, नरकटमूल, गोंदी, शिवलिंगी, अरणीकीजड़, मूर्वा, पाषाणभेद वा करील, गुखुरू, चिर्चिरा, कमलपत्र यह वीरतरु श्रेष्ठ गण है इस काढाके पियेसे शर्करा, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात और सम्पूर्ण वायुरोग नाशहोयँ ॥ ८० । ८३ ॥ (अश्मरीशर्करादिपर एलाकाढा) इलायची, मुलहठी, गुखुरू, मेरहीबीज, रंड, रूसा, पीपरि और पाषाणभेद इनका काढा शिलाजीत संयुक्त पिये से, शर्करा, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र ये रोग नाश होयँ ॥ ८४ ॥ (मूत्र

संयुतः। नाशयेन्मूत्रकृच्छ्राणि तथाचोष्णसमीरणम् ८५ वरादार्व्यब्ददारूणां क्वाथःक्षौद्रेणमेहहा। वत्सकस्त्रिफला दार्वी मुस्तकोवीजकस्तथा ८६ फलत्रिकाब्ददार्वीणा विशालायाःशृतंपिबेत्। निशाकल्कयुतंसर्वप्रमेहंविनिवर्त्तयेत् ८७ दार्वीरसाञ्जनंमुस्तं भल्लातः श्रीफलंवृषः। कैरातश्चपिबेदेषां क्वाथंशीतंसमाक्षिकम् ८८ जयेत्सशूलंप्रदरं पीतश्वेतासितारुणम्। न्यग्रोधप्लक्षकोशाम्रवेतसोवदरीतुणिः ८९ मधुयष्टिःप्रियालुश्चलोध्रद्वयमुदुम्बरः। पिप्पल्यश्चमधूकश्च तथापालाशपिप्पलः ९० सल्लकीतिन्दुकीजम्बूद्वयमाम्रतरुःशिवा। कदम्बककुभौचैव भल्लातकफलानिच ९१ न्यग्रोधादिगणक्वाथं यथालाभंचकारयेत्। अयंक्वाथोमहाग्राही व्रणभग्नंचसाधयेत्। योनि

कृच्छ्र पर गोखुरूकाढ़ा) गोखुरू के पंचांगका काढ़ा, मिश्री, शहद संयुक्त पिलावे तो मूत्रकृच्छ्र, उष्णवायु अच्छीहोय॥ ८५ ॥ (मूत्रकृच्छ्रपर त्रिफला काढ़ा) त्रिफला, दारुहल्दी, नागरमोथा और देवदारु इनका काढ़ा शहद संयुक्त पिये तो प्रमेह नाशहोय(पुनः)तैसेही कुरैया, त्रिफला, दारुहल्दी, नागरमोथा और ककही इनका काढ़ा शहद सहित पिये तो प्रमेह नाशहोय ॥ ८६ ॥ (प्रमेहपर त्रिफलाकाढ़ा) त्रिफला, नागरमोथा, दारुहल्दी, इन्द्रायण की जड़ इनका काढ़ा हल्दी चूर्णयुक्त पिये तो सकल प्रमेह नाशहोयँ॥ ८७ ॥ (प्रदरपर दारुहल्दीक्काथ) दारुहल्दी, रसोत, नागरमोथा, भिलावां, बेलगिरी, रूसा और चिरायता इनका काढ़ा ठण्ढा करि शहद संयुक्त पिये तो पीत श्वेत कृष्ण लाल सहित शूल स्त्री का प्रदररोग अच्छा होय ॥ ८८ ॥ (क्षतव्रणादि पर वटादिकक्काथ) वड़, पाकर, अम्बाड़, वेतस, वेर और तूतदृक्षकी छाल, मधुमेठी, चिरौंजी, लोध, गूलरी, पीपरि, मधूक, जगन्नाथीपीपरि, पलाश, तिन्दुक, दोनों जामुन, आम, छोटी हड़, कदम्ब, अर्जुनतरु, भिलावेंका फल जो द्रव्य इनमें न मिले उसे त्यागि दे यह न्यग्रोधादिगण काढ़ा बहुतग्राही है जो घाव खराब होगयाहो सो अच्छाहो योनिदोष, दाह, भेद, प्रमेह, विष ये सब नाश

दोषहरोदाहमेदोमेहाविषापहम् ९२ बिल्वोग्निमन्थश्योनाकःकाश्मरीपाटलातथा । क्वाथमेषांजयेन्मेदोदोषंक्षौद्रेणसंयुतः ९३ क्षौद्रेणत्रिफलाक्वाथःपीतोमेदोहरःस्मृतः । शीतीभूतंतथोष्णाम्बुमेदोहृत्क्षौद्रसंयुतः ९४ चव्यचित्रकविश्वानां साधितोदेवदारुणा । क्वाथस्त्रिवृच्चूर्णयुतो गोमूत्रेणोदराञ्जयेत् ९५ पुनर्नवामृतादारुपथ्यानागरसाधितः । गोमूत्रगुग्गुलुयुतःक्वाथःशोथोदरापहः ९६ पथ्यारोहितकक्वाथंयवक्षारकणायुतम् । पिबेत्प्रातर्यकृत्प्लीहगुल्मोदरनिवृत्तये ९७ पुनर्नवादारुनिशानिशाशुण्ठीहरीतकी । गुडूचीचित्रकोभार्गीदेवदारुकृतःशृतः ९८ पाणिपादोदरमुरःप्राप्तशोफंनिवारयेत् । फलत्रिकोद्भवंक्वाथंगोमूत्रेणैवपाययेत् ९९ वातश्लेष्मकृतंहन्तिशोथंवृषण

होयँ वेतसको कहीं जगन्नाथी पीपरि कहते हैं ॥ ८९ । ९२ ॥ (मेदरोगपर बेलकाढ़ा) बेल, अरणी, सोहनपात, खंभारी और पाडल इनका काढा शहद संग पिये तो मेददोष मिटै ॥ ९३ ॥ (पुनः त्रिफलादिक्वाथ) त्रिफले का काढा शहद संग पिये तो मेददोष जाय उष्ण जल ठण्ढाकरि शहदसंयुक्तपिये तो मेददोष जाय ॥ ९४ ॥ (उदररोगपर चावकाढ़ा) चाव, चीता, सोंठ और देवदारु इनका काढा निशोतचूर्ण गोमूत्र के साथ पिये तो उदररोग दूर होय ॥ ९५ ॥ (पेटफूलने पर गदापुरैनाकाढ़ा) गदापुरैना, गुर्च, देवदारु और सोंठ इनका काढा गोमूत्र गूगलयुक्त पिये से पेटकी सूजन मिटै ॥ ९६ ॥ (पिलही पर हरीतकीकाढ़ा) जंगीहड, अगियासर इनका काढा जवाखार व पीपरियुक्त प्रातःकाल पिये से प्लीहा, वायगोला, यकृत् अच्छी हो रोहित नाम करिके खर लेना ॥ ९७ ॥ (शोथपर गदापूर्णकाढ़ा) गदापुरैना, दारुहल्दी, सोंठ, बड़ीहड, गुर्च, चीता, भारंगी, देवदारु इनके काढा से हाथ पांव उदर छाती मुखकी सूजन जाय ॥ ९८ ॥ (अंडवृद्धि सूजनपर त्रिफलाकाढ़ा) त्रिफला के काढेमें गोमूत्र संयुक्त करि पिये से वात कफ जन्य

१ पुर्वदक्षिणभागस्थस्तनामख्यातमासजरः ॥

ठाखदिरचन्दनैः।त्रिवृद्वरुणकैरातवाकुचीकृतमालकैः १६
शाखोटकमहानिम्बकरञ्जातिविपाजलैः। इन्द्रवारुणिकान
न्ताशारिवापर्पटैःसमैः १७ एभिः कृतंपिवेत्क्वाथंकणागुग्गु
लुसंयुतम्। अष्टादशेपुकुष्ठेपुवातरक्तार्दितेतथा १८ उपदं
शश्लीपदेचप्रसुप्तेपक्षघातके। मेदोदोषेनेत्ररोगेमञ्जिष्ठा
दिःप्रशस्यते १९ पथ्याक्षधात्रीभूनिम्बैर्निशानिम्बामृतायु
तैः। क्वाथःकृतःषडङ्गोयंसगुडःशीर्षशूलहा २० भ्रूशङ्खक
र्णशूलानितथाचार्द्धशिरोरुजम्। सूर्यावर्तशङ्खकञ्चदन्त
पातंचदन्तुजम्। नक्तान्ध्यंपटलंशुक्रं चक्षुःपीडांव्यपोहति
२१ वासाविश्वामृतादार्वीरक्तचन्दनचित्रकैः। भूनिम्बनि
म्बकटुकापटोलत्रिफलाम्बुदैः २२ यवकालिङ्गकुटजैःक्वाथः
सर्वाक्षिरोगहा।वैस्वर्यंपीनसंश्वासंनाशयेदुरसःक्षतम् २३
अमृतात्रिफलाक्वाथः पिप्पलिचूर्णसंयुतः। सक्षौद्रःशीत

अमलतास का गूदा, सहोरा, बकायन, करंज, अतीस, नेत्रवाला, इंद्रायनकी जड़, जवासा, शारिवा और पित्तपापड़ा ये सब द्रव्य समान लेके काढ़ा करि पीपरि व गुग्गुलु मिश्रित करि पिये से अठारहों कोढ़ और वातरक्तपीडा, उपदंश, फीलपाव, प्रसुप्त कहे शून्यवाए, पक्षाघात, मेदोदोष और नेत्ररोग इन रोगन के दूर करने को यह वृद्धिमंजिष्ठादि काढ़ा हितहै (शिरश्शूल नेत्रपर हरीतकीकाढ़ा) हड़, बहेड़ा, आंवरा, चिरायता, हल्दी, नींबकीछाल और गुर्च इन सात औषधों के षडङ्ग काढ़े में गुड़मिश्रित करि पिये से शिरश्शूल, भौंह व कानकीशूल, आधाशीशी, सूर्यावर्त्त, शंखशूल, दंतपात, दंतरोग, रतौंधी, पटल, फूली, नेत्ररोग और नेत्रपीड़ा ये सब दूर होयँ ॥ १५ । २१ ॥ (नेत्ररोग पर वासादिकाढ़ा) रूसा, सोंठ,गुर्च, हल्दी, रक्तचन्दन,चीता, चिरायता, नींब, कुटकी, परवल, त्रिफला, मोथा, यव, इन्द्रयव और कुरैया इस काढ़ेसे सब नेत्ररोग नाशहोयँ स्वरभङ्गसे कण्ठ खुलजाय पीनस श्वास कलेजे का घाव जाताहै ॥ २२ । २३ ॥ (दूसरा काढ़ा पूर्व यथा) गुर्च,त्रिफले का काढ़ा, शहद पीपरि संयुक्त ठण्ढाकरि सदैव पीने से सर्व नेत्ररोग विनाश

लोनित्यंसर्वत्रान्यथांजयेत् २४ अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षवट वेतसजं शृतम् २५ व्रणःशोथोपदंशानांनाशनःक्षालना त्स्मृतम्। प्रमथ्याप्रोच्यतेद्रव्यक्षुण्णात्कल्कीकृताच्छृतात्। तोयेष्टगुणितेतस्याःपानमाहुःपलद्वयम् २६ मुस्तकेन्द्रय वैःसिद्धा प्रमथ्याद्विपलोन्मिता। सुशीतामधुसंयुक्तारक्ता तीसारनाशिनी २७ साध्यंचतुष्पलंद्रव्यं चतुष्षष्टिपले म्बुनि। तत्क्वाथेनार्द्धशिष्टेनयवागूंसाधयेद्बुधः २८ आम्रा म्रातकजम्बूत्वक्कषायेविपचेद्बुधः। यवागूंशालिभिर्युक्तां तांभुक्त्वाग्रहणींजयेत् २९ कल्कद्रव्यंपलंशुण्ठीपिप्पली चार्द्धकार्षिकी। वारिप्रस्थेनविपचेत्सद्रव्योयूषउच्यते ३० कुलित्थयवकोलैश्चमुद्गैर्मूलकशुष्ककैः। शुण्ठीधान्यकयुक्तै श्चयूषःश्लेष्मानिलापहः ३१ सप्तमुष्टिकइत्येपसन्निपात

होवें ॥ २४ ॥ (क्षतपर पिप्पल्यादिकाढ़ा) पीपरि, गूलर, पकरिया, वड़ और वेतस इनकी छालका काढ़ाकरि घाव धोवै तो उपदंशकहे गर्मी और घाव सूजन ये सब अच्छे होवें ॥ २५ ॥ (काढ़े की दूसरी विधि) औषधी पीसके गोली बनावै तब अठगुणा पानी में डारि काढ़ा करै जब चौथाई पानी रहै तब उतारिले उसे प्रमथ्या कहते हैं इसके पानकी मात्रा दोपल है ॥ २६ ॥ (रक्तातीसार पर मोथादि प्रमथ्या) नागरमोथा और इंद्रयवकी प्रमथ्या दोपल ठंढाकरि शहद मिश्रीयुक्त पिये से रक्तातीसार नाशहोय ॥२७॥ (यवागूविधान) षोडश तोले द्रव्य में उसका सोलहगुणा पानी २५६ तोले भरदेय आधा जरिजाय तब द्रव्य छानिकै फेंकदेइ जो पानी रहजाय उसे यवागू कहते हैं व आम, अंबाडा और जामुन इन तीनों वृक्षों की चारपल छाल को कूटकर चौंसठगुने पानी में डाल के औटावे जब आधा पानी रहजावे तब उतारके इस जलको छानले उसमें चारपल चावल डाल औटाके उतारे इसे आम्रादि यवागू कहते हैं इसको खाकर संग्रहणीको जीतताहै ॥ २८।२९ ॥ (यूषविधान) सोंठका कल्क औषध एकपल तिस में पीपरि पाव मासे प्र- स्थभर पानी में पचाइ तिसमें अन्न खूब गलाइके देइ उसे यूष कहते हैं ॥ ३० ॥ (सन्निपात पर सप्तमुष्टियूप) कुलथी, यव, वेर, मूग, मूरीकी पैंदी जो

ज्वरञ्जयेत्। आमवातहरः कण्ठहृद्वक्त्राणां विशोधनः ३२ क्षुण्णं द्रव्यपलं सम्यक् चतुष्षष्टिपले जले। अर्द्धशिष्टं च तद्देयं पाने भक्तादिसंविधौ ३३ उशीरपर्पटोदीच्यमुस्तनागरचंदनैः। जलं शृतं हिमं देयं पिपासाज्वरनाशनम् ३४ अष्टमेनांशशेषेण चतुर्थेनार्द्धकेन वा। अथवा क्वथनेनैव सिद्धमुष्णोदकं वदेत् ३५ श्लेष्मामवातमेदोघ्नं वस्तिशोधनदीपनम्। कासश्वासज्वरं हन्ति पीतमुष्णोदकं निशि ३६ क्षीरमष्टगुणं द्रव्यात् क्षीरान्नीरं चतुर्गुणम्। क्षीरावशेषं तत्पीतं शूलमामोद्भवं जयेत् ३७ अथान्नप्रक्रिया चैव प्रोच्यते नातिविस्तरात्। यवागूः षड्गुणजले सिद्धा स्यात्कृसरा घना ३८ तण्डुलैर्मुद्गमाषैश्च तिलैर्वा साधिता हिता। यवागूर्ग्राहिणी बल्या तर्प्प

पत्ताके पास होतीहै ये सब सूखी द्रव्य इन सबका यूष सोंठ, धनियायुक्त प्यावै तो कफवात नाशहोय इस सप्तमुष्टिक यूष से सन्निपात ज्वर जाय आमवात जाय कण्ठ हृदय व मुख शुद्धरहै ॥ ३१। ३२ ॥ (पानादि कल्पना) कुटी द्रव्य पलभर ले चौंसठि पल पानी में औटै जब आधा रहिजाय उस पानी को भक्त कहते हैं इसे भोजन समय थोडा थोड़ा करिदेना, चाहिये ॥ ३३ ॥ (ज्वर तृषापर उशीरादिपान) खस, पित्तपापडा, सुगन्धवाला, नागरमोथा, सोंठ और रक्तचन्दन इन्हें पकाय पानी ठण्ढा करदेय तौ पियास व ज्वर नाशहोय ॥ ३४ ॥ (उष्णोदक) जिस आठवां अंश व चौथा अंश अर्द्ध शेष अथवा अतितप्तकरे उसे उष्णोदक कहते हैं " अथ सुश्रुतोक्तम्लोकसार्द्धद्वयम्" तत्पादहीनं वातघ्नमर्द्धहीनंतु पित्तजित् । कफघ्नं पादशेषञ्च पानीयं दीपनं स्मृतम् ॥ शारदं चार्द्धपादघ्नं पादहीनं तु हैमनम् । शिशिरे च वसन्ते च ग्रीष्मे पादावशेषितम् ॥ विपरीतश्च तद्दृष्ट्वा दापिकमार्गिकं स्मृतमिति ॥ ३५ ॥ कफ, आमवात, मेदा, वस्तिशोधन, दीपन, श्वास, कास, ज्वर ये रोग रात्रिको उष्णोदक पीने से जाते हैं ॥ ३६ ॥ (क्षीरपाकविधि) द्रव्यका आठगुणा दूध दूधका चौगुणा पानी एकत्रकर औटै जब पानी जरजाय तब दूध पिये तौ आमशूल दूर होय ॥ ३७ ॥ (अन्नप्रकार) अब संक्षेप से अन्नविधि कहते हैं अन्न यवागूः से छ गुना जल देकै पकावै इसे कृसरा और घना कहते हैं ॥ ३८ ॥ चावल, मूंग,

णीग्राततर्नाशिनी ३९ विलेपीचघनासिक्थासिद्धानीरेचतुर्गुणे। बृंहणीतर्पणीहृद्यामधुरापित्तनाशिनी ४० द्रवाधिका स्वल्पसिक्थाचतुर्दशगुणेजले। सिद्धोपयाबुधैर्ज्ञेयायूषःकिञ्चिद्घनःस्मृतः। पेयालघुतराज्ञेयाग्राहिणीधातुपुष्टिदा। यूषोबलकरःकण्ठ्योलघुपाकःकफापहः। जलेचतुर्दशगुणे तण्डुलानांचतुष्पलम् ४१ विपचेत्स्राव्येन्मण्डंसभक्तोमधुरोलघुः। नीरेचतुर्दशगुणेसिद्धोमण्डस्त्वसिक्थकः ४२ शुण्ठीसैन्धवसंयुक्तःपाचनोदीपनःस्मृतः ४३ धान्यत्रिकटुसिन्धूत्थमुद्गतण्डुलयोजितः। भृष्टश्चहिङ्गुतैलाभ्यांसमण्डोष्टगुणःस्मृतः। दीपनःप्राणदोबस्तिशोधनोरक्तवर्द्धनः ४४ ज्वरजित्सर्वदोषघ्नोमण्डोष्टगुणउच्यते। सुकण्डितैरतथाभ्रृष्टैर्वाट्यमण्डोयवैर्भवेत् ४५ कफपित्तहरः कण्ठ्योरक्तपित्त

भाप और तिल इनको यवागूकरै यह ग्रहणीको बल देती है तृप्तिको करतीहुई पित्तको नाशती है॥ ३९ ॥ (विलेपीप्रकार) अन्नमें चौगुना जलदे पकावै सो विलेपी है सो धातुओं को पोषै तृप्तकरै मन प्रसन्न करे प्रिय व मधुर होकर पित्तनाशक है ॥ ४० ॥ (अथ पेया) अन्नको चौदह गुने पानी में सिद्धकरै पतला माठा न हो जो पियाजाय उसे पेया कहते हैं उससे कुछही गाढ़ेको यूष कहते हैं यह पेया अतीव हलकी होकर मलादिकों को स्तम्भन करती व धातु पुष्ट करती है और यूष हलका है ग्रहणी को शुद्धकरताहै धातुपुष्ट करै बल करै कण्ठ शुद्धकरै लघुपाक है कफहारक है (भातविधि) चावलसे चौदहगुणा पानी लेके चुरावे उसका मांड निचोरै सो मीठाहै हलकाहै उसे भक्तमण्ड कहतेहैं (शुद्धमण्ड) उसी मांडमें सोंठ व सैंधव डारिकै पिये तो दीपन पाचन करै॥ ४१ । ४३॥ (अष्टगुण मण्ड) धनियां, त्रिकुटा, सैंधव, मूंग, चावल, हींग तेलकी भूनी यवयुक्त मांडका अष्टगुणा मांड दीपनहै प्राणदाताहै वस्तिशोधन रक्तवर्द्धन ज्वरघ्न सर्वदोषहरणहै॥ ४४ ॥ (यवमण्ड पित्तादिपर) यव कूटि भूनिकै चुरवै सो वाट्यमण्डहै कफ पित्त हरै कंठ शुद्धकरै रक्तपित्तहरै॥ ४५ ॥ (लाजमंड) धानका लावा कुटी द्रव्य वा भूनें धानका बनावै सो लाजमंडहै यह कफपित्तहारी व ग्राही होकर तृष्णा व ज्वर को

प्रसादनः। लाजैर्वातण्डुलैर्भृष्टैर्लाजमण्डः प्रकीर्त्तितः।श्ले
ष्मपित्तहरोग्राहीपिपासाज्वरजिन्मतः १४६ इति श्री
शार्ङ्गधरेमध्यखण्डेक्काथकल्पनाद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

क्षुण्णेद्रव्यपलेसम्यग्जलमुष्णंविनिक्षिपेत्। मृत्पात्रे
कुडवोन्मानंततस्तुस्रावयेत्पटात् १ तस्यचूर्णद्रवःफाण्ट
स्तन्मानंद्विपलोन्मितम्। सितामधुगुडादींस्तुक्वाथवत्तत्र
निक्षिपेत् २ मधूकपुष्पंमधुकंचन्दनंसपरूषकम्। मृणालं
कमलंलोध्रंगम्भारीनागकेशरम् ३ त्रिफलांशारिवांद्राक्षां
लाजांक्कोष्णेजलेक्षिपेत्। सितामधुयुतेपेयःफाण्टोवासौहि
मोथवा ४ वातपित्तज्वरंदाहंतृष्णामूर्च्छारतिभ्रमान्।
रक्तपित्तंमदंहन्यान्नात्रकार्याविचारणा ५ आम्रजम्बूकि
सलयैर्वटशुङ्गप्ररोहकैः। उशीरेणकृतःफाण्टःसक्षौद्रोज्वर
नाशनः६ पिपासाछर्द्यतीसारान्मूर्च्छांजयतिदुर्जयाम्। म

विनाशताहै ॥ १४६ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरसुधाकरेमध्यखण्डेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

फांट कल्क वा कुटीद्रव्य पलभर एक कुडव पानी माटीके पात्रमें अच्छीभांति तप्तकरि उतारिले उस कुटीहुई द्रव्यको उष्णोदक में डारि ढकदे जब ठंढाहो तब छानिलेय इसे फांट कहते हैं आठ रुपये भर फांटकी मात्राहै मिश्री शहद पुराना गुड़ जिसभांति क्काढे में डारना कहाहै उसी भांति फांट में पड़ताहै ॥ १ । २ ॥ (पित्तज्वर पै मधूकफांट) महुआके फूल, मुलहटी, लालचंदन, फालसा, कमल, लोध, खंभारी, नागकेशर, त्रिफला, सरिवन, दाख और लावा के तप्तवारि में डारि मिश्री शहद संयुक्त पिलावै इस फांट वा हिमसे वात, पित्त, ज्वर, दाह, प्यास, मूर्च्छा, मतिभ्रम, रक्तपित्त और मद ये सब दूरहोयँ इस में कुछ विचार नहीं करना चाहिये ॥ ३ । ५ ॥ (पियासपर आम्रादि फांट) आम व जामुन की कोंपल बड़की कली भीतरी पत्ते और जटा खस इनका फांट करि पिये तो ज्वर, प्यास, छर्दि, अतीसार और मूर्च्छा ये सब दूरहोंय ॥ ६ ॥ (पित्ततृष्णापर मधूकफांट) महुआके फूल, खंभारी, चन्दन, खस, धनियां, नेत्रवाला वा दाख इनका फांट शक्करयुक्त पिये तो तृष्णा, पित्त, दाह,

धुयष्टीचकाकोदुम्बरपल्लवैः। नीलोत्पलंहिमस्तेषांतृष्णा छर्दिनिवारणः ३ नीलोत्पलंबलाद्राक्षामधूकंमधुकंतथा। उशीरंपद्मकंचैवकाश्मरीचपरूपकम् ४ एतच्छीतकषाय श्चवातपित्तज्वरंजयेत्। सप्रलापभ्रमच्छर्दिमोहतृष्णानि वारणः ५अमृतायोहिमःपेयोजीर्णज्वरहरस्स्मृतः। वासा याश्चहिमःकासरक्तपित्तज्वराञ्जयेत् ६ प्रातःसशर्करः पे योहिमोधान्याकसम्भवः। अन्तर्दाहंतथातृष्णांजयेत्स्रोतो विशोधनः ७ धान्याकधात्रिवासानांद्राक्षापर्पटयोर्हिमः। रक्तपित्तज्वरंदाहंतृष्णाशोषञ्चनाशयेत् ८॥ इति श्रीशा र्ङ्गधरेमध्यखण्डेहिमकल्पनाचतुर्थोऽध्यायः॥ ४॥

द्रव्यमार्द्रंशिलापिष्टंशुष्कंवासजलंभवेत्। प्रक्षेपाएव कल्कास्तेतन्मानंकर्षसम्मितम् १ कल्केमधुघृतंतैलंदेयंद्वि गुणमात्रया। सितागुडौसमौदद्याद्द्रवादेयाश्चतुर्गुणः २

हिम) मरिच, मुलहटी, कठगूलरकी कोंपल नील कमल के हिमसे तृष्णा व छर्दि का नाशहोय ॥ ३ ॥ (पित्तज्वर पर नील कमलादि हिम) नील कमल, खरियारा, दाख, महुआ, मुलहठी, नेनबाला, पद्माख, खंभारी और फा लसा इनका शीतकषाय वातपित्तज्वर, प्रलाप, भ्रम, छर्दि, मोह और तृष्णा को हरता है ॥ ४ । ५ ॥ (जीर्णज्वर पर गुडूच्यादि हिम) गुर्च के हिमसे जीर्णज्वर जाताहै वासा कहे रूसाके हिमसे कास और रक्तपित्तज्वर जाताहै ॥ ६ ॥ धनियाका हिम शकर डारि प्रातःकाल पियेसे अन्तर्दाह, तृष्णा, और स्रोतशोधये सब रोग नाशहोतेहैं ॥७॥ (रक्तपित्तपर) धनिया, आंवरा, रूसा, दाख और पित्तपापड़ा इनका हिम रक्त पित्तज्वर, दाह, तृषा और कंठशोषको विनाशताहै ॥ ८ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेमध्यखण्डेहिमकल्पनाचतुर्थोऽध्यायः॥ ४ ॥

(अथ कल्कविधि :) गीली औषधको शिलापै बारीक चटनी के स- मान पीसे यदि सूखीहोय तो उसमें जलडालके पीसे तिसे कल्क और प्रक्षेप कहते हैं इसकी मात्रा दशमाशे कही है ॥ १ ॥ कल्क में मधु, घृत, तेलमात्रा से दूना देना मिश्री गुड़ समान मात्रा व अति थोरी पतली चौगुनी देना

त्रिवृद्ध्यापञ्चवृद्ध्यावासप्तवृद्ध्याथवाकणाः । पिबेत्पि ष्ट्वादशदिनंतास्तथैवापकर्षयेत् ३ एवंविंशद्दिनैः सिद्धंपि प्पलीवर्द्धमानकम्। अनेनपाण्डुवातास्रकासश्वासारुचि ज्वराः। उदरार्शःक्षयश्लेष्मवातानश्यन्त्युरोग्रहाः ४ लेपा न्निम्बदलैःकल्कोव्रणशोधनरोपणः। भक्षणाच्छर्दिकुष्ठानि पित्तश्लेष्मकृमीञ्जयेत् ५ महानिम्बजटाकल्कोगृध्रसीना शनःस्मृतः। शुद्धकल्कोरसोनस्य तिलतैलेनमिश्रितः। वात रोगाञ्जयेत्तीव्रान्विषमज्वरनाशनः ६ पक्वकन्दरसोनस्य गुटिकानिस्तुषीकृताः। पाटयित्वाचतन्मध्यं दूरीकुर्य्यात्त दङ्कुरम् ७ तदुग्रगन्धनाशायरात्रौतक्रेविनिक्षिपेत्। अपनी यचतन्मध्याच्छिलायांपेषयेत्ततः। तन्मध्येपञ्चमांशेनचू र्णमेषांविनिक्षिपेत् ८ सौवर्चलंयवानीचभर्जितंहिङ्गुसैन्धव

चाहिये ॥ २ ॥ (पांडुपर वर्द्धमान पीपरि) पीपरि तीन व पांच व सात बढावै और जै पीपरि से आरम्भकरै तै प्रतिदिन बढावै दशदिन तांई फिर उतनी प्रतिदिन घटावै बीसवेंदिन प्रथम दिनकी मात्रा पूरी करै यों वर्द्धमानपीपरि सिद्ध करनेसे पांडुरोग, वातरक्त, कास, श्वास, अरुचि, ज्वर, उदरविकार, क्षयी, कफ, वात, छाती जकड़ना ये सब दूरहों और जो पानी व दूध संग पिया चाहै तो तीन दिनतक दो व तीन तोले दूधले फिर कल्क से चौगुनाले ॥ ३ । ४ ॥ (घावपर निम्बकल्क) नींबपत्र की लुगदी घावपर

पहः । नवनीततिलैःकल्कोजेतारक्तार्शसांस्मृतः २५ न
वनीतंसितानागकेसरैश्चापितद्विधः । पीतोमसूरयूषेण
कल्कशुण्ठीशलाटुजः । जयेत्सङ्ग्रहणींतद्वत्तकेणवृहतीम
वः २६ इति श्रीशार्ङ्गधरेमध्यखण्डेपञ्चमोऽध्यायः॥५॥

अत्यन्तशुष्कंयद्द्रव्यंसुपिष्टंवस्त्रगालितम् । तत्स्याच्चू
र्णरजःक्षोदस्तन्मात्राकर्षसम्मिता १ चूर्णेगुडस्समोदेयः
शर्कराद्विगुणाभवेत् । चूर्णेषुभर्जितंहिङ्गुदेयंनोत्क्लेदकृद्भवे
त् २ लिहच्चूर्णंद्रवैः सर्वैर्घृताद्यैर्द्विगुणोन्मितैः । पिवेच्चतुर्गुणै
रेवंचूर्णमालोडितंद्रवैः ३ चूर्णावलेहगुटिकाकल्कानाम
नुपानकम् । वातपित्तकफातंकेत्रिद्व्येकपलमाहरेत् ४
यथातैलंजलंप्राप्यक्षणेनैवप्रसर्पति । अनुपानवलादङ्गेत
थासर्पतिभेषजम् ५ द्रवेणयावतासम्यक्चूर्णंसर्वंप्लुतं
भवेत् । भावनायाःप्रमाणन्तुचूर्णेप्रोक्तंभिषग्वरैः ६ आ
मलंचित्रकःपथ्यापिप्पलीसैन्धवस्तथा । चूर्णितोयंगणोज्ञे

पीनेसे ग्रहणी नाशहोय भटकटैया के फलका कल्क मट्ठाके साथ पीनेसे संग्रहणी रोगको जीतताहै ॥ २५ ॥ २६ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरसुधाकरेपञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

(अथ चूर्णविधि) अतीव सूखीद्रव्य कूटिकै कपड़े में छानिले उसे चूर्ण रज और क्षोद कहते हैं इसके खाने की मात्रा कर्षभर कही है ॥ १ ॥ चूर्ण में गुड़ समान लेना खाड़ भूनी हींग भूनी हुई देना ॥ २ ॥ घृत शहद आदि तथा द्रववस्तु दूनी दे चाटै और पीनेकी द्रव्य चूर्ण के साथ चौगुनी देना ॥ ३ ॥ चूर्ण, अवलेह, गुटिका और कल्क इनका अनुपान वात में तीन पल पित्त में दो पल कफमें एक पल देवै ॥ ४ ॥ अनुपान देनेका कारण यहहै कि जैसे तेल पानी में डाले से फैल जाताहै वैसेही अनुपान के बल से औषध प्रवेश करती है ॥ ५ ॥ औषध में किसीकी पुट देनाहो तो जितने में चूर्ण पुटकी मुवाफिकहो तितना देना भावना देनाहो तो चूर्णस्थान में भावप्रकाश में देख लेना ॥ ६ ॥ (सर्वज्वरपर आमलकादि चूर्ण) आवरा, चीता, हड़, पीपरि, सैंधव इन पांचोंका चूर्ण सर्वज्वर नाशकरै व रेचक, रोचक, कफहर्ता होकर दीपन पाचनहै ॥

यः सर्वज्वरविनाशनः ७ भेदीरुचिकरःश्लेष्मजेतादीप
नपाचनः। मधुनापिप्पलीचूर्णंलिहेत्कासज्वरापहम् ८ हि
क्काश्वासहरंकण्ठ्यंप्लीहघ्नंबालकोचितम् । एकाहरीतकी
योज्याद्वौतुयोज्यौविभीतकौ ९ चत्वार्यामलकान्येवत्रिफ
लैषाप्रकीर्तिता । त्रिफलामेहशोथघ्नीनाशयेद्विषमज्वरा
न् १०दीपनीश्लेष्मपित्तघ्नीकुष्ठहन्त्रीरसायनी।सर्पिर्मधु
भ्यांसंयुक्तासैवनेत्रामयाञ्जयेत् ११ पिप्पलीमरिचंशुण्ठी
त्रिभिस्त्र्यूषणमुच्यते। दीपनंश्लेष्मदोषघ्नंकुष्ठपीनसना
शनम् १२ जयेदरोचकंसाममेहगुल्मगलामयान्। पिप्प
लीचविकाविश्वापिप्पलीमूलचित्रकैः १३ पञ्चकोलमि
तिख्यातंरुच्यंपाचनदीपनम् । आनाहप्लीहगुल्मघ्नंशूल
श्लेष्मोदरापहम् १४ त्रिगन्धमेलात्वक्पत्रैश्चातुर्जातंस
केसरम्। त्रिगन्धंसचतुर्जातंरूक्षोष्णंलघुपित्तकृत् १५ व

(ज्वरपर पीपरिचूर्ण) पीपरि, शहद युक्त चाटै तो ज्वर, कास, हिचकी, श्वास, कण्ठरुज, पिलही ये सकल रोग नाश होयँ तथा बालकों के लिये योग्यहै (प्रमेहपै त्रिफलाचूर्ण) हड़ एकभाग बहेड़ा दो भाग आंवरा चारभाग इसप्रकार त्रिफला है सो त्रिफला प्रमेह शोथ और विषमज्वर को नाशकरती है और दीपन कफ पित्त नाशन व कुष्ठहरता होकर रसायन है वही त्रिफला शहद व घृतयुक्त खाने से नेत्ररोग दूरकरै है ॥ ७-११ ॥ पीपरि, मरिच और सोंठ इसे त्र्यूषण और त्रिकुटा कहते हैं यह दीपन होकर कफ, कुष्ठ व पीनस को नाशकरताहै तथा आंव, अरुचि, मेह, गुल्म, कण्ठरोग ये सब दूरहोयँ (कफादिपर पञ्चकोलचूर्ण) पीपरि, चाव, सोंठ, पीपरामूल और चीता इसे पञ्चकोल कहते हैं यह रोचन, पाचन और दीपन होकर, आनाह, पिलही, गुल्म, शूल, कफ, उदररोग इनसबों को नाशताहै ॥ (त्रिगन्ध चूर्ण) इलायची, दालचीनी और तज ये त्रिगन्धहै (चातुर्जात) इलायची, दालचीनी, पत्रज और केसर ये चातुर्जात हैं ये दोनों रूखे हैं उष्ण हैं कुछ पित्तकारक हैं कांति रुचि कर्त्ता तीक्ष्णहैं और विष व कफको नाशते हैं ॥ (जीवनीयगण)

पथ्यैरुचिकरंतीक्ष्णंविषश्लेष्मामयाञ्जयेत्। काकोलीक्षी
रकाकोलीजीवकर्षभकौतथा १६ मेदाचान्यामहामेदाजी
वन्तीमधुकन्तथा । मुद्गपर्णीमाषपर्णीजीवनीयोगणस्त्व
यम् १७जीवनीयोगणःस्वादुर्गर्भसन्धानकृद्गुरुः।स्तन्यकृ
द्बृंहणोवृष्यःस्निग्धश्शीतस्तृषापहः। रक्तपित्तंक्षयंशोषं
ज्वरदाहानिलाञ्जयेत् १८ द्वेमेदेद्वेचकाकोल्यौजीवकर्षभ
कौतथा। ऋद्धिवृद्धीचनैःसर्वैरष्टवर्गउदाहृतः। अष्टवर्गो
बुधैःप्रोक्तोजीवनीयसमोगुणैः १९ सिन्धुसौवर्चलंचैवबि
डंसामुद्रिकंगडम्।एकद्वित्रिचतुष्पञ्चलवणानिक्रमाद्विदुः
२० तेषुमुख्यंसैन्धवंस्यादनुक्तेतत्प्रयोजयेत्। सैन्धवाद्यं
रोमकान्तंज्ञेयंलवणपञ्चकम् २१मधुरंसृष्टविण्मूत्रंस्निग्धं
सूक्ष्मंबलापहम् । वीर्योष्णंदीपनंतीक्ष्णंकफपित्तविवर्द्ध
नम् २२ स्वर्जिकायावशूकश्चक्षारयुग्ममुदाहृतम्। ज्ञे

काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, जीवन्ती "दूधिया लताकी छीमीकी छीमीऐसी तरकारी होतीहै" मुलहठी, मूंगफली और उर्दफली इनकी जीवनीयगण संज्ञाहै सो स्वादिष्ट, गर्भस्थितिकारक, भारी, दुग्धवर्द्धिनी, धातुपोषक, धातुशोधक, स्निग्ध व ठण्ढी होकर तृष्णा, रक्तपित्त, क्षयी, शोष, ज्वर, दाह और वायुको हरताहै ॥ १२ । १८ ॥ मेदा, दोनों काकोली, जीवक, ऋषभक, ऋद्धि और वृद्धि यह अष्टवर्ग है परन्तु आठमें कोई मिलती है अष्टवर्ग को वैद्यलोग जीवनीयगणके तुल्य कहते हैं ॥ १९ ॥ (विण्मूत्र पर लवण पंचकचूर्ण) सेंधा, सोंचर, बिड्नोन, खारी और सांभर इन पांचों में पहिला एक लवण, पहिले व दूसरे को द्विलवण, पहिले, दूसरे व तीसरेको त्रिलवण, पहिले, दूसरे, तीसरे व चौथे को चतुर्लवण और पहिले, दूसरे, तीसरे, चौथे व पांचवें को पञ्चलवण कहते हैं ॥ २० ॥ इनमें सेंधा मुख्य है जहां नाम न लिखे तहां सेंधा लेना सेंधे से सांभरि तक पांच लोन जानो ॥ २१ ॥ पाक मधुर है मल मूत्र पकायके गिराता है चिकना प्रवेश करता बलहरता धातु को गरम करताहुआ दीपन व तीक्ष्णहो कफ व पित्तको बढाता है॥ २२ ॥(गुल्मा-

यौवह्निसमौक्षारौस्वर्जिकायावशूकजौ २३ क्षाराश्चान्येऽपि गुल्मार्शोग्रहणीरुक्छिदःस्मराः। पाचनाःकृमिपुंस्त्वघ्नाः शर्कराश्मरिनाशनाः २४ त्रिफलारजनीयुग्मंकण्टकारीयुगेशटी। त्रिकटुग्रन्थिकंमूर्वागुडूचीधन्वयासकाः २५ कटुकापर्पटोमुस्तंत्रायमाणाचबालकं। निम्बःपुष्करमूलंच मधुयष्टीचवत्सकम् २६ यवानीन्द्रयवोभार्गीशिग्रुबीजंसुराष्ट्रजा। वचात्वक्पद्मकोशीरंचन्दनातिविषाबलाः २७ शालपर्णीपृष्ठपर्णीविडङ्गंतगरंतथा। चित्रकोदेवकाष्ठञ्च, चव्यंपत्रंपटोलजम् २८ जीवकर्षभकौचैवलवङ्गंवंशलोचनम्। पुण्डरीकंचकाकोलीपत्रजंजातिपत्रकम् २९ तालीसपत्रंचतथासमभागानिचूर्णयेत्। सर्वचूर्णस्यसार्द्धंशर्करातंप्रक्षिपेत्सुधीः ३० एतत्सुदर्शनंनामचूर्णदोषत्रयापहम्। ज्वरांश्चनिखिलान्हन्यान्नात्रकार्याविचारणा ३१

(दिपर खार) सज्जीखार और जवाखार ये दो खार कहे हैं सो दोनों अग्नि समान देदीप्यमान हैं ॥ २३ ॥ और क्षार सहिजनक्षार व गदापूर्णक्षार भी- गुल्म, अर्श, ग्रहणी इन रोगों को नाश करता है तथा पाचन कृमिनाशक पुं- स्त्वहन्ता हो शर्करा व पथरी को हरता है ॥ २४ ॥ (सर्वज्वरपर सुदर्शन चूर्ण) त्रिफला, दोनों हल्दी, दोनों भटकटैया, कचूर, त्रिकुटा, पीपरामूल मूर्वा, गुर्च, धमासा ॥ २५ ॥ कटुकी, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, त्रायमाणा नेत्र- बाला, नीमकी छाल, पुष्करमूल, मुलहठी, कुरैया ॥ २६ ॥ अजवाइन, इन्द्र- यव, भारंगी, सहिंजन के बिया, भुनी फटकरी, वच, तज, पद्माख, खस, श्वेत चन्दन, अतीस, खरियारा ॥ २७ ॥ वनउर्दी, वनमूंग, वायविडंग, तगर, चीता, देवदारु, चाव, पटोल ॥ २८ ॥ "जीवक, ऋषभक इन दोनोंके अभावमें बिदारी कन्द लेना" लौंग, वंशलोचन कमलपत्र, काकोली के अभाव में मुलहठी लेना दुद्ध में दूना तेजपात, जावित्री ॥ २९ ॥ तालीसपत्र ये सब समान ले चूर्ण करे सब चूर्णका आधा चिरायता डारै ॥ ३० ॥ यह सुदर्शन चूर्ण त्रिदोषनाशक हो निश्चय सर्वज्वर को हरता है इसमें विचार नहीं करना चाहिये ॥ ३१ ॥

पृथग्द्वन्द्वागन्तुजांश्चधातुस्थान्विषमज्वरान् । सन्निपा तोद्भवांश्चापिमानसानपिनाशयेत् ३२ शीतज्वरैका हिकादीन्मोहंतन्द्रांभ्रमंतृषाम् । श्वासंकासंचपाण्डुत्वंह द्रोगंहन्तिकामलाम् ३३ त्रिकपृष्ठकटीजानुपार्श्वशूलनि वारणम् । शीताम्बुनापिबेद्धीमान्सर्वज्वरनिवृत्तये ३४ सु दर्शनंयथाचक्रंदानवानांविनाशनम् । तद्वज्ज्वराणांसर्वे षामेतच्चूर्णंनिवारणम् ३५ कासश्वासज्वरहरात्रिफला पिप्पलीयुता। चूर्णितामधुनालीढाभेदिनीचाग्निबोधिनी ३६ कट्फलंमुस्तकंतिक्ताशुण्ठीशृङ्गीचपौष्करम्। चूर्णमेषां चमधुनाशृङ्गवेररसेनच ३७ लिहेज्ज्वरहरंकण्ठ्यंकासश्वा सारुचीर्जयेत् । वातंशूलंतथाछर्दिंक्षयंचैवव्यपोहति ३८ शृङ्गीप्रतिविषाकृष्णाचूर्णितामधुनालिहेत् । शिशोःका सज्वरच्छर्दिशान्त्यैवाकेवलाविषाम् ३९ शुण्ठीप्रतिविषा

थ एकाहिक, द्वन्द्वज, सन्निपातज और मानस ऐसे सब ज्वरों को विनाशताहै ॥ ३२ ॥ शीतज्वर, जूडी, अंतरिया, तृतीयक, चातुर्थिक, मोह, तंद्रा, भ्रम, तृषा, श्वास, कास, पांडु और हृदयरोग को हरै ॥ ३३ ॥ रीढ़, पीठ, करिहावँ, जांघ, पसुरी इन अंगों की पीड़ा नाश होइ जो शीत जल के संग पिये तौ सर्वज्वर हरैगा ॥ ३४ ॥ जैसे सुदर्शनचक्र सब दानवों को नाशताहै वैसेही सुदर्शन चूर्ण सब ज्वरों को नाश करता है ॥ ३५ ॥ (त्रिफलादि चूर्ण कास श्वास ज्वर पर) त्रिफला पीपरिचूर्ण शहद संग चाटै तो कास, श्वास, ज्वर हरै तथा भेदी हो अग्निको प्रबल करताहै ॥ ३६ ॥ (कफज्वरपर कायफलादिचूर्ण) कायफल, नागरमोथा, कुटकी, सोंठ, काकडासिंगी और पुष्करमूल इन द्रव्यन का चूर्ण शहद अदरख रससंग चाटै तो ज्वरहरै कंठशुद्ध होय कास, श्वास, अरुचि, वातशूल, छर्दि और क्षयी ये सब जाय ॥ ३७ । ३८ ॥ (बालककी खांसी ज्वरपर काकडासिंगी आदि चूर्ण) काकड़ासिंगी, अतीस और पीपरि का चूर्ण मधुयुक्त चटावै तौ बालककी खासी, ज्वर, छर्दि ये दूरहोयँ वैसेही केवल अतीस से भी उक्तरोग जायँ ॥ ३९ ॥ (आमातीसार पर शुंठ्यादि-

हिङ्गुमुस्ताकुटजचित्रकैः ।चूर्णमुष्णाम्बुनापीतंवातातीसारनाशनम् ४० हरीतकीप्रतिविषासिन्धुसौवर्चलंवचा। हिङ्गुचेतिकृतंचूर्णंपिबेदुष्णेनवारिणा ४१ आमातीसारशमनंग्राहिचाग्निप्रबोधनम्।मुस्तमिन्द्रयवंबिल्वंलोध्रंमोचरसंतथा ४२ धातकींचूर्णयेत्तक्रगुडाभ्यांपाययेत्सुधीः। सर्वातीसारशमनंनिरुणद्धिप्रवाहिकाम् ४३ लघुगङ्गाधरंनामचूर्णंसङ्ग्राहकंपरम्। मुस्तारलूकशुण्ठीभिर्धातकीलोध्रबालकैः ४४ बिल्वमोचरसाभ्यांचपाठेन्द्रयववत्सकैः।आम्रबीजंप्रतिविषालज्जालुरितिचूर्णितम् ४५ क्षौद्रतण्डुलपानीयपीतैर्यातिप्रवाहिका ।सर्वातीसारग्रहणीप्रशमंयातिवेगतः।वृद्धगङ्गाधरंनामसरिद्वेगविबन्धकम् ४६ तक्रेण यःपिबेन्नित्यंचूर्णंमरिचसम्भवम् । चित्रसौवर्चलोपेतंग्रहणींतस्यनश्यति।उदरप्लीहमन्दाग्निगुल्मार्शोनाशनम्भवे

चूर्ण) सोंठ, अतीस, हींग, नागरमोथा, कुरैया और चीता इनका चूर्ण उष्णपानी के साथ पियेसे आम व अतीसार दूरहोवें ॥ ४० ॥ (आमवात पर हरीतक्यादि चूर्ण) बड़ी हड, अतीस, सेंधालोन, कालालोन, वच और भुनी हींग इनका चूर्ण उष्णोदक सों पिये तो आमवातातीसार जाय तथा ग्राही हो अग्निको जगाता है (सर्वातीसार पर लघुगंगाधर चूर्ण) नागरमोथा, इन्द्रयव,

तु ४७ अष्टौभागाःकपित्थस्यषड्भागाशर्करामता । दाडिमंतिन्तिडीकंचश्रीफलंधातकीतथा ४८ अजमोदाचपिप्पल्यःप्रत्येकंस्युस्त्रिभागिकाः। मरिचंजीरकंधान्यंग्रन्थिकंवालकंतथा ४९ सौवर्चलंयवानीचचातुर्जातंसचित्रकम्। नागरंचैकभागाःस्युःप्रत्येकंसूक्ष्मचूर्णितम् ५० कपित्थाष्टकसंज्ञंस्याच्चूर्णमेतद्गलामयान्। अतीसारंक्षयंगुल्मंग्रहणींचव्यपोहति ५१ दाडिमीद्विपलाग्राह्याखण्डाचाष्टपलानिच। त्रिगन्धस्यपलंचैकंत्रिकटुस्यात्पलत्रयम् ५२ एतदेकीकृतंसर्वंचूर्णंस्याद्दाडिमाष्टकम्। रुचिकृद्दीपनंकण्ठ्यंग्राहिकासज्वरापहम् ५३ दाडिमस्यपलान्यष्टौशर्करायाःपलाष्टकं। पिप्पलीपिप्पलीमूलंयवानीमरिचंतथा ५४ धान्यकंजीरकंशुण्ठीप्रत्येकंपलसंमितम्। कर्षमात्रातुगाक्षीरीत्वक्पत्रैलाश्चकेसरम् ५५ प्रत्येकंकोलमात्राःस्युरतच्चूर्णंदाडिमाष्टकं अतीसारंक्षयंगुल्मंग्रहणींचगलग्रहम् । मन्दाग्निपीनसं

यर्श ये सब अच्छेहोयँ ॥ ४७ ॥ (संग्रहणी पर कपित्थाष्टक चूर्ण) आठ भाग पक्का कैथा छःभाग खाँड, अनार, अमली, बेलगिरी, धवफूल, अजमोद और पीपरि ये सब तीन तीन भाग मरिच, जीरा, धनिया, पीपरामूल, सुगन्धवाला, अजवाइन, तज, पत्रज इलायची, नागकेसर, चीता और सोंठि ये सब एक एक भाग इन सबको महीन चूर्ण करै यह कपित्थाष्टक नाम चूर्ण गले के रोग, अतीसार, क्षयी, गुल्म, ग्रहणी इन सबों को अच्छा करताहै । ४८ । ५१ ॥ (ग्रहणीपर दाडिमाष्टक) अनारदाना आठ टकाभर, शक्कर बत्तीसभर तज, पत्रज, इलायची तीनों मिला के चार भर त्रिकुटा बारह भर इन्हें एककरि चूर्ण करै यह दाडिमाष्टक नाम चूर्ण रोचक, दीपन व ग्राहीहोकर कंठ शुद्ध करताहुआ ज्वरसहितको नाशताहै ॥ ५२ । ५३ ॥ (अतीसार पर वृद्ध दाडिमाष्टक) अनारदाना आठपल, पीपरि पीपरामूल, अजवाइन, मिर्च धनियां श्वेत जीरा, सोंठ ये सब पल पलभर वंशलोचन दशमाशे तज, पत्रज, एला, नागकेसर ये पांच पांचमाशे यह दूसरा दाडिमाष्टक क्षयी, अतीसार, गुल्म, ग्रहणी, गलग्रह,

कासंचूर्णमेतद्व्यपोहति ५६ लवङ्गंशुद्धकर्पूरमेलात्वङ्ना
गकेसरम्। जातीफलमुशीरंचनागरंकृष्णजीरकम् ५७ कृ
ष्णागुरुस्तुगाक्षीरीमांसीनीलोत्पलंकणा। चन्दनंतगरंवालं
कङ्कोलंचेतिचूर्णयेत् ५८ समभागानिसर्वाणिसर्वार्द्धाचसि
ताभवेत्। लवङ्गाद्यमिदंचूर्णराजार्हंवह्निदीपनम् ५९ रो
चनंतर्पणंवृष्यंत्रिदोषघ्नंबलप्रदम्। हृद्रोगंकण्ठरोगंचका
संहिक्काचपीनसम् ६० यक्ष्माणंतमकंश्वासमतीसारमुरः
क्षतम्। प्रमेहारुचिगुल्मादीन्ग्रहणीमपिनाशयेत् ६१ जा
तीफललवङ्गैलापत्रैस्त्वङ्नागकेसरैः। कर्पूरचन्दनतिलै
स्त्वक्क्षीरीतगरामलैः ६२ तालीसपिप्पलीपथ्याचित्रक
स्थूलजीरकैः। शुंठीविडङ्गमरिचान्समभागान्विचूर्णयेत्।
६३ यावन्त्येतानिसर्वाणिकुर्याद्भङ्गांचतावतीम्। सर्वचूर्णस
मादेयाशर्कराचभिषग्वरैः ६४ कर्षमात्रंतथाखादेन्मधुना
प्लावितंसुधीः। अस्यप्रभावाद्ग्रहणीकासश्वासारुचिक्षयाः।
वातश्लेष्मप्रतिश्यायाःप्रशमंयान्तिवेगतः ६५ मरिचंना

मंदाग्नि, पीनस और कास इन रोगों को नाश करै ॥ ५४ । ५६ ॥ (क्षयी पर लवंगादि चूर्ण) लवंग, शुद्ध कपूर, इलायची दालचीनी, नागकेसर जायफल, खस सोंठ, कृष्णजीरा, कृष्णअगर, बंशलोचन जटामांसी, नीलकमल पीपरि, चन्दन तगर, सुगंधवाला और कंकोल इनका चूर्ण करि चूर्णकी आधी मिश्री मिलावै यह लवंगादिचूर्णराज, दीपन, रोचक, तृप्तिकारक होकर धातुपुष्ट करै त्रिदोषहरै बलप्रद, कंठ हृदयरोग, कास, हिचकी, पीनस, क्षयी, तमक, श्वास अतीसार, उरःक्षत, प्रमेह, अरुचि, गुल्म और ग्रहणी इन सबोंको दूरकरै ॥ ५७ । ६१ ॥ (जातीफलादि चूर्ण) जायफल, लोंग, इलायची, तज पत्रज, नागकेसर, कपूर, चंदन, तिल, वंशलोचन, तगर, आंवरा, तालीसपत्र पीपरि, हड़, चीता, काला जीरा, सोंठ, वायविडंग और मरिच इन सबके समान भाग लेना तिसका चूर्ण करि चूर्ण के बराबर खाड़ दे कर्ष भर शहद मिलायके खाय इसके प्रभाव से ग्रहणी, कास, श्वास, अरुचि, क्षयी, वात, कफ और नाक टपकना ये रोग वेगही

गपुष्पाणितालीसंलवणानिच। प्रत्येकमेकभागाःस्युःपि
प्पलीमूलचित्रकैः ६६ त्वक्कणातिन्तिडीकंचजीरकंचद्वि
भागिकाः। धान्याम्लवेतसौविश्वंभद्रैलाबदराणिच ६७
अजमोदाजलधरःप्रत्येकंस्युस्त्रिभागिकाः। सर्वौषधचतु
र्थांशंदाडिमस्यफलंभवेत् ६८ द्रव्येभ्योनिखिलेभ्यश्चसि
तादेयार्द्धमात्रया। महाखाण्डवसञ्ज्ञंस्याच्चूर्णमेतत्सुरोचन
म् ६९ अग्निदीप्तिकरंहृद्यंकासातीसारनाशनम्। हृद्रोगकं
ठजठरमुखरोगप्रणाशनम् ७० विसूचिकांतथाध्मानमर्शो
गुल्मक्रिमीनपि। छर्दिपञ्चविधांश्वासंचूर्णमेतद्व्यपोहति
७१ चित्रकस्त्रिफलाव्योषंजीरकंहबुषावचा। यवानीपिप्प
लीमूलंशतपुष्पाजगन्धिका ७२ अजमोदाशटीधान्यंवि
डङ्गंस्थूलजीरकम्। हेमाह्वापौष्करंमूलंक्षारौलवणपञ्च
कम् ७३ कुष्ठंचेतिसमांशानिविशालास्याद्विभागिका।
त्रिवृत्त्रिभागाविज्ञेयादन्त्याभागत्रयंभवेत् ७४ चतुर्भागा
शातलास्यात्सर्वाण्येकत्रचूर्णयेत्। पाचनंस्नेहनाद्यैश्च

दूरहोयँ ॥ ६२। ६५ ॥ (अरुचि पर महाखांडवचूर्ण) मरिच, नागकेसर,
तालीसपत्र, पांचौ लोन ये सब समान भाग लेना पीपरामूल, चित्रक, तज, पीपरि,
अमलीकीछाल और जीरा ये सब दो २ भाग लेना धनियां, अम्लवेतस, सोंठ
बड़ी इलायची, वेर, अजमोद और मोथा ये तीन तीन भाग सब द्रव्यकी चौथाई
अनार सबकी आधी मिश्रीदे यह महाखांडव संज्ञक चूर्ण रोचक दीपन हो हृदय
को मलदायकहै, तथा अतीसार हृदयरोग, कंठ जलना, मुखरोग, हैजा, पेट फूलना
बवासीर, गुल्म, कृमिरोग, पंचविधछर्दि और श्वास इन्हाको नाशकरै ॥ ६६ ॥
७१ ॥ (उदररोगपर नारायण चूर्ण) चीता, त्रिफला, सोंठ, पीपरि,
मरिच, जीरा, हाऊबेर, वच, अजवाइन, पीपरामूल, सौंफ, अजमोद, कचूर, धनि-
या, वायविडंग, कालीजीरी, चोक, पुष्करमूल, दोनोंखार, पांचौलोन और कूट
ये सब समान ले इन्द्रायणकीजड़ दो भाग, निशोथ तीन भाग, जमालगोटा तीन
भाग, पीतपुष्पी, सेहुण्डमूल चारि भाग इन सबोंको एकत्रकरि चूर्णकरै कठिन

स्निग्धकोष्ठस्यरोगिणः ७५ दद्याच्चूर्णविरेकायसर्वरोगप्र णाशनम्। हृद्रोगेपाण्डुरोगेचकासेश्वासेभगन्दरे ७६ मन्दे ग्नौचज्वरेकुष्ठेग्रहण्यांचगलग्रहे। दद्याद्युक्तानुपानेनतथा ध्मानेसुरादिभिः ७७ गुल्मेबदरनीरेणविड्भेदेदधिमस्तु ना। उष्णाम्बुभिरजीर्णेच वृक्षाम्लैःपरिकर्तिषु ७८ उष्ट्रीदु ग्धेनोदरेषुतथातक्रेणचागवाम्। प्रसन्नयावातरोगेदाडिमै रर्शसांतथा ७९ द्विविधेचविषेदद्याद्घृतेनविषनाशनम्। चूर्णनारायणंनामदुष्टरोगगणापहम् ८० हवुषात्रिफलाचै वत्रायमाणाचपिप्पली। हेमक्षीरस्तवृच्चैव शातलाक टुकावचा ८१ नीलनीसैन्धवंकृष्णालवणंचेतिचूर्णयेत्। उष्णोदकेनमूत्रेणदाडिमात्रिफलारसैः ८२ तथामांसर सेनापियथायोग्यंपिबेन्नरः। अजीर्णप्लीहगुल्मेषुशोफा र्शोविषमाग्निषु ८३ हलीमकामलापाण्डुकुष्ठाध्माना दरेष्वपि। शुण्ठीहरीतकीकृष्णात्रिवृत्सौवर्चलंतथा।

कम् । शुण्ठीहरीतकीचेतिक्रमवृद्ध्याविचूर्णयेत् । वडवा नलनामैतच्चूर्णंस्यादग्निदीपनम् १ अजमोदाविडङ्गा निसैन्धवंदेवदारुच । चित्रकःपिप्पलीमूलंशतपुष्पाचपि प्पली २ मरिचंचेतिकर्षांशंप्रत्येकंकारयेद्बुधः । कर्षा स्तुपञ्चपथ्यायाःदशस्युर्वृद्धदारुकात् ३ नागराच्चदशैव स्युःसर्वाण्येकत्रचूर्णयेत् । पिबेत्कोष्णजलेनैवचूर्णंचगुड सम्मितम् ४ भक्षयेदथवासम्यक्परश्वयथुनाशनम् । आ मवातरुजंहन्ति सन्धिपीडांचगृध्रसीम् ५ कटिपृष्ठगुदा स्थनाञ्चजङ्घयोश्चरुजंजयेत् । तूणीप्रतूणीविश्वाचीक फवातामयाञ्जयेत् ६ हिङ्गुपाठाभयाधान्यंदाडिमंचित्रकः शटी । अजमोदात्रिकटुकंहवुषाचाम्लवेतसम् ७ अजग न्धातिन्तिडीकंजीरकंपौष्करंवचा । चव्यंक्षारद्वयंपञ्चलव णानिविचूर्णयेत् ८ प्राग्भोजनस्यमध्येवाचूर्णमेतत्प्रयो

अग्नि दीप्त व रुचिको उपजाताहुआ कफको नाशताहै ॥ १०० ॥ (मन्दाग्नि पर वडवानलचूर्ण) सेंधा पीपरामूल, पीपरि, चाव, चीता, सोंठ और बड़ी हड़ क्रमसे बढ़ाय चूर्ण करै जैसे सेंधा १ माशा तौ पीपरामूल २ माशा पीपरि ३ माशाभर लेना यह वड़वानल नाम अग्नि को जगाताहै ॥ १ ॥ (वातादि पर अजमोदादिचूर्ण) अजमोद, वायविड़ंग, सैंधव, देवदारु, चीता, पीपरामूल, सौंफ, पीपरि ॥ २ ॥ और मिर्चे ये द्रव्य कर्ष कर्ष भर हड़ पांच कर्ष विधारा दशकर्ष ॥ ३ ॥ सोंठ दशकर्ष इन सबोंको चूर्ण कर गुड़मिश्रित करि उष्णोदक से पिये ॥ ४ ॥ अच्छीतरह खाय तौ सूजन दूरहोय और आमवात, गाठि पीड़ा, गृध्रसी वायु ॥ ५ ॥ कटिपीड़ा, पीठ, गुदा, जाघपीर, तूनीवायु, प्रतूनी व यु, विश्वाची, कफरोग और वायुके रोग ये सब नाशहोयँ ॥ ६ ॥ (शूलादिपर हिंग्वादिचूर्ण) भुनी हींग, पाढ़ा, बड़ी हड़, धनियाँ, अनारदाना, चीता, कचूर, अजमोद, त्रिकुटा, हाऊबेर अम्लवेतस ॥ ७ ॥ वनतुलसी, इमली की छाल, जीरा, पुष्करमूल, बच, चाव, दोनोंखार और पांचोंलोन इन सबोंको चूर्णकरै ॥ ८ ॥ भोजनादिक के प्रथम अथवा पुराने मद्यके संग या गरम

जयेत्। पिबेद्वाजीर्णमद्येनतक्रेणोष्णोदकेनवा ९ गुल्मे वातकफोद्भूतेविड्ग्रहेऽष्ठीलिकासुच। हृद्बस्तिपार्श्वशूलेषु शूलेचगुदयोनिजे १० मूत्रकृच्छ्रेतथानाहेपाण्डुरोगेऽरुचौ तथा। हिक्कायांयकृतिप्लीह्निश्वासेकासेगलग्रहे ११ ग्रह ण्यर्शोविकारेषुचूर्णमेतत्प्रशस्यते। भावितंमातुलुङ्गस्यब हुशःस्वरसेनवा। कुर्याच्चगुटिकाःपथ्यावातश्लेष्मामया पहाः १२ यवानीदाडिमंशुण्ठी तिन्तिडीकाम्लवेतसौ। बदराम्लंचकुर्वीतचतुःशाणमितानिच १३ सार्द्धद्विशा णमरिचं पिप्पली दशशाणिका। त्वक्सौवर्चलधान्याकं जीरकंद्विद्विशाणिकम् १४ चतुःषष्टिमितैःशाणैःशर्करा मत्रयोजयेत्। चूर्णितंसर्वमेकत्रयवानीखाण्डवाभिधम्। १५ नाशयेत्पाण्डुरोगंचहृद्रोगंग्रहणीज्वरम्। छर्दिशोषा तिसारांश्चप्लीहानाहविबन्धताः। अरुचिंशूलमन्दाग्नीचा र्शोजिह्वागलामयान् १६ तालीसंमरिचंशुण्ठीपिप्पलीवं शलोचना। एकद्वित्रिचतुष्पञ्चकर्षैर्भागान्प्रकल्पयेत् १७

जल के साथ खाय॥ ९॥ वात कफ का गुल्म, कोष्ठबन्ध, अष्ठीलिका, हृदय, पेडू, पसुरी, गुदा और योनिके सब शूल॥ १०॥ मूत्रकृच्छ्र, पेट फूलना, पाण्डु, अरुचि, हिचकी, यकृत्, प्लीहा, श्वास, कास, गलरोग॥ ११॥ ग्रहणी और अर्श इनपर यह चूर्ण है बिजौरा के रस में सात भावना दे गोली बांध ले इस से बात कफ रोग नाशहोयँ॥ १२॥ (अरुचिपर यवानीखांडव चूर्ण) अजवाइन, अनारदाना, सोंठ, इमली की छाल, अम्लवेतस और भरबेर ये सब चार चार शाण॥ १३॥ मरिच ढाई शाण, पीपरि दशशाण, तेज, कालानोन, धनियां, जीरा ये दो दो शाण॥ १४॥ शर्करा चौंसठि शाण "शाण चारिमाशे का होताहै" इन सबों का चूर्ण करै इसे यवानीखांडव कहते हैं॥ १५॥ यह पांडु, हृद्रोग, ग्रहणी, छर्दि, शोष, अतीसार, प्लीहा, पेट फूलना, कोष्ठबद्ध, अरुचि, शूल, मन्दाग्नि, अर्श, जीभरोग और गलारोग इन सबोंको विनाशतहै॥ १६॥ (अरुचिपर तालीसादिचूर्ण)

हभस्महरीतक्यौचक्रमर्दकचित्रकौ । भल्लातकाविडङ्गानि-
शर्करामलकंनिशा ३४ पिप्पलीमरिचंशुण्ठीवाकुचीकृत
मालकः । गोक्षुरश्चपलोन्मानमेकैकंकारयेद्बुधः ३५ सर्व
मेकीकृतंचूर्णंभृङ्गराजेनभावयेत् । अष्टभागावशिष्टेनखदि
रासनवारिणा ३६ भावयित्वाचसंशुष्कंकर्षमात्रंततःपिबे
त् । खदिरासनतोयेनसर्पिषापयसाथवा ३७ मासेनसर्वकु
ष्ठानिविनिहन्तिरसायनम् । पञ्चनिम्बमिदंचूर्णंसर्वरोगप्र
णाशनम् ३८ शतावरीगोक्षुरकंबीजंचकपिकच्छुजम् ।
गाङ्गेरुकीचातिबलाबीजमिक्षुरकोद्भवम् ३९ चूर्णितंसर्व-
मेकत्रगोदुग्धेनपिबेन्निशि । नतृप्तियातिनारीभिर्नरश्चूर्ण
प्रभावतः ४० अश्वगन्धादशपलास्तन्मात्रोवृद्धदारुकः ।
चूर्णीकृत्योभयंविद्वान् घृतभाण्डेनिधापयेत् ४१ कर्षैकंप
यसापीत्वानारीभिर्नैवतृप्यति । अगत्वाप्रमदांभूयोबली
पलितवर्जितः ४२ चित्रकंत्रिफलामुस्ताविडङ्गंत्र्यूषणा
नि च । समभागानिकार्याणिनवभागाहृतायसः ४३ एतदे
कीकृतंचूर्णंमधुसर्पिर्युतंलिहेत् । गोमूत्रमथवातक्रमनुपा
नंप्रशस्यते ४४ पाण्डुरोगंजयत्युग्रंहृद्रोगंचभगन्दरम् ।

निम्ब चूर्ण कहते हैं क्योंकि सब रोगों को नाश करता है ॥ ३३ । ३८ ॥ (शता-
वरिचूर्ण पुष्टिपर) शतावरि, गुखरू, कौंचके बीज, गुलसकरी, बरियारा,
तालमखाना ॥ ३९ ॥ इनका चूर्ण गोदुग्ध में पिये इस के प्रभाव से स्त्री से तृप्त
न होय और जो स्त्रीप्रसंग न करे तो बली होय बार स्वेत न होयँ ॥ ४० ॥
(पुष्टि पर अश्वगंधादि चूर्ण) नागौरी असगंध चालीस तोले भर,
विधारा चालीसभर इन दोनों को महीन चूर्ण कर घृतके भाजनमें धरे ॥ ४१ ॥
दशमाशेदूध में पिये तो स्त्रीसे तृप्त न होय (धातुवृद्धिपर नवायसादि चूर्ण)
चीता, त्रिफला, नागरमोथा, वायविडंग और त्रिकुटा ये सब समान नव अंश पोलाद
भस्म ॥ ४२ । ४३ ॥ इनका चूर्ण शहद और घृतके संगचाटै या गोमूत्र व मट्ठा

शोथकुष्ठोदरार्शांसिमन्दाग्निमरुचिंकृमीन् ४५ अकार करभःशुण्ठीकङ्कोलंकुङ्कुमंकणा। जातीफलंलवङ्गंचचन्द नंचेतिकार्षिकान् ४६ चूर्णानीमानिततःकुर्यादहिफेनपलो न्मितम्। सर्वमेकीकृतंचूर्णंसूक्ष्मंवस्त्रगालितम् ४७ सि तासर्वसमादेयामाषैकंमधुनालिहेत्। शुक्रस्तम्भकरंचूर्णं पुंसामानन्दकारकम्। नारीणांप्रीतिजननंसेवेतनिशिकामु कः ४८ बकुलत्वग्भवंचूर्णंघर्षयेद्दन्तपङ्क्तिषु। वज्रादपिदृढी भूतादन्तास्स्युश्चपलाध्रुवम् ४९ इति श्रीशार्ङ्गधरेमध्य खण्डेचूर्णकल्पनाषष्ठोऽध्यायः॥ ६॥

वटिकाश्चाथकथ्यन्तेतन्नामगुटिकावटी। मोदकोवटि कापिण्डीगुण्डीवर्तिस्तथोच्यते १ लेहवत्साध्यतेवह्नौगुडो वाशर्करायथा। गुग्गुलुंवाक्षिपेत्तत्रचूर्णंतन्निर्मितावटी २ कुर्य्याद्वह्निसिद्धेनक्वचिद्गुग्गुलुनावटी। द्रव्येणमधुना वापिगुटिकांकारयेत्सुधीः ३ सिताचतुर्गुणादेयावटीषु द्विगुणोगुडः। चूर्णाच्चूर्णसमःकार्य्योगुग्गुलुंमधुतत्सम

के साथ॥ ४४॥ तौ पांडु, हृद्रोग, भगंदर, सूजन, कोढ़, उदररोग अर्श मन्दाग्नि, अरुचि और कृमि नाशहोयँ॥ ४५ (स्तंभन पर अकरकरादि चूर्ण) अकरकरहा, सोंठ, कंकोल, केसर पीपरि. जायफल, लौंग और श्वेतचन्दन इन्हें कर्षकर्ष भरले॥ ४६॥ चूर्ण करि पलभर अफीमदे पीसि कपड़छानले॥ ४७॥ और सब के समान खांड देय माशाभर शहदमें चाटै यह चूर्ण वीर्यस्तंभन कर स्त्री पुरुषों को सुख देता है इसलिये कामी पुरुष इसे रातिको सेवन करै॥ ४८॥ (मंजन) मौलसिरीकी छालके चूर्ण को दांतों में घिसाकरै तो हिलते हुये भी दांत वज्र समान होजाते हैं॥ ४९॥ इति श्रीशार्ङ्गधरसुधाकरेचूर्णकल्पनाषष्ठोऽध्यायः ६॥

(अथ वटी कल्पना) वटिका गुटिका वटी मोदक पिंडी गुण्डी और वर्त्ति ये गोली के नाम हैं॥ १॥ गुड़ और खाड दे आगि में पकावै जैसे अवलेह तब गुग्गुलु व चूर्ण उसी पाक में डारि गोली बांधै॥ २॥ विना आगि के योगगुग्गुलु से भी गोली बँधती है और गीली वस्तु तथा शहद से भी बँधती है॥ ३॥ मिश्री

मू. ४ द्रवंचद्विगुणंदेयंमोदकेषुभिषग्वरैः। कर्षप्रमाणंत न्मानंबलंदृष्ट्वाप्रयुज्यताम् ५ इन्द्रवारुणिकामुस्ताशुण्ठीद न्तीहरीतकी। त्रिवृच्छटीविडङ्गानिगोक्षुरश्चित्रकस्तथा ६ तेजोह्वाचद्विकर्षाणिपृथग्द्रव्याणिकारयेत्। शूरणस्यपला न्यष्टौवृद्धदारुचतुष्पलम् ७ चतुष्पलंस्याद्भल्लातःक्वाथये त्सर्वमेकतः। जलद्रोणेचतुर्थांशंगृह्णीयात्क्वाथमुत्तमम् ८ क्वाथ्यद्रव्यात्त्रिगुणितंगुडंक्षिप्त्वापुनःपचेत्। सम्यक्पक्व ञ्ज्ञात्वावैचूर्णमेतत्प्रदापयेत् ९ चित्रकस्त्रिवृतादन्तीते जोह्वापलिकाःपृथक्। पृथक्त्रिपलिकाभागाव्योषैलाम रिचत्वचम् १० निक्षिपेन्मधुशीतेचतस्मिन्प्रस्थप्रमाण कम्। एवंसिद्धोभवेच्छ्रीमान् बाहुशालगुडाभिधः ११ जये दर्शांसिसर्वाणिगुल्मंवातोदरंतथा। आमवातंप्रतिश्यायं ग्रहणीक्षयपीनसान्। हलीमकंपाण्डुरोगंप्रमेहंच विनाश येत् १२ मरिचंकर्षमात्रंस्यात्पिप्पलीकर्षसम्मिता। अर्द्ध

चौगुनी गुड़ दूना चूर्ण लिखे प्रमाणदेना गुग्गुलु शहद बराबर देना ॥ ४ ॥ द्रवस्तु दूनी देना सद्वैद्य यही रीति करें, कर्षभर गोली खाने का प्रमाण है व देह बल दोष देखि खिलावै ॥ ५ ॥ (इन्द्रारुकी गुटिका अर्शपर) इन्द्रायण की जड़, नागरमोथा, सोंठ, जमालगोटा के जड़की छाल, हड़, निशोथ, कचूर, बायविडंग, गुखुरू, चीता ॥ ६ ॥ और वच ये सब दो दो कर्ष, जमीकन्द आठ पल, विधारा चारपल ॥ ७ ॥ भिलावां चारपल द्रोण भर पानीमें, औटै, जब चौथाईरहै तब उतारलेय ॥ ८ ॥ छान के उसका तिगुना, गुड़दे पाककरै जब पकनितार उठै तब यह चूर्णडालै ॥ ९ ॥ चीता, निशोथ, जमालगोटाकी जड़ और वच ये पल पल भर त्रिकुटा, इलायची, मरिच और तज तीन तीनपल इनको पीस छानके प्रस्थभर शहद में पूर्वोक्त यह चूर्णयुक्त चैंपने मुवाफिकहो मिलावै तब बाहुशाल गुड़ सिद्धहोता है ॥ १० । ११ ॥ यह सब अर्श, गुल्म, वातोदर, आमवात, नाकटपकना, संग्रहणी, क्षयी, पीनस, हलीमक, पाण्डु और प्रमेह इन सबोंको जीतता है ॥ १२ ॥ (कासपर मरिचादि गुटिका) मरिच, पीपरि, कर्ष कर्ष भर

कर्षोयवक्षारःकर्षयुग्मंचदाडिमम् १३ एतच्चूर्णीकृतंयु
ञ्ज्यादष्टकर्षगुडेनहि।शाणप्रमाणांवटिकांकृत्वावक्त्रेविधा
रयेत्। अस्याःप्रभावात्सर्वेपिकासायान्त्येवसंक्षयम् १४गु
डशुण्ठीशिवामुस्तैर्धारयेद्गुटिकांमुखे। श्वासकासेषुसर्वे
षुकेवलंवाविभीतकम् १५ आमलंकमलंकुष्ठंलाजाश्चवट
रोहकम्। एतच्चूर्णस्यमधुना गुटिकांधारयेन्मुखे। तृष्णां
वृद्धांहरत्येषामुखशोषंचदारुणम् १६ विडङ्गंनागरंकृ
ष्णापथ्यामलविभीतकौ। वचागुडूचीभल्लातंसविषंचा
त्रयोजयेत् १७ एतानिसमभागानिगोमूत्रेणैवपेषयेत्।
गुञ्जाभागुटिकाकार्या दद्यादार्द्रकजैरसैः १८ एकामजीर्णे
गुल्मेषुद्वेविसूच्यांप्रदापयेत्। तिस्रस्तुसर्पदष्टेतु चतस्र
स्सन्निपातके। वटीसञ्जीवनीनाम्ना संजीवयतिमानवम्
१९ व्योषाम्लवेतसंचव्यं तालीसंचित्रकंतथा। जीरकं
तिन्तिडीकंचप्रत्येकंकर्षभागिकम् २० त्रिसुगन्धंत्रिशाणं

जवाखार ५ माशे, अनारदाना दो कर्ष ॥ १३ ॥ गुड़ आठकर्ष में चारि चारि माशे
की गोली बांधे सो मुख में धरे राखै इस के प्रभावसे सब खांसी जायँ ॥ १४॥
(श्वासपर गुड़ादि गुटिका) गुड़, सोंठ, हड़ नागरमोथा इन की गोली
जितने गुड़ से बँधे माशे भरकी मुहँमें राखे वो सब श्वास, कास हरै वैसे केवल ब-
हेरा रखने से ॥ १५ ॥ (प्यासपर आंवरादिवटी) आंवला, कमल, कूट,
लाजा, वटजटा इन्हें पीसि शहद में गोली बांधि मुखमें राखे तो महातृषा व मुख
सूखना दूरहो ॥ १६ ॥ (सन्निपातपर संजीवनीगुटिका) वायबिड़ंग,
सोंठ, पीपरि, हड़, आंवरा, बहेरा, बच, गुर्च, भिलावां शुद्धकियाहुआ बच्छनाग ॥
१७ ॥ इन सबोंको समान ले गोमूत्र में खरल करै घुंघची समान गोली बांधे व
अदरखके रसमें खिलावै ॥ १८ ॥ अजीर्ण में गोली एक विसूचिका (हैजा) में
दो सांप के डसे को तीन सन्निपात में चार इसका संजीवनी वटी नामहै मनुष्य को
जिलाती है ॥ १९ ॥ (पीनसादि पर त्रिकुटादिवटी) त्रिकुटा, अम्ल-

रयाद्गुडःस्यात्कर्षविंशतिः । व्योषादिगुटिकासामपी
नसश्वासकासजित् । रुचिस्वरकराख्याताप्रतिश्यायप्र
णाशिनी २१ आमेपुसगुडांशुण्ठीमजीर्णेगुडपिप्पलीम्॥
कृच्छ्रेजीरगुडंदद्यादर्शस्सु सगुडाभयाम् २२ वृद्धदारुक
भल्लातशुण्ठीचूर्णेनयोजितः । मोदकःसगुडोहन्यात्प
ड्विधार्शःकृतांरुजम् २३ शुष्कशूरणचूर्णस्यभागान्द्वात्रिं
शदाहरेत्। भागान्षोडशचित्रस्यशुण्ठ्याभागचतुष्टयम्
२४ द्वौभागौमरिचस्यापिसर्वमेकत्र चूर्णयेत् । गुडेनपि
ण्डिकांकुर्यादर्शसांनाशिनींपराम् २५ शूरणोवृद्धदारुश्च
भागैःषोडशभिःपृथक्।मुसलीचित्रकौज्ञेयावष्टभागमितौ
पृथक् २६ शिवाविभीतकौधात्रीविडङ्गंनागरंकणा। भ
ल्लात पिप्पलीमूलं तालीसंचपृथक्पृथक् २७ चतुर्भाग
प्रमाणानित्वगेलामरिचंतथा । द्विभागमात्राणिपृथक्स
र्वांस्त्वेकत्रचूर्णयेत् २८ द्विगुणेनगुडेनाथवटिकांकारये

वेतस, चाव,तालीसदल,चीता, जीरा और इमली की छाल ये सब कर्ष कर्षभर॥ २०॥और तज,पत्रज व इलायची चारि चारि माशे गुड़ बीस कर्ष यह व्योषादिनाम गुटिका पीनस, श्वास व कासको नाशकरै रुचिकरै कंठस्वर शुद्धकरै व नाकका टपकना बंद करती है ॥ २१ ॥ आंवदोषमें गुड़ सोंठकी गोली देना, अजीर्ण में गुड़ पीपरि, कृच्छ्र में गुड़ जीरा, ववासीर में गुड़ हड़की गोली देना ॥ २२ ॥ (अर्शपर वृद्धदारुमोदक) विधारा, भिलावां और सोंठ पीसि गुड़में गोली बांधिदेइ तौ छहों भांतिके अर्शदूरकरै ॥ २३ ॥ (अर्शपर सूरनवटिका) सूखे सूरनका चूर्ण बत्तीसभाग, चीता सोलहभाग, सोंठ चारभाग ॥ २४ ॥ मरिच दोभाग सब चूर्णकरि गुड़में गोली बांधिखिलावै तौ सब अर्श नाशहोवैं॥ २५ ॥ (पुनः)सूरन विधारा सोलह सोलह भाग लेय मुसली आठभाग और चीता भी आठभाग लेय ॥ २६ ॥ त्रिफला, विडंग, सोंठ,पीपरि, भिलावां,पिपरा-मूल और तालीस भिन्न भिन्न॥ २७॥ चार चार भाग, तज,इलायची व मरिच दो२

दूबुधः। प्रबलाग्निञ्चकुरुतेतथाशोनाशनापरा २९ ग्रह
णींवातकफजांश्वासंकासंक्षयामयम्। श्लीहानंश्लीपदंशो
थंप्रमेहंचभगन्दरम्। निहन्तिपलितंवृष्यातथामेध्या
रसायनी ३० त्रिफलात्र्यूषणंचव्यंपिप्पलीमूलचित्रक
म्। दारुमाक्षिकधातुश्चदार्वीमुस्तंविडङ्गकम् ३१ प्र
त्येकंकर्षमात्राणिसर्वंद्विगुणितंतथा। मण्डूरंचूर्णयेच्छुद्धं
गोमूत्रेष्टगुणेक्षिपेत् ३२ पक्काचवटकान्कृत्वादद्यात्त
क्रानुपानतः। कामलापाण्डुमेहार्शःशोथकुष्ठकफामयान्।
ऊरुस्तम्भमजीर्णंचश्लीहानंनाशयेदपि ३३ चन्द्रप्रभाव
चामुस्तंभूनिम्बामरदारुच। हरिद्रातिविषादार्वीपिप्पली
मूलचित्रकान् ३४ धान्यकंत्रिफलाचव्यंविडङ्गंगजपिप्प
ली। व्योषंमाक्षिकधातुश्चद्वौक्षारौलवणत्रयम् ३५ ए
तानिशाणमात्राणिप्रत्येकंकारयेद्बुधः। त्वक्दन्तीपत्र
कंचत्वगेलावंशरोचना ३६ प्रत्येकंकर्षमात्राणिकुर्यादेता

भाग इनसबोंका चूर्णकरि ॥ २८ ॥ दूने गुडमें गोलीबांधि खिलावै तौ अग्निप्रबल होय और अर्श जाय ॥२९॥ तथा वातकफजन्य ग्रहणी, श्वास, कास, क्षयी, प्लीहा, फीलपाव, शोथ, प्रमेह, भगंदर, वार स्वेत होना ये सबमिटैं धातुवृद्धि प्रबलकरै यह रसायनीहै ॥ ३० ॥ (कामलादि पर मंडूरवटक) त्रिफला, त्रिकुटा, चाव, पिपरामूल, चीता, देवदारु, सोनामाखी, हल्दी, नागरमोथा, विडंग ॥ ३१ ॥ ये कर्ष कर्ष भर मंडूर शोधकै सबसे दूनाले फिर अठगुने गोमूत्रमें ॥ ३२ ॥ पकाय गोलीबांधि मट्ठेके साथ खाय तौ कामला, पांडु, प्रमेह, अर्श, शोथ, कुष्ठ, कफरोग, गठिया, अजीर्ण और प्लीहा इनको नाशकरै ॥ ३३ ॥ कपूर, बच, नागरमोथा, चिरायता, देवदारु, हल्दी, अतीस, दारुहल्दी, पिपलामूल, चीता ॥ ३४ ॥ धनियां, त्रिफला, चाव, बायविडंग, गजपीपरि, त्रिकुटा, सोनामाखी की भस्म, सज्जीखार, जवाखार तीनोंलोन सेंधा, काला, पांगा ॥ ३५ ॥ ये सबद्रव्य चारचार माशे निशोथ, जमालगोटा, पत्रज, तज, इलायची और बंशलोचन ॥ ३६ ॥ इनको कर्ष कर्षभर बुद्धिमान्

निर्बुद्धिमान्। द्विकर्षहतलोहस्यचतुष्कर्षासिताभवेत् ३७
शिलाजत्वष्टकर्षाःस्युरष्टौकर्षाश्चगुग्गुलोः। एभिरेकत्र
संक्षुण्णैःकर्त्तव्यागुटिकाशुभा ३८ चन्द्रप्रभेतिविख्याता
सर्वरोगप्रणाशिनी। प्रमेहान्विंशतिंकृच्छ्रम्मूत्राघातंत
थाश्मरीम् ३९ विबन्धानाहशूलानिमेहनंग्रन्थिमर्बुदम्।
अण्डवृद्धिंकटीशूलंश्वासंकासंविचर्चिकाम् ४० अन्त्रवृ
द्धिंतथापाण्डुकामलांचहलीमकम्। कुष्ठान्यर्शांसिकण्डूंच
प्लीहोदरंभगन्दरम् ४१ दन्तरोगंनेत्ररोगंस्त्रीणामार्त्तवजारु
जम्। पुंसांशुक्रगतान्रोगान्मन्दाग्निमरुचिंतथा ४२ वा
तपित्तकफंहन्याद्बल्यावृष्यारसायनी। चन्द्रप्रभायाः
कर्षस्तुचतुःशाणोविधीयते ४३ यवानीजीरकंधान्यंमरि
चंगिरिकर्णिका। अजमोदोपकुञ्चीचचतुःशाणाःपृथक्
पृथक् ४४ हिङ्गुषट्शाणिकंकार्यंक्षारौलवणपञ्चकम्। त्रि
वृच्चाष्टमितैःशाणैःप्रत्येकङ्कल्पयेत्सुधीः ४५ दन्तीशटीपौ
ष्करंचविडङ्गंदाडिमंशिवा। चित्रोम्लवेतसःशुण्ठीशाणैः

लेय लोहभस्म दो कर्ष इन सबका चूर्णकरि मिश्री चारकर्ष ॥ ३७॥ शुद्धशिला-
जीत आठकर्ष गूगल आठकर्ष ये सब एकत्रकरि कूटिकै गुटिका सुंदर बनावै ॥३८॥
यह चंद्रप्रभागुटिका सर्वरोग नाशकरै, बीस प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, पथरी ॥ ३९ ॥
विबंध, पेटफूलना, शूल, इंद्रिय फूलना, ग्रंथि, अर्बुद, अंडवृद्धि, कटिशूल, श्वास,
कास, कुष्ठभेद ॥ ४०॥ अंत्रवृद्धि, पांडु, कामला, हलीमक, सबकुष्ठ, सर्वार्श, खजुरी,
प्लीहा, उदररोग, भगंदर ॥४१॥ दन्तरोग, नेत्ररोग, स्त्री का ऋतुरोग, पुरुषका धा-
तुरोग, मन्दाग्नि, अरुचि ॥ ४२ ॥ वात पित्त कफ सब नाशकरै बलकरै धातुबढावै
यह रसायन है दशमाशे वा सोलहमाशे वा दोषबल विचारिकै खाय ॥ ४३ ॥
(गुल्महर अजवायनगुटिका) अजवायन, जीरा, धनियां, मिर्च, विष्णु-
क्रांता, अजमोद, मगरैल। भिन्नभिन्न चारशाण ॥४४॥ हींग छह शाण, दूनों
खार, पांचों लोन और निशोथ ये आठ आठ शाण ॥४५ ॥ जमालगोटा, कचूर

षोडशभिःपृथक्४६बीजपूररसेनैव गुटिकांकारयेद्बुधः। घृतेनपयसामद्यैरम्लैरुष्णोदकेनवा ४७ पिबेत्काङ्कायन प्रोक्तांगुटिकांगुल्मनाशिनीम् । मद्येनवातकेगुल्मेगोक्षीरेणचपैत्तिके ४८ मूत्रेणकफगुल्मंचदशमूलैस्त्रिदोषजम्। उष्ट्रीदुग्धेननारीणांरक्तगुल्मंविनाशयेत् ४९ हृद्रोगंग्रहणीशूलंकृमीनर्शांसिनाशयेत् । नागरंपिप्पलीचव्यंपिप्पलीमूलचित्रकौ । भृष्टहिङ्ग्वजमोदाचसर्षपाजीरकद्वयम् ५० रेणुकेन्द्रयवापाठाविडङ्गंगजपिप्पली । कटुकातिविषाभार्गीवचामूर्वेतिभागतः ५१ प्रत्येकंशाणिकानिस्युर्द्रव्याणीमानिविंशतिः । द्रव्येभ्यस्सकलेभ्यश्चत्रिफला द्विगुणाभवेत् । एभिश्चूर्णीकृतैः सर्वैः समोदेयश्चगुग्गुलुः ५२ वङ्गरौप्यंचनागंचलोहसारंतथाभ्रकम् । मण्डूरंरससिन्दूरंप्रत्येकंपलसम्मितम् ५३ गुडपाकसमंकृत्वाचेमं दद्याद्यथोचितम् । एकपिण्डंततःकृत्वाधारयेद्घृतभाज

पुष्करमूल, वायविडंग, अनारदाना, बड़ीहड़, चीता, अम्लवेतस और सोंठ इन सबोंको सोलह शाणले चूर्ण करै ॥ ४६ ॥ फिर बिजौराके रसमें बटी बांधै घृत, दूध मद्य, नींबूरस और उष्णोदक ॥ ४७ ॥ इनके संग काकायनकी कहीहुई गोली वैद्य खिलावै यह गोली गुल्मको व वातगुल्मको नाशकरै तथा मद्यमें पित्तगुल्मको गोदुग्ध के संग ॥ ४८ ॥ कफ गुल्मको गोमूत्र संग त्रिदोषज गुल्मको दशमूलके क्वाथसाथ स्त्री के रक्तगुल्मको उष्ट्रीदुग्ध संगदेय तो ॥ ४९ ॥ हृद्रोग, ग्रहणी, शूल, कृमिरोग और बवासीरों को नाशकरै (वातादिरोगपर योगराजगुग्गुलु) सोंठ, पीपरि, चाब, पिपलामूल, चीता, भुनीहींग, अजमोद, सरसों, दोनों जीरे ॥ ५० ॥ मेवडीबीज, इंद्रयव, पाढ़ा, वायविडंग, गजपीपरि, कुटकी, अतीस, भारंगी, बच, मूर्वा और गुड़ूचे ॥ ५१ ॥ ये सब शाणशाणभर सबका दूना त्रिफलेका चूर्ण सब चूर्ण के समान शुद्ध गुग्गुल ॥ ५२ ॥ वंग, रूपरस, नागेश्वर, लोह, अभ्रक, मंडूर और रससिंदूर इनको पल पल भरदे ॥ ५३ ॥ गुडपाक करि रस और सब

मजीर्णंच व्यवायं श्रममातपम् । मद्यंरोषंत्यजेत्सम्यग्गु
णार्थीपुरसेवकः ७३ त्रिपलंत्रिफलाचूर्णंकृष्णाचूर्णपलो
न्मितम् । गुग्गुलुःपञ्चपलिकः क्षोदयेत्सर्वमेकतः ७४
ततस्तुवटिकांकृत्वा प्रयुञ्ज्याद्वह्न्यपेक्षया। भगन्दरंगुल्म
शोथावर्शांसि च विनाशयेत् ७५ अष्टाविंशतिसङ्ख्या
त्रिपलान्यानीयगोक्षुरात् । विपचेत्षड्गुणेनीरे क्वाथोग्रा
ह्योऽर्द्धशेषतः ७६ ततःपुनःप्रवेत्तत्रपुरं सप्तपलंक्षिपे
त्। गुडपाकसमाकारं ज्ञात्वातत्रविनिक्षिपेत् ७७ त्रिक
टुत्रिफलामुस्तं चूर्णितंपलसप्तकम्। ततःपिण्डीकृतस्या
स्यगुटिकामुपयोजयेत् ७८ हन्यात्प्रमेहंकृच्छ्रंचप्रद
रंमूत्रघातकम् । वातास्रंवातरोगांश्च शुक्रदोषंतथाऽश्म
रीम् ७९ त्रिफलात्रिपलाकार्याभल्लातानांचतुष्पलम् । बा
कुचीपञ्चपलिकाविडङ्गानांचतुष्पलम् ८० हतलोहंतथ
चैवगुग्गुलुश्चशिलाजतु । एकैकंपलमात्रंस्यात्पलार्द्धं

क्वाथसंग गुल्म दूरकरै ॥७२ ॥व खदिरादिक्वाथ संग व्रण व कुष्ठ दूरकरै व खट्टा, तीक्ष्ण, मैथुन, श्रम, घाम, मद्य और क्रोध इनसबोंको त्यागकर जो गुण चाहै तो संयम से रहै ॥७३ ॥(भगंदर पर त्रिफलागुग्गुलु)त्रिफलाचूर्ण तीन पल, पिप्पली चूर्ण पलभर और शुद्धगूगुल पांचपल इनको पीसिकै एकत्रकरि ॥७४ ॥ गोली बांधि रोगीकी अग्नि विचारिकै देय तो भगंदर, गुल्म, शोथ और बवासीर अर्श दूरहोयँ॥७५ ॥(प्रमेह गोक्षुरादिगुग्गुलु)गोखुरू अट्ठाईसपल छः गुणे पानी में काढाकरि अर्द्ध शेषले॥७६॥ फिरि सातपल गूगुलदे पकावै जब गुड पाकसा हो तब जो द्रव्य कहताहूं सोपीसकै डारै ॥७७॥ त्रिकुटा, त्रिफला और नागरमोथा ये सातों पलपलभर मिलाय पिंडीकरि गोलीबांधि तो ॥७८॥ प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, प्रदर, मूत्राघात, वातरक्त, वातरोग, शुक्रदोष और पथरी ये सबनष्टहोयँ ॥७९॥ (कुष्ठ पर त्रिफलामोदक) त्रिफला तीनपल, भिलावांचार, बकुची पांच, विडंग चार ॥८०॥ लोहभस्म, निशोथ, गूगुल और शिलाजीत इनसबोंको एक एकपल,

पौष्करंभवेत् ८१ चित्रकस्यपलार्द्धस्यात्रिशाणंमारिचंभवेत्। नागरंपिप्पलीमुस्तात्वगेलापत्रकुङ्कुमम् ८२ शाणोन्मितंस्यादेकैकंचूर्णयेत्सर्वमेकतः। ततस्तत्प्रक्षिपेच्चूर्णम्पक्वखण्डेचतत्समे ८३ मोदकान्पलिकान्कृत्वाप्रयुञ्जीतयथोचितान्। हन्युःसर्वाणिकुष्ठानित्रिदोषप्रभवामयान् ८४ भगन्दरंप्लीहगुल्मांजिह्वातालुगलामयान्। शिरोक्षिभ्रूगतान्रोगानन्यान्पृष्ठगतानपि ८५ प्राग्भोजनस्यदेयंस्यादधःकायस्थितेगदे। भेषजंभुक्तमध्येचरोगेजठरसंस्थिते। भोजनस्योपरिग्राह्यमूर्ध्वजत्रुगदेषुच८६ काञ्चनारत्वचोग्राह्यंपलानांदशकंबुधैः। त्रिफलापट्पलाग्राह्यात्रिकटुःस्यात्पलत्रयम् ८७ पलैकंवरुणंकुर्यादेलात्वक्पत्रकंतथा। एकैकं कर्षमात्रंस्यात्सर्वाण्येकत्रचूर्णयेत् ८८ यावच्चूर्णमिदंसर्वंतावन्मात्रस्तुगुग्गुलुः। सङ्कुट्यसर्वमेकत्रपिण्डंकृत्वाचधारयेत् ८९ गुटिकाःशाणमात्रेणप्रातर्ग्राह्यायथोचिताः। गण्डमालांजयत्युग्राम

पुष्करमूल अर्द्धपल ॥ ८१ ॥ चीता अर्द्धपल, मिर्च दो शाण, सोंठि, पीपरि, मोथा, तज, इलायची, पत्रज, केशर ॥ ८२ ॥ इनसबों को शाण शाण भर ले चूर्णकरि सबचूर्ण समान खांडले पाककरि चूर्णडारि गोली बनावै ॥ ८३॥ पलपलमित मोदकबनाय रोग बलदेखि रोगीको खिलावै तो सबकुष्ठ नाशहोयँ व त्रिदोषजन्य रोग ॥ ८४ ॥ भगंदर, प्लीहा, गुल्म, जिह्वा, तालुरोग, ग्रीव, शिर, नेत्र, भौंह और पीठ इन सबोंके रोग नाशहोयँ ॥ ८५ ॥ शरीरके नीचेके रोगनमें भोजनादि ओपधि देना मंदाग्निजनित में भोजन के मध्यदेय शिरःसंबन्धी रोगन में भोजनांत समयमें देना ॥ ८६ ॥ (गंडमालापर कचनार गुग्गुल) कचनारछाल दशपल त्रिफला छःपल, त्रिकुटा तीनपल ॥ ८७ ॥ वरुण एकपल, इलायची तज, पत्रज, कर्ष कर्षभर इनसबों को एकत्रकरि चूर्णकरै ॥ ८८ ॥ सर्व चूर्णके समान गुग्गुल पीसि चूर्णमें मिलाय पिंड बनावे ॥ ८९ ॥ चारिमाशेकी गोली बनाय

पचीमर्बुदानिच। ग्रन्थीन्व्रणांश्चगुल्मांश्चकुष्ठानिचभ गन्दरम् ९० प्रदेयश्चानुपानार्थंक्वाथोमुण्डितिकाभवः। क्वाथःखदिरसारस्यपथ्याक्वाथोदकोष्णकम् ९१ निस्तुषं माषचूर्णस्यात्तथागोधूमसम्भवम्। निस्तुषंयवचूर्णंचशा लितण्डुलजंतथा ९२ सूक्ष्मंचपिप्पलीचूर्णंपलकान्युपक ल्पयेत्। एतदेकीकृतंसर्वंभर्जयेद्वोघृतेनच ९३ अर्द्धमात्रे णसर्वेभ्यस्ततःखण्डसमांक्षिपेत्। जलंचद्विगुणंदत्त्वापाच येत्तंशनैःशनैः ९४ ततःपक्वंसमुद्धृत्यमोदकंचपलोन्मित म्। कुर्यात्सायंचतंभुक्त्वापिबेत्क्षीरंचतुर्गुणम् ९५ वर्जनी योविशेषेणक्षाराम्लौद्वौरसावपि। कृत्वैवंरमयेन्नारीवह्वीर्न चीयतेनरः ९६ इति श्रीशार्ङ्गधरेमध्यखण्डेवटककल्पना सप्तमोऽध्यायः ७॥

काथादीनांपुनःपाकाद्घनत्वंसारसक्रिया। सोवलेह श्चलेहःस्यात्तन्मात्रास्यात्पलोन्मिता १ सिताचतुर्गुणा

रोगबल व ओषधिबल देखि रोगीको मातस्समय देय तो गंडमाला, अपची, अर्बुद, ग्रंथि, घाव, कुष्ठ, भगंदर ये नाशहोयँ ॥ ९० ॥ (अस्यानुपानं) गुण्डीका क्वाथ वा खैरसारका क्वाथ वा हड़का क्वाथ उष्णोदक में देय ॥ ९१ ॥ (धातु पुष्टिपर माषादि मोदक) माष कहे उरददालि धोय चूर्णकरिलेय गेहूँचूर्ण, यवकी गुदीकाचूर्ण, साठी चावरका चूर्ण ॥ ९२ ॥ और पीपरि चूर्ण इनसबों को पलपल भरले सब चूर्णों का आधा गोघृत दे भूँजै ॥ ९३ ॥ चूर्णोंके समान खांड ले तब सबका दूना जलडारि मन्द मन्द आंचदे घोटै ॥ ९४ ॥ जब सिद्धहोजाय तब पलपलभरके लड्डू बांधि सांझको खाय उसपर चारिपल दूधपिये ॥ ९५ ॥ फिर क्षार और खटाई दो रस न खाय स्त्री प्रसंग करै तो वीर्य न द्रवै देह पुष्टरहै ९६ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरसुधाकरेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

(अथावलेह कल्पना) द्रव्यको क्वाथसदृश औटावै फिर विशेष आंच देय जब गाढ़ाहोय तब अवलेह कहे लेहभी कहते हैं, मात्रा चारिमुद्रा भर ॥ १ ॥ चूर्णसे

कार्याचूर्णाच्चद्विगुणोगुडः । द्रवंचतुर्गुणंदद्यादितिसर्वत्र निश्चयः २ सुपक्वेतंतुमत्त्वंस्यादवलेहोप्सुमज्जति । खरत्वंपीडितेमुद्रागन्धवर्णरसोद्भवम् ३ दुग्धमिक्षुरसंयूषं पञ्चमूलकषायजम् । वासाक्वाथंयथायोग्यमनुपानंप्रशस्यते ४ कण्टकारींतुलांनीरद्रोणपक्त्वाकषायकम् । पादशेषंगृहीत्वाचतस्मिश्चूर्णानिदापयेत् ५ पृथक्पलानिचैतानि गुडूचीचव्यचित्रकाः । मुस्ताकर्कटशृङ्गीचत्र्यूषणं धन्वयासकः ६ भार्गीरास्नाशटीचैवशर्करापलविंशतिः । प्रत्येकंचपलान्यष्टौ प्रदद्याद्घृततैलयोः ७ पक्त्वालेहत्वमानीयशीतेमधुपलाष्टकम् । चतुष्पलंतुगाक्षीर्याःपिप्पलीनांचतुष्पलम् ८ क्षिप्त्वानिदध्यात्सुदृढेमृन्मयेभाजनेशुभे । लेहोयंहन्तिहिक्कार्त्तिश्वासकासानशेषतः ९ पाटलारणिकाश्मर्यबिल्वारलुकगोक्षुराः । पाण्यौबृहत्यौपिप्पल्यः शृङ्गीद्राक्षामृताभयाः १० बलाभूम्यामलीवासा ऋद्धि

मिश्री चौगुनीदेना गुड़ दूना द्रव्यादि चौगुने यह सर्वत्र रीतिहै ॥ २ ॥ जब आंचदेने पर तारबँधे आ पानीमें पाककी बूँद न बूड़े न घुले तब सिद्ध जाने और अंगुरीके दबाने स फुछदबै तब सुगंध रसादि डारे ॥ ३ ॥ और दूध से ऊखके उत्पत्ति रस यूषस पंचमूल कायसे रूसा काथसे इन अनोपानसे देना अथवा और जो रोगोचित अनोपानहो सो देना ॥ ४ ॥ (हिचकी और कास श्वासपर भटकटैया-वलेह) भटकटैया चारिसेरले द्रोणभरजलमें औटै जब चौथाईरहै तब उसमें चूर्ण डारै ॥ ५ ॥ गुर्च, चाब, चीता, नागरमोथा, काकड़ासिंगी, त्रिकुटा, जवासा ॥ ६ ॥ भारंगी रास्ना और कचूर ये सब पलपल भरले चूर्णकरै शक्कर बीसपल घृत आठपल तेल आठपल ॥ ७ ॥ ये सब काढे में औटै अवलेह सिद्धहो ठंढाकरि आठपल शहद, बंशलोचन चारिपल, पिप्पली चूर्ण चारिपल मिलाय ॥ ८ ॥ उत्तम पात्रमें राखै इसे अवलेह से हिचकी, श्वास, व कास, को अशेषतासे नाशकरै ॥ ९ ॥ (क्षयादि पर च्यवन प्राशावलेह) सिरस, अग्निमंथ, खम्भारी, पाटल, बेल, स्यो-

प्योवृंहणोबलकृन्मतः २८ युक्त्याकूष्माण्डखण्डवच्छूरणंविपचेत्सुधीः । अर्शसांमूढवातानांमन्दाग्नीनांचयुज्यते २९ हरीतकीशतंभद्रंयवानामाढकंतथा । पलानिदशमूलस्यविंशतिश्चनियोजयेत् ३० चित्रकःपिप्पलीमूलमपामार्गःशटीतथा । कपिकच्छूःशङ्खपुष्पीभार्ङ्गीचगजपिप्पली ३१ बलापुष्करमूलंचपृथग्द्विपलमात्रया । पञ्चपञ्चाढकेनीरेयवैःस्विन्नैःशृतंनयेत् ३२ तत्राभयाशतंदद्यात्क्वाथेनास्मिन्विचक्षणः । सर्पिस्तैलाष्टपलकंक्षिपेद्गुडतुलांतथा ३३ पक्त्वालेहत्वमानीतेसिद्धशीतेपृथक्पृथक् क्षौद्रञ्चपिप्पलीचूर्णंदद्यात्कुडवमात्रया ३४ हरीतकीद्वयंखादेत्तेनलेहेनित्यशः । क्षयंकासंज्वरंश्वासंहिक्काशोंरुचिपीनसान् ३५ ग्रहणींनाशयेदपवलीपलितनाशनः । बलवर्णकरःपुंसामवलेहोरसायनः । विहितोगस्त्यमुनिनासर्वरोगप्रणाशनः ३६ कुटजस्त्वक्तुलांद्रोणेजलस्यवि-

कूष्माण्ड अवलेह बाल वृद्धको देना छाती पुष्टकरै वीर्य बढावै व बलको करै ॥ २८ ॥ (अर्शपर खंड कूष्माण्डावलेह) जैसे कुम्हड़ा की विधिहै सोई सूरन की भी है पेठा और जमींकन्दकी छोटी करें करिदोनोंको एकत्र करि उसी रीतिसे अवलेह बनाय खिलावै तो अर्श,मूढवात और मन्दाग्नि ये सब अच्छेहोयँ ॥२९॥ (क्षयीपर अगस्त्य हरीतकी) बड़ीहड़ें सौ, अरुयायन एक आढ़क, दशमूल बीसपल ॥ ३० ॥ चीता,पीपरामूल,चिचिरा,कचूर,कौंच,कौड़ाला, भारंगी, गजपीपरि ॥ ३१ ॥ खरियारा और पुष्करमूल सब दैदे पल पांच आढक जलमें पचाय गलाय उतारि छानलेय ॥ ३२ ॥ तिसमें सौ हड़, तेल,घी, आठ पल,गुड़तुलाभर देकर ॥ ३३ ॥ पकावै ठंढाकरि शहद व पीपरिका चूर्ण ये सब एकएक कुड़वडारै ॥ ३४ ॥ इस अवलेह के संग दो हड़ नित्यखाये तो क्षयी का रोग,कास,ज्वर,श्वास, हिचकी, अर्श, अरुचि,पीनस ॥ ३५ ॥ और ग्रहणी ये रोग नाशहोयँ बलवन्त हो श्वेतबालकृष्णहों रूपवानहो पुरुषको यह अवलेहरसायनहै यह अगस्त्यमुनिकी कही हरीतकी सब रोगोंको नाश करती है ॥ ३६ ॥ (अथार्शपर कुरैया अवलेह)

पचेत्सुधीः। कषायंपादशेषंचगृह्णीयाद्वस्त्रगालितम् ३७ त्रिंशत्पलंगुडस्यात्रदत्त्वाचविपचेत्पुनः। सान्द्रत्वमागतंदृष्ट्वाचूर्णानीमानिदापयेत् ३८ रसाञ्जनंमोचरसंत्रिकटुत्रिफलांतथा। लज्जालुंचित्रकंपाठांबिल्वमिन्द्रयवंवचाम् ३९ भल्लातकंप्रतिविषांविडङ्गानिचवालकम्। प्रत्येकंपलसंमानंघृतस्यकुडवंतथा ४० सिद्धशीतेततोदद्यान्मधुनःकुडवंतथा। जयेदेषोवलेहस्तुसर्वाण्यर्शांसिवेगतः ४१ दुर्नामप्रभवान्रोगानतीसारमरोचकम्। ग्रहणींपाण्डुरोगंचरक्तपित्तंचकामलाम्। अम्लपित्तंतथाशोथंकासंचैवप्रवाहिकाम् ४२ अनुपानेप्रयोक्तव्यमाजंतक्रंपयोदधि। घृतंजलंवाजीर्णेचपथ्यभोजीभवेन्नरः ४३ कुटजत्वक्तुलामार्द्रांद्रोणनीरेविपाचयेत्। पादशेषंशृतंनीत्वा चूर्णान्येतानिदापयेत् ४४ लज्जालुर्धातकीबिल्वंपाठामोचरसस्तथा। मुस्तंप्रतिविषाचैवप्रत्येकंस्यात्पलंपलम् ४५ ततस्तुविपचेद्ग्नौयावद्दर्वीप्रलेपनम्। जलेनच्छागदु

कुरैयाकी छाल तुलाभर एकद्रोण पानीमें पचावै जब चौथाई शेष रहै तब उतारि वस्त्रसे छानलेय॥ ३७॥ फिर तीसपल गुड दे पकावै गाढाभये यह चूर्ण डारै॥ ३८॥ रसौत, मोचरस, त्रिकुटा, त्रिफला, लजालू, चीता, पाढा, बेल, इन्द्रजव, बच॥ ३९॥ भिलावा, अतीस, विडङ्ग और सुगन्धवाला ये पलपल भर घी कुडवभर॥ ४०॥ ठंडापरे कुडवभर शहद दे, यह अवलेह सर्वार्शको वेगही दूर करताहै॥ ४१॥ दुर्नामरोग, अतीसार, अरुचि, ग्रहणी, पाडु, रक्तपित्त, कामला, अम्लपित्त, शोथ, खांसी और प्रवाहिका ये सब दूरहोवैं॥ ४२॥ (तस्यानुपानम्) बकरीका दूध वा मट्ठा दही घी इसीका वा पानी भोजन के पचन समय ओषधिखाय॥ ४३॥ (सर्वातिसारपर कुरैयाष्टक) गीलीकुतुलाकुरैयाकी छाल द्रोण भर पानीमें पकावै जब चौथाई शेष रहै तब यह चूर्ण डारै॥ ४४॥ लजालू, धवफूल, बेल, पाढा, मोचरस, नागरमोथा और अतीस ये पलपल भर

पयोवृंहणोवलकृन्मतः २८ युक्त्याकूष्माण्डखण्डञ्चशर्करां क्षिपेत्सुधीः। अर्शसांमूढवातानांमन्दाग्नीनांचयुज्यते २९ हरीतकीशतंभद्रंयवानीमाढकंतथा। पलानिदशमूलस्यविंशतिश्चनियोजयेत् ३० चित्रकःपिप्पलीमूलमपामार्गःशटीतथा। कपिकच्छूःशङ्खपुष्पीभार्ङ्गीचगजपिप्पली ३१ वलापुष्करमूलंचपृथग्द्विपलमात्रया। पचेत्पञ्चाढकेनीरेयवैःस्विन्नैःशृतंनयेत् ३२ तच्चाभयाशतंदद्यात्काथेनास्मिन्विचक्षणः। सर्पिस्तैलाष्टपलकंक्षिपेद्गुडतुलांतथा३३पक्त्वालेहत्वमानीतेसिद्धशीतेपृथक्पृथक्। क्षौद्रञ्चपिप्पलीचूर्णंदद्यात्कुडवमात्रया ३४ हरीतकीद्वयंखादेत्तेनलेहेननित्यशः। क्षयंकासंज्वरंश्वासंहिक्कार्शोरुचिपीनसान् ३५ ग्रहणींनाशयेदेषवलीपलितनाशनः। वलवर्णकरःपुंसामवलेहोरसायनः। विहितोगस्त्यमुनिनासर्वरोगप्रणाशनः ३६ कुटजत्वक्तुलांद्रोणेजलस्यवि-

कूष्माण्ड अवलेह बाल वृद्धको देना छाती पुष्टकरै वीर्य बढावै व बलको करै ॥ २८ ॥ (अर्शपर खंड कूष्माण्डावलेह) जैसे कुम्हड़ा की विधिहै सोई सूरन की भी है पेठा श्रार जमींकन्दकी छोटी कचैं करि दोनोंको एकत्र करि उसी रीतिसे अवलेह बनाय खिलावै तो अर्श, मूढवात और मन्दाग्नि ये सब अच्छेहोयँ ॥२९॥ (क्षयीपर अगस्त्य हरीतकी) बड़ीहड़ें सौ, अजवायन एक आढक, दशमूल बीसपल ॥३०॥ चीता, पीपरामूल, चिरचिरा, कचूर, केवांचाकौड़ाला, भारङ्गी, गजपीपरि ॥३१॥ खरियारा और पुष्करमूल सब द्वै द्वै पल पांच आढक जलमें पचाय गलाय उतारि छानलेय ॥३२॥ तिसमें सौ हड़, तेल, घी, आठ पल, गुड़तुलाभर देकर ॥३३ ॥ पकावै ठंढाकरि शहद व पीपरिका चूर्ण ये सब एकएक कुड़वडारै ॥ ३४॥ इस अवलेह के संग दो हड़ नित्यसेवै तो क्षयी का रोग, कास, ज्वर, श्वास, हिचकी, अर्श, अरुचि, पीनस ॥ ३५ ॥ और ग्रहणी ये रोग नाशहोयँ बलवन्त होवै तन बालकृष्णहों रूपवानहो पुरुषको यह अवलेहरसायनहै यह अगस्त्यमुनिकी कही हरीतकी सब रोगोंको नाश करती है ॥ ३६ ॥ (अथार्शपर कुरैया अवलेह)

पचेत्सुधीः । कषायंपादशेषंचगृह्णीयाद्वस्त्रगालितम् ३७
त्रिंशत्पलंगुडस्यात्रदत्त्वाचविपचेत्पुनः । सान्द्रत्वमाग
तंदृष्ट्वाचूर्णानीमानिदापयेत् ३८ रसाञ्जनंमोचरसंत्रि-
कटुत्रिफलांतथा । लज्जालुञ्चित्रकंपाठांबिल्वमिन्द्रयवंव
चाम् ३९ भल्लातकंप्रतिविषांविडङ्गानिचवालकम् । प्र
त्येकंपलसंमानंघृतस्यकुडवंतथा ४० सिद्धशीतेततोद
द्यान्मधुनःकुडवंतथा । जयेदेषोवलेहस्तुसर्वाण्यर्शांसि
वेगतः ४१ दुर्नामप्रभवान्रोगानतीसारमरोचकम् । ग्रह
णींपाण्डुरोगंचरक्तपित्तंचकामलाम् । अम्लपित्तंतथाशोथं
कासंचैवप्रवाहिकाम् ४२ अनुपानेप्रयोक्तव्यमाजंतक्रंप
योदधि । घृतंजलंवाजीर्णेचपथ्यभोजीभवेन्नरः ४३ कुट
जत्वक्तुलामार्द्रांद्रोणनीरेविपाचयेत् । पादशेषंशृतंनीत्वा
चूर्णान्येतानिदापयेत् ४४ लज्जालुर्धातकीबिल्वंपाठामो
चरसस्तथा । मुस्तंप्रतिविषाचैवप्रत्येकंस्यात्पलंपलम् ४५
ततस्तुविपचेद्यत्नोयावद्दर्वीप्रलेपनम् । जलेनच्छागदु

धेनपीतोमण्डेनवाजयेत् ४६ घोरान्सर्वानतीसारान्नानावर्णान्सवेदनान् । असृग्दरंसमस्तंचसर्वार्शांसिप्रवाहिकाम् ४७ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेमध्यखण्डेऽवलेहकल्पनाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

कल्काच्चतुर्गुणीकृत्यघृतंवातैलमेवच । चतुर्गुणेद्रवेसाध्यंतस्यमात्रापलोन्मिता १ निक्षिप्यक्काथयेत्तोयंक्काथ्यद्रव्याच्चतुर्गुणम् । पादशिष्टंगृहीत्वाचस्नेहस्तेनैवसाधयेत् २ चतुर्गुणंमृदुद्रव्येकाठिन्येष्टगुणंजलम् । अत्यन्तकठिनेद्रव्येनीरंषोडशिकंमतम् ३ तथा च मध्यमेद्रव्ये दद्यादष्टगुणंपयः । कर्षादितःपलंयावद्दद्यात्षोडशिकंजलं ४ ततस्तुकुडवंयावत्तोयंचाष्टगुणंभवेत् । प्रस्थादितःक्षिपेन्नीरेखारीयावच्चतुर्गुणम् ५ अम्बुक्काथरसैर्यत्रपृथक्स्नेहस्यसाधनम् । कल्कस्यांशंतत्रदद्याच्चतुर्थपष्ठम

ले ॥ ४५ ॥ फिर उसीसे दे वो औटै जबलग करछी में लिपटने लगे तब सिद्ध जानो सो ऊपरी पय वा पानी वा माड के संगविये ॥४६॥ तौ सर्व अतीसारकी घोर वेदना निवृत्तहो व सबभांति रक्तस्राव, सर्वार्श और प्रवाहिकाको दूरकरताहै ४७॥

इति श्रीशार्ङ्गधरसुधाकरेणविरचितेवलेहकल्पनाष्टमोऽध्यायः॥ ८॥

(अथ घृत तेल साधना) कल्कसों चौगुना घृत वा तेल और काथादि द्रव्यभी चौगुनी देना तिसकीमात्रा एकपलभरहै॥१॥जिस द्रव्यका काथदेनाहो तौ चौगुने जल में औटै जब चौथाईरहै तब उतारिछानिले उसमें घी तेल सिद्धकरै॥ २॥ कोमलद्रव्य में चतुर्गुणा जल कठोर में आठगुणा और अत्यन्त कठोर में सोलहगुणा जल दे ॥ ३ ॥ मध्यमें अटगुणा जलदेवै (पुनर्विधि) टकाभरे से चारटका भरताई में सोलहगुणापानीदे काथकरे पलसे कुडवताई अटगुनी प्रस्थ से खारीपर्यंत चौगुनादे ॥४।५॥ और जो केवल कल्क पानी घी व तेलमें सिद्धकरै तो चतुर्थांश कल्कदे सेरभर तेल पावसेर कल्क और जो कल्क पानीके संग घी तेल पकावै तो घृत तेलका षष्ठांश कल्क देना तीनपाव में आधपाव और जब कल्क रसके संग घी वा तेल में पकावै तौ तेलका अष्टमांश कल्क देना

ष्टमम् ६ दुग्धेदध्निरसेतक्रे कल्केदेयोष्टमांशकः । क ल्कस्यसम्यक्पाकार्थंतोयमत्रचतुर्गुणम् ७ द्रव्याणियत्र स्नेहेषुपञ्चादीनिभवन्तिहि । तत्रस्नेहसमान्याहुर्यथा पूर्वंचतुर्गुणम् ८ द्रव्येणकेवलेनैवस्नेहपाकोभवेद्यदि । तत्राम्बुपिष्टः कल्कः स्याज्जलंचात्रचतुर्गुणम् ९ क्वाथेन केवलेनैवपाकोयत्रेरितःक्वचित् । क्वाथ्यद्रव्यस्यकल्कोपि तत्रस्नेहेप्रयुज्यते १० कल्कहीनस्तुयः स्नेहःससाध्यःके वलेद्रवे । पुष्पंकल्कस्तुयत्स्नेहस्तत्रतोयंचतुर्गुणम् । स्ने हात्स्नेहाष्टमांशश्चपुष्पकल्कःप्रयुज्यते ११ वर्त्तिवत्स्ने हकल्कःस्याद्यदाङ्गुल्याविमर्दितः । शब्दहीनोऽग्निनिः क्षिप्तःस्नेहसिद्धोभवेत्तदा १२ यदाफेनोद्गमस्तैलेफेनशा न्तिश्चसर्पिषि। गन्धवर्णरसोत्पत्तिःस्नेहसिद्धिस्तथाभवेत् १३ स्नेहपाकस्त्रिधाप्रोक्तोमृदुर्मध्यःखरस्तथा। ईषत्सरस

सेर में औषधादि घृत तैलका प्रमाण यही है ॥ ६ ॥ दूध, दही, रस और मट्ठा इनमें अष्टमांश कल्क देय और कल्क भलीभांति पकाने के कारण चौगुना जल देना चाहिये ॥ ७ ॥ और जहां कल्क घी तेल क्वाथ पांच पांचों होयँ तहां स्नेहादिक समान देना पानी चौगुना देइ ॥ ८ ॥ जब एकही द्रव्य घृत व तेलमें पकानी होय तौ जल में द्रव्य पीसि गला या कल्ककरि चौगुने पानी में पकावें ॥ ९ ॥ जो केवल काढ़े में कहाहो तहा उसी क्वाथकी द्रव्यका कल्ककरि घृत वा तेलयुक्त वह काढा और चौगुना पानीदे पकाना ॥ १० ॥ जहां कल्क रहित है तो केवल द्रववस्तु में दूध पानी देके पकालेना जब फूलके कल्क में स्नेह सिद्ध कहैंगे तब चौगुना पानी देंगे जब स्नेह से स्नेह सिद्ध कहैंगे तब स्नेहका अष्टमांश दूसरा स्नेहले पुष्प कल्कयुक्त पकालेना ॥ ११ ॥ जब वह स्नेह पाक अंगुरीमें लेके मलसे गोली बनजाय उसे आगपर डारै और जलसे शब्द चिंचिराहट न करे तब सिद्धभया जानो ॥ १२ ॥ तेल फेनउठने से सिद्धजानिये घृत फेन शांतिसे सिद्ध जानिये जब गंध आवै और निर्मल होजाय औरसे उत्पत्तिकरै तब घृत वा तेल सिद्धभया जानिये॥ १३ ॥ स्नेहपाक तीन प्रकारकाहै-मृदु मध्य और

कल्कस्तुस्नेहपाकोमृदुर्भवेत् १४ मध्यपाकश्चसिद्धिश्च कल्केनीरसकोमले । ईषत्कठिनकल्कश्चस्नेहपाकोभवे त्खरः १५ तदूर्ध्वंदग्धपाकःस्याद्दाहकृन्निष्प्रयोजनम् । आमपाकश्चनिर्वीर्योवह्निमान्द्यकरोगुरुः १६ नस्यार्थःस्या न्मृदुःपाकोमध्यमःसर्वकर्मसु । अभ्यङ्गार्थेखरःप्रोक्तोयु ञ्ज्यादेवंयथोचितम् १७ घृततैलगुडादींश्चसाधयेन्नैकवा सरे । प्रकुर्वन्त्युषिताह्येतेविशेषाद्गुणसञ्चयम् १८ पिप्प लीपिप्पलीमूलंचव्यचित्रकनागरैः । ससैन्धवैश्चपलिकैर्घृ तप्रस्थंविपाचयेत् १९ क्षीरंचतुर्गुणंदत्त्वातत्सिद्धंप्लीहनाश नम् । विषमज्वरमन्दाग्निहरंरुचिकरंपरम् २० पिप्पलीपि प्पलीमूलंचित्रकोहस्तिपिप्पली । श्वदंष्ट्रानागरंधान्यंपाठा बिल्वंयवानिकी २१ द्रव्यैश्चपलिकैरेतैश्चतुःषष्टिपलं घृतम् । घृताच्चतुर्गुणंदेयंचाङ्गेरीरससंयुतम् २२ तथाच तुर्गुणंदत्त्वादधिसर्पिर्विपाचयेत् । शनैःशनैर्विपक्तव्यंचा ङ्गेरीघृतमुत्तमम् २३ तद्घृतंकफवातघ्नंग्रहण्यर्शोविकार

नर जो कल्क मोमवत् रहे तौ मृदु जानिये ॥ १४ ॥ जो कल्क निरसहो कुछ को मल रहै तौ मध्य जानिये जो कल्क निरस और कठोर होजाय तौ खरा जानिय ॥ १५ ॥ जो इस प्रमाण से अधिक सो रेतो जानो स्नेह बिगड गया अकार्थ गया जो कचा रहै ता सेवनकरने से मन्दाग्निकरै और भारीहो ॥ १६ ॥ नास लेने को नरम हितहै मध्यम सबै कार्यसाधक है खरा मर्दनको है जहा जैसा चाहै रहा तैसा बनावै ॥ १७ ॥ घृत, तेल और गुड एकदिन न सावै दिनान्तरकै करै तौ अधिक गुणकरै ॥ १८ ॥ (पिल्हीपर क्षीर षट्पल) पीपरि, पीपरामूल, चाव, चीता, सोंठि और सेंधौ ये सब पल पलभरले प्रस्थभर घी में पचावै ॥ १९ ॥ दूध चौगुना जल मिदहो तौ यह घी प्लीहाको नाश करता हुआ विषमज्वर व मन्दाग्निको दूरकर रुचिकोकर (संग्रहणी अतीसारपर चाङ्गेरीघृत ॥ २० ॥ पीपरि, पीपरामूल, चीता, गजपीपरि, गुखुरू सोंठि, धनिया, पाढा बेल और अजवायन ॥ २१ ॥ ये पलपलभर और घी चासठिपल छोटी लुनियाका रस २५६ पलदे ॥ २२ ॥ और २५६

नुत्। हन्त्यानाहंगुदभ्रंशंमूत्रकृच्छ्रंप्रवाहिकाम् २४ मसू
राणांपलशतंनीरद्रोणेविपाचयेत् । पादशेषंशृतंनीत्वा
दत्त्वाबिल्वपलाष्टकम् २५ घृतप्रस्थंपचेत्तेनसर्वातीसार
नाशनम्। ग्रहणींभिन्नविट्कांचनाशयेच्चप्रवाहिकाम् २६
अश्वगन्धापलशतंतदर्द्धंगोक्षुरंमतम् । शतावरीविदारी
चशालिपर्णीबलामृता २७ अश्वत्थस्यचशुङ्गानिपद्मबी
जंपुनर्नवा। काश्मर्य्याश्चफलंचैवमाषबीजंतथैवच २८
पृथग्दशपलान्भागांश्चतुर्द्रोणेम्भसःपचेत्। द्रोणशेषेरसे
तस्मिन्पचेच्चैवघृताढकम् २९ मृद्वीकापद्मकंकुष्ठंपिप्पली
रक्तचन्दनम्। पत्रकंनागपुष्पंचआत्मगुप्ताफलंतथा ३०
नीलोत्पलंसारिवेद्वेजीवनीयगणस्तथा। पृथक्कर्षसमाभा
गाःशर्करायाःपलद्वयम् ३१ रसस्यपौण्ड्रेक्षूणामाढकेकं
समाहरेत्। रक्तपित्तंक्षतंक्षीणंकामलांवातशोणितम् ३२

पल दहीके दे मंद मंद आंच से पचावे इसका नाम चांगेरी घृत है ॥ २३ ॥ इस से वात, कफ, ग्रहणी, अर्श दूरहो पेट फूलना, कांचनिस्सरण, मूत्रकृच्छ्र और प्रवाहिका ये सब नाशहोवें ॥ २४ ॥ (अतीसारपर मसूरघृत) सौपल मसूरीको द्रोणभर जलमें क्वाथकरे चौथाई रहै तब उस काढे में आठपल बेलकी गुद्दीदे ॥ २५ ॥ और प्रस्थभर घृतदे पचावे उससे सब अतीसार ग्रहणी और बिथरा मल गिरनो तथा प्रवाहिका ये सब दूरहों ॥ २६ ॥ (रक्तपित्तपर कामदेव घृत) असगंध सौपल गुखुरू पचासपल शतावरि बिलाईकंद बनउर्दी बरियारा गुर्च ॥ २७ ॥ पीपरका टिंगुसा, रक्तकमलगट्टा, गदापुरना, खंभारी पुष्प, काले उर्द ॥ २८ ॥ ये दशदश पल चार द्रोण पानी में पचाय चतुर्थांश शेष रहै तब आढकभर घी देकर पचावे ॥ २९ ॥ फिर दाख, पद्माख, पीपर, रक्त चन्दन, पत्रज, नागकेशर, किवांचके बीजकी मींगी ॥ ३० ॥ नीलकमल का फूल, दोनों कमलगट्टा, सरिवन, पिठवन, जीवनीयगण पूर्वोक्त जो न मिलें तो केवल बरियारा देना ये सब द्रव्य कर्ष कर्ष भरलें शक्कर दो पल युक्त करना ॥ ३१ ॥ आढकभर पौंड़ाका रस सब इकट्ठा उसमें पचावै जब घी शेष रहै कफेन

हलीमकंपाण्डुरोगंवर्णभेदंस्वरक्षयम्। मूत्रकृच्छ्रमुरोदाहं पार्श्वशूलंचनाशयेत् ३३ एतत्सर्पिःप्रयोक्तव्यंवह्वन्तःपुरचारिणाम्। स्त्रीणांचैवाप्रजातानांदुर्बलानांचदेहिनाम् ३४ श्रेष्ठंबलकरंवर्ण्यंहृद्यंपुष्टिरसायनम्। ओजस्तेजस्करंहृद्यमायुष्यंप्राणवर्द्धनम् ३५ संवर्द्धयतिशुक्रस्यपुरुषं दुर्बलेन्द्रियम्। सर्वरोगविनिर्मुक्तोपयसिक्तोयथाद्रुमः। कामदेवइतिख्यातंसर्पिरुक्तंमहागुणम् ३६ त्रिफलाद्वेनिशेक्रौन्तीसारिवेद्वेप्रियङ्गुका। शालिपर्णीपृष्ठपर्णीदेवदार्व्येलवालुकम् ३७ नतंविशालादन्तीचदाडिमंनागकेशरम्। नीलोत्पलैलामञ्जिष्ठाविडङ्गंपद्मकुष्ठकम् ३८ जातीपुष्पंचन्दनंचतालीसंबृहतीतथा। एतैःकर्षसमैःकल्केर्जलंदत्त्वाचतुर्गुणम् ३९ घृतप्रस्थंपचेद्धीमानपस्मारेज्वरेक्षये। उन्मादेवातरक्तेचकासेमन्दानलेतथा ४० प्रतिश्या

तब छानिले रक्तपित्त, क्षतक्षीण, कमल, वातरक्त ॥ ३२ ॥ हलीमक, पांडु हरै वर्णभेद, स्वरक्षय, मूत्रकृच्छ्र, उरदाह और पसुरी पीड़ाको दूर करे ॥ ३३ ॥ यह घृत बहु रमणीयको देय, बांझ पुत्रवती हो दुर्बलको दे तो मोटा हो ॥ ३४ ॥ श्रेष्ठ है बल करता है शरीरकी रंगत अच्छीहो हृदयको प्रिय व पुष्टता करताहुआ रसायन होकर बल, तेज, आयु और प्राणोंको बढ़ाताहै ॥ ३५ ॥ वीर्य बढ़ाता है दुर्बलेन्द्रिय पुरुषकी बलीहो सब रोगनाशहो जैसे सींचने से वृक्ष तरुण होजाता वैसेही मनुष्यका शरीर होताहै यह कामदेव घृत बड़ा गुणदायी कहाताहै ॥ ३६ ॥ (कल्याण घृत अपस्मारपर) त्रिफला, दोनों हल्दी, रेणुका, सरिवन, पिठवन, मकरा, वनउर्दी, वनमूंग, देवदारु, एलवालू न मिले तो सुगन्धवाला देय ॥ ३७ ॥ तगर, इन्द्रायण, जमालगोटे का बीज, अनार, नागकेशर, नीलकमल, इलायची, मँजीठ, विडंग, पद्माख, कूट ॥ ३८ ॥ मालतीपुष्प, श्वेतचन्दन, तालीसपत्र और बड़ी भटकटैया ये सब कर्ष भर पानी में पीसि कल्क करि चौगुना पानी दे ॥ ३९ ॥ उस पानी में प्रस्थभर और वह कल्क देके पकाय वैद्य देवे इस घी से मिरगी, ज्वर, क्षयी, चित्तभ्रम, वातरक्त, कास, मन्दाग्नि ॥ ४० ॥

येकटीशूलेतृतीयकचतुर्थके॥मूत्रकृच्छ्रेविसर्पेचकण्डूपा
ण्ड्वामयेतथा ४१ विषद्वयेप्रमेहेषु सर्वथैवप्रयुज्यते॥व
न्ध्यानांपुत्रदंभूतयक्षरक्षोहरंस्मृतम् ॥४२॥ अमृताकाथ
कल्काभ्यांसक्षीरंविपचेद्घृतम्॥वातरक्तंजयत्याशुकुष्ठं
जयति दुस्तरम् ४३ सप्तच्छदःप्रतिविषाशम्याकःकटु
रोहिणी। पाठामुस्तमुशीरंच त्रिफलापर्पटस्तथा ४४
पटोलनिम्बमञ्जिष्ठाःपिप्पलीपद्मकंशटी। चन्दनंधन्वया
सश्चविशालाद्वेनिशेतथा ४५ गुडूचीसारिवेद्वेचमूर्वावा
साशतावरी॥त्रायन्तीन्द्रयवायष्टीभूनिम्बाश्चाक्षभागिकाः
४६ घृतंचतुर्गुणंदद्याद्घृतादामलकीरसः। द्विगुणंसर्पि
षश्चात्रजलमष्टगुणंभवेत् ४७ तस्मिन्पाययेत्सर्पिर्वातर
क्तेषुसर्वसु।कुष्ठानिरक्तपित्तंचरक्तार्शांसिचपाण्डुताम् ४८
हृद्रोगगुल्मवीसर्पप्रदरान्गण्डमालिकाम्। क्षुद्ररोगंज्वरं
चैवमहातिक्तमिदंजयेत् ४९ कासीसंद्वेनिशेमुस्तंहरितालं

नाकटपकना, कटिपीड़ा, तिजारी, चातुर्थिक मूत्रकृच्छ्र, विसर्पिका, खजुली पाण्डु ॥ ४१ ॥ दोनों विषमें प्रमेह में और रोग सब अच्छेहों, बांझ पुत्र जने और भूत व राक्षसों की बाधा ये सब दूरहोयँ इसका नाम कल्याणघृतहै ॥ ४२ ॥ (वातरक्तपर अमृतादिघृत गुर्वेल कल्क गुर्वेल काथ दूधके साथ घृत पचावै इससे वातरक्त और कोढ़ दूरहोताहै ॥ ४३ ॥ (वातकुष्ठादिपर महा तिक्तादि घृत , छितौनी, अमलतास, अतीस, कुटकी पाढ़ा, नागरमोथा, खस, त्रिफला, पित्तपापड़ा ॥ ४४ ॥ पटोल, नीम, मँजीठ, पिपरी, पद्माख, कचूर, चन्दन, जवासा, इन्द्रायन, दोनों हल्दी ॥ ४५ ॥ गुर्च, सरिवन, पिठवन, मुर्रा, रूसा, शतावरि, त्रायमाण भ ऋद्धि है इन्द्रयव, मुलेठी और चिरायता ये सब कर्ष कर्ष भरले ॥ ४६ ॥ घी चौगुनादे व घीका दूना आंवरेका रसदेकर अठगुणा जलदे ॥ ४७ ॥ यह सिद्ध घी सब वातरक्तके विकारों में व अठारहों कुष्ठों में व रक्तपित्त में व रक्तार्श पाण्डुमें देइ ॥ ४८ ॥ और हृद्रोग, गुल्म, विसर्प, प्रदर, गण्डमाला, क्षुद्ररोग और ज्वरको दूरिकरै इसका महातिक्त नामहै पहिले कहे रोग

मनःशिलाम् । कंपिल्लकंगन्धकंचविडङ्गंगुग्गुलुंतथा ५०
सिक्थकंमरिचंशुण्ठींतुत्थकंगौरसर्षपम् । रसाञ्जनंचसिन्दू
रंश्रीवासंरक्तचन्दनम् ५१ इरिमेदंनिम्बपत्रंकरञ्जंसारिवां
वचाम् । मञ्जिष्ठांमधुकंमांसींशिरीषंलोध्रपद्मकम् ५२ हरी
तकींप्रपुन्नागंचूर्णयेत्कार्षिकान्पृथक् । ततस्तच्चूर्णमालो
ड्यत्रिंशत्पलमितेघृते ५३ स्थापयेत्ताम्रपात्रेचघर्मेसप्त
दिनानिवै । अस्याभ्यङ्गेनकुष्ठानिदद्रूपामाविचर्चिकाः ५४
शूकदोषाविसर्पश्चविस्फोटावातरक्तजाः । शिरःस्फोटाः
पदंशाश्चनाडीदुष्टव्रणानिच ५५ शोथोभगन्दरश्चैवलू
ताःशाम्यन्तिदेहिनाम् । शोधनंरोपणंचैवसुवर्णकरणंघृत
म् ५६ जातीनिम्बपटोलंचद्वेनिशेकटुरोहिणी । मञ्जिष्ठामं
धुकंसिक्थंकरञ्जोशीरसारिवाः ५७ तुत्थंचविपचेत्सम्यक्
कल्कैरेभिर्घृतंबुधः । अस्यलेपात्प्ररोहन्तिसूक्ष्मनाडीव्रणा
अपि । मर्माश्रिताःक्लेदिनश्चगम्भीराःसरुजोव्रणाः ५८
चित्रकःशङ्खिनीपथ्याकम्पिल्लस्त्रिवृतायुगम् । वृद्धदारुश्च

सब अच्छे होयँ ॥ ४९ ॥ (कुष्ठ, दाह, खाजपर कसीसादि घृत) कसीस दोनों हल्दी, नागरमोथा, हरताल, मैनशिल, कबीला, गन्धक, विडंग, गुग्गुलु ॥ ५० ॥ मोम, मिर्च, सोंठि, तूतिया, पीत सरसों, रसौत, सिन्दूर, राल, लाल चन्दन ॥ ५१ ॥ खैर, नीमकापत्ता, करंज, सरिवन, वच, मंजीठ, महुआछाल, जटामासी, सिरस, लोध, पद्माख ॥ ५२ ॥ हड़, गदापुरैना इन सबका एक एक कर्ष चूर्णकरै तिसे तीसपल घृतमें सानि ॥ ५३ ॥ ताम्रपात्रमें भरि सातदिन घाममें धरै इस घी के लगाने से कुष्ठ, दाद खाज, विचर्चिका ॥ ५४ ॥ शूकदोष, विसर्प, वातरक्तजनित शीतला, मस्तकघाव, गर्मी, नासूर ॥ ५५ ॥ शोथ, भगन्दर, लूता (मकड़ी) ये दूरहों घाव अतिशुद्धहो पुरावै घाव चिह्न न रहै ॥ ५६ ॥ (घावपर जात्यादिघृत) चमेली, नीम, परवल, तीनों पत्ती, दोनों हल्दी, कटुकी, मंजीठ मुलेठी मोम, करंज, खस, सरिवन ॥ ५७ ॥ और तूतिया इन सबको समान भागले लुगदी करि घृतमें पकावै इस घीके लगानें से घाव, नासूर, मर्मस्थानका दुःखदायी गम्भीर घाव और पीड़ा

शम्याकोदन्तीचत्रिफलातथा ५९ कोशातकीदेवदालीनी लनीगिरिकर्णिका। शातलापिप्पलीमूलंविडङ्गंकटुकीत था ६० हेमक्षीरीचविपचेत्कल्कैरेभि पिचून्मितैः। घृतंप्र स्थंस्नुपीक्षीरंषट्पलेतुपलद्वये ६१ अर्कक्षीरस्यमतिमांस्त त्सिद्धंगुल्मकुष्ठनुत्। हन्तिशूलमुदावर्तशोथाध्मानंभग न्दरम् ६२ शमयत्युदराण्यष्टौनिपीतंबिन्दुसङ्ख्यया। गो दुग्धेनोष्ट्रदुग्धेनकौलत्थेनशृतेनवा ६३ उष्णोदकेनवापी त्वाबिन्दुवेगैर्विरिच्यते। एतद्बिन्दुघृतंनामनाभिलेपाद्विरे चयेत् ६४ त्रिफलायारसप्रस्थंप्रस्थंवासारसोद्भवम्। भृङ्गराजरसप्रस्थंप्रस्थमाजंपयस्तथा ६५ दत्त्वातत्रघृते प्रस्थंकल्कैःकर्षमितैःपृथक्। त्रिफलापिप्पलीद्राक्षाच न्दनंसैन्धवंबला ६६ काकोलीक्षीरकाकोलीमेदामरिचना गरम्। शर्करापुण्डरीकाब्जकमलंचपुनर्नवा ६७ निशायुग्मं चमधुकंसर्वैरेभिर्विपाचयेत्। नक्तान्ध्यंनकुलान्ध्यंचकण्डू

ये सब दूरहोयँ॥ ५८॥ (उदररोगपर बिन्दु घृत) चीते की छाल, शंखाहूली, हड़, कबीला, दोनो निशोथ, बिधारा, अमलतासका गूदा, जमालगोटा त्रिफला॥ ५९॥ कड़वीतोरई, देवदाली कहे (घंदाल) नीलकी पत्ती, कोयल सेंहुड़की छीमी, पीपरामूल, विडंग, कुटकी॥ ६०॥ और चूक ये सब कर्ष कर्षभरले कल्क करि प्रस्थभर घीमें पचावै छः पल सेंहुड़का दूधडारै॥ ६१॥ और दो पल मदारका दूधडारै वह सिद्ध घी देवे तो गुल्म, कुष्ठ अच्छाहो शूल, उदावर्त, शोथ, पेटफूलना, भगंदर॥ ६२॥ और आठो उदररोग ये दूरहों आठबूंद पानी से वा दूधसे वा ऊंटके दूधसे कुलथी काथसे॥ ६३॥ गरम पानीसे जो बूंद पियेसे दस्तहों यह बिन्दुघृत नाभिमें लेप करनेसे दस्तआतेहैं॥ ६४॥ (नेत्र रोगपर त्रिफला घृत) त्रिफले का रस एकप्रस्थ, रूसेका एक प्रस्थ, भँगरेका एक प्रस्थ, बकरीका दूध एकप्रस्थ॥ ६५॥ एक प्रस्थ घी कर्ष कर्ष और द्रव्य त्रिफला, पीपरि, दाख, चन्दन, सेंधव, बरियारा॥ ६६॥ दोनों काकोली, बिना असगन्ध, मेदा, बिना मुलेठी, मिर्च, सोंठि, खांड़, श्वेतकमल, रक्तकमल, गदापुरना॥ ६७॥ दोनों

पिल्लंतथैवच ६८ नेत्रस्रावंचपटलंतिमिरंकाजकंजयेत्। अन्येपिप्रशमंयान्तिनेत्ररोगाःसुदारुणाः। त्रिफलंघृतमेतद्धिपानेनस्यादिभिर्हितम् ६९ द्वेहरिद्रेस्थिरामूर्वासारिवाचंदनद्वयम्। मधुपर्णीचमधुकंपद्मकेसरपद्मकम् ७० उत्पलोशीरमेदाभिस्त्रिफलापञ्चवल्कलैः। कल्कैःकर्षमितैरेतैर्घृतप्रस्थंविपाचयेत् ७१ विसर्पलूताविस्फोटव्रणकुष्ठविषापहम्। गौर्यादिकमितिख्यातंसर्वव्रणहरंस्मृतम् ७२ बलामधुकरास्नाभिर्दशमूलफलत्रिकैः। पृथग्द्विद्विपलैरेभिर्द्रोणनीरेणपाचयेत् ७३ मयूरपक्षपित्तान्त्रयकृत्पादास्यवर्जितम्। पादशेषंशृतंनीत्वाक्षीरंदत्वाचतत्समम् ७४ घृतप्रस्थंपचेत्सम्यग्जीवनीयैःपिचून्मितैः। तत्स्याद्धिशिरसःपीडांमन्यांपृष्ठग्रहंतथा ७५ अर्दितंकर्णनासाक्षिजिह्वागलरुजोजयेत्। पानेनस्येतथाभ्यङ्गेकर्णपूरेषुयुज्यते। हेमन्तकालेशिशिरेवसन्तेपुचशस्यते ७६ त्रिफलामधुकं

हल्दी और मुलेठी इनका कल्ककरि घी में पकावै तो नक्तान्ध्य, नकुलान्ध्य, काज, पिल्लरोग ॥ ६८ ॥ नेत्रस्राव, पटल, तिमिर और नीलबिन्दु ये सब अच्छे होयँ इस त्रिफलादिघृतको खाय वा नास लेकर यथोचित अनोपान करै ॥६९॥ (घावपर गौर्यादि घृत) दोनों हल्दी, शालिपर्णी, मुरा सारिवा चन्दन, दोनों मुलेठी, कमल केसर, कमल ॥७०॥ नीलकमल, खस, मेदा, त्रिफला, मुलेठी त्रिफला, आम, बढ, पीपर, पाकर और गूलर इनकी छाल सब कर्ष कर्षले कल्क करि प्रस्थभर घी में पचावै ॥ ७१ ॥ यह गौर्यादि घृत विसर्पिका, मागिबासन, शीतला ताव, कुष्ठ और विष इन सबोंको अच्छे करे ॥ ७२ ॥ (शिरोरोगपर मयूरघृत) बरियारा, मुलेठी, रासन, दशमूल और त्रिफला ये दो दो पल दे द्रोणभर जलमें पकावै ॥७३॥ मयूरमास बिना आत ओझरी पित्ता पाय पानीमें गलावै चौथाई रहै उतारि ले यह यूष जितना होवे तितना दूध दे ॥७४॥ प्रस्थभर घीमें कर्ष कर्षभर जीवनीयगण और काढा सब पचावे शिरोरोग, मन्याव्यथा, पृष्ठग्रह ॥७५॥ लकवा, कर्ण, नाक, नेत्र, जीभ, गला, इनके रोगनाशै खाय सूंघै मलै कानमे डारै हेमन्त शिशिर वसन्त

ष्टमम् ६. दुग्धेदध्निरसेतक्रे कल्केदेयोष्टमांशकः। क
ल्कस्यसम्यक्पाकार्थंतोयमत्रचतुर्गुणम् ७ द्रव्याणियत्र
स्नेहेषुपञ्चादीनिभवन्तिहि। तत्रस्नेहसमान्याहुर्यथा
पूर्वंचतुर्गुणम् ८ द्रव्येणकेवलेनैवस्नेहपाकोभवेद्यदि।
तत्राम्बुपिष्टः कल्कः स्याज्जलंचात्रचतुर्गुणम् ९ क्वाथेन
केवलेनैवपाकोयत्रेरितःक्वचित्। क्वाथ्यद्रव्यस्यकल्कोपि
तत्रस्नेहेप्रयुज्यते १० कल्कहीनस्तुयः स्नेहःससाध्यःके
वलेद्रवे। पुष्पकल्कस्तुयत्स्नेहस्तत्रतोयंचतुर्गुणम्। स्ने
हात्स्नेहाष्टमांशश्चपुष्पकल्कःप्रयुज्यते ११ वर्त्तिवत्स्ने
हकल्कःस्याद्यदाङ्गुल्याविमर्दितः। शब्दहीनोऽग्निनिः
क्षिप्तःस्नेहसिद्धोभवेत्तदा १२ यदाफेनोद्गमस्तैलेफेनशा
न्तिश्चसर्पिषि। गन्धवर्णरसोत्पत्तिःस्नेहसिद्धिस्तथाभवेत्
१३ स्नेहपाकस्त्रिधाप्रोक्तोमृदुर्मध्यःखरस्तथा। ईषत्सरस

सेर में आधपाव घृत तेलका प्रमाण यही है ॥ ६ ॥ दूध, दही, रस और मट्ठा इनमें अष्टमांश कल्क देय और कल्क भलीभांति पकाने के कारण चौगुना जल देना चाहिये ॥ ७ ॥ और जहां कल्क घी तेल क्वाथ पांच पांचों होयँ तहां स्नेहादिक समान देना पानी चौगुना देइ ॥ ८ ॥ जब एकही द्रव्य घृत व तेलमें पकानी होय तो जलमें द्रव्य पीसि गला या कल्ककरि चौगुने पानी में पचावै ॥ ९ ॥ जो केवल काढे में कहाहो तहां उसी क्वाथकी द्रव्यका कल्ककरि घृत वा तेलयुक्त वह काढा और चौगुना पानीदे पकाना ॥ १० ॥ जहां कल्क रहित है तो केवल द्रववस्तु में दूध पानी देके पकालेना जब फूलके कल्क में स्नेह सिद्ध करैंगे तब चौगुना पानी देंगे जब स्नेह से स्नेह सिद्ध करैंगे तब स्नेहका अष्टमांश दूसरा स्नेहले पुष्प कल्कयुक्त पकालेना ॥ ११ ॥ जब वह स्नेह पाक अंगुरीमें लेके मलसे गोली बनजाय उसे आगपर डारै और जलसे शब्द चिचिराहट न करे तब सिद्धभया जानो ॥ १२ ॥ तेल फेनउठने से सिद्धजानिये घृत फेन शांतिसे सिद्ध जानिये जब गंध आवै और निर्मल होजाय थौरसे उत्पत्तिकरै तब घृत वा तेल सिद्धभया जानिये ॥ १३ ॥ स्नेहपाक तीन प्रकारकाहै–मृदु मध्य और

हलीमकंपाण्डुरोगंवर्णभेदंस्वरक्षयम् । मूत्रकृच्छ्रमुरोदाहं पार्श्वशूलंचनाशयेत् ३३ एतत्सर्पिःप्रयोक्तव्यंवह्वन्तःपुरचारिणाम् । स्त्रीणांचैवाप्रजातानांदुर्बलानांचदेहिनाम् ३४ श्रेष्ठंबलकरंवर्ण्यंहृद्यंपुष्टिरसायनम् । ओजस्तेजस्करंहृद्यमायुष्यंप्राणवर्द्धनम् ३५ संवर्द्धयतिशुक्रस्यपुरुषंदुर्बलेन्द्रियम् । सर्वरोगविनिर्मुक्तोपयस्सिक्तोयथाद्रुमः । कामदेवइतिख्यातंसर्पिरुक्तंमहागुणम् ३६ त्रिफलाद्वेनिशेकौन्तीसारिवेद्वेप्रियङ्गुका। शालिपर्णीपृष्ठपर्णीदेवदार्व्येलवालुकम् ३७ नतंविशालादन्तीचदाडिमंनागकेशरम् नीलोत्पलैलामञ्जिष्ठाविडङ्गंपद्मकुष्ठकम् ३८ जातीपुष्पंचन्दनंचतालीसंबृहतीतथा । एतैःकर्षसमैःकल्कैर्जलंदत्त्वाचतुर्गुणम् ३९ घृतप्रस्थंपचेद्धीमानपस्मारेज्वरेक्षये । उन्मादेवातरक्तेचकासेमन्दानलेतथा ४० प्रतिश्या

तब छातीमें रक्तपित्त, क्षतक्षीण, कमल, वातरक्त ॥ ३२ ॥ हलीमक, पांडुहरे वर्णभेद, स्वरक्षय, मूत्रकृच्छ्र, उरदाह और पसुरी पीडाको दूरकरे ॥ ३३ ॥ यह घृत बहु रमणीयको देय बाँझ पुत्रवती हो दुर्बलको दे तो मोटाहो ॥ ३४ ॥ श्रेष्ठहै बल करताहै शरीरकी रंगत अच्छीहो हृदयको प्रिय व पुष्टता करताहुआ रसायन होकर बल, तेज, आयु और प्राणोंको बढ़ाताहै ॥ ३५ ॥ वीर्य बढाता है दुर्बलेन्द्रिय पुरुषकी बलीहो सब रोगनाशहो जैसे सींचने से वृक्ष तरुण होजाता तैसेही मनुष्यका शरीर होताहै यह कामदेव घृत बड़ा गुणदायी कहाताहै ॥३६ ॥ (कल्याण घृत अपस्मारपर) त्रिफला, दोनों हल्दी, रेणुका, सरिवन, पिठवन, मकरा, वनउर्दी, वनमूंग, देवदारु, एलवालू न मिलै तो सुगन्धवाला देय ॥ ३७ ॥ तगर, इन्द्रायण, जमालगोटे का बीज, अनार, नागकेशर, नीलकमल, इलायची, मँजीठ, विडंग, पद्माख, कूट ॥ ३८ ॥ मालतीपुष्प, श्वेतचन्दन, तालीसपत्र और वृद्ध भटकटैया ये सब कर्ष भर पानी में पीसि कल्क करि चौगुना पानी दे ॥ ३९ ॥ उस पानी में प्रस्थभर और वह कल्क देकै पकाय वैधदेवे इस घी से मिरगी, ज्वर, क्षयी, चित्तभ्रम, वातरक्त, कास, मन्दाग्नि ॥ ४० ॥

येकटीशूलेतृतीयकचतुर्थके। मूत्रकृच्छ्रेविसर्पेचकण्डूपा
ण्ड्वामयेतथा ४१ विषद्वयेप्रमेहेषु सर्वथैवप्रयुज्यते। व
न्ध्यानांपुत्रदंभूतयक्षरक्षोहरंस्मृतम् ४२ अमृताक्वाथ
कल्काभ्यांसक्षीरंविपचेद्घृतम्। वातरक्तंजयत्येषाशकुष्ठं
जयति दुस्तरम् ४३ सप्तच्छदःप्रतिविषाशम्याकःकटु
रोहिणी। पाठामुस्तमुशीरंच त्रिफलापर्पटस्तथा ४४
पटोलनिम्बमञ्जिष्ठाःपिप्पलीपद्मकंशटी। चन्दनंधन्वया
सश्चविशालाद्वेनिशेतथा ४५ गुडूचीसारिवेद्वेचमूर्वावा
साशतावरी।त्रायन्तीन्द्रयवायष्टीभूनिम्बाश्चाक्षभागिकाः
४६ घृतंचतुर्गुणंदद्याद्घृतादामलकीरसः। द्विगुणंप्रदि
षश्चात्रजलमष्टगुणंभवेत् ४७ तत्सिद्धंपाययेत्सर्पिर्वातर
क्तेषुसर्वसु। कुष्ठानिरक्तपित्तंचरक्तार्शांसिचपाण्डुताम् ४८
हृद्रोगगुल्मवीसर्पप्रदरानूगण्डमालिकाम्। क्षुद्ररोगंज्वरं
चैवमहातिक्तमिदंजयेत् ४९ कासीसंद्वेनिशेमुस्तंहरितालं

नाकटपकना, कटिपीड़ा तिजारी, चातुर्थिक मूत्रकृच्छ्र, विसर्पिका खुजली पाण्डु ॥ ४१ ॥ दोनों विषमें प्रमेह में और रोग सब अच्छेहों; बाझ पुत्र जनै और भूत व राक्षसों की बाधा ये सब दूरहोयें इसका नाम कल्याणघृतहै ॥ ४२ ॥ (वातरक्तपर अमृतादिघृत गुर्चका कल्क, गुर्चका क्वाथ दूधके साथ घृत पचावै इससे वातरक्त और कोढ दूरहोताहै ॥ ४३ ॥ (वातकुष्ठादिपर महातिक्तादि घृत छितौनी, अमलतास, अतीस, कटुकी दोनों, नागरमोथा, खस, त्रिफला, पित्तपापडा ॥ ४४ ॥ पटोल, नीम, मजीठ, पिपरी, पद्माख, कचूर, चन्दन, जवासा, इन्द्रायन, दोनों हल्दी ॥ ४५ ॥ गुर्च, सरिवनें पिठवन, मुर्रा, रूसा, शतावरि, त्रायमाण प्रसिद्ध है इन्द्रयव, मुलेठी और चिरायता ये सब कर्ष कर्ष भरले ॥ ४६ ॥ घी चौगुनादे व घीका दूना आंवरेका रसदेकर अठगुणा जलदे ॥ ४७ ॥ यह सिद्ध घी सब वातरक्तके विकारों में व अठारहों कुष्ठों में व रक्तपित्त में व रक्तार्शपाण्डु में देइ ॥ ४८ ॥ और हृद्रोग, गुल्म, विसर्प, प्रदर, गण्डमाला, क्षुद्ररोग और ज्वरको दूरिकरै इसका महातिक्त नामहै पहिले कहे रोग

मनःशिलाम् । कम्पिल्लकं गन्धकं च विडङ्गं गुग्गुलुं तथा ५० सिक्थकं मरिचं शुण्ठीं तुत्थकं गौरसर्षपम् । रसाञ्जनं च सिन्दूरं श्रीवासं रक्तचन्दनम् ५१ इरिमेदं निम्बपत्रं करञ्जं सारिवां वचाम् । मञ्जिष्ठां मधुकं मांसीं शिरीषं लोध्रपद्मकम् ५२ हरीतकीं प्रपुन्नागं चूर्णयेत्कार्षिकान्पृथक् । ततस्तच्चूर्णमालोड्य त्रिंशत्पलमिते घृते ५३ स्थापयेत्ताम्रपात्रे च घर्मे सप्त दिनानि वै । अस्याभ्यङ्गेन कुष्ठानि दद्रूपामाविचर्चिकाः ५४ शूकदोषा विसर्पाश्च विस्फोटा वातरक्तजाः । शिरःस्फोटाः पदंशाश्च नाडीदुष्टव्रणानि च ५५ शोथो भगन्दरश्चैव लूताः शाम्यन्ति देहिनाम् । शोधनं रोपणं चैव सुवर्णकरणं घृतम् ५६ जातीनिम्बपटोलं च द्वे निशे कटुरोहिणी । मञ्जिष्ठा मधुकं सिक्थं करञ्जोशीरसारिवाः ५७ तुत्थं च विपचेत्सम्यक् कल्कैरेभिर्घृतं बुधः । अस्य लेपात्प्ररोहन्ति सूक्ष्मनाडीव्रणा अपि । मर्माश्रिताः क्लेदिनश्च गम्भीराः सरुजा व्रणाः ५८ चित्रकः शङ्खिनी पथ्या कम्पिल्लस्त्वक्ताद्युगम् । वृद्धदारुश्च

सब अच्छे होयँ ॥ ४९ ॥ (कुष्ठ, दाह, खाजपर कसीसादि घृत) कसीस दोनों हल्दी, नागरमोथा, हरताल, मैनसिल, कबीला, गन्धक, विडंग, गुग्गुलु ॥ ५० ॥ मोम, मिर्च, सोंठि, तूतिया, पीत सरसों, रसौत, सिन्दूर, राल, लाल चन्दन ॥ ५१ ॥ खैर, नींबकापत्ता, करंज, सरिवन, बच, मंजीठ, महुआछाल, जटामांसी, सिरस, लोध, पद्माख ॥ ५२ ॥ हड़, गदापुरैना इन सबका एक एक कर्ष चूर्ण करै तिसे तीसपल घृतमें सानि ॥ ५३ ॥ ताम्रपात्रमें भरि सातदिन घाममें धरै इस घीके लगाने से कुष्ठ, दाद, खाज, विचर्चिका ॥ ५४ ॥ शूकदोष, विसर्प, वातरक्तजनित शीतला, मस्तकघाव, गर्मी, नासूर ॥ ५५ ॥ शोथ, भगन्दर, लूता (मकड़ी) ये दूर हों घाव अतिशुद्ध हो पुरावै घाव चिह्न न रहै ॥ ५६ ॥ (घावपर जात्यादि घृत) चमेली, नींब, परवल, तीनों पत्ती, दोनों हल्दी, कटुकी, मजीठ मुलेठी मोम, करंज, खस, सरिवन ॥ ५७ ॥ और तूतिया इन सबको समान भागले लुगदी करि घृतमें पकावै इस घीके लगाने से घाव, नासूर, मर्मस्थानका दुःखदायी गम्भीर घाव और पीड़ा

शम्याकोदन्तीचत्रिफलातथा ५९ कोशातकीदेवदालीनी
लनीगिरिकर्णिका । शातलापिप्पलीमूलंविडङ्गकटुकीत
था ६० हेमक्षीरीचविपचेत्कल्कैरेभिः पिचून्मितैः। घृतप्र
स्थंस्नुपीक्षीरंषट्पलेतुपलद्वये ६१ अर्कक्षीरस्यमतिमांस्त
त्सिद्धंगुल्मकुष्ठलुत् । हन्तिशलमुदावर्तंशोथाध्मानंभग
न्दरम् ६२ शमयत्युदराण्यष्टौनिपीतंबिन्दुसङ्ख्यया।गो
दुग्धेनोष्ट्रदुग्धेनकौलत्थेनशृतेनवा ६३ उष्णोदकेनवापी
त्वाबिन्दुवेगैर्विरिच्यते । एतद्बिन्दुघृतंनामनाभिलेपाद्विरे
चयेत् ६४ त्रिफलायारसप्रस्थंप्रस्थंचासारसोद्भवम् ।
भृङ्गराजरसप्रस्थंप्रस्थमाजंपयस्तथा ६५ दद्यात्तत्रघृतं
प्रस्थंकल्कैःकर्षमिते पृथक् । त्रिफलापिप्पलीद्राक्षाच
न्दनंसैन्धवंनला ६६ काकोलीक्षीरकाकोलीमेदामरिचना
गरम्। शर्करापुण्डरीकञ्चकमलंचपुनर्नवा ६७ निशायुग्मं
चमधुकंसर्वैरेभिर्विपाचयेत् । नक्तान्ध्यंनकुलान्ध्यंचकण्डूं

ये सब दूरहोवें ॥ ५८ ॥ (उदररोगपर बिन्दु घृत) चीतेकी छाल, शंखाहूली, हड, कनीला, दोना निशोथ, बिधारा अमलतासका गूदा जमालगोटा त्रिफला ॥ ५९ ॥ कडुवीतोरई देवदाली दहे (बदाल) नीलकी पत्ती, कोयल सेंहुडकी छीमी, पीपरामूल, बिडंग, कटुकी ॥ ६० ॥ और चूक ये सब कर्ष कर्षभरले कल्क करि प्रस्थभर घीमें पचावे छः पल सेंहुडका दूधडारे ॥ ६१ ॥ और दो पल मदारका दूधडारे यह सिद्ध घी देवे तो गुल्म, कुष्ठ अफ्फाहो शूल, उदावर्त, शोथ, पेटफूलना, भगंदर ॥ ६२ ॥ आर आठों उदररोग ये दूरहों आठबूंद पानी से गौ दूधसे वा ऊंटके दूधसे कुलथी क्वाथसे ॥ ६३ ॥ गरम पानीमें जो बूंद पियेसे दस्तहों यह बिन्दुघृत नाभिमें लेप करनेसे दस्तआतेहैं ६४ ॥ (नेत्र रोगपर त्रिफला घृत) त्रिफले का रस एकप्रस्थ, रूसेका एक प्रस्थ भँगरेका एक प्रस्थ, बकरीका दूध एकप्रस्थ ॥ ६५ ॥ एकप्रस्थ घी कर्ष कर्ष और द्रव्य त्रिफला, पीपरि, दाख चन्दन, सेंधा, बरियारा ॥ ६६ ॥ दोनों काकोली, बिना असगन्ध, मेदा, बिना मुलेठी, मिर्च, सोंठि, खाड, श्वेतकमल, रक्तकमल, गदापुरना ॥ ६७ ॥ दोनों

पिल्लंतथैवच ६८ नेत्रस्रावंचपटलंतिमिरंचाजकंजयेत्। अन्येपिप्रशमंयान्तिनेत्ररोगा.सुदारुणाः। त्रिफलंघृतमेतद्धिपानेनस्यादिसूचितम् ६९ द्वेहरिद्रेस्थिरामूर्वासारिवा चंदनद्वयम्। मधुपर्णीयमधु कंपद्मकेसरपद्मकम् ७० उत्पलोशीरमेदाभिस्त्रिफलापञ्चवल्कलैः। कल्कैःकर्षमितैरेतै घृतप्रस्थंविपाचयेत् ७१ विसर्पलूताविस्फोटव्रणकुष्ठविषापहम्। गौर्यादिकमितिख्यातंसर्वव्रणहरंस्मृतम् ७२ बलामधुकरास्नाभिर्दशमूलफलत्रिकैः। पृथग्द्विद्विपलैरेभिर्द्रोणनीरेणपाचयेत ७३ मयूरपक्षपित्तान्त्रयकृत्पादास्यवर्जितम्। पादशेषंशृतंनीत्वाक्षीरंदत्वाचतत्समम् ७४ घृतंप्रस्थंपचेत्सम्यग्जीवनीयैः पिचून्मितैः। तत्सिद्धंशिरसःपीडांमन्यांपृष्ठग्रहंतथा ७५ अर्दितंकर्णनासाक्षिजिह्वागलरुजोजयेत्। पानेनस्येतथाभ्यङ्गेकर्णपूरेप्रयुज्यते। हेमन्तकालेशिशिरेवसन्तेषुचशस्यते ७६ त्रिफलामधुकं

हल्दी और मुलेठी इनका कल्ककरि घी में पकावै तो नकान्ध्य, नकुलान्ध्य, खाज, पिल्लरोग॥ ६८॥ नेत्रस्राव, पटल, तिमिर और नीलबिन्दु ये सब अच्छेहोयँ इस त्रिफलादि घृतको खाय वा नास लेकर यथोचित अनोपान करे॥६९॥ (घावपर गौर्यादि घृत) दोनों हल्दी, शालिपर्णी, मुरा सरिवन चन्दन, दोनों मुलेठी, कमल केसर, कमल॥७०॥ नीलकमल, खस, मेदा, बिना मुलेठी त्रिफला, आम्र, वट, पीपर, पाकर और गूलर इनकी छाल सब कर्ष कर्षले कल्ककरि प्रस्थभर घी में पकावै॥ ७१ ॥ यह गौर्यादि घृत विसर्पिका, अग्निप्रासन, शीतला घाव, कुष्ठ और विष इन सबोंको अच्छेकरै॥७२॥ (शिरोरोगपर मयूरघृत) खरियारा, मुलेठी, रासन, दशमूल और त्रिफला ये दो दो पल ले द्रोणभर जलमें पकावै॥७३॥ मदूरमांस बिना आंत ओझरी पित्ता पाव पानीमें गलावै चौथ्याई रहै उतारि ले यह यूष जितनाहो तितना दूधदे॥७४॥ प्रस्थभर घीमें कर्ष कर्षभर जीवनीयगण और काढ़ा डारि पकावै शिररोग, मन्याव्यथा, पृष्ठग्रह॥७५॥ लकवा, कर्ण, नाक, नेत्र, जीभ, गला सबके रोगनाशै खाय सूँघै मलै कानमें डारै हेमन्त शिशिर वसन्त

कुष्ठंद्वेनिशेकटुरोहिणी। विडङ्गंपिप्पलीमुस्तविशालाकट्फलंवचा ७७ द्वेमेदेद्वेचकाकोल्यौसारिवेद्वेप्रियङ्गुका। शतपुष्पाहिङ्गुरास्नाचन्दनंरक्तचन्दनम् ७८ जातीपुष्पंतुगाक्षीरीकमलंशर्करातथा। अजमोदाचदन्तीचकल्केरेतैश्चकार्षिकैः ७९ जीवद्वत्सैकवर्णायाघृतंप्रस्थंचगोःक्षिपेत्। चतुर्गुणेनपयसापचेदारण्यगोमयैः ८० सुतिथौपुष्यनक्षत्रेमृद्भाण्डेताम्रजेतथा। ततःपिबेच्छुभदिनेनारीवापुरुषोथवा ८१ एतत्सर्पिर्नरःपीत्वास्त्रीषुनित्यंवृषायते। पुत्रान्सञ्जनयेद्धीमान्वन्ध्यापिलभतेसुतम् ८२ अनायुषंवाजनयेद्यातुसूतापुनःस्थिता। पुत्रमाप्नोतिसानारीबुद्धिमन्तंशतायुषम् ८३ एतत्फलघृतंनामभारद्वाजेनभाषितम्। अनुक्तंलक्ष्मणामूलंक्षिपन्त्यत्रचिकित्सकाः ८४ त्रिफलाद्वेसहचरेगुडूचीसपुनर्नवाम्। शुकनासाहरिद्रेद्वेरास्नांमेदाशतावरीम् ८५ कल्कीकृत्यघृतप्रस्थंपचेत्क्षीरेचतुर्गुणे।

में सेवन करना अच्छा कहाहै ॥७६॥ (बंध्याको फलघृत) त्रिफला, मुलेठी, कूठ, दोनों हल्दी, कुटकी, विडंग, पीपरि, नागरमोथा, इंद्रायण, कायफर॥ ७७ ॥ मेदा, महामेदा, बिना मुलेठी, दोनों काकोली, बिना असगंध, सरिवन, पिठवन, शकरा, सौंफ, हींग, रासन, दोनोंचन्दन॥ ७८ ॥ चमेलीपुष्प, वंशलोचन, कमल, शकर, अजमोद और जमालेगोटा ये कर्ष कर्ष भरले कल्ककरि॥ ७९॥ एकरंगकी गाय और बछराहो तिसका भी घी प्रस्थभर देकर चौगुना दूधदे बिनुवां कण्डामें मन्दमन्द आँचदेकर पचावे ॥८०॥ सुन्दर तिथि, पुष्य नक्षत्र में मट्टी वा ताँवेके पात्रमें शुभदिन पिये स्त्री वा पुरुष ॥८१॥ पुरुष जो पिये सो वृषभतुल्य कामी रहै कैसाभी असमर्थ हो परन्तु पुरुषत्वको उत्पन्नकरै और बांझिनके पुत्रहोय॥ ८२॥ यदि स्त्रीके पुत्र मरजाताहो उसके घृतसेवनसे पुत्रहोकर सौवर्षजिये॥ ८३॥ यह फलघृत भारद्वाज भाषितहै बिनाकहे वैद्य इस घृत के संग लक्ष्मणा बूटी की जड़ देते हैं॥ ८४॥ (योनिदोष पर त्रिफलादि घृत) त्रिफला, दोनों कटसरैया, गुर्च, गदापुरैना, सिरस, दोनों हल्दी, रासन, मेदा और शतावरि॥ ८५॥

तत्सिद्धं पाययेन्नारीं योनिरोगनिपीडिताम् ८६ पीडिता च लिता याचानिःसृता विवृता च या । पित्तयोनिश्च विभ्रान्ता षण्ढयोनिश्च या स्मृता ८७ प्रपद्यन्ते हिताः स्थानं गर्भं गृह्णन्ति चासकृत् । एतत्फलघृतं नाम योनिदोषहरं स्मृतम् ८८ वृषनिम्बामृताव्याघ्रीपटोलानां शृतेन च । कल्केन पक्वं सर्पिस्तु निहन्याद्विषमज्वरान् । पाण्डुकुष्ठविसर्पांश्च कृमीनर्शांसि नाशयेत् ८९ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरे मध्यखण्डे घृतकल्पनाध्यायो नवमः ॥ ९ ॥

लाक्षाढकं क्वाथयित्वा जलेऽश्चचतुराढकैः । चतुर्थांशं शृतं नीत्वा तैलं प्रस्थमितं क्षिपेत् १ मस्त्वाढकं च गोदध्नः सर्वं तैले विनिक्षिपेत् । शतपुष्पामश्वगन्धां हरिद्रां देवदारु च २ कटुकां रेणुकां मूर्वां कुष्ठं च मधुयष्टिकाम् । चन्दनं मुस्तकं रास्नां पृथक्कर्षप्रमाणतः ३ चूर्णयेत्तत्र निक्षिप्य

इनका क्वाथ प्रस्थभर घृत व चारिप्रस्थ दूध में पकावै जब घी सिद्ध हो तब स्त्री पियै तौ सब योनिदोष दूरहों ॥ ८६ ॥ पीड़ित, चलित, निःसृत, विकृत, पित्तयोनि, विभ्रांत, षण्ढयोनि ॥ ८७ ॥ ये सब योनिरोग मिटैं और गर्भ टिकै यह फलघृत नाम घृत योनिदोष पर बहुत अच्छा कहा है ॥ ८८ ॥ (विषमज्वर पर पंचतिक्तघृत) रूसा, नींव, गुर्च, भटकटैया और पटोल (परवर) इन्हीं के काढा और कल्क में घी पकाय खाय तौ विषमज्वर जाय पांडु कुष्ठ विसर्प कृमि और अर्श ये भी दूरहोयँ ॥ ८९ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरसुधाकरे नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

अथ घृततैलसाधनप्रकारः ॥ (लाक्षादितैल) लाही एक आढक "आढक तीन सेर छः रुपये भर होता है" चारि आढक पानी में काढा करि चौथाई रहे उतारि ले प्रस्थभर तेल दे (" प्रस्थ ६४ रुपया भर कहाता है") ॥ १ ॥ दही का जल एक आढक भरदे सौंफ, असगंध, हल्दी, देवदारु ॥ २ ॥ कुटकी, मेवड़ी बीज, मुरामूर्व, मुलेठी, चन्दन, नागरमोथा, रासन ये कर्ष भरले ॥ ३ ॥ चूर्ण करि तेल में मध्यम आंचसे सिद्ध करै इस तेल के लगाने से

साधयेन्मृदुवह्निना। अस्याभ्यङ्गात्प्रशाम्यन्तिसर्वेपिविष मज्वराः ४ कासश्वासंप्रतिश्यायञ्चिकपृष्ठग्रहस्तथा। वा तपित्तमपस्मारमुन्मादंयक्षराक्षसान् ५ कण्डूंशूलंचदौर्ग न्ध्यंगात्राणांस्फुटनंजयेत्। पुष्टगर्भाभवेदस्यागर्भिण्यभ्यं ङ्गतोभृशम् ६ अश्वगन्धाबलाबिल्वंपाटलाबृहतीद्वयम्। श्वदंष्ट्रातिबलेनिम्बश्योनाकंचपुनर्नवाम् ७ प्रसारणीम ग्निमन्थंकुर्याद्दशपलंपृथक्। चतुर्द्रोणेजलेपक्त्वापादशे षंशृतंनयेत् ८ तैलाढकेरसंयोज्यंशतावर्यारसाढकम्। क्षि पेत्तत्रचगोक्षीरंतैलात्तस्माच्चतुर्गुणम् ९ शनैर्विपाचयेद्ब्रि भिःकल्कैर्द्विपलिकैःपृथक्। कुष्ठैलाचन्दनंबाह्लामांसीशैले यसैन्धवैः १० अश्वगन्धाबलारास्नाशतपुष्पेन्द्रदारुभिः। पर्णीचतुष्टयेनैवतगरेणैवसाधयेत् ११ तत्तैलंनावनेभ्यङ्गे पानेवस्तौचयोजयेत्। पक्षाघातंहनुस्तम्भंमन्यास्तम्भंग लग्रहम् १२ कुब्जत्वंबधिरत्वंचगतिभङ्गंकटिग्रहम्। गा

विषमज्वर शमनहोताहै ॥ ४ ॥ कास, श्वास, नाकबहना, त्रिकके दे रीढ़पीडा, पीठजकड़ना, वातपित्तज मिरगी, यक्षव राक्षसी उन्माद ॥ ५ ॥ खाज, पेटपीर, दुर्गंध और देहफूटन ये मिटें व गर्भिणी मले तो गर्भपुष्टिहोय ॥ ६ ॥ (नारायण तैल) असगन्ध, खरियारा, बेल, पाढ़ा, भटकटैया, दोनों, गुखुरू, कंकई, नींव, सोहनपत्ती, गदापुरना ॥ ७ ॥ गंधप्रसारिणी और अरणी ये दश दश पल सब द्रव्यले चारद्रोण पानी में पकावै जब एक द्रोण शेषरहै, "द्रोण, एकसेर एक छटाक का होताहै" ॥ ८ ॥ तब एक आढक तेलमें शतावरि का रस एक आढक देय जो गीली होय तो रस निचोरिकै देय सूखीहो तो काढ़ाकरिकै देय तेलका चौगुना दूध गऊका दे ॥ ९ ॥ तिसमें कल्क डारि धीरे धीरे, पचावै कूट, इला- यची, चंदन, सुगन्धबाला, जटामासी, छरीला, सेंधालोन ॥ १० ॥ असगंध, खरियारा, रासन, सौंफ, देवदारु, शालपर्णी पृष्ठपर्णी, मुगवनी, मषवनी और त गर ये सब दो २ पललेकर कल्ककरै और तेलमें सामिलेय ॥ ११ ॥ इस तेल का नासदेय और शरीर पै मलै पिचकारी आदि कर्ममें देय पक्षाघात, ठोढी

येद्दीमान्पादशेषंरसंनयेत् ३० तैलप्रस्थेततःसर्वीकाथा नेतान्विनिक्षिपेत्। कल्कैरेभिश्चविपचेदमृताकुष्ठनागरैः ३१ रास्नापुनर्नवैरण्डैःपिप्पल्याशतपुष्पया। बलाप्रसारिणीभ्यांचमांस्याकटुकयातथा ३२ पृथगर्द्धपलैरेभिस्साधयेन्मृदुवह्निना। हन्यात्तैलमिदंशीघ्रंग्रीवास्तम्भापबाहुकौ ३३ अर्धाङ्गशोषमाक्षेपमूरुस्तम्भापतानकौ। शाखाकम्पंशिरःकम्पंविश्वाचीमर्दितंतथा। माषादिकमिदंतैलं सर्ववातविकारनुत् ३४ शतावरीबलायुग्मंपर्ण्यौगन्धर्वहस्तकः। अश्वगन्धाश्वदंष्ट्राचबिल्वःकासःकुरण्टकः ३५ एषांसार्द्धपलान्भागान्कल्कयेच्चविपाचयेत्। चतुर्गुणेन नीरेणपादशेषंश्टतंनयेत् ३६ विपाच्यप्रस्थतैलेनक्षीरप्रस्थंविनिक्षिपेत्। शतावरीरसप्रस्थंजलप्रस्थंचयोजयेत् ३७ शतावरीदेवदारुमांसीतगरचन्दनम्। शतपुष्पाबलाकुष्ठमेलाशैलेयमुत्पलम् ३८ ऋद्धिर्मेदाचमधुकंकाकोलीजीवकस्तथा। एषांकर्षसमैःकल्कैस्तैलंगोमयव

उतारि ले ॥ २६ ॥ प्रस्थ भर छाग मांस चौंसठपल जलमें पचाय उतारि छानि ले ॥ ३० ॥ तब प्रस्थ भर तेलमें सब क्वाथ और मास यूप देकर पचावै और यह कल्क भी पचावै गुर्च, कूट, साठि ॥ ३१ ॥ रासन, गदापूर्ण, रेंड, पीपरि, सौंफ, खरियारा, गन्धप्रसारिणी, जटामासी और कटुकी ॥ ३२ ॥ ये सब आधा आधा पल धीमी आंचदे उस तेलमें पकावै इस तेलसे ग्रीवा जकड़ना, बाहुकंपना ॥ ३३ ॥ अर्द्धांग सूखना आक्षेप, ऊरुस्तम्भ, अपतानक, सर्वांगकंप और शिरःकम्प ये रोग इस माषादितेल से दूरहोवें सब वातविकार न रहैं ॥ ३४ ॥ (शतावरि तेल) शतावरि दोनों खरियारा, दोनों पर्णी, रेंड, असगंध, गुडुरू, बेल, कास और कुरैया ॥ ३५ ॥ सब डेढ़ डेढ़ पल कल्ककरि चौगुने जलमें पचाय जब चौथाई शेषरहै तब उतारिले ॥ ३६ ॥ फिरि प्रस्थभर तेल प्रस्थभर दूधमें पचावै एक प्रस्थभरि शतावरिरस प्रस्थभर पानीमें पचावै ॥ ३७ ॥ फिरि शतावरि, देवदारु, जटामासी, तगर, चन्दन, सौंफ, खरियारा, कूट, इलायची, छरीला, कमल ॥ ३८ ॥ ऋद्धि सिद्धि

ह्लिना ३९ पचेत्तेनैवतैलेननरःस्त्रीषुवृषायते । नारीच लभतेपुत्रंयोनिशूलंचनश्यति ४० अङ्गशूलंशिरःशूलं कामलांपाण्डुतांतथा । गृध्रसींप्लीहशोपांश्चमेहान्दण्डाप तानकम् ४१ सदाहंवातरक्तंचवातपित्तमदार्दितम् । असृ ग्दरंतथाध्मानंरक्तपित्तंनियच्छति ४२ शतावरीतैलमि दंकृष्णात्रेयेनभाषितम् (ॐनारायणायस्वाहा उत्तराभि मुखोभूत्वाखनेत्खदिरशङ्कुना । ॐसर्वव्याधिनाशनीये स्वाहा इत्युत्पाटनमन्त्रः।ॐकुमारजीवनीयेस्वाहा इतिपा चकमन्त्रः) ४३ काशीशंलाङ्गलीकुष्ठंशुण्ठीकृष्णाचसैन्ध वम् । मनःशिलाश्चमारश्चविडङ्गंचित्रकोवृषः ४४ दन्ती कोशातकीबीजंहेमाह्वाहरितालकः । कल्कैःकर्षमितैस्तैलं ततःप्रस्थंविपाचयेत् ४५ स्नुह्यर्कपयसादद्यात्पृथग्द्विप लसम्मितम् । चतुर्गुणंगवांमूत्रंदत्त्वासम्यक्प्रसाधयेत्४६ कथितंखरनादेनतैलमर्शोविनाशनम् । क्षारवत्पातयत्ये

बिना वराही कंद, मेदा, बिना मुरेठी दुइ्यार कही है इससे दूनी लेना काकोली बिना असगंध और जीवक बिना वाराहीकंद ये सब कर्षभरले कल्ककरि गौंड़ा की आंच में पचावै ।।३९ इसे मायमें लगानेसे पुरुष स्त्रियोंमें वृषभ तुल्य होकर रमताहै व स्त्री पुत्रजनती है व योनिविकार नाशहोताहै ।। ४० ।। और अङ्गशूल, शिरःशूल, कमल, पाण्डु, गृध्रसी, प्लीह, शोष प्रमेह, दण्डापतानक वायु ।। ४१ ।। दाहसहित वातरक्त, वातपित्त, मदपीडित, रुधिर आध्मान रक्त पित्त ये सब दूरहोवैं ।। ४२ ।। यह शतावरि तेल कृष्णात्रेयने कहा है प्रथम मन्त्र निमंत्रण, दूसरा उत्पाटन, तीसरा पाचक मंत्र ये तीनों मंत्र मूलसे जानना चाहिये ।। ४३ ।। (अर्शपर कासीस तेल) कसीस, कलिहारी, कूट, सोंठि, पीपरि, सेंधा, मैनशिल, कनेर, वायविडंग, चीता, अडूसा ।। ४४ ।। जमालगोटा, वनतोरई बीज, चूक और हरताल ये सब कर्ष कर्ष भरले कल्ककरि, प्रस्थ भर तेलमें पकाय ।। ४५ ।। दोपल सेंहुड़ दूध, दोपल मदारदूध व तेलका चौगुना गोमूत्र देकर भली भांति पकावै ।। ४६ ।। यह खरनाद आचार्यने कहा है इसके लगाने से ववासीर का मस्सा

तदर्शांस्यभ्यङ्गतोभृशम् ४७ वलीनंदूषयंत्येतत्क्षारकर्म करंस्मृतम् ४८ मञ्जिष्ठासारिवासर्जयष्टीसिक्थैःपलोन्मि तैः। पिण्डाख्यंसाधयेत्तैलमभ्यङ्गाद्वातरक्तनुत् ४९ अर्क पत्ररसेपक्वंहरिद्राकल्कसंयुतम् । साधयेत्सार्षपंतैलंपा मांकच्छूंविचर्चिनुत् ५० मरिचंहरितालंचत्रिवृतंरक्तच न्दनम्। मुस्तामनःशिलामांसीद्वेनिशेदेवदारुच ५१ वि शालाकरवीरंचकुष्ठमर्कपयस्तथा । तथैवगोमयरसंकुर्या त्कर्षमितंपृथक् ५२ विषंचार्द्धपलंदेयंप्रस्थंचकटुतैलक म्। गोमूत्रंद्विगुणंदद्याज्जलञ्चद्विगुणम्भवेत् ५३ मरि चाख्यमिदंतैलंसिद्धंकुष्ठव्रणापहम्। जयेच्चित्राणिसर्वाणि पुण्डरीकंविचर्चिकाम्। पामांसिध्मंनिरक्सांदद्रूंकच्छूंविना शयेत् ५४ त्रिफलारिष्टभूनिम्बद्वेनिशेरक्तचन्दनम्। ए तैःसिद्धंमनुष्याणांतैलमभ्यञ्जनेहितम् ५५ भावयेन्निम्ब बीजानिभृङ्गराजरसेनहि। तथासनस्यतोयेनतत्तैलंहन्ति

गिरपड़ता है और क्षारकर्म सा कष्ट नहीं होताहै "क्षारकर्म सधिये करते हैं", तौ मलमार्ग के चक्र में जोखिम जाती है इसमें नहीं आती ॥ ४७।४८॥ (वातरक्त पर पिंडतेल) मजीठ, सरिवन, राल, मुलेठी और मोम ये पलपल भरले तेल में पचावे इस पिंडतेलके लगाने से वातरक्त दूरहोताहै ॥ ४९ ॥ (कच्छूपर मदार तेल) अकौवाके पत्रका रस हल्दीका कल्क सरसों के तेलमें पकावै तो खजुरी, दाद, बिचर्ची दूरहों ॥ ५० ॥ (कुष्ठपर मरिच तेल) काली हरताल निशोथ, रक्तचन्दन, मोथा, मैनशिल, जटामासी, दोनों हल्दी, देवदारु ॥ ५१ ॥ ईंद्रायन, कनेर, कूट, मदारका दूध और गोबरका रस कर्ष कर्ष भरले ॥ ५२ ॥ आधापल सिंगिया प्रस्थभर कडुआ तेल दूना गोमूत्र व जल दूना दे ॥ ५३ ॥ इस मरिचादि तेलसे कुष्ठके घाव अच्छे हों श्वेत, रक्त व कालेदाग मिटैं पसरा, सेहुआ, फटीलादाद और भैंसदादाद ये सब दूर हों ॥ ५४ ॥ (वातपर त्रिफलातेल) त्रिफला, नींब, चिरायता, दोनों हल्दी और रक्तचन्दन इसका पका तेल लगाने से मनुष्योंको बहुत गुण देता है ॥ ५५ ॥ (पलितपर निंबतेल)

नस्यतः । अकालपलितंसद्यःपुंसांदुग्धान्नभोजिनाम् ५६
यष्टीमधुकक्षीराभ्यांनवधात्रीफलैःशृतम् । तैलंनस्येकृतं
कुर्यात्केशांश्मश्रूणिसर्वशः ५७ करञ्जचित्रकौजातीकरवी
रश्चपाचितम् । तैलमेभिर्हुतंहन्यादभ्यङ्गादिन्द्रलुप्तकम्
५८ नीलिकाकेतकीकन्दंभृङ्गराजःकुरंटकः । तथार्जुनस्य
पुष्पाणिबीजकःसुमनोपिच ५९ कृष्णास्तिलाश्चतगरं
समूलंकमलंतथा । अयोरजःप्रियङ्गुश्चदाडिमत्वग्गुडू
चिका ६० त्रिफलापद्मपङ्कश्चकल्कैरेतैःपृथक्पृथक् ।
कर्षमात्रंपचेत्तैलं त्रिफलाक्वाथसंयुतम् ६१ भृङ्गराजर
सेनैव सिद्धंकेशस्थिरीकृतम् । अकालपलितंहन्तिदा
रुणंचोपजिह्वकम् ६२ भृङ्गराजरसेनैव लोहकिट्टंफल
त्रिकम् । सारिवाञ्चपचेत्कल्कैस्तैलंदारुणनाशनम् ।
अकालपलितंकण्डूमिन्द्रलुप्तञ्चनाशयेत् ६३ इरिमेदत्व
चंक्षुण्णां पचेत्पलशतोन्मिताम् । जलद्रोणेततःक्वाथंगृ

नीमबीजकी मींगी भँगरा रस में भावना देकर आसन रसमें दे उसका तेल नि
कारि नास ले तौ अकालके पके बाल कालेहों दूध भात पथ दे ॥ ५६ ॥
(पुनस्तैलम्) मुलेठी कच्चे आंवरेका स्वरस, चौगुना तेल दे पकावै फिर
चौगुना पानीदे पकावै केवल तेलरहै तब उतारिले इसके नाससे केश सघन
होवैं ॥ ५७ ॥ (इंद्रलुप्तपर करंजतेल) कंजा, चीता, चमेली व कनेर में
तेलपकाय लगावैतो बालखोरा दूरहोय ॥५८॥ (पलितपर नीलकादितैल)
नील, केतकीमूल, भँगरा, कटसरैया, अर्जुन फूलनकाहार, चमेली ॥ ५९ ॥
काले तिल,तगर,कमलका सर्वांग,लोहचून,मालकंगनी, अनारकी छाल, गुर्च ॥
६० ॥ त्रिफला और कमलकी जड़की माटी कर्ष कर्षभर सब द्रव्यलेवै उसमें
तेल पचावै त्रिफले का क्वाथसमेत॥६१ ॥ भांगरेकारस भी डारै सिद्धकरि तेल
लगावै,बाल स्थिर होयँ अकालपलित अच्छाहो दारुण उपजिह्वक शिररोग ये
सब अच्छेहों ॥ ६२ ॥ (पलितपर भृंगराजतैल) भंगरे के रसमें लोह
चून वा कीट त्रिफलासारिवा इनके कल्कमें तेलपचावै दारुणनाशहो अकालप-

ह्नीयात्पादशेषितम् ६४ तैलस्यार्द्धाढकंदत्त्वा कल्कैः कर्षमितैःपचेत्। इरिमेदलवङ्गाभ्यां गैरिकागुरुपद्मकैः ६५ मञ्जिष्ठालोध्रमधुकैर्लाक्षान्यग्रोधमुस्तकैः। त्वग्जातीफलकर्पूरकंकोलखदिरैस्तथा ६६ पतङ्गधातकीपुष्पसूक्ष्मैलानागकेशरैः। कट्फलेनचसंसिद्धंतैलंमुखरुजंजयेत् ६७ प्रदुष्टमांसंचलितंशोणीदन्तंचशौषिरम्॥ शीतादंदन्तहर्षंचविद्रधिंकृमिदन्तकम्। दन्तस्फुटनदौर्गन्ध्येजिह्वातालव्योष्ठजारुजम् ६८ हिङ्गुतुम्बुरुशुण्ठीभिः कटुतैलंविपाचयेत्। तस्यपूरणमात्रेणकर्णशूलंप्रणश्यति ६९ बालबिल्वानिगोमूत्रेपिष्ट्वातैलंविपाचयेत्। साजक्षीरंसनीरंचबाधिर्यंहन्तिपूरणात् ७० बालमूलककशुंठीनांक्षारः क्षारयुगंतथा। लवणानिचपञ्चैवहिंगुशिग्रुमहौषधम् ७१ देवदारुवचाकुष्ठंशतपुष्पारसाञ्जनम्। ग्रन्थिकंभद्रमुस्तंच

लित, खाज व इन्द्रलुप्त मिटै॥६३॥ (मुखदन्तरोगपर इरिमेदादितैल) खैरछाल एकसौ अस्सीपल कूटकर द्रोणभर जलमें पचावै जब चौथाई शेष रहै तब उतारिलै॥६४॥ आधआढक तेलदे खैर, लौंग, गेरू, अगर, पद्माख॥६५॥ मजीठ, लोध, मुलेठी, लाखी, बटकी जड़, मोथा, तज, जायफल, कपूर, कंकोल, खदिरसार॥६६॥ पतंग, धवपुष्प, इलायची और नागकेशर ये सब कर्ष कर्ष भरले इस में तेल पचाय लगावै तो मुखरोग दूर होय॥६७॥ मुखमांस बढ़ना, दांत हलना, दांत फूटना मुख कान का विकार, दांत ठंढाहे ना, दांत गिर किटाना, मुखके निनाम, दंतकृमि, दंतफूटना, दुर्गंध, जीभरोग, तालुरोग और ओंठरोग ये सब मिटैं॥६८॥ (कर्णशूलपर हिंगुतेल) हींग, धनियां और सोंठ इनतीनको कडुवेतेल में पचावै इसे कानमें डालनेसे पीड़ा दूर होय॥६९॥ (बधिरत्वपर बेल का तेल) छोटे बेल गोमूत्र में कल्क करि तेल बकरी का दूध पानी सहित पकाय कान में डालने से बधिरत्वको दूर करताहै॥७०॥ (कर्ण बहने पर क्षार तेल) लघुमूलीका खार, सज्जी जवाखार, पांचों लोन, हींग, सहिंजना, सोंठ॥७१॥ देवदारु, वच, कूठ, सोंफ, रसौत, पीपरामूल और नागरमोथा

कल्कैः कर्षमितैः पृथक् ७२ तैलप्रस्थं च विपचेत्कदलीबी
जपूरयोः। रसाभ्यां मधुसूक्तेन चातुर्गुण्यमितेन च ७३ पूय
स्रावं कर्णनादं शूलं बाधिरतां क्रिमीन् । अन्यांश्च कर्णजान्
रोगान्मुखरोगांश्च नाशयेत् ७४ जम्भीराणां फलरसं प्रस्थैकं
कुडवोन्मितम् । माक्षिकं तत्र दातव्यं पलैकां पिप्पली स्मृता
७५ एतदेकीकृतं सर्वं मृद्भाण्डे च निधापयेत् । वचाम्भोम
धुसंयुक्तं शृङ्गवेरगुडान्वितम् । धान्यराशौ त्रिरात्रस्थं मधुसू
क्तं समुदाहृतम् ७६ पाठाद्वे रजनी मूर्वा पिप्पली जातिपल्ल
वैः । दन्त्या च तैलं संसिद्धं नस्यं स्याद्दुष्टपीनसे ७७ व्या
घ्रीदन्तीवचाशिग्रुतुलसीव्योषसैन्धवैः । कल्कैश्च पाचितं
तैलं पूतिनासागदापहम् ७८ कुष्ठं बिल्वकणाशुण्ठीद्राक्षाक
ल्ककषायवत् । साधितं तैलमाज्यं वा नस्यात्क्षवथुनाशनम्
७९ गृहधूमकणादारुक्षारनक्ताह्वसैन्धवैः । सिद्धं शिखरिबी

ये कर्ष कर्ष भरिले कल्क करि ॥ ७२ ॥ प्रस्थभर तेल में केलेका रस बिजौरा
रस सहित पकावै चौगुना मधुसूक्त दे ॥ ७३ ॥ तौ पीव कानसे गिरना शब्द
होना, पीड़ा, बहिरापन, कानकीड़े और कानके सब रोग और मुखरोग दूरहोयँ ॥
७४ ॥ जँबीरी नींबू का रस प्रस्थभर कुडवभर शहद पीपरि पलभर ॥ ७५ ॥ सब
इकट्ठे करि माटी के पात्र में बचका काढ़ा अदरखका रस शहद और गुड़ ये भी
मिश्रित करि पूर्वोक्त पात्रका मुहमूँदि अनाज में गाड़दे । तेहि पुरत मूँदे तीन दिन
धान्य समाधी । ताहि कहैं मधुसूक्त चतुर्बुध वैद्य महाधी ॥ तीसरे दिन काढ़े तो म-
धुसूक्त है ॥ ७६ ॥ (पीनस पर पाठादितेल) पाढ़, दोनों हल्दी, मूर्वा,
पीपरि, चमेलीपत्र और जमालगोटा इनके तेलसे दुष्ट पीनस अच्छा होय ॥ ७७ ॥
(नाकरोगपर भटकटैयातेल) भटकटैया, जमालगोटा, बच, सहिंजन,
तुलसी, सोंठ, मिरच, पीपरि और सेंधव इनके तेलसे नाक से पीव गिरना और
नाकरोग दूरहोयँ ॥ ७८ ॥ (छिंकापर कूटदतेल) कूट, बेल, पीपरि, सोंठ
और दाख इनका काढ़ा और कल्क करि तेल या घीमें पकाय नास लेय तो छीं-
करोग दूरहोय ॥ ७९ ॥ (नासार्श पर गृहधूमादितेल) घरोंके धुआँ

जेश्चतैलंनासार्शसांहितम् ८० वज्रीक्षीरंरविक्षीरंद्रवंधत्तूर
चित्रकम्। महिषीविड्भवंद्रावंसर्वांशंतिलतैलकम्। ८१
पचेत्तैलावशेषंतद्गोमूत्रेथचतुर्गुणे। तैलावशेषंपक्त्वाचतत्
तैलंप्रस्थमात्रकम् ८२ गन्धकाग्निशिलातालंविडङ्गाति
विषाविषम्। तिक्तकोशातकीकुष्ठंवचामांसीकटुत्रयम् ८३
पीतदारुचयष्ट्याह्वंसर्जिकाक्षीरजीरकम्। देवदारुचक
र्षांशंचूर्णंतैलेविमिश्रयेत्। वज्रतैलमिदंस्यातमभ्यङ्गात्स
र्वकुष्ठनुत् ८४ करवीरंशिफादन्तीत्वक्कोशातकीफल
म्। रम्भाक्षारोदकेतैलंप्रशस्तंलोमशातनम्। ८५ द्र
वेषुचिरकालस्थंद्रव्यंयत्संधितंभवेत्। आसवारिष्टभे
दैस्तुप्रोच्यतेभेषजोचितम्। ८६ यदपकौषधाम्बुभ्यांसि
द्धंमद्यंसआसवः। अरिष्टःक्वाथसिद्धःस्यात्तयोर्मात्रापलो
न्मितम् ८७ अनुक्तमानारिष्टेषुद्रवद्रोणेतुलांगुडम्। क्षौद्रं

का करंईया, पीपरि, देवदारु, जवाखार, करंञ्ज, सैंधव और चिंचड़ावीज इनका तेल नाकरोग हरनेमें हितहै ॥८०॥ (सब कोढ़ पर) थूंमियां सेंहुड़ का दूध मंदार दूध धतूरे और चीतेकारस भैंसके गोबरका रस तिल तेलमें ॥८१॥ ये सब पचाय तेल रहे तब चौगुना गोमूत्र दे फिर पचाय तेल रहे तब प्रस्थभर तेलमें ॥८२॥ गन्धक, भिलावां, चीता, मैनशिल, हरताल, विडंग, दोनों अतीस, कड़ुवीतोरई, कूट, बच, जटामांसी, त्रिकुट ॥ ८३ ॥ दारुहल्दी, मुलेठी, सज्जी, जीरा और देवदारु ये सब कर्षकर्ष भर पीस तेल सिद्धकरै इस वज्र तेलके लगानेसे सबकुष्ठनाशहोयँ ॥८४॥ (कनेरका तेल रोमशातन पर) कनेरमूल, जमालगोटा, निशोथ, कड़ुवी तोरई, केला, खार और केलेके पानी में तेल सिद्धकरि लगावे तो बाल गिरिपरें ॥ ८५ ॥ (अथासव कल्पना) उदकादि द्रव वस्तुमें औषध देकै पात्र में भरि मुँहमूँदि मासभरि रखने से औषध उत्तम होतीहै उसे आसव या अरिष्ट कहते हैं आसव अरिष्टमें दो भेदहैं ॥ ८६ ॥ उदकादि पदार्थमें जो औषध पूर्वोक्त रीतिसे सिद्धकरै उसे आसव कहिये जो कोई द्रव्यके क्वाथ में उसी रीतिसे सिद्धकरै उसे अरिष्ट कहिये इसके खानेकी मात्रा चार रुपये भरहै ॥ ८७ ॥ जहां अरिष्टमें द्रव्य

क्षिपेद्गुडादर्द्धम्प्रक्षेपं दशमांशकम् ॥ ८८ ॥ ज्ञेयः शीतरसः शीधुरपक्वमधुरद्रवैः । सिद्धः पक्वरसः शीधुः सम्पक्वैर्मधुरद्रवैः ॥ ८९ ॥ परिपक्वान्नसन्धानसमुत्पन्नां सुरां जगुः । सुरामण्डः प्रसन्नास्यात्ततः कादम्बरी घना ॥ ९० ॥ तदधो जगलो ज्ञेयो मेदको जगलाघनः । पुक्कसो हतसारः स्यात्सुराबीजं च किण्वकम् ॥ ९१ ॥ यत्तालखर्ज्जूररसैः सन्धिता सा हि वारुणी । कन्दमूलफलादीनि सस्नेहलवणानि च ॥ ९२ ॥ यत्र द्रवे ऽभिषूयन्ते तत्सूक्तमभिधीयते । विनष्टमम्लतां यातं मद्यं वा मधुरद्रवैः ॥ ९३ ॥ विनष्टः सन्धितो यस्तु तच्चुक्रमभिधीयते । गुडाम्बुना सतैलेन कन्दशाकफलैस्तथा ॥ ९४ ॥ सन्धितं चाम्लतां यातं गुडसूक्तं प्रचक्षते । एवमेवेक्षुसूक्तं स्यान्मृद्वीकासम्भवं तथा ॥ ९५ ॥ तुषाम्बु सन्धितं ज्ञेयमामैर्विदलितैर्यवैः । यवैस्तु निस्तुषैः पक्वैः

की तौल न होय वो जलादि पदार्थ द्रोणभरदे गुड तुलाभर शहद अर्द्धतुला और द्रव्यका चूर्ण गुड़का दशांशदे अरिष्टकरै ॥ ८८ ॥ (शीधु मद्यभेद कहते हैं) जो कच्चे ऊख रसादि मधुर पदार्थ में सिद्धकरै उसे शीतरस शीधु कहिये जो पकायकै रसमें सिद्धकरै उसे पक्वरसशीधु कहिये ॥ ८९ ॥ सुरामसयादि भेदकरि अग्नि यंत्र यन्त्रसे उतारै उसे सुरा कहिये सुराके फेनको मण्डा कहिये फेनरहित जो नीचे रहै उसे कादंबरी व घनभी कहिये ॥ ९० ॥ सुराके नीचे रहै उसे जगल कहिये जगल के घने भाग को मेदक कहियें मेदक पकानेसे जो सार निकरै उसे सुराबीज और किराव कहते हैं ॥ ९१ ॥ ताड़ वा खजूरका रस अग्नियन्त्र योगकरि वा कच्चा लेप सिद्धकरै सो वारुणी है कन्द, मूल, फल, घृत, तैलादि स्नेह, लवण ॥ ९२ ॥ ये सब द्रवपदार्थमें अग्नि व यन्त्रयोगसे मथनकरै उसे सूक्त कहिये ॥ ९३ ॥ जो विनष्टकरै शीतरस लोके खमीर सो खमीर उठी मद्य वा तुरंत मधुरद्रव में द्रव्य चूर्णकरि संधितकरी मासभरकी उसे शुक्तकहिये वा गुड़ पानी तेल कंदमूल फल ॥ ९४ ॥ इन्हें पूर्वोक्त रीतिसे संधितकर मासभरमें सिद्ध करै उसे गुड़सूक्त कहिये इसी प्रकार ऊखरसका और दाखका सूक्त होताहै ॥ ९५ ॥ यवशानी तुक्त एकदिन संधितकरै उसे तुषांबु कहिये और यवगूरी पानीमेंरिफाय एकदिन संधि-

म्भसःपंक्त्वा क्वाथेद्रोणावशेषिते। धातक्याविंशतिपलं गुडस्यचतुलांक्षिपेत् १३ मासमात्रंस्थितोभाण्डेकुटजारिष्टसंज्ञकः। ज्वरान्प्रशमयेत्सर्वान्कुर्यात्तीक्ष्णंधनञ्जयम् १४ विडङ्गंग्रन्थिकंरास्नांकुटजत्वक्फलानिच। पाठेला वालुकंधात्रीभागान्पञ्चपलान्पृथक् १५ अष्टद्रोणेम्भसः पक्त्वाकुर्याद्द्रोणावशेषितम्। पूतेशीतेक्षिपेत्तत्रक्षौद्रंप लशतत्रयम् १६ धातकींविंशतिपलांत्रिजातंद्विपलंत था। प्रियङ्गुकाञ्चनाराणांसलोध्राणापलंपलम् १७ व्योषं स्यचपलान्यष्टौचूर्णीकृत्यप्रदापयेत्। घृतभाण्डेविनिःक्षिप्यमासमेकंनिधापयेत् १८ ततःपिबेद्यथार्हंचजयेद्विद्रधिमूर्च्छितम्। ऊरुस्तम्भाश्मरीमेहान्प्रत्यष्ठीलाभगन्दरान्॥ गण्डमालांहनुस्तम्भंविडङ्गारिष्टसंज्ञितः १९ तुलार्द्धंदेव दारुःस्याद्वासाचपलविंशतिः। मञ्जिष्ठेन्द्रयवादन्तीतगरं रजनीद्वयम् २० रास्नाक्रिमिघ्नम्मुस्तंचशिरीषंखदिरार्जु

दश दश पल॥ १२॥ चारिद्रोण पानी में पचाय जब द्रोण भरि शेषरहै तबउतारि लें बीसपल धवफूल व तुलाभर गुड़डारि॥ १३॥ माटी के पात्र में मास भर राखै यह कुटजारिष्ट सब ज्वरों को दूरिकरि अग्नि को तीक्ष्ण करताहै॥१४॥ (विद्रधीपर विडंगारिष्ट) विडंग, पिपरामूल, रासन, कुरैयाछाल एक एक पल पाढ़ा, एला, वालछड़, आंवरा ये पाच पाच पल॥ १५॥ आठद्रोण जल में औटाय द्रोण भररहै उतारिलें ठंढाभये तीनसै पल शहद॥ १६॥ बीसपल धवफूल, तज पत्रज, इलायची दोपल गोंदी, कचनार लोध पल पल भर॥ १७॥ त्रिकुटा आठपल चूर्ण करिके डारै घृत भाजन में एक मास भर राखै॥ १८॥ जैसा अग्निबल देखे तैसा पिलावै तौ विद्रधी दूरहो ऊरुस्तंभ, पथरी, प्रमेह, प्रत्यष्ठीला, भगंदर, गंडमाला और हनुस्तंभ ये रोग इस विडंगारिष्टमें अच्छे होते हैं॥ १९॥ (प्रमेहपर देवदारु अरिष्ट) अर्द्धतुला देवदारु, रूसा बीसपल, मँजीठ, इन्द्रयव, जमालगोटा, तगर, दोनों हल्दी॥ २०॥ रासन, विडंग, नागर

नौ। भागान्दशपलान्दद्याद्यवान्याव्रसकस्यच २१ चन्दनस्यगुडूच्याश्चरोहिण्याश्चित्रकस्यच। भागानष्टपलानेतानष्टद्रोणेम्भसःपचेत् २२ द्रोणशेषेकषायेचशीतीभूतेप्रदापयेत्। धातक्याःषोडशपलं माक्षिकस्यतुलात्रयम् २३ व्योषस्यद्विपलंदद्यात्त्रिजातस्यचतुष्पलम्। चतुष्पलंप्रियङ्गुश्चद्विपलंनागकेशरम् २४ सर्वाण्येतानिसञ्चूर्ण्यघृतभाण्डेनिधापयेत्। मासादूर्ध्वंपिबेदेनंप्रमेहंहन्तिदुर्जयम् २५ वातरोगान्ग्रहण्यर्शोमूत्रकृच्छ्राणिनाशयेत्। देवदार्व्यादिकोरिष्टदद्रुकुष्ठनिवारणः २६ खदिरस्यतुलार्द्धन्तु देवदारुचतत्समम्। बाकुचीद्वादशपलादार्व्याश्चाष्टपलविंशतिः २७ त्रिफलाविंशतिपलान्यष्टद्रोणेम्भसःपचेत्। कषायेद्रोणशेषेचपूतेशीतेविनिक्षिपेत् २८ तुलाद्वयंमाक्षिकस्यतुलैकाशर्करामता। धातक्याविंशतिपलं कङ्कोलंनागकेशरम् २९ जातीफललवङ्गैलात्वक्पत्राणिपृथक्पृथक्। पलोन्मितानिकृष्णायादद्यात्पलचतुष्टयम् ३० घृतभाण्डेविनिक्षिप्यमासादूर्ध्वंपिबेन्नरः। महा

मोथा, सिरस, खैर और, अर्जुन ये दश दश पल तथा अजवायन, कुरैया ॥ २१ ॥ चंदन, गुर्चे, कुटुकी, चीता, आठ आठ पल पानी आठ द्रोण में पचावै ॥ २२ ॥ जब द्रोणभर शेष रहै तौ ये औषध डारै धायफूल सोलहपल तीनतुला शहद ॥ २३ ॥ त्रिकुटा दोपल, तज, पत्रज, इलायची ४ पल, प्रियंगु ४ पल और नागकेशर दोपल ॥ २४ ॥ इनसबका चूर्ण घीके बर्तनमें मासभर राखै फिर पिये तौ दुर्जय प्रमेहको हरता है ॥ २५ ॥ तथा वातरोग, ग्रहणी, अर्श व मूत्रकृच्छ्रको नाशै इस देवदार्व्यरिष्टसे दाद व कुष्ठ अच्छा होता है ॥ २६ ॥ (कुष्ठपरखदिरारिष्ट) खैर अर्द्धतुला, देवदारु अर्द्धतुला, बकुची १२ पल, हल्दी २० पल ॥ २७ ॥ त्रिफला २० पल इनको आठद्रोण जलमें पचावै द्रोणभर रहै तब छानकर औषध डारै ॥ २८ ॥ शहद २ तुला, खांड १ तुला, धायफूल २० पल, कंकोल, नागकेशर ॥ २९ ॥ जायफल, लौंग, इलायची, तज और पत्रज ये सब पल २ भर, पीपरि ४ पल ॥ ३० ॥

ऋद्धिवृद्धिके ॥ ४९ ॥ कुर्यात्पृथग्द्विपलिकान्पचेदष्टगुणेजले। चतुर्थांशंशृतंनीत्वामृद्भाण्डेसंनिधापयेत् ५० चतुःषष्टिपलांद्राक्षांपचेन्नीरेचतुर्गुणे । त्रिपादशेषंशीतंचपूर्वक्वाथेशृतंक्षिपेत् ॥ ५१ ॥ द्वात्रिंशत्पलिकंक्षौद्रंदद्याद्गुडचतुःशतम् । त्रिंशत्पलानिधातक्याःकङ्कोलंजलचन्दनम् ५२ जातीफलंलवङ्गंचत्वगेलापत्रकेशरम् । पिप्पलीचेतिसञ्चूर्ण्यभागैर्द्विपलिकैःपृथक् ५३ शाणमात्रांचकस्तूरींसर्वमेकत्रनिक्षिपेत् । भूमौनिखातयेद्भाण्डेततोजातरसंपिबेत् ५४ कतकस्यफलंक्षिप्त्वारसंनिर्मलतांनयेत् । ग्रहणीमरुचिंशूलं श्वासकासंभगन्दरम् ५५ वातव्याधिंक्षयंछर्दिंपाण्डुरोगं चकामलाम् । कुष्ठान्यर्शांसिमेहांश्चमन्दाग्निमुदराणिच ५६ शर्करामश्मरींमूत्रकृच्छ्रन्धातुक्षयंजयेत् । कृशानांपुष्टिजननोवन्ध्यानांपुत्रदःपरः । अरिष्टोदशमूलाख्यस्तेजःशुक्रबलप्रदः ॥१५७॥ इतिश्रीशार्ङ्गधरसुधाकरेसन्धानकल्पनायांदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

ऋद्धि वृद्धि ॥ ४९ ॥ ये सब दो २ पल सब ओषधियोंका अठगुना जल औटावै जब चौथ्याई शेष रहिजाय तब उतारि माटी के पात्रमें धरै ॥ ५० ॥ दाख साठ पल चौगुना जलदे औटै चौथ्याई जरै तीन चरणारहै तब ठंढाकरि पहिले क्वाथ साथ मिलावै ॥ ५१ ॥ शहद पल ३२ गुड पल ४०० धवपुष्प पल ३० शीतलचीनी, खस वा चंदन ॥ ५२ ॥ जायफल,लौंग,वज, इलायची, पत्रज, केशर और पीपरि इन सबों का चूर्ण दो दो पल ॥ ५३ ॥ कस्तूरी चारिमाशे सब इकट्ठेकरि उसी में डारि धरती खोदि गाडै उसमें का रस पिये ॥ ५४ ॥ निर्मली रगडके डाले तौ रस निर्मल होजाय इसके पान करने से ग्रहणी, अरुचि, शूल, स्वासकास, भगंदर ॥ ५५ ॥ वातव्याधि,क्षयी,छर्दि, पांडु, कामला, कुष्ठ अर्श, प्रमेह, मंदाग्नि, उदररोग ॥ ५६ ॥ सिक्तामेह,पथरी, मूत्रकृच्छ्र और धातुक्षय ये रोग जायँ दुर्बल मोटाहोय बांझिनि पुत्रजनै यह दशमूलारिष्ट तेज धातु औरबलको देताहै ॥१५७॥

इति श्रीशार्ङ्गधरसुधाकरेदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

स्वर्णतारंताम्रमारंनागवङ्गौचतीक्ष्णकम्। धातवःसप्तविज्ञेयास्ततस्ताञ्छोधयेद्बुधः १ स्वर्णतारारताम्राणां पत्राण्यग्नौप्रतापयेत्। निषिञ्चेत्तत्ततप्तानितैलेतक्रेचकाञ्जिके २ गोमूत्रेचकुलत्थानांकषायेचत्रिधात्रिधा। एवंस्वर्णादिलोहानांविशुद्धिःसम्प्रजायते ३ नागवङ्गौप्रतप्तौचागलितौतौनिषेचयेत्। त्रिधात्रिधाविशुद्धिःस्याद्रविदुग्धेनचत्रिधा ४ स्वर्णस्यद्विगुणंसूतमम्लेनसहमर्दयेत्। तद्गोलकेसमंगन्धंनिदध्यादधरोत्तरम् ५ गोलकंचततोरुध्याच्छरावद्वसम्पुटे। त्रिंशद्वनोपलैर्दद्यात्पुटान्येवंचतुर्दश ६ निरुत्थंजायतेभस्मगंन्धोदेयःपुनःपुनः। काञ्चनेगलितेनागंषोडशांशेननिक्षिपेत् ७ चूर्णयित्वातथाम्लेनघृष्ट्वाकृत्वाचगोलकम्। गोलकेनसमंगन्धंदत्त्वाचैवाधरोत्तरम् ८ शरावसम्पुटेधृत्वापुटेत्रिंशद्वनोपलैः। एवंसप्तपुटैर्हेमनिरुत्थंभस्मजायते ९ काञ्चनाररसैर्घृष्ट्वासमसूतकगन्धयोः।

(स्वर्णादिधातुशोधन) सोना, चांदी, तांबा, पीतर, सीसा, रांगा और लोहा इन सातों धातुओंके शोधने की रीति कहते हैं ॥ १ ॥ सोना, चांदी, पीतर और तांबा इनके सूक्ष्म पत्र बना आगिमें लाल तपाय तेल मट्ठे कांजीमें बुझाय ॥ २ ॥ गोमूत्र में कुलथी क्वाथ में इन सबमें तीन तीनबार बुझावै इसीभांति स्वर्णादि धातु शुद्ध होतीहैं ॥ ३ ॥ सीसा रांगा ये गलाकर पूर्वोक्त पदार्थोंमें तीनबार बुझावै फिर तीन२ बार मदारदुग्धमें बुझावै ॥ ४ ॥ (सोना मारनेकी विधि) शुद्धसोना तिससे दूना शुद्ध पारा नींबूके रसमें घोटि गोली करि गोली समान गंधक पीसि तरे ऊपरधरे ॥ ५ ॥ मट्टीके दो सरवाले एकनीचे में गोलाधरि दूसरा ऊपरढकै उसपर कपरौटीकरि तिसुवाकंडा की आंचदेय इसे शरावसंपुट कहते हैं इसी प्रकार आगिसे निकार संपुटकरि चौदहबार आंचदेवै ॥ ६ ॥ यों प्रतिआंचदे गंधकदेनेसे स्वर्णभस्म निर्मल होती है (पुनर्विधि सोनेकी) १६ मासे सोना गलाय माशाभरि सीसाडारि उतारि ठण्ढाकरि ॥ ७ ॥ चूर्णकरै नींबूके रस में गोलाकरै नीचे ऊपर गंधकधरि ॥ ८ ॥ गोलेके समान शरावसंपुटकरि ३० गो-

कज्जलीहेमपत्राणिलेपयेत्समभात्रया १० काञ्चनारत्व चःकल्कमूषायुग्मंप्रकल्पयेत्। धृत्वातत्सम्पुटेगोलंमृन्मूषासम्पुटेचतत् ११ निधायसन्धिरोधंच कृत्वासंशोष्यकोकिलैः। वह्निंखरतरंकुर्यादेवंदत्त्वापुटत्रयम् १२ निरुत्थंजायतेभस्मसर्वकार्येषुयोजयेत्। काञ्चनारप्रकारेणलांगली हन्तिकाञ्चनम् १३ ज्वालामुखीतथाहन्यात्तथाहन्तिमनःशिला। शिलासिन्दूरयोश्चूर्णंसमयोरर्कदुग्धकैः १४ सप्तैवभावनादद्याच्छोषयेच्चपुनःपुनः। ततस्तुगलितेहेम्नि कल्कोयंदीयतेसमः १५ पुनर्धमेदतितरां यथाकल्कोविलीयते। एवंवारत्रयंदद्यात्कल्कोहेममृतिर्भवेत् १६ पारावतमलैर्लिम्पेदथवाकुक्कुटोद्भवैः। हेमपत्राणितेषांच प्रदद्यादधरोत्तरम् १७ गन्धचूर्णसमंकृत्वा शरावयुगसम्पुटे। प्रदद्यात्कुक्कुटपुटं पञ्चभिर्गोमयोपलैः १८ एवंनवपु

इटाकी आचदे तब सोना निरुत्थ भस्म होजाताहै ॥ ९ ॥ (तीसरा) कचनारके रस में पारा, गंधक समान मिलाय खरलकरै जब कजलीहो तब सोने के पत्रपर लगावै ॥ १० ॥ फिर कचनार की छाल पीसिकै उस गोलेपर बहुतसी लपेटै फिर दोबरिया मिट्टीकी बना एकमें धरि दूसरी ऊपर ढकि ॥ ११ ॥ कांसिकै कपरौटी करि सुखाय बड़ी आचदे इसीतरह प्रथम कही रीतिसे तीन आचदे ॥ १२ ॥ जब जिलाने से न जियै तो उत्तमहै भस्म जैसे कचनार विधान से मरताहै तैसेही करि या रीति से भी मरता है ॥ १३ ॥ ऐसे ज्वालामुखी कहे अरणी से भी भस्म होताहै तैसे मैनशिल से मैनशिल सेंदुर सम ले मदारदूध में घोटि ॥ १४ ॥ सात बार घोटि घोटि सुखाय सुखाय ले तब दशमाशे सोना गलाइ चरक खाने लगै तब दशमाशे यह मैनशिल सिंदूर का सिद्धचूर्ण सोनेमें छोड़ै ॥ १५ ॥ धुकनी दैके तीन आचदे जबतक यह धुकनी न जरिजाय तबतक आचदे इसीभांति धुकनी देदे तीन आचदेय तो सोना भस्म होय ॥ १६ ॥ पाचवां कबूतर की वा कुकुटकी बीट दोनों सोने के पत्रकरि ऊपरनीचे लपेटै ॥ १७ ॥ उसी के समान गन्धकचूर्ण भी दोनों

१ गोमयैरितिपाठान्तरम् ॥

टंदद्याद्दशमंचमहापुटम् । त्रिंशद्वनोपलैरेवं जायतेहेम
भस्मताम् १९ भागैकंतालकंमर्द्य याममम्लेनकेनचित् ।
तेनभागत्रयंतारपत्राणिपरिलेपयेत् २० धृत्वामूषापटे
रुध्वा पुटेत्रिंशद्वनोपलैः । समुद्धृत्यपुनस्तालं दत्त्वाब
ध्वापुटैःपचेत् । एवंचतुर्दशपुटैस्तारंभस्मप्रजायते २१
स्नुहीक्षीरेणसम्पिष्टंमाक्षिकंतेनलेपयेत् । तालकस्यप्रका
रेण,तारपत्राणिबुद्धिमान् । पुटेच्चतुर्दशपुटैस्तारंभस्मप्र
जायते २२ अर्कक्षीरेणसम्पिष्टोगन्धकस्तेनलेपयेत् । सम
नारस्यपत्राणि शुद्धान्यम्लद्रवैर्मुहुः २३ ततोमूषापुटेधृ
त्वापुटेद्गजपुटेनतु । एवंपुटद्वयेनैवभस्मारंभवतिध्रुवम् २४
आरवत्कांस्यमप्येवंभस्मताम्यन्तुनिश्चितम् । अर्कक्षीर
चदाजंस्यात्क्षीरंनिर्गुण्डिकातथा । ताम्ररीतिघ्ननिवधेस

मंगन्धकयोगतः २५ सूक्ष्माणिताम्रपत्राणि कृत्वासंशोधयेद्बुधः । वासरत्रयमम्लेनततःखल्वेविनिक्षिपेत् २६ पादांशंसूतकंदत्वा याममम्लेनमर्दयेत् । ततउद्धृत्यपत्राणि लेपयेद्द्विगुणेनच २७ गन्धकेनाम्लघृष्टेन तस्य कुर्याच्चगोलकम् । ततःपिष्ट्वाचमीनाक्षी चाङ्गेरीचपुनर्नवा २८ तत्कल्केनबहिर्गोलं लेपयेद्द्व्यङ्गुलोन्मितम् । धृत्वातद्गोलकंभाण्डे शरावेणचरोधयेत् २९ वालुकाभिः प्रपूर्याथ विभूतिलवणाम्बुभिः । दत्वाभाण्डेमुखेमुद्रांततश्चुल्ल्यांविपाचयेत् ३० क्रमवृद्ध्याग्निनासम्यग्यावद्यामचतुष्टयम् । स्वाङ्गशीतसमुद्धृत्यमर्दयेत्सूरणद्रवैः ३१ दिनैकंगोलकं कुर्यादर्द्धगन्धेन लेपयेत् । सघृतेनततो मूषापुटेगजपुटेपचेत् ३२ स्वाङ्गशीतंसमुद्धृत्य मृतं ताम्रंशुभंभवेत् । वान्तिभ्रान्तिक्लमरेकं न करोतिकदाच

पय व भिनडी रस में गन्धक पीसि तांबे वा कासे वा पीतरपत्र पर लगाय पूर्वोक्त रीतिसे फूंकै तौ तीनोंमैर ॥ २५ ॥ (ताम्रभस्म) इमली पत्रकी सुटाई सम पत्र करि ताम्रपत्र पर खटाईका पानीदे तीन दोलायन्त्रकी आंचदेकर खरलकरै ॥ २६ ॥ तांबे की चौथाई पारादे पहरभर नींबू में घोटै फिर तांबेकी दूनी गंधक नींबूके रसमें घोट पत्र पनलेप गोला वारि मकोय वा अमलोनिया वा गदापुरैना ॥ २७।२८ ॥ इनकी पीठी दो अंगुल मोटी गोलापर लपेट एक वासनमें धरि सुखमूँदिदे ॥ २९ ॥ तब एक बड़े बासनकी पेंदीमें छेदकरि उसपर अभ्रक धरि थोड़ा बालू भरै तिसपर लोनका पानी छिडक पहिला बासनधरै फिर वालूभरि लोनका पानीदे दवाईदे जिसमें वह बासन तुपजाइ तब बड़े बासन का मुहमूँदि कपरौटी करि चूल्हेपै धरि लकड़ी की आंचदेय ॥ ३० ॥ मंद आंचदे फिरि क्रमसे तेज करता चार पहर आंचदे ठंढाकरि सूरनके रसमें ॥ ३१ ॥ एकदिन उसी तांबेका आधा गंधक आधा घीले खरलकरि उसे तांबेपर लेपकरि मूसायंत्रमें धरि फिर गजपुट आंचदे ॥ ३२ ॥ जब उसी में स्वाभाविक शीत होजाय तब निकारिले तौ उवाकी संभ्रम चित्त

१ मताक्षी (मछला) एक व पुनर्नवा को कहते हैं और किसीके मतमें कुन्की कहाती है ॥

नः ३३ ताम्बूलीरससम्पिष्टं शिलालेपात्पुनः पुनः । द्वा
त्रिंशद्भिः पुटैर्नागो निरुत्थो याति भस्मताम् ३४ अश्व
त्थचिञ्चात्वक्चूर्णं चतुर्थांशेन निक्षिपेत् । मृत्पात्रे द्राविते
नागे लोहदर्व्या प्रचालयेत् ३५ यामैकेन भवेद्भस्म तत्तुल्यां
च मनःशिलाम् । काञ्जिकेन द्वयं पिष्ट्वा पचेद्दृढपुटेन च ३६
स्वाङ्गशीतं पुनः पिष्ट्वा शिलया काञ्जिकेन च । पुनः पुटेच्छरा
वाभ्यामेवं षष्टिपुटैर्मृतिः ३७ मृत्पात्रे द्राविते वङ्गे चि
ञ्चाश्वत्थत्वचोरजः । क्षिप्त्वा वङ्गचतुर्थांशमयोदर्व्या प्र
चालयेत् ३८ ततो द्वियाममात्रेण वङ्गभस्म प्रजायते । अ
थ भस्मसमं तालं क्षिप्त्वाम्लेन विमर्दयेत् ३९ ततो गजपु
टे पक्त्वा रसेन पुनरम्लयेत् । तालेन दशमांशेन यामैकं
ततः पुटेत् ४० एवं दशपुटैः पक्वो वङ्गस्तु म्रियते ध्रुवम् । शु
द्धं लोहभवं चूर्णं पातालगरुडीरसैः । मर्दयित्वा पुटेद्धाव

विकलाई और दस्त आना दूरहो तब जानिये ताबो शुद्धभयो ॥ ३३ ॥ (सीसा भस्म) पानके रसमें मैनशिलको पीसि सीसे के पत्रेपर लगावै बत्तिस बेर [illegible] आंचदे ऐसेही बत्तिस आंचदे ॥ ३४ ॥ (पुनः विधान) पीपरि. इमली की छाल का चूर्ण चौथाई सीसा दे माटी के बासनमें धरै नीचे आंचदे तब सीसा पिघलै तब वही दोनों छालका चूर्ण डारि डारि लोहेकी करछीसे चलावता रहे ॥ ३५ ॥ ऐसे पहर भर आंचदेय तब सीसेकी भस्मलेके बराबर मैनशिल दे कांजीमें घोटि सुखाय गजपुट आंचदेय ॥ ३६ ॥ ठंढाभये फिर मैनशिल कांजीदे घोटि गजपुटदेय ऐसे साठि आंचदेय तब सीसामरै सो साठिसे कमदेय तो जीवता है ॥ ३७ ॥ वंगभस्म रांगा माटी के बासन में लगाय चौथाई पीपरि इमली की छालका चूर्ण देकर लोहे की करछी से घोटै ॥ ३८ ॥ दोपहर घोटे तो रांगा भस्महोय रांगा की भस्म के तुल्य हरताल डारि निम्बू के रस में घोटै ॥ ३९ ॥ गजपुटकी आंचदे फिर निकारनींबूका रस और दशांश हरतालदे पहरभर घोटै ॥ ४० ॥ फिर उसे फूंकदे इसभांति दश आंच दे तब वंग तैयार होय शुद्ध लोहा तिसका चूर्ण पातालमूली और पातालमूली बिना हरदा के रसमें घोटै आंच

द्यादेवंपुटत्रयम्॥४१ पुटत्रयं कुमार्याश्च कुठारच्छिन्नकारसैः। पुटषट्कं ततोदद्यादेवंतीक्ष्णमृतिर्भवेत् ४२ क्षिपेद्द्वादशमांशेन दरदंतीक्ष्णलोहतः। मर्दयेत्कन्यकाद्रावैर्यामयुग्मं ततः पुटेत्। एवं सप्तपुटैर्मृत्युं लोहचूर्णमवाप्नुयात् ४३ रसैःकुठारच्छिन्नायाः पातालगरुडीरसैः। स्तन्येन चार्कदुग्धेन तीक्ष्णस्यैवं मृतिर्भवेत् ४४ सूतकाद्द्विगुणंगन्धं दत्वाकुर्याच्च कज्जलीम्। द्वयोःसमं लोहचूर्णं मर्दयेत्कन्यकाद्रवैः ४५ यामयुग्मंततःपिण्डं कृत्वाताम्रस्यपात्रके। घर्मेधृत्वोरुबूकस्य पत्रैराच्छादयेद्बुधः ४६ यामार्द्धेनोष्मताभूयाद्धान्यराशौन्यसेत्ततः। दत्वोपरिशरावञ्चत्रिदिनान्तेसमुद्धरेत् ४७ पिष्ट्वाचगालयेद्वस्त्रादेवंवारितरंभवेत्। एवंसर्वाणिलोहानिस्वर्णादीन्यपिमारयेत् ४८ शिलागन्धार्कदुग्धाक्ताःस्वर्णाद्याःसप्तधातवः। म्रियन्तेद्वादशपुटैः सत्यंगुरुवचोयथा ४९ माक्षिकंतुत्थकाभ्रौचनीलाञ्जन

दे, ऐसे तीनि आच दे ॥ ४१ ॥ फिर घीकुवारके रसमें घोटै तीन आचदे फिर कुरैया छाल के क्वाथ में घोटि छःआचदे तो लोह भस्म होताहै ॥ ४२ ॥ (पुनः) जितना लोहाहो तिसका बारहवां अंश सिंगरफ़दे घीकुवारके रसमें दोपहर घोटै आच दे तो लोह भस्म होता है ॥ ४३ ॥ (पुनः) कुरैया रस वा छरहटा रस में वा स्त्री के दूध में वा मदार रस में सिंगरफ युक्त किसी में घोटि सात आँच दे तो लोह भस्म होता है ॥ ४४ ॥ (पुनः) पारे की दूनी गन्धक मिलाय कजली करि कजली के समान लोह चूर्ण ले, घीकुवारके रसमें दोनों घोटै ॥ ४५ ॥ दोपहर घोटि पिण्डी बनाय तांबे के पत्र में धरि रेंडपात से ढँकि ॥ ४६ ॥ चारि घरी धूप में राखि गर्मी उतारि फेंकिदेय दूसरे पात्रमें डाकि अनाज की राशि में तीनदिन गाड़िकै निकार लेय ॥ ४७ ॥ सब पीसिकै कपड़े में छानि पानी पर डारे से लोह तिरैगा ऐसेही स्वर्णादि सब धातु मारिये ॥ ४८ ॥ (सीसरीविधि) शिल व गन्धक मदार के दूध में खरल करावे इसी प्रकार सात धातु में चाहे जिस धातुको बारह आचदे इससे धातु भस्म होजातीहै यह रीति गि-

शिलाजतुकाः। रसकश्चैवविज्ञेया एतेसप्तोपधातवः ५० माक्षिकस्यत्रयोभागा भागैकंसैन्धवस्यच। मातुलुङ्गद्रवैर्वाथजम्बीरोत्थद्रवैः पचेत् ५१ चालयेल्लोहपात्रेणयावत्पात्रंसुलोहितम्। भवेत्ततस्तुसंशुद्धंस्वर्णमाक्षिकमृच्छति ५२ (अन्यच्च) कुलत्थस्यकषायेणघृष्ट्वातैलेनवापुटेत्। तक्रेणवाजमूत्रेणम्रियतेस्वर्णमाक्षिकम् ५३ कर्कोटीमेषशृङ्गयुत्थैर्द्रवैर्जम्बीरजैरसैः। भावयेदातपेतीव्रेविमलाशुध्यतिध्रुवम् ५४ विष्ठयामर्दयेत्तुल्यंमार्जारककपोतयोः दशांशंटङ्कणंदत्त्वापचेन्मृदुपुटैस्ततः। पुटंदद्यात्पुटंसौद्रैर्देयंतुल्यविशुद्धये ५५ कृष्णाभ्रकन्धमेद्वह्नौततःक्षीरेविनिःक्षिपेत्। भिन्नपत्रंतुतत्कृत्वातन्दुलीयाम्लयोर्द्रवैः ५६ भावयेद्द्यामन्तदेवंशुध्यतिचाभ्रकम्। बद्धाधान्ययुतावस्त्रेमर्दयेत्काञ्जिकैस्सह ५७ कृत्वाधान्याभ्रकंतत्तुशोषयित्वाथम

दयेत्। अर्कक्षीरैर्दिनंमर्द्यंचक्राकारन्तुकारयेत् ५८ वेष्टयेदर्कपत्रैश्चसम्यग्गजपुटेपचेत्। पुनर्मर्द्यंपुनःपाच्यंसप्तवारंप्रयत्नतः ५९ ततोवटजटाक्वाथैस्तद्वद्देयंपुटत्रयम्। म्रियतेनात्रसन्देहःसर्वरोगेषुयोजयेत् ६० शुद्धंधान्याभ्रकंमुस्तंशुण्ठीषड्भागयोजितम्। मर्दयेत्कांजिकेनैवंदिनंचित्रकजैरसैः ६१ ततोगजपुटंदद्यात्तस्मादुद्धृत्यमर्दयेत्। त्रिफलावारिणातद्वत्पुटेदेवंपुटैस्त्रिभिः ६२ बलागोमूत्रमुशलीतुलसीशूरणद्रवैः। मर्दितंपुटितंवह्नौत्रिस्त्रिर्वेलंम्रजेन्मृतिम् ६३ धान्याभ्रकस्यभागैकंद्वौभागौटङ्कणस्यच। पिष्ट्वातदर्धमूषायां रुद्धातीव्राग्निनापचेत्। स्वभावशीतलंचूर्णंसर्वरोगेषुयोजयेत् ६४ नीलाञ्जनंचूर्णयित्वाजम्बीरद्रवभावितम्। दिनैकमातपेशुद्धंभवेत्कार्येषुयोजयेत् ६५ एवंगैरिककासीसटङ्कणानिवराटिका। तुवरीशंखकंकुष्ठशुद्धिमायातिनिश्चितम् ६६ पचेत्त्र्यहमजामूत्रैर्दोलायं

यासनमें धरि जब थिरायं कांजी न्हाय अभ्रक सुखाय मदार दूधमें दिनभर घुटाय टिकियाकरै ॥ ५८ ॥ मदार पत्रमें लपेट गजपुट आंचदें ऐसेही मदार दूधमें घोटि घोटि सातपुटदेय ॥ ५९ ॥ (फिर) बरगदजटाक्वाथमें घोटि घोटि तीन पुटदेय इसप्रकार निस्संदेह अभ्रक मरेगा सबकर्म योग्य होयगा ॥६०॥ (दूसरीविधि) शुद्ध अभ्रक ले छठा छठाअंश मोथा व सोंठ दे कांजीमें दिनभर खरलकरि फिर चीता के रसमें ॥ ६१ ॥ तब गजपुट आंचदे फिर निकार तीनबार त्रिफला रसमें घोटि घोटि गजपुट आंच देय ॥ ६२ ॥ फिर वरियारा, गोमूत्र, मुशली, कृष्णतुलसी और सूरन इनके रस में घोटि घोटि तीनवार गजपुट आंच देय तौ अभ्रक मरै ॥ ६३ ॥ एक भाग शुद्ध अभ्रक दो भाग सुहागा देकर अंधमूषक यत्रमें रूंधि गजपुटकी तेज आंच में फूंक इसकी ठंढी प्रकृति है सब रोगों में देना योग्यहै ॥ ६४ ॥ (सुरमा शोधन व मारण) सुरमा चूर्णकरि जम्बीरी नीबू-

१ पञ्चधारि गृहर बदृरा ।मली घड़ यादि में भरकरि जो चौथा शायनीहो वसगी पाग्लो बार बारकार देव इसभांति स्वस्तिकि करने को रासायनम कहते ॥

त्रेमनःशिलाम् । भावयेत्सप्तधापित्तैरजायाःशुद्धिमृच्छति
६७ (अन्यच्च) अगस्तिपत्रतोयेन भावयेत्सप्तवारकम् ।
शृङ्गवेररसैर्वापिविदधातिमनःशिलाम् ६८ तालकंकणशः
कृत्वातच्चूर्णंकाञ्जिकेक्षिपेत् । दोलायन्त्रेणयामैकंततःकूष्मा
ण्डजैर्द्रवैः ६९ तिलतैलपचेद्यामं यामञ्चैत्रिफलाजलैः ।
एवंयन्त्रेचतुर्यामंपाच्यंशुद्ध्यतितालकम् ७० नरमूत्रेतु
गोमूत्रे सप्ताहंरसकंपचेत् । दोलायन्त्रेणशुद्धःस्यात्ततःका
र्येषुयोजयेत् ७१ लाक्षामीनपयश्छागंटङ्कणंमृगशृङ्गकम् ।
पिण्याकसर्षपाशिग्रुगुञ्जोर्णागुडसैन्धवम् ७२ यवास्तिक्तं
घृतंक्षौद्रंयथालाभंविचूर्णयेत् । एभिर्विमिश्रिताःसर्वेधात
वोगाढवह्निना । मूषाध्माताःप्रजायन्ते मुक्तसत्त्वानिसंश
यः ७३ कुलित्थकोद्रवक्काथैर्दोलायन्त्रेविपाचयेत् । त्या

श्रीकन्दगतंवज्रं त्रिदिनंशुद्धिमृच्छति ७४ ततस्तप्तंतुत
द्वज्रं खरमूत्रेनिषेचयेत्। पुनस्ताप्यंपुनःसेच्यमेवंकुर्यात्त्रि
सप्तधा ७५ मत्कुणैस्तालकंपिष्ट्वा प्रावद्धर्वर्तिगोलकम्।
तद्गोलेनिहितंवज्रं तद्गोलंचाधिकंधमेत् ७६ सेचयेदश्व
मूत्रेण तद्गोलंचक्षिपेत्पुनः। रुद्ध्वाध्मातंपुनःसेच्यमेवंकु
र्यात्त्रिसप्तधा। एवंचम्रियतेवज्रं चूर्णंसर्वत्रयोजयेत् ७७
हिङ्गुसैन्धवसंयुक्तेक्वाथेकौलत्थजेक्षिपेत्। तप्तंतप्तंपुनर्वज्रं
भूयाच्चूर्णंत्रिसप्तधा ७८ मण्डूकंकांस्यजेपात्रेनिगृह्यस्था
पयेत्सुधीः। सभीतोमूत्रयेत्तत्र तन्मूत्रेवज्रमावपेत्। तप्त
न्तप्तञ्चबहुधावज्रस्यैवम्मृतिर्भवेत् ७९ वैक्रान्तंवज्रवच्छो
ध्यं नीलंवालोहितंतथा। हयमूत्रेतुतत्सेच्यं तप्तंतप्तंहि
सप्तधा ८० ततश्चमेषदुग्धेन पञ्चाङ्गेगोलकंक्षिपेत्। पु
टेन्मूषापुटेरुद्ध्वा कुर्यादेवंचसप्तधा ८१ वैक्रान्तभस्मतां

टैयाकी जड़की लुगदीमें हीरारखे कपड़ेमेंबांधि तीनदिन सिद्धकरै तब हीरा शुद्धहो फिर आगिमें तपाय खर(गधे) के मूत्रमें २१ बार बुझावै ॥७४।७५॥ मत्कुण कहै खटकिरवा और हरताल पीसि गोलाकरि उसमें हीराधरि तीव्र आंचदेकर मूषा-यंत्रमें राखि भाथीमें फूंके ॥ ७६ ॥ (फिर) अश्वमूत्रमें २१ बार बुझाय हरताल गोलामें धरि फूंके इकीसबार अश्वमूत्र में बुझाय फूंके ऐसे हीरा भस्म होताहै. उसका चूर्ण सर्वत्र साध्य है ॥ ७७ ॥ (पुनर्विधिः) हींग, सेंधालोन, कुलथी, काथमें डारि उसमें हीरा तपाइ तपाइ २१ बार बुझावै तौ हीरामरै ॥ ७८ ॥ (तृतीयविधि) मेंढक कांसेके पात्रमें मूंदै उसे डरावै जब भयसे मूते उस मूतमें हीरा, तपाय तपाय बहुत बुझावै तौ खिलके चूर्णहो मरिजाय ॥ ७९ ॥ वैक्रांत शोधनमारण) वैक्रांत कच्चे हीरेको कहते हैं कालाहो या लाल सो हीरेकी नाईं शोधे लाल करिकै २१ वार बुझाय ॥ ८० ॥ मेढासिंगी के पंचांगके गोले में धरि मूषायंत्रमें भरि संपुटकरि फूंकदे इसीतरह सातबार फूंके ॥ ८१ ॥ तब वैक्रा-

१ उत्पन्न होने के समय विकार होनेसे वैद्योंने हीराको वैक्रान्त कहाहै ॥ [illegible]

त्यातिवज्रस्थानेनियोजयेत् स्वेदयेद्दोलिकायन्त्रे जयन्त्याः स्वरसेनच । मणिमुक्ताप्रवालानां यामैकंशोधनंभवेत् ८२ कुमार्यातन्दुलीयेन स्तन्येनचनिषेचयेत् । प्रत्येकंसप्तवेलञ्चतप्ततप्तानिकृत्स्नशः ८३ मौक्तिकानिप्रवालानि तथारत्नान्यशेषतः । क्षणाद्विविधवर्णानि म्रियन्तेनात्रसंशयः ८४ उक्तमाक्षिकवन्मुक्ताप्रवालानिचमारयेत् । वैक्रान्तंसर्वरत्नानि शोधयेन्मारयेत्तथा ८५ शिलाजतुसमानीय ग्रीष्मतप्तशिलाच्युतम् । गोदुग्धैस्त्रिफलाक्वाथैर्भृङ्गराजैश्चमर्दयेत् । आतपेदिनमेकन्तु तच्छुष्कंशुद्धतांव्रजेत् ८६ मुख्यांशिलाजतुशिलां सूक्ष्मखण्डप्रकल्पितम् । निक्षिप्यात्युष्णपानीयेयामैकंस्थापयेत्सुधीः ८७ मर्दयित्वाततोनीरं गृह्णीयाद्वस्त्रगालितम् । स्थापयित्वाचमृत्पात्रं धारयेदातपेबुधः ८८ उपरिस्थंघनंयत्स्यात्तत्क्षिपेदन्यपात्रके । धारयेदातपेतस्मादुपरिस्थंघनंनयेत् ८९ एवंपुनःपुनर्नीत्वा द्विमासाभ्यांशिलाजतु । भू

त भस्महोय सो हीरेकी तौरदेय ॥ (सर्वरत्नशोधन व मारण) मन्ने मोती वा माणिक वा मूंगा जरणी रसदे दोलायंत्र में एकपहर सिद्धकरै तौ शुद्ध होंय ॥ ८२ ॥ घीकुवार चौराई वा स्त्रीका दूध इन तीनोंमें सातसातवार माणिकादि तपाय तपाय बुझावै ॥ ८३ ॥ मूंगा मुक्तादि ये सब क्षणभरमें वर्ण पलटजातेहैं इसमें संशयनहीं ॥ ८४ ॥ मूंगा, मोती, सोनामाखी की रीतिसे भी मरताहै और सब रत्न हीरेकी नाई शोधै व मारै ॥ ८५ ॥ (शिलाजीत शोधन) ग्रीष्मही धाममें पर्वतसे चुवा शिलाजीत लाय गायका दूध वा त्रिफलाका काढ़ा वा भंगरेके रसमें भर भर घोटि दिनभर घाममेंधरै सूखजाय तौ शुधिजाय ॥ ८६ ॥ (दूसरीरीति) अच्छी शिलाजीतकी शिलाले छोटे छोटे टूकरै अति उष्णजलमें पहरभर रक्खै ॥ ८७ ॥ उसे पानीमें पीसै फिर छानके लैलेय फिर माटीके बासनमें करि घाममें धरै ॥ ८८ ॥ जब मलाई परै उसे काढि और पात्रमें रक्खै फिर और लाय तपावै ॥ ८९ ॥ दे फिर मलाई लेले पहिली मलाई में रखता जाय इसीभांति दो मासतक करै

यात्कार्यक्षमंवह्नौक्षिप्त्वालिङ्गोपमंभवेत् ९० निर्धूमंच ततःशुद्धं सर्वकर्मसुयोजयेत् । अधःस्थितंचतच्छेषंत स्मिन्नीरंविनिःक्षिपेत् । विमर्द्यधारयेद्घर्मेपूर्ववच्चैवनाश येत् ९१ अत्ताङ्गारैर्धमेत्किट्टं लोहजंतद्गवांजलैः । सेच येत्तप्ततप्तंच सप्तवारंपुनःपुनः ९२ चूर्णयित्वाततःक्वाथे द्विगुणैस्त्रिफलाभवैः । आलोड्यभर्जयेद्वह्नौ मण्डूरंजाय तेवरम् ९३ क्षारवृक्षस्यकाष्ठानिशुष्काण्यग्नौप्रदीपयेत् । नीत्वातद्भस्ममृत्पात्रेक्षिप्त्वानीरेचतुर्गुणे ९४ विमर्द्यधा रयेद्रात्रौ प्रातर्वस्त्राजलंनयेत् । तन्नीरंक्वाथयेद्वह्नौ याव त्सर्वंविशुष्यति ९५ ततःपात्रात्समुल्लिख्य क्षारोग्राह्यः सितप्रभः । चूर्णाभःप्रतिसार्यःस्यात्पेयःस्यात्क्वाथवत्स्थि तः । इतिक्षारद्वयंधीमान् युक्तकार्येषुयोजयेत् ९६ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरेएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

तब शिलाजीत कार्यकारी होताहै और आगिमें रखने से लिंगाकार होजाता है ॥ ९० ॥ निर्धूमभये जानिये कि शिलाजीत अच्छा बनगया पहिली मलाई इसप्रकार बनी फिर पहिली मलाई के तरे और जो बहुधारका निकला पानी उसके तरे धराइरहे इन दोनोंको गरमपानी देदे पीसि फिर दोमासताई दूना पानी डारि शुद्ध करै ॥ ९१ ॥ (अथ मंडूरविधि) कीटी लोहेका मैल बहेराकी लकडी के कोयलामें लालकरि गोमूत्रमें सातबार बुझावै ॥ ९२ ॥ तब कीटका चूर्णकरि दूने त्रिफला क्वाथमें मिलाय पात्रमें धरि आंचमें त्रिफला क्वाथ जरायकै उतारिले तब मंडूर अच्छा होताहै ॥ ९३ ॥ (अथ क्षारविधि) क्षारवृक्षकी लकडी को राखकरि चौगुने पानीमें घोलि ॥ ९४ ॥ रातभर राखि प्रभात थिराना पानी ले आगिपर चढ़ाय पानी जरावै जब पानी जरिजाय ॥ ९५ ॥ तब उतारिले उसीको क्षार कहते हैं सफेद होजाता है और सब पानी न जरै तो क्वाथ समरहताहै ये दो प्रकार क्षार वैद्यजन औषधोंमें देते हैं "कुरैया, पलाश, बकायन, बहेड़ा, अमलतास, मदार, अमली, सेहुँड, चिरचिरा, पाढा, केला, जमालगोटा, सहिंजन और मूरी" इत्यादि क्षारवृक्ष कहाते हैं ॥ ९६ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

पारदःसर्वरोगाणांजेतापुष्टिकरःस्मृतः । सुदिनेसा
धनंकुर्यात्संसिद्धिंदेहलोहयोः १ रसेन्द्रः पारदःसूतोहर
जःसूतकोरसः । बुधैस्तस्येतिनामानिज्ञेयानिरसकर्म
सु २ ताम्रतारारनागाश्चहेमवङ्गौचतीक्ष्णकम् । कांस्य
कंवृत्तलोहंच धातवोनवसंस्थिताः । सूर्यादीनांग्रहाणां
तेकथितानामभिःक्रमात् ३ राजीरसोनमूषायांरसंक्षिप्त्वा
विबन्धयेत् । वस्त्रेणदोलिकायन्त्रेस्वेदयेत्काञ्जिकैस्त्र्य
हम् । दिनैकंमर्दयेत्सूतंकुमारीसम्भवैर्द्रवैः ४ तथाचित्र
कजैःक्वाथैर्मर्दयेदेकवासरम् । काकमाचीरसैस्तद्वद्दिनमे
कञ्चमर्दयेत् ५ त्रिफलायास्तथाक्वाथैरसोमर्द्यःप्रयत्नतः।
ततस्तेभ्यःपृथक्कुर्यात्सूतंप्रक्षाल्यकाञ्जिकैः ६ ततःक्षि
प्त्वारसंखल्वेरसादर्द्धंचसैन्धवम् । मर्दयेन्निम्बुकरसैर्दिन
मेकमनातुरम् ७ ततोराजीरसोनश्चनवसादर

पाराको सर्वरोग जीतनेवाला व पुष्टिकारक कहते हैं शुभ दिन शुद्ध करना आरम्भ करै अच्छा सिद्धहो तो जरा व्याधि दूरकरै लोहादि धातु पारे से संस्कार करै उत्तम होय शरीर पुष्टि करती है प्रमाण ॥ वृषभेंसरारोन म धवनैंपरनादि- भिः। अधमंमूत्रसारैश्च तैलेनाप्यधमाधमम् ॥ १ ॥ (पारानाम) रसेंद्र पारद, सूत, हरज, सूतक और रस ये छः नाम पंडित रसक्रिया में समझलेवैं ॥ २ ॥ तांबा, रूपा, पीतल और सीसा, सोना, रांगा, पोलाद, कांसा और लोहा ये नव धातु सूर्यादि नवग्रहके क्रमसेही नाम समझलेइ ॥ ३ ॥ (रसशोधन) राई, लहसुन की लुगदीका मूसायंत्र करि पाराभरि मुखमूंदि गाढ़े वस्त्रमें बांधि दोलायंत्रमेंकांजी के संग तीनदिन आंचदे शुद्धकरै फिर एक दिन घिकुवार के रसमें घोटै ॥ ४ ॥ एकदिन चीताक्वाथमें एकदिन मकोयरसमें ॥ ५ ॥ एकदिन त्रिफलाके रसमें घोट पारा निकारि धोय लेय ॥ ६ ॥ पारा एकभाग सेंधा अर्द्धभाग डेनभर नींबूके रसमें खूबघोटै ॥७॥ राई, लहसुन अच्छा नौसादर ये सब पारेके समानले पारेके संगदे

१ सूर्यचन्द्रमसौभौम.गथिमोनीरभार्गवौ । सूर्यसुत मैशेषैर्धनुर्मेलिसमद ॥

रः । एतैरससमैस्तद्वत्सूतोमर्द्यस्तुषाम्बुना ८ ततःशंशो
ध्यचक्राभंकृत्वालिप्त्वाचहिङ्गुना । हिस्थालीसम्पुटेकृत्वा
पूरयेल्लवणेनच ९ अथस्थालींततोमुद्रांदद्याद्दृढतरा
म्बुधः । विशोष्याग्निंविधायाधोनिषिञ्चेदम्बुचोपरि १०
ततस्तुकुर्यात्तीव्राग्निं तदधःप्रहरत्रयम् । एवंनिपातये
दूर्ध्वेरसोदोषविवर्जितः । अथार्द्धपिठरीमध्येलग्नोग्राह्यो
रसोत्तमः ११ लोहपात्रेविनिःक्षिप्यघृतमग्नौप्रतापयेत् ।
तप्तेघृतेतत्समानांक्षिपेद्गन्धकजंरजः १२ विद्रुतंगन्धकंज्ञा
त्वादुग्धमध्येविनिःक्षिपेत् । एवंगन्धकशुद्धिःस्यात्सर्वका
र्येषुयोजयेत् १३ मेषीक्षीरेणदरदमम्लवर्गैश्चभावितम् ।
सप्तवारंप्रयत्नेनशुद्धिमायातिनिश्चितम् १४ निम्बूरसैर्नि
म्बपत्ररसैर्वायाममात्रकम् । पिष्ट्वादरदमूर्ध्वंचपातयेत्सूत
युक्तिवत् । ततःशुद्धंरसंतस्मान्नीत्वाकार्येषुयोजयेत् १५ का
लकूटंवत्सनागःशृङ्गकश्चप्रदीपनः । हालाहलोब्रह्मपुत्रो

तुषाम्बुमें सब मिलाय मर्दनकरै ॥ ८ ॥ जब सूतकै गाढाहो तब टिकरी बना हींग लेपकरि फिर एक हांडी नोनभरि तिसके बीचमें पूर्वोक्त टिकिया धरि तिसपर दूजीहाडी के मुँहरगरेदो जिसमें संधि न रहै तब कपडौटी करि आचदेय ऊपर भीजी कपरीराखै उसे सींचतारहै नीचे तीनपहर तक आच सेजरावै जब ठंढीहो तब उपरवाली हाडीमें जो दोपवर्जित रस लपटा उडायके सब काममें युक्तकरै ॥९।१०। ११ ॥ (गंधकशोधन) लोहेकी कडाही में घी अतितप्तकरै घीके समान गंधक चूर्ण छोडै जब गलै तब चौगुने दूधमें गरमही नाइकै बुझावै तौ गधक शुद्धहोकर सर्व कार्योंमें योग्य होताहै ॥ १२ । १३ ॥ (सिंगरफशोधन) सिंगरफको भेड़के दूध और नींबूके रसमें घोटि सुखावै इसे भावना कहिये ऐसे सात भावना देने से सिंगरफ निश्चय शुद्ध होताहै ॥ १४ ॥ (सिंगरफसे पारा निकालने की विधि) नींबूरस वा नींवपत्र रसमें पहरभर सिंगरफ घोटि फिर डमरूयंत्रकरि उतारिलेय "डमरूयंत्र यों कहते हैं" जैसे प्रथम पारा उडायाहै उड़ाय लेने से भी पारा शुद्धहोकर सर्व कार्यकारक होजाताहै ॥ १५ ॥ (अथ पारेका मुख करनाकहे

हारिद्रःसक्तुकस्तथा । सौराष्ट्रिकइतिप्रोक्ताविषभेदाअ
मीनव १६ अर्कसेहुण्डधत्तूरालाङ्गलीकरवीरकः गुञ्जाहि
फेनमित्येताः सप्तोपविषजातयः १७ एतैर्विमर्दितःसूत
श्छिन्नपक्षः प्रजायते । मुखंचजायतेतस्यधातूंश्चग्रसते
परान् १८ अथवाकटुकक्षारौराजीलवणपञ्चकम् । रसो
नोनवसारश्चशिग्रुश्चैकत्रचूर्णितैः । समांशैःपारदाद्देतै
र्जम्भीरेणरसेनवा ॥ निम्बूतोयैःकाञ्जिकैर्वासोष्णखल्वेवि
मर्दयेत् १९ अहोरात्रत्रयेणस्याद्रसेधातुचरंमुखम् । अथ
वाश्चिन्दुलीकिट्टैःरसोमर्द्यस्त्रिवासरम् । लवणाम्लैर्मुखंत
स्यजायतेधातुघस्मरम् २० अथकच्छपयन्त्रेणगन्धजार
णमुच्यते । मृत्कुण्डेनिक्षिपेन्नीरंतन्मध्येचशरावकम् २१
महत्कुण्डपिधानाभंमध्येमेखलयायुतम् । लिप्त्वाचमेखला
मध्येचूर्णंतत्ररसंक्षिपेत् २२ रसस्योपरिगन्धस्यरजोदद्या

शुधाकर करनाभी कहते हैं) कालकूट, वच्छनाग, सिंगिया, मैंगिन, हालाहल, ब्रह्मपुत्र, हरदिया, सक्तुक और सौराष्ट्र ये नव विषहैं औ मदार सेहुँड, धतूरा, कलिहारी, कनर, लालघुंघुची, अफीम ये सात उपविषहैं ॥ १६ । १७ ॥ इन सब विषमें मर्दन करने से पारा पक्षहीन होजाताहै समस्त धातुओं के भक्षण करने को समर्थ होताहै ॥ १८ ॥ (अथ दूसरा प्रकार) त्रिकुटा दोनों खार और राई और पांचोंलोन, लहसुन, नौसादार और सहँजनकी छालये सब समभागलेचूर्ण करै तब पारे के समानने जँभीरीरस वा नीबूरस वा कांजीमें गरमकरि खरलकरै ॥ १९ ॥ तीन दिनरात तक पारा सब धातुओं को खाय और तोल न घटै पारा के मुख होताहै और इन्द्रायण वा चीकटहुंडी में तीनदिन घोटै फिर पांचोंलोन और नींबूके रसमें घोटै तब पारेका मुखखुलै और धातु भक्षणकरे ॥ २० ॥ (कच्छपयंत्रकरि गंधक फूकनेकी विधि) एक माटी का कूंडाले तिसमें चार अंगुल पानी भरि एक सहनकी राखि उस सहनकी भेतरे पानी एक अंगुल ॥ २१ ॥ तिसमें पारा और गंधकसमभाग धरिऊपरदूसरीसहनकी ढकि चूनेसे देभोसदनकी पारा सूत निःसंधि हुँडियाकरिउसके ऊपर माटी लगाइबंदकरै फिरसेंकदेना ही कागी।

त्समांशकम्। ततोपरिशरावंचभस्ममुद्रांप्रदापयेत् २३ ततोपरिपुटंदत्त्वाचतुर्भिर्गोमयोपलैः। एवंपुनःपुनर्गन्धंषड्गुणंजारयेद्बुधः ॥ गन्धेजीर्णेभवेत्सूतस्तीक्ष्णाग्निःसर्वकर्मसु २४ धूमसारंरसंतोरींगन्धकंनवसादरम्। यामैकंमर्दयेदम्लैर्भागंकृत्वासमांशकम् २५ काचकुप्यांविनिक्षिप्य तांचमृद्वस्त्रमुद्रया। विलिप्यपरितोवक्त्रंमुद्रांदत्त्वाचशोषयेत् २६ अधःसच्छिद्रपिठरीमध्येकूपींनिवेशयेत्। पिठरींवालुकापूरैर्भृत्वाचाकूपिकागलम् २७ निवेश्यचुल्ल्यां तदधःकुर्याद्वह्निंशनैःशनैः। तस्मादप्यधिकंकिञ्चित्पावकंज्वालयेत्क्रमात् २८ एवंद्वादशभिर्यामैर्म्रियतेसूतकोत्तमः। स्फोटयेत्स्वांगशीतंतमूर्ध्वगंगन्धकंत्यजेत्। अधस्थंम्रियतेसूतंसर्वकार्येषुयोजयेत् २९ अपामार्गस्यबीजानांमूषायुग्मंप्रकल्पयेत्। तत्सम्पुटेन्यसेत्सूतंमलयूदुग्धमिश्रितम् ३० द्रोणपुष्पीप्रसूनानिविडङ्गगिरिमेदकम्। एतच्चूर्णमधोर्ध्वंचदत्त्वामुद्रांप्रकल्पयेत् ३१ तंगोलं

न गिरै तब ऊपर से चार बिनुवां कंडाकी आंचदेवे इसीप्रकार छःवार पारा गंधक समानदे चार कडाकी आच देदकर फूंकै तौ पारा तीक्ष्णाग्निकारी होकर सर्व कार्य योग्य होताहै॥२३।२४॥ (अथ पारदभस्मविधि) धुआंकासार (करछुवां) पारा, फटकरी, गंधक और नौसादर इन सब द्रव्योंको समभागले पहरभर नींबूके रसमें घोटि॥२५॥ फिर आतशी शीशीमें भरि कपडौटीकरि धूपमें सुखावै तब एक नांदले बीच पैंदीमें छेदकर उस छिद्रपर अभ्रकधरि उसपर शीशी स्थितकरि ऊपर बालू भरि चूल्हेमें धरि तरे आगिबारि पहर बारह पहले अतिमंद आंचकरि फिर क्रम क्रम आंच तीव्रकरै तौ पारा न उडै सिद्ध होजाय जब सिराय तब शीशी निकारि फोरै उसमें गंधक ऊपर गले में पारातले पैंदीमें होयगा उस गंधक को फेंक पारा समेटिले यह पारा सर्वकार्य योग्य होजाताहै॥ २६।२९ ॥ (पुनः) चिरचिरा बीज पीसि दोमूषा बनाय पारा कठगूलरके दूधमें घोटि॥ ३०। मूषायें अंदरइसचूर्ण के बीचमें पारारखे गुमापुष्प, विडंग, गेरका चूर्ण ऊपर दूसरा मूसाधरि कपडौटी,

संधयेत्सम्यङ्मृन्मूषासम्पुटेत्सुधीः । मुद्रांदत्त्वाशोषयि
त्वाततोगजपुटेपचेत् । एवमेकपुटेनैवजायतेभस्मसूतकम्
३२ काकोदुम्बरिकादुग्धैरसेकिञ्चिद्विमर्दयेत्। तद्दुग्धघृ
ष्टहिङ्गोश्चमूषायुग्मंप्रकल्पयेत् ३३ धृत्वातत्सम्पुटेसूतं
तत्रमुद्रांप्रदापयेत् । धृत्वातद्गोलकंप्राज्ञोमृन्मूषासम्पुटेधि
के ३४ पचेन्मृदुपुटेनैवसूतकोयातिभस्मताम् । नागवल्ली
रसैर्घृष्टःकर्कोटीकन्दगर्भितः । मृन्मूषासम्पुटेपक्वःसूतोया
त्येवभस्मताम्. ३५ खण्डितंमृगशृङ्गञ्चज्वालामुख्यारसैः
समम् । रुद्ध्वाभाण्डेपचेच्चुल्ल्यांयामयुग्मंततोनयेत् ३६ अ
ष्टांशंत्रिकटुंदद्यान्निष्कमात्रंतुभक्षयेत् । नागवल्लीरसैःसार्द्धं
वातपित्तज्वरापहम् ३७ अयंज्वरांकुशोनाम्नारसःसर्वज्वरा
पहः । पारदंरसकंतालंतुत्थंटङ्कणगन्धके । सर्वमेतत्समंशुद्धं
कारवेल्लरसैर्दिनम् ३८ मर्दयेल्लेपयेत्तेनताम्रपात्रोदरंभिष
क् । अङ्गुल्यर्द्धप्रमाणेनततोरुद्ध्वाचतन्मुखम् ३९ विपचेद्वा

करि माटीलेमकै सुखावै एक गजपुट आंचदे ऐसे पारा एकही आंच में भस्म होजाताहै ॥ ३१ । ३२ ॥ (पुनः) कठगूलरके दूधमें पाराघोटि फिर उसी दूधमें हींग पीसि मूसाबनाइ पारा धरि कपड़ौटी करि मांटीके मूसा में धरै पुनः कपड़ौटी करि ॥ ३३ । ३४ ॥ तीस गोइटाकी आंचदे पारा भस्म होताहै (पुनः) पान के रसम पारा घोटि बांझखखसा की जड कोलके भरै इसमें मूंदि कपड़ौटी करै माटी लेप सुखाय थोड़ी आंचमें फूंके से पारा भस्म होता है ॥ ३५ ॥ (अथ ज्वरांकुश) हरिण के सींग चूर्णकरि बराबर जैतका रसले मांटी के बासनमें धरि मुंह मूंदि दोपहरकी आंच देकर उतारिलेवे ॥ ३६ ॥ फिरआठवां अंश त्रिकुटादे पीसे चाररत्ती ज्वरांकुश पानके रसमें खिलावै तौ वात, पित्त. ज्वर नाशकरै ॥ ३७ ॥ यह ज्वरांकुश नामरस सब ज्वरको हरताहै (ज्वरारिरस) पारा, खपरिया हरताल, तूतिया, सुहागा और गंधकये समानशोधि करेलेके रस में एकदिन ॥ ३८ ॥ घोटिके ताम्रपात्रमें आधा अंगुलमोटालेसि पात्रमुखमूंदि ॥ ३९ ॥

लुकायन्त्रेछिप्त्वाधान्यानितन्मुखे।यदास्फुटन्तिधान्यानि तदासिद्धंविनिर्दिशेत् ४० ततोनयेत्स्वाङ्गशीतंताम्रपात्रो दराद्भिषक्।रसंज्वरारिनामानंविचूर्ण्यमरिचैःसमम्४१मा षेकंपर्णखण्डेनभक्षयेन्नाशयेज्ज्वरान्। त्रिदिनैर्विषमंतीव्र मेकद्वित्रिचतुर्थकम् ४२ तालकंतुत्थकंताम्रंरसंगन्धंमन शिलाम्। कर्षंकर्षंप्रयोक्तव्यंमर्दयेत्त्रिफलाम्बुभिः ४३ गोलंन्यसेत्सम्पुटकेपुटंदद्यात्प्रयत्नतः। ततोनीत्वार्कदुग्धे नवज्रीदुग्धेनसप्तधा४४काथेनदन्त्याःश्यामायाभावयेत्स प्तधापुनः।माषमात्रंरसंदेयंपञ्चाशन्मरिचैर्युतम् ४५गुडं गद्यानकंचैवतुलसीदलयुग्मकम्। भक्षयेत्त्रिदिनंभक्त्या शीतारिर्दुर्लभंपरम् ४६ पथ्यंदुग्धौदनंदेयंविषमंशीतपू र्वकम्। दाहपूर्वंहरत्याशु तृतीयकचतुर्थकौ ४७ द्व्याहि कंसनतंचैववैवर्ण्यंचनियच्छति। भागैकःस्याद्रसाच्छुद्धा देलायाःपिप्पलीशिवा ४८ अकारकरभोगन्धःकटुतैलेन

कपड़ौटी करि वालुकायंत्र में धरि यंत्रमुख खुलाराखि आंचदेय जब उस बालू में धानडारे से खीलहोजाय तब जानिये कि रस सिद्ध होगया ॥ ४० ॥ जब स्वभावसे ठंढाहो तब उसे पात्रसे छुड़ायले उस ज्वराङ्कुशके समान मरिच मिलाय पीसलेय एकमाशा पानके टुकड़ेमें धरि खिलावैज्वरको नाशकरै तीनदिन खानेसे अतिकठिनज्वर, अन्तरिया, तिजारी और चातुर्थिकये सब दूरहोयें॥ ४१।४२ ॥ (शीतज्वारि रस) हरताल, तूतिया और तांबा भस्म, शोधा पारा, गन्धक शुद्ध और मैनशिलयें सब कर्ष कर्षभर लेकर त्रिफलाके रसमें घोटै॥४३॥ गोला बांधि कपड़ौटी माटी लेस खूब फूंकिमदार और सेंहुँड़केदूधमें सातभावनादे ॥ ४४॥ फिर जमालगोटा की जडके काढ़ेमें फिर निशोथ के काढ़े में सात भावनादे तब एक माशेरस पचास मरिच ॥४५॥छ माशे गुड़ दो तुलसीदल भक्तिपूर्वक तीन दिन खाय शीतारि रस इसका नाम है बहुत दुर्लभ है ॥ ४६॥पथ्य दूधभातदेय जूड़ी,दाह, ज्वर, तिजारी, चातुर्थिक ॥ ४७ ॥ अन्तरिया, नित्यज्वर और ज्वर जनितविकार सब नाश होवें (अथ ज्वरघ्नी गुटिका) शुद्ध पारा एकभाग

शोधितः। फलानिचेन्द्रवारुण्याश्चतुर्भागमिताह्यमी ४९ एकत्रमर्दयेच्चूर्णमिन्द्रवारुणिकारसे। माषोन्मितांवटींकृत्वादद्यात्सर्वज्वरेभिषक्। छिन्नारसानुपानेनज्वरघ्नीगुटिकामता ५० शुद्धोबुभुक्षितःसूतोभागद्वयमितोभवेत्।तथा गन्धस्यभागौद्वौकुर्यात्कज्जलिकान्तयोः५१ सूताच्चतुर्गुणेष्वेवपारदेषुविनिक्षिपेत्। भागैकंटङ्कणंदत्त्वागोक्षीरेणविमर्दयेत् ५२ तथाशङ्खस्यखण्डानांभागानष्टौप्रकल्पयेत्। क्षिपेत्सर्वंपुटस्यान्तश्चूर्णलिप्तशरावयोः ५३ गर्तेहस्तोन्मितेधृत्वापाच्यंगजपुटेनच। स्वाङ्गशीतंसमुद्धृत्यपिष्ट्वात्तत्सर्वमेकतः५४षड्गुञ्जासम्मितंचूर्णमेकोनत्रिंशदूषणैः। घृतेनवातजेदद्यान्नवनीतेनपैत्तिके ५५ क्षौद्रेणकफजे दद्यादतीसारेक्षयेतथा। अरुचौग्रहणीरोगेकार्श्येमन्दानलेतथा ५६ कासश्वासेषुगुल्मेषुलोकनाथरसोहितः। तस्योपरिघृतान्नंचभुञ्जीतकवलत्रयम्। भवेत्क्षणेकमुत्तानःशयीतानुपधानके ५७ अनम्लमन्नंसघृतंभुञ्जीतमधुरंद

पलुवा, पीपरि, हड़जंगी ॥४८॥ अकरकरहा, कडुआ तेलका शोधागन्धक और इन्दूरन ये चार चार भाग ॥४९॥ इन्दूरनरस में घोटि मापमात्र गोली बांधि तरुणज्वर में गुर्च रस में वैद्य ज्वरघ्नी गुटिकाको खिलावे ॥५०॥ (लोकनाथ रस) पारा बुभुक्षित और धातुभक्षक दोभाग दोनोंको खरलकरि कजरी करै पारेसे चौगुनी कौड़ीकी भस्म पारे समान सुहागा गायके दूधमें घोटै ॥५१॥५२॥ पारेसे अठगुणी शङ्खकी भस्म शुद्ध सब पीसि दो सरवों के भीतर लेस ॥५३॥ दोनोंको सम्पुटकरि वस्त्र लपेटि माटी लगाय गजपुटमें फूंकदे जब ठण्डाहो तब खुरचके निकारै खरल करै ॥५४॥ फिर छःरत्ती यह रस मिरच सङ्ग खरलकरि वातरोगमें घीमें दे पित्तमें मक्खन साथ दे ॥५५॥ कफरोगमें शहदमें दे अतीसार, छर्दि, अरुचि, ग्रहणी, दुर्बलता, मन्दाग्नि ॥५६॥ कास, श्वास और गुल्म(गोला)इन रोगोंमें शहदयुक्त दे इस लोकनाथ पर प्रथम तीन कौर घी भात खाय फिर क्षण-

धि। प्रायेणजाङ्गलंमांसं प्रदेयंघृतपाचितम् ५८ सदुग्ध भक्तंदद्याज्जातेग्नौसान्ध्यभोजने।सघृतान्मुद्गवटकान्व्य ञ्जनेष्वेवचारयेत् ५९ तिलामलककल्केनस्नापयेत्सर्पिषा थवा। अभ्यञ्जयेत्सर्पिषाचस्नानंकोष्णोदकेनच ६० क चित्तैलंनगृह्णीयान्नबिल्वंकारवेल्लकम्। वार्ताकंशफरींचि ञ्चांत्यजेद्व्यायाममैथुने ६१ मद्यंसन्धानकंहिङ्गुशुण्ठी माषान्मसूरिकान्। कूष्माण्डंराजिकांकोलंकाञ्जिकंचैव वर्जयेत् ६२ त्यजेद्युक्तांनिद्रांचकांस्यपात्रेचभोजनम्। ककारादियुतंसर्वंत्यजेच्छाकफलादिकम् ६३ आह्वयेयंलो कनाथस्तुशुभेनक्षत्रवासरे। पूर्णातिथौसितेपक्षेजातेचन्द्र वलेतथा६४पूजयित्वालोकनाथंकुमारींभोजयेत्ततः। दानं दद्याद्द्विघटिकामध्येग्राह्योरसोत्तमः ६५ रसात्सञ्जाय तेतापस्तदाशर्करयायुतम्।सत्त्वंगुडूच्याग्रह्णीयाद्वंशलोच नयायुतम् ६६ खर्जूरंदाडिमंद्राक्षामिक्षुखण्डानिचारयेत्।

भर विना तकिये बिछौने खाटपर उताना सोवे फिर चाहै जैसे शयनकरै ॥ ५७ ॥ खटाई छोड़ मधुर दही अच्छे घृतके सङ्ग अन्नखाय और अवश्य जङ्गली मृगादिपशु भक्ष्य मास घीमें अच्छीतरह भूँजिखाय ॥ ५८ ॥ और सन्ध्याके समय पका अग्नि चशेष दूधभात भोजन करै और मूँगके मोदक अधिक घृतमें बने भोजन सङ्गखाय ॥ ५९ ॥ *तिल, आँवरा पीसि उबटन लगाय वा घी मर्दनकरि न्हाय उष्णोदक से* कमर ताई न्हाय ॥ ६० ॥ तेल न छुवै बेल, करेला, भाटा, मछरी, अमली, श्रम और स्त्रीभोगको त्यागै ॥ ६१ ॥ मद्य, अचार, हींग, सोंठ, उर्द, मसूर, पेठा, राई, बेर और काञ्जीको तजै ॥ ६२ ॥ ओसमें न सोवै कासेमें न खाय ककारादि आम के फल और सागोंको तजै ॥ ६३ ॥ यह लोकनाथरस शुभनक्षत्र, वार, पूर्णातिथि, शुक्लपक्ष, बलवान् चन्द्रमादेखि ॥ ६४ ॥ लोकनाथ रसको पूजि कुँवारी जिंवाय दानदेय द्विघटिका साधि भक्षण आरम्भकरै ॥ ६५ ॥ इसके खाने पर तप आतीहै तब मिश्री, गुर्चका सत और बंशलोचन इन सबको मिलायकर देवे ॥ ६६ ॥ खजूर, अनार, दाख व ऊखकी गँडेरी दे तो रसताप दूरहो धनियाकी छाल दूरि

अरुचौनिस्तुपंधान्यंघृतभृष्टंसशर्करम् ६७ दद्यात्तथाम्बु
सेधान्यंगुडूचीक्वाथमाहरेत्। उशीरंधान्यकक्वाथं दद्यात्सम
धुशर्करम् ६८ रक्तपित्तेकफेश्वासेकासेचस्वरसंक्षये। अग्नि
भृष्टंजयाचूर्णमधुनानिशिलेहयेत् ६९ निद्रानाशेऽतिसारेच
ग्रहण्यांपावकक्षये। सौवर्चलाभयाकृष्णाचूर्णमुष्णजलैः
पिबेत् ७० शूलेऽजीर्णेतथाकृष्णामधुयुक्ताज्वरेहिता। छर्दौ
रेवातरक्तेश्चर्यांचैवगुदाङ्कुरे ७१ नासिकाश्रुतिरक्तेचरसंदा
डिमपुष्पजम्। दूर्वायाःस्वरसंनस्येप्रदद्याच्छर्करान्वितम्
७२ कोलमज्जाकणाबर्हिपक्षभस्मसशर्करम्। मधुनालेह
येच्छर्दिहिक्काकोपप्रशान्तये ७३ विधिरेषप्रयोज्यस्तुसर्व
स्मिन्पोटलीरसे। मृगाङ्कहेमगर्भमौक्तिकाख्येप्रपञ्चाह्व
स्येवंलोकनाथोक्तोरसःसर्वरुजोजयेत् ७४ मूलंवल्लुस्त्रा
णिहेम्नःसूक्ष्माणिकारयेत्। तुल्यानितानिसूतेनखल्वेक्षि
प्त्वाविमर्दयेत् ७५ काञ्चनाररसेनैवज्वालामुख्यारसेनवा।

करि घीमें भूंजिके चूर्ण करि मिश्री मिलाय खिलावै ॥ ६७ ॥ इसी तरहसे धनियां गुर्चका काढादे, खस व धनियेका काढादे, मधु व मिश्रीको मिलायदे ॥ ६८ ॥ रक्तपित्त, कफ, श्वास, कास और स्वरभंग ये सब अच्छे होयँ भांग भूंजि चूर्ण करि लोकनाथसंयुक्त रातको खिलावै ॥ ६९ ॥ तथा नींदनाश, अतीसार, संग्रहणी व मन्दाग्निमें सोचर, हड़ व पीपरिसाथ रसदेकर गरमपानी पिलावै ॥ ७० ॥ तो शूल व अजीर्ण को दूरिकरै पीपरि शहदयुक्त खाय तो ज्वरको, वातरक्त, छर्दि व बवासीर को दूरिकरै ॥ ७१ ॥ (नासार्श कारण) अनाररस में दे दूबरस मिश्री लोकनाथरसयुक्त नासदे ॥ ७२ ॥ बेरमिंगी, पीपरि, मोरपंखकी भस्म, मिश्री, शहदयुक्त खाय तो छर्दि व हिचकी को दूरिकरै ॥ ७३ ॥ ये जो भांति भांति के अनोपान लोकनाथमें कहे सो पोटली के रसमें भी सब उसी रीतिसे देनाचाहिये जैसे मृगांक, हेमगर्भ, मौक्तिकाख्य और पंचामृतादि पोटलिकारस इनसबों में लोकनाथोक्तरीति सदृश करै तो सम्पूर्णरोग अच्छेहों ॥ ७४ ॥ (मृगांकपोटलीरस क्षयादि पर) सोनेका पत्र समानभाग सोने के सम पारा मिलायें खरल

लाङ्गल्यावारसैस्ताबद्यावद्बवतिपिण्टिका, ७६ ततोहेम्न श्चतुर्थांशंटङ्कणंतत्रनिःक्षिपेत् । पिष्टंमौक्तिकचूर्णंचहेमं द्विगुणमाहरेत् ७७ तेषुसर्वसमंगन्धंक्षिप्त्वाचैकत्रमर्दये त् । तेषांकृत्वाततोगोलंवासोभिःपरिवेष्टयेत् ७८ पश्चा न्मृदावेष्टयित्वाशोषयित्वाचधारयेत् । शरावसम्पुटस्यान्ते तत्रमुद्रांप्रदापयेत् ७९ लवणापूरितंभाण्डेस्थापयेत्तंचस म्पुटे । मुद्रांदत्त्वाशोषयित्वाबहुभिर्गोमयैःपुटेत् ८० ततः शीतेसमाहृत्यगन्धंसूतसमंक्षिपेत् । घृष्ट्वाचपूर्ववत्खल्वेपु टेद्गजपुटेनच ८१ स्वाङ्गशीतंततोनीत्वागुञ्जायुग्मंप्रयो जयेत् । अष्टभिर्मरिचैर्युक्तःकृष्णात्रयमथापिवा ८२ वि लोक्यदेयादोषादित्तैक्त्वरसरक्तिका । सर्पिषामधुनावापि देयादोषाद्यपेक्षया ८३ लोकनाथसमंपथ्यंकुर्यात्स्वस्थम नाःशुचिः । श्लेष्माणंग्रहणींकासंश्वासंक्षयमरोचकम् । मृगाङ्कोयंरसोहन्यात्कृशत्वंबलहानिताम् ८४ सूतात्पाद

करै ॥ ७५ ॥ कचनार का रस वा अरणीरस वा करिआरस में घोटे जबतक गोला बंधजाय ॥ ७६ ॥ सोने का चौथ्याई सुहागादे और सोनेका दूना मोती का चूनादे ॥ ७७ ॥ इनसबके समान गंधकदे सब खरलकरि गोलाबांधि रूर क- पड़ा लपेटे ॥ ७८ ॥ फिर माटी से लेस सुखाय शरावसंपुट करि ॥ ७९ ॥ लोन पूरित पात्रमें संपुटधरै उसका मुंहसुखाय गजपुट में फूंकदे ॥ ८० ॥ ठंढाभयेपर नि- कारिकै सोने के समान पारा और सोने समान गंधकको युक्तकरि पूर्ववत् रसमें खरलकरि फिर उसीक्रिया से गजपुट में फूंकै ॥ ८१ ॥ जब ठंढाहो तब निकासि दो गुंजा रस आठ मिरच वा तीन पीपरि के संगदे ॥ ८२ ॥ और दोषको विचारि के आपर रत्तीभर घाट वा बाद समझके देइ घी अथवा शहदके साथ दोष वि- चारिकै देनाचाहिये ॥ ८३ ॥ पथ्य लोकनाथसदृश इसमें भी देना योग्य है चित्त एकाग्रकरि अतिपवित्र होकर खावे तौ श्लेष्मा, ग्रहणी, कास, श्वास, क्षयी और अरुचि इन रोगों को यह मृगांकरस दूर करता, व बलहीनको बलवान् करताहुआ,

प्रमाणेनहेमपिष्टिंप्रकल्पयेत् । तयोःस्याद्द्विगुणोगन्धोम
र्दयेत्काञ्चनारिणा ८५ कृत्वागोलंक्षिपेत्मूषासम्पुटेमुद्रये
त्ततः । पचेद्भूधरयन्त्रेणवासरत्रितयंबुधः ८६ ततःउद्धृत्य
तत्सर्वं,दद्याद्गन्धंचतत्समम् । मर्दयेदार्द्रकरसैश्चित्रकस्य
रसेनवा ८७ स्थूलपीतवराटांश्च पूरयेत्तेनयत्नतः ।
एतस्मादौषधात्कुर्यादष्टमांशेनटङ्कणम् ८८ टङ्कणार्द्ध
विषंदत्त्वापिष्ट्वासेहुण्डदुग्धकैः । मुद्रयेत्तेनकल्केनवराटा
नांमुखानिच ८९ भाण्डेचूर्णप्रलिप्याथ धृत्वामुद्रांप्रदाप
येत् । गर्तेहस्तोन्मितेधृत्वापुटेद्गजपुटेनच ९० स्वा
ङ्गशीतंरसंनीत्वाप्रदद्याल्लोकनाथवत् । पथ्यंमृगाङ्कव
द्देयंत्रिदिनंलवणंत्यजेत् ९१ यदाच्छर्दिर्भवेत्तस्यदद्या
च्छिन्नारसंतदा । मधुयुक्तंतदाश्लेष्मकोपेदद्याद्गुडार्द्रक
म् ९२ विरेकेभर्जिताभङ्गाप्रदेयादधिसंयुता । जयेत्कासं
क्षयंश्वासंग्रहणीमरुचिन्तथा ९३ अग्निंचकुरुतेदीप्तं

दुर्बलको मोटा करताहै॥८४॥ (कफक्षयीपर हेमपोटलीरस)पारा,पारेकी चौथ्याई सोनाले खरलकरै जबै पीठी होजाय तब दोनोंसे दूनी गंधकदे कचनारके रसमें घोटि गोलाकरै ॥ ८५ ॥ सो मूषायंत्र में भरि संपुटकरि कपरलपेट माटी लगाय सुखाय भूधरयंत्रमें फूंकदे भूधरयंत्र एकहाथ गहिरा, लंबा व चौड़ा खोदि तिसमें छोटागढ़ा खोदि औषधरख माटीसे दाबि तिसपर बिनुवांकंडा अलसी करि बड़े गढ़ेमें भरि तीनदिन आंचदे ॥ ८६ ॥ जब स्वभावसे शीतलहो तब निकारि समान गंधकले अद्रक वा चीतेके रसमें घोटि॥ ८७ ॥ बड़ी पीली कौड़ी में भरि औषधका अष्टमांश सुहागा॥ ८८ ॥ सुहागे का आधा सिंगिया दोनों सेंहुड़के दूधमें पीसि कौड़ी का मुख बंदकरि ॥ ८९ ॥ फिर माटीपात्रमें चूनालेसि कौड़ी में भरि दूसरे दिवस बंदकरि मुद्रितकरि गजपुटसे आंचदे ॥ ९० ॥ ठंढाभये निकारि लोकनाथकी रीति से खिलावै व मृगांककी रीति से पथ्यदे तीनदिन लोन वर्जितरहै॥ ९१ ॥ जो छर्दि होय तौ गुर्चका रस दा काथ मधुयुक्तदे कफवृद्धि में गुड़ अद्रकरस युक्तदे ॥ ९२ ॥ अतीसारमें भूनीभांग व हींग दोनोंके संगदे तथा

कफवातंनियच्छति। हेमगर्भःपरोज्ञेयोरसःपोटलिकाभि
धः९४ रसस्यभागाश्चत्वारस्तावन्तःकनकस्यच। तयो
श्चपिष्टिकांकृत्वागन्धोद्वादशभागिकः ९५ कुर्यात्कज्ज
लिकांतेषांमुक्ताभागाश्चषोडश। चतुर्विंशञ्चशङ्खस्य
भागोकंटङ्कणस्यच ९६ एकत्रमर्दयेत्सर्वंपक्वनिम्बुकजैर
सैः। कृत्वातेषांततोगोलंमूषासम्पुटकेन्यसेत् ९७ मुद्रांद
त्त्वाततोहस्तमात्रेगर्तेचगोमयैः। पुटेद्गजपुटेनैवस्वाङ्ग
शीतंसमुद्धरेत्९८ पिष्ट्वागुञ्जाचतुर्मानंदद्याद्व्योषाज्यसंयु
तम्। एकोनत्रिंशदुन्मानमरिचैःसहदीयते९९ राजतेमृन्म
येपात्रेकाचजेवापिलेहयेत्। लोकनाथसमंपथ्यंकुर्यात्तस्य
तमात्तसः१०० कासेश्वासेक्षयेवातेकफेग्रहणिकागदे। अ
तीसारेप्रयोक्तव्यापोटलीहेमगर्भिका १ शुद्धसूतोविषंगन्धं
प्रत्येकंशाणसम्मितम्। धूर्तबीजंत्रिशाणंस्यात्सर्वेभ्योद्वि
गुणोभवेत् २ हेमाभंकारयेदेषांचूर्णंसूक्ष्मंप्रयत्नतः। देयं

कास, क्षयी, श्वास, ग्रहणी व अरुचि इनमें भी देही व भंगके साथदे ॥ ९३ ॥ अग्निदीपन व कफवातनाशन होकर यह हेमपोटलीरस श्रेष्ठ कहाताहै ॥ ९४ ॥ (पुनर्हेमगर्भरस कास पर) पारा चारभाग व सोना चारभाग इन दोनों की पीठीकरि द्वादशभाग गंधकदे ॥ ९५ ॥ व तीनोंको काजलीकरि, सोलहभाग मोती चौबीस भाग शङ्ख व एकभाग सुहागा ॥ ९६ ॥ ये सब एकत्र करि पके नींबूके रस में घोटि गोलाबांधि मूषापुट में धरि मुद्रा साधि ॥ ९७ ॥ सुखाय हाथभर भूमिको खोदि उसमें धराय हाथभर कंडा भराय फूंकिदे जब शीतल होजावे तब निकारि धरे ॥ ९८ ॥ चारिरत्ती रस मिर्च उन्तीस गोघृतमें पीसिदेवे ॥ ९९ ॥ चांदी वा माटी वा कांचके पात्रमें धरि खिलावै और लोकनाथ रस सम पथ्य बतावै ॥ १०० ॥ तो यह कास, श्वास, क्षयी, वात, कफ, ग्रहणी व अतीसारवाले को देय यह हेमगर्भ पोटली इन सब रोगनको हरती है ॥ १ ॥ पारा गंधक विष शोधे चारि चारि मासे धतूराबीज बारहमासे सबका दूना ॥ २ ॥ चोक चोक विना फूट सब सुक्त

जम्बीरमज्जाभिश्चूर्णं गुञ्जाद्वयोन्मितम् ॥ ३ ॥ आर्द्रकस्वर सैर्वापिज्वरं हन्ति त्रिदोषजम्। एकाहिकं द्व्याहिकं वा तृतीयं वा चतुर्थकम्। विषमञ्चज्वरं हन्यात् ख्यातोयं ज्वराङ्कुशः ॥ ४ ॥ दरदं वत्सनाभं च मरिचं टङ्कणं कणाम्। चूर्णयेत्सम भागेन रसो ह्यानन्दभैरवः ॥ ५ ॥ गुञ्जैकं वा द्विगुञ्जं वा बलं ज्ञात्वा प्रयोजयेत्। मधुना लेहयेच्चापि कुटजस्य फलत्वचम्। चूर्णितं कर्षमात्रन्तु त्रिदोषोत्थातिसारजित् ॥ ६ ॥ दध्यन्नं दापयेत्पथ्यं गव्याज्यं तक्रमेव वा। पिपासायां जलं शीतं विजयां च हितां निशि ॥ ७ ॥ विषं पलमितं सूतः शाणिकश्चूर्णये द्द्वयम्। तच्चूर्णं सम्पुटे धृत्वा काचलिप्तशरावयोः ॥ ८ ॥ मुद्रां दत्वा च संशोष्य ततश्चुल्ल्यां निवेशयेत्। वह्निं शनैः शनैः कुर्यात्प्रहरद्वयसङ्ख्यया ॥ ९ ॥ तत उत्पाट्य तन्मुद्रामुपरिस्थशरावकात्। संलग्नो यो भवेद्धूमः संग्रहणीयाच्छनैः शनैः ॥ १० ॥ वायुस्पर्शो यथा न स्यात्ततः कूप्यां निवेशयेत्।

करि सूक्ष्म चूर्णकरि दो गुंजा रस जंभीरी के ॥ ३ ॥ वा अदरकरस में दे त्रिदोष जनित ज्वर नाशकरै नित्य आनेवाला, अंतरिया, तिजरिया, चातुर्थक व विषम ज्वर को यह ज्वरांकुश निश्चय कर नाश करता है ॥ ४ ॥ (आनन्दभैरवरस अतीसारपर) शुद्ध सिंगरफ, सिंगिया, मिरच, सुहागा व पीपरि ये सब समानले महीन चूर्णकरिये यह आनन्दभैरवरस ॥ ५ ॥ रोगीका बलदेखि एक गुंजा वा दो गुंजा इन्द्रयव व कुरयाछाल इन दोनों को दशमासे पीसि रसयुक्त शहदमें मिलाय चटावै तौ त्रिदोषजन्य अतीसार दूरहोय ॥ ६ ॥ गऊका दही वा घृत वा मट्ठा पथ्य भातसाथ खाय ठंढा पानी पिलावै और भांग अच्छीतरह धोय बनाय रातको पिलावै ॥ ७ ॥ (सन्निपातपर लघुसूचिकाभरण) सिंगिया १ पल पारा ४ मासे दोनों खरलकरि दो परई कांच के लुकसों हुई में धरिके ॥ ८ ॥ मुद्राकरि सुखाय चूल्हेपर चढ़ाय मंदमंद दो पहरकी आंचदेय ॥ ९ ॥ दोनों उदाकरि ऊपर के सरवा में लगा धुआं होले से छीलले ॥ १० ॥ जिस पात्र में पवन न जासकै वा शीशी में धरै सूचीमुखी शीशी करिलेइ "सू-

यावत्सूचीमुखेलग्नंकूप्यांनिर्यातिभेषजम् ११ तावन्मा
त्रोरसोदेयोमूर्च्छितेसन्निपातिनि । क्षुरेणप्रच्छितेमूर्धनितं
तोङ्गुल्याचघर्षयेत् १२रक्तभेषजसम्पर्कान्मूर्च्छितोपिहि
जीवति । तथैवसर्पदष्टस्तुमृतावस्थोपिजीवति । यदाता
पोभवेत्तस्यमधुरंतत्रदीयते १३ सूतभस्मसमंगन्धंगन्धा
द्पादंमनःशिला । माक्षिकंपिप्पलीव्योषंप्रत्येकंशिलया
समम् १४ चूर्णयेद्भावयेत्पित्तैर्मत्स्यमायूरसम्भवैः । सप्त
धाभावयेच्छुष्कंदेयंगुञ्जाद्वयोन्मितम् १५ तालपर्णीरसै
श्चानुपञ्चकोलशृतोपिवा । जलबुन्दोरसोनामसन्निपातं
नियच्छति । जलयोगश्चकर्तव्यस्तेनवीर्यभवेद्रसः १६
शुद्धसूतंविषंगन्धंमरिचंटङ्कणंकणा । मर्दयेद्धूर्तजैर्द्रावैर्दिन
मेकंचशोषयेत् १७पञ्चवक्त्रोरसोनामद्विगुञ्जःसन्निपातहा ।

चीपुल एक सुई समले कहे उसकामुख सुई समानहो उसे सूचीमुख कहते हैं" उससे जितना निकसै ॥ ११ ॥ तितना सन्निपातमूर्च्छितका शिर मुड़ाय पछने देय जो रक्त निकले उसी घावपर उस रसको अँगुरी से मलै ॥ १२ ॥ जो रुधिर व रस में मिलजाय तो मूर्च्छित जागै तैसेही सांपका काटा जागै फिर इसे इस उपचार से तापआवै तब उस रोगी को मधुर अर्थात् गंडेरी, अनार, छुहारा व दाखादि को खिलावै ॥ १३ ॥ (सन्निपात पर जलबुन्दरस) पाराभस्म समान गन्धककी चौथ्याई मैनशिल, सोनामाखी, पीपरि, सोंठि, मिर्च सब मैनशिल समान ले ॥ १४ ॥ खरलकरि मछरी के पित्तमें सात भावनादे तैसेही मयूरपित्त में सात भावनादे सुखाय दो गुंजा खवावै ॥ १५ ॥ श्वेत मुसली के रसमें और पंचकोल, सोंठि, मिर्च, पीपरि, चाव व चीता इनके काढ़े में दे यह जलबुन्दरस सन्निपातको दूर करता है जल ठण्ढा पियै व ठण्ढे जल से हाथ मुँह धोवै व जल का स्पर्श राखै तो औषध बल पातीहुई सन्निपात को दूर करती है ॥ १६ ॥ (सन्निपात पर पंचवक्त्ररस) ॥ शुद्धपारा, सिंगिया, गन्धक, मिरच, सुहागा, पीपरि व धतूराके रसमें एक दिन मर्दनकरै घाममें सुखावै ॥ १७ ॥

१ जलबद्धोरसोनामेतिपाठान्तरम् ॥

अर्कमूलकषायन्तु सत्र्यूषमनुपाययेत् १८ युक्तं दध्योदनं पथ्यं जलयोगं च कारयेत्। रसेनानेन शाम्यन्ति सन्न्यासोद्रेणकफोद्भवाः १९ मध्वार्द्रकरसं चानुपिबेदग्निविवृद्धये ॥ यथेष्टं घृतमांसाशी शक्तो भवति पावकः २० रसगन्धौ समानांशं धत्तूरफलजै रसैः। मर्द्दयेद्दिनमेकन्तु तत्तुल्यं त्रिकटु क्षिपेत्। उन्मत्ताख्यो रसो नाम्ना नस्येर्यात्सन्निपातजित् २१ निस्त्वग्जेपालबीजं च दशनिष्कं विचूर्णयेत् । मरिचं पिप्पलीं सूतं प्रतिनिष्कं विमिश्रयेत् २२ भाव्यो जम्बीरजैर्द्रावैः सप्ताहं सम्प्रयत्नतः। रसोयमञ्जने दत्तः सन्निपातं विनाशयेत् २३ सूतं टङ्कणकं तुल्यं मरिचं सूततुल्यकम्। गन्धकं पिप्पलीशुण्ठी द्वौ द्वौ भागौ विचूर्णयेत् २४ सर्वतुल्यं क्षिपेद्दन्तीबीजं निस्तुषितं भिषक्। गुञ्जैकं रेचनं सिद्धं नाराचोयं महारसः। । आध्मानं मलविष्टंभमुदावर्त्तं च नाशयेत् २५

यह पंचवक्र रस दो गुंजा सन्निपात में देइ तौ सन्निपात दूर होजाय॥ (मदारमूल क्वाथ) सोंठि, मिरच व पीपरि के सङ्ग दे यही अनुपान है॥ १८॥ पथ्य दही भातदे और जलयोग करे जलमें बैठि ओपरसाप रहन सई देय तौ कफजनित उपद्रव अच्छे होयँ॥ १९॥ अद्रक शहद सड्डेय तौ अग्नि दीपन करै और यथायोग्य घृत, मास खाई तौ अग्नि मैदन करै॥ २०॥ (सन्निपात पर उन्मत्तरस) पारा, गन्धक सम भागले धतूरफलके रससे खरल करि तिसके समान त्रिकुटा दे पीसि इस उन्मत्तरसको नासदेने से सन्निपात दूरहोता है॥ २१॥ (सन्निपात पर अञ्जन) जमालगोटा छीलि छिला दूरकरि चालिस माशे चूर्ण करै मिरच, पीपरि व सोंठि चार चार मासे ले॥ २२॥ जंभीरीरस में सात दिन घोटि अञ्जन करै तौ सन्निपात दूरहोय॥ २३॥ (शूलपर नाराचरस) पारा, सुहागा समभाग करि समान मिरच, गन्धक, पीपरि व सोंठि दो २ भागले खरल करै॥ २४॥ सब के समान शुद्ध जमालगोटा दे एकत्रकरि खरलकरै गुंजाभर देने से रेचन होय यह नाराच नामरस आध्मान, मलविष्टम्भ व उदावर्त्त ये सब रोग नाश करता है॥ २५॥

दरदंटङ्कणंशुण्ठी पिप्पलीचैककार्षिकाः ॥ हेमाह्वापलमात्रास्याद्दन्तीबीजंचतत्समम् २६ विचूर्ण्यैकत्रसर्वाणिगोदुग्धेनैवसाधयेत् । त्रिगुञ्जंरेचनंदद्याद्विष्टम्भाध्मानरोगिषु २७ सूतभस्मत्रिभागंस्याद्भागैकंहेमभस्मकम् । मृततास्यभागैकंशिलागन्धकतालकम् २८ प्रतिभागद्वयंशुद्धमेकीकृत्यविचूर्णयेत् । वराटान्पूरयेत्तेनछागीक्षीरेणटङ्कणम् । पिष्ट्वातेनमुखंरुद्ध्वामृद्भाण्डेसन्निरोधयेत् २९ शुष्कंगजपुटेपक्त्वाचूर्णयेत्स्वाङ्गशीतलम् । रसोराजमृगाङ्कोयंचतुर्गुञ्जःक्षयापहः । दशपिप्पलिकाक्षौद्रैरेकोनत्रिंशदूषणैः ३० शुद्धंसूतंद्विधागन्धंकुर्यात्खल्वेनकज्जलीम् । तयोःसमंतीक्ष्णचूर्णंमर्दयेत्कन्यकाद्रवैः ३१ द्वियामान्तेकृतंगोलंताम्रपात्रेनिधापयेत् । आच्छाद्यैरण्डपत्रेणयामाद्वैत्युष्णतांभवेत् ३२ धान्यराशौन्यसेत्पश्चादहोरात्रात्समुद्धरेत् ।

(शूलपर इच्छाभेदीरस) शुद्धशिंगरफ, सुहागा, सोंठि व पीपरि कर्ष कर्ष भर, चोक पलभर जमालगोटा पलभर ॥ २६ ॥ सब खरलकरि गोदूध में तीन गुंजा रेचनार्थ देय इस इच्छाभेदी रससे विष्टम्भ व आध्मान दूरहो ॥ २७ ॥ (क्षयीपर राजमृगांकरस) पाराभस्म तीन भाग, सोनाभस्म एक भाग ताम्रभस्म एक भाग, मैनशिल, शुद्धगन्धक, हरताल ॥ २८ ॥ दो २ भाग सब घोटि कौडी में भरि, बकरी के दूध में सुहागा पीसि, कौडीका मुख मूँदि माटी पात्रमें धरि सम्पुटकरि ॥ २९ ॥ सुखाय गजपुटमें फूंकदेय जब सिराय तब खरलकरे इस राजमृगांक रसको चारगुंजा देय तो क्षयी क्षयदोषको नाशै दश पीपरि शहद वा उन्तीस मिरच शहद संगदेय ॥ ३० ॥ (छर्दिपर स्वच्छन्दभैरवरस) शुद्ध पारेसे दूनी शुद्धगंधक खरलकरि कजलीकरि दोनोंके समान पौलादकी भस्मले सबको घीकुवारके रसमें ॥ ३१ ॥ दो पहरभर घोटि तामन में रख रेंडीपत्तेसे ढापि आधे पहरभर धूपमें धरे उष्णहोय ॥ ३२ ॥ तब नाजकी राशिमें एक दिनरात डारि

१ मृताभ्रंघेतिपाठान्तरम् ॥

संपीड्यगालयेद्वस्त्रेततोवारितरंभवेत् ३३ त्रिकटुत्रिफलैलाभिर्जातीफललवङ्गकैः। नवभागोन्मितैरेतैःसमःपूर्वरसोभवेत् ३४ सञ्चूर्ण्यलोडयेत्क्षौद्रैर्भक्ष्यंनिष्कद्वयंद्वयम्। अयमग्निरसोनाम्नाक्षयकासनिकृन्तनः ३५ सूतार्धगन्धकोमर्द्योयामैकंकन्यकारसैः। द्वयोस्तुल्यंताम्रपत्रंपूर्वकल्केनलेपयेत् ३६ दिनैकंस्थालिकायन्त्रपक्कमादायचूर्णयेत्। सूर्य्यावर्तोरसोह्येषद्विगुञ्जःश्वासजिद्भवेत् ३७ शुद्धंसूतंमृतंलोहंताप्यंगन्धकतालकम्। पथ्याग्निमन्थनिर्गुण्डीत्र्यूषणंटङ्कणंविषम् ३८ तुल्यांशंमर्दयेत्खल्वेदिनंनिर्गुण्डिकाद्रवैः। मुण्डीद्रवैर्दिनैकन्तुद्विगुञ्जंवटकीकृतम् ३९ भक्षयेद्वातरोगार्तोनाम्नास्वच्छन्दभैरवः। रास्नामृतादेवदारुशुण्ठीवातारिजंशृतम्। सगुग्गुलुंपिबेत्कोष्णमनुपानंसुखावहम् ४० दग्ध्वाकपर्दिकान्पिष्ट्वात्र्यूषणंटङ्कणंविषम्।

कै निकारि लेय फिर खरलकरि वस्त्रमें छानिले तब जलपर डारै तौ तिरैगी ॥ ३३ ॥ त्रिकुटा त्रिफला इलायची जायफल लोंग ये सब नवभाग इन सब समान स्वयमग्निरस ले ॥ ३४ ॥ ये सब खरलकरि शहद में दो निष्क खाय यह अग्निरस क्षयी व कास को नाश करता है ॥ ३५ ॥ (श्वासपर सूर्य्यावर्त्तरस) पारा की आधी गन्धक पहरभर घीकुवार के रसमें घोटि दोनों के सम तांबेका पात ले तिसपर लेपकरि यह कजरी ॥ ३६ ॥ एक दिन थालीयंत्र में पकाय ऐंचले थालिकायन्त्र माटीकी हांडीमें लोनभरि तिसपै तांबेका पत्रधरि मुँहमूंदि कपडौटी करि फूंक देय यह सूर्य्यावर्तरस पीसि दो गुंजा खवावै तौ श्वास नाशकरै ॥ ३७ ॥ (स्वच्छन्दभैरवरस) शुद्धपारा, मरालोहा, सोनामासी, गंधक, हरताल, हड, अरणी, मेवडी, त्रिकुटा, भुनासुहागा, सिंगिया, मेवडीरस ॥ ३८ ॥ त्रिकुटा, भुना सुहागा, सिंगिया व मेवडी रसमें सब मिलाय समान खरल करि फिर एक दिन गोरखमुंडीके रसमें खरल करि दो गुंजाके समान गोलीकरै ॥ ३९ ॥ यह स्वच्छन्द भैरवरस वातरोगी को खिलावै तथा रासन, गुर्च, देवदारु, सोंठ व रण्डकीजड़ इनका काढाकरि गुग्गुलयुक्त गरम इसके सङ्ग पिलावै यह अनुपान सुखदायी

गन्धकंशुद्धसूतञ्चतुल्यंजम्बीरजैर्द्रवैः. ४१ मर्दयेद्रक्षये न्माषंमरिचाज्यंलिहेदनु । निहन्तिग्रहणीरोगंपथ्यंतक्रौद नंहितम् ४२ मृतंताम्रमजाक्षीरैःपाच्यंतुल्यैर्गतद्रवैः । त त्ताम्रंशुद्धसूतञ्चगन्धकंचसमंसमम् ४३ निर्गुण्डीस्वर सेर्मर्द्यदिनंतद्गोलकंन्नजेत्।यामैकंवालुकायन्त्रेपाच्यंयोज्यं द्विगुञ्जकम् ४४ बीजपूरकमूलञ्चसजलंचानुपाययेत् । रसस्त्रिविक्रमोनाम्नामासैकेनाश्मरीप्रणुत् ४५ तालंता प्यंशिलांसूतंशुद्धंसैन्धवकङ्कणाम् । समांशंचूर्णयेत्खल्वे सूताद्द्विगुणगन्धकम् ४६ गन्धतुल्यंमृतंताम्रंजम्बीरे दिनपञ्चकम् । मर्द्यंषड्भिःपुटैःपाच्यंभूधरेसम्पुटेपचेत् । पुटेपुटेद्रवैर्मर्द्यंसर्वमेतत्तुषट्पलम् ४७ द्विपलंमारितंताम्रं लोहभस्मचतुष्पलम् । जम्बीराम्लेनतत्सर्वंदिनंमर्द्यंपुटे लघु ४८ त्रिंशदंशंविषंचास्याक्षिप्त्वासर्वंविचूर्णयेत् । म

है ॥ ४० ॥ (हंसपोटली ग्रहणीपर) भुनी कौडी पीसि सोंठ, मिर्च, पीपरि, सुहागा, सिंगिया, गन्धक और शुद्धपारा इन सब द्रव्योंको समानले जंभीरी के रसमें ॥ ४१ ॥ खरलकरि माशा एकभर मरिच व घीकेसाथ खाय तब ग्रहणी नाशहोय माठा भात पथ्य देय ॥ ४२ ॥ (त्रिविक्रमरस अश्मरीपर) मरा तांबा, बकरी दूध समानले किसी पात्रमें धरि आंचदे दूधतरै उतारिले तब तांबे के समान शुद्धपारा, गन्धक ॥ ४३ ॥ मेवडीके रसमें एक दिन घोटि गोलीकरि मूसायन्त्र में भरि बालुकायन्त्र में आंचदे तब दो गुंजा खिलावै ॥ ४४ ॥ बिजौरा की जडके रसमें वा काढेमें यह रसदेय इस रसका त्रिविक्रम नामहै माशेभर सेवन करै तो पथरीको दूर करता है ॥ ४५ ॥ (कुष्ठपर महातालेश्वर रस) हर- ताल, सोनामाखी, मैनशिल, पारा, सैंधव व सुहागा ये सब समान खरलकरि पारे से दूनी गन्धकदे ॥ ४६ ॥ गन्धकके तुल्य मरा तांबा जंभीरी के रसमें पांच दिन घोटि शरावसम्पुट में धरि कपडौटी करि भूधरयन्त्र में फूंकदे ऐसे छःबार फूंकदे फिर निकारि बिजौरामें पांच दिन घोटै पूर्ववत् आंचदे तब छःपल रसले ॥ ४७ ॥ मरा तांबा दोपल व लोह मरा चारपल ये दोनों जंभीरी रसमें एक दिन

हिषाज्येनसम्मिश्रंनिष्कार्द्धंभक्षयेत्सदा ४९ मध्वाज्यैर्बा
कुचीचूर्णंकर्षमात्रंलिहेदनु । सर्वकुष्ठंनिहन्त्याशुमहाता
लेश्वरोरसः ५० सूतभस्मसमोगन्धो मृतायस्ताम्रगुग्गु
लू। त्रिफलाचमहानिम्बश्चित्रकश्चशिलाजतु ५१ इत्ये
तच्चूर्णितंकुर्यात्प्रत्येकंशाणषोडश। चतुष्षष्टिकरञ्जस्य
बीजचूर्णंप्रकल्पयेत् ५२ चतुष्षष्टिमृतंचाभ्रंमध्वाज्याभ्यां
विलोडयेत्। स्निग्धभाण्डेघृतंखादेद् द्विनिष्कंसर्वकुष्ठनु
त्। रसःकुष्ठकुठारोयं गलत्कुष्ठनिवारणः ५३ शुद्धंसूतं
द्विधागन्धंमर्द्यंकन्याद्रवैर्दिनम्। तद्गोलंपिठरीमध्येताम्र
पात्रेणरोधयेत्। सूतकाद्द्विगुणेनैवशुद्धेनाधोमुखेनच ५४ पा
र्श्वेभस्मनिधायाथपात्रोर्ध्वंगोमयंजलम्। किञ्चित्किञ्चि
त्प्रदातव्यंचुल्ल्यांयामद्वयंपचेत्। चण्डाग्निनातदुद्धृत्य
स्वाङ्गशीतंसमुद्धरेत् ५५ काष्ठादुम्बरिकावह्नित्रिफलारा

घोटि दश गोइटा में आचदे ॥ ४८॥ इस भस्मका तीसवा अंश सिंगियादे रारल करै तब दोमाशे भसके घीमें नित्य खाय ॥ ४६ ॥ इसके पीछे बकुचीका चूर्ण दश माशे शहदयुक्त घीके साथ खाय तौ सब कुष्ठ नाशहोवैं इसका नाम महातालेश्वर है॥ ५० ॥ (कुष्ठकुठाररस) पारा भस्म, गन्धक, मरालोहा, ताम्र गुग्गुल, त्रिफला, बकायन, चीता और शुद्धशिलाजीत ॥ ५१ ॥ ये द्रव्य सोलहशाण चौंसठि शाण करंज बीजका चूर्ण ॥ ५२ ॥ अभ्रक भस्म ६४ शाण सब इकट्ठी करि शहद और घीमें मिलाय समान घृत भाडमें भरि धरि इसे ओंठमाशे खिलावै तौ सब कुष्ठ दूरकरै यह कुष्ठकुठार रस गलित कोढ भी नाशकरता है ॥ ५३ ॥ (उदयादित्यरस) शुद्ध पारा व दूनी गन्धक एक दिन घीकुवार के रसमें मर्दन करि गोली बांधि माटीके पात्रमें धरि पारेसे तिगुणा तांबेकी गहरी कटोरी बनाय उस माटीपात्र के भीतर गोलेपर ढांपि किसी वस्तु से निःसंधिकरि बंद करि ॥ ५४ ॥ चारों ओर ढकने के रासभरि चूल्हे पर धरि दोपहर आचदेय और उस तांबेके ढकनेपर पानीमें गोबर घोलि थोडा थोडा छोडता जाय अन्त में तीव्र आचदेय ठंढा भये उतारि ॥ ५५ ॥ कठगूलर, चीता, त्रिफला, अम॰

जयन्तकम् । विडङ्गबाकुचीबीजं क्वाथयेत्तेनभावयेत् ५६ दिनैकमुदयादित्योरसोदेयोद्विगुञ्जकः । विचर्चिकांदद्रुकुष्ठं श्वेतकुष्ठञ्चनाशयेत् ५७ अनुपानंप्रकुर्वीतबाकुचीफलचूर्णकम् । खादिरस्यकषायेणसमेनपरिपाचितम् ५८ त्रिशाणंवागवांक्षीरैःक्वाथैर्वात्रिफलोद्भवैः । त्रिदिनान्तेभवेत्स्फोटःसप्ताहाद्वाकिलासके ५९ नीलंगुञ्जांचकासीसंधत्तूरंहंसपादिकम् । सूर्यभक्तांचचाङ्गेरींपिष्ट्वातुल्यांविलेपयेत् ६० स्फोटस्थानप्रशान्त्यर्थंसप्तरात्रंपुनःपुनः । श्वेतकुष्ठंनिहन्त्याशुसाध्यासाध्यंनसंशयः ६१ अपरंश्वित्रलेपोपिकथ्यतेऽत्रभिषग्वरैः । गुञ्जाफलाग्निचूर्णंचलेपितंश्वेतकुष्ठनुत् । शिलापामार्गभस्मानिलिप्तंश्वित्रंविनाशयेत् ६२ शुद्धसूतंचतुर्गन्धंपलंयामंविचूर्णयेत् । मृतताम्राभ्रलोहानांदरदंचपलंपलम् ६३ सुवर्णरजतंचैवप्रत्येकंद

लतासपत्र, विडंग व बकुची बीज इनका क्वाथकरि रसकी भावनादे ॥ ५६ ॥ एक दिन घोटि यह उदयादित्य रस दो गुंजा खिलाने से विचर्चिका, दाद व श्वेतकुष्ठ अच्छा होजाय ॥ ५७ ॥ अनुपान खदिरसार क्वाथ वा गऊका दूध वा त्रिफले के क्वाथमें तीन शाण बकुची चूर्ण दो गुंजा रसयुक्त खाय तौ तीन दिनके अन्तमें स्फोट कुष्ठ दूरहो सात दिनके अन्तमें सफ़ेद कुष्ठ दूरहो ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ (श्वित्रपर लेप) नीलपत्र, गुंजा, कसीस, धतूरा, हंसपद, सूर्यमुखी और छोटी लुनियां ये सब सम भाग लेप करने से ॥ ६० ॥ जहां फूटाहो तहां तौ सात दिन में गलितकुष्ठ अच्छा होय और श्वेतकुष्ठ साध्य वा असाध्य दूर होय ॥ ६१ ॥ इसीपर श्रेष्ठ वैद्य और लेप कहते हैं घुंघुची व चीताको जल में पीसि लगाने से श्वेतकुष्ठ दूरहोय मैनशिल चिरचिरा राख पीसि पानी के साथ लेपकरै तौ श्वेतकुष्ठ दूरहोय ॥ ६२ ॥ (कुष्ठपर, सर्वेश्वर रस) शुद्ध पारा एकपल, गन्धक चारपल एकपहर खरल कर मराताम्बा, अभ्रक, लोह, शिंगरफ ये शुद्ध सब एक एक पल ॥ ६३ ॥ मरासोना व चांदी एकपल मारे

शनिष्ककम्। माषैकंमृतवज्रञ्चतालंशुद्धपलद्वयम् ६४
जम्बीरोन्मत्तवासाभिःस्नुह्यर्कविषमुष्टिभिः। मर्दयेद्धयारिजैः,
द्रवैःप्रत्येकेनदिनंदिनम् ६५ एवंसप्तदिनंमर्द्यतद्गोलंवस्त्र;
वेष्टितम्।वालुकायन्त्रगंस्वेद्यंत्रिदिनंलघुवह्निना ६६ आ
दायचूर्णयेच्छ्लक्ष्णंपलैकंयोजयेद्विषम्। द्विपलंपिप्पली
चूर्णंमिश्रंसर्वेश्वरोरसः ६७ द्विगुञ्जोलिह्यतेक्षौद्रैःसुप्तिमं
डलकुष्ठजित्।वाकुचीदेवकाष्ठंचकर्षमात्रंसुचूर्णयेत्। लि
हेदेरण्डतैलाक्तमनुपानंसुखावहम् ६८ हेमाह्वांपञ्चपलि
कांक्षिप्त्वातक्रघटेपचेत् तक्रेजीर्णेसमुद्धृत्यपुनःक्षीरेघटे
पचेत्।क्षीरेजीर्णेसमुद्धृत्यक्षालयित्वाविशोषयेत् ६९ त
च्चूर्णंपञ्चपलिकंमरिचानांपलद्वयम्।पलैकंमूर्छितंसूतम
कीकृत्वानुभक्षयेत्।निष्कैकंसुतकुष्ठार्तःस्वर्णक्षीरीरसाह्व
यम् ७०,भस्मसूतंमृतंकान्तंमुण्डभस्मशिलाजतु।शुद्धंता
प्यंशिलाव्योषंत्रिफलांकोलबीजकम् ७१ कपित्थंरजनी

चूर्णंभृङ्गराजेनभावयेत् । विंशद्वारंविशोष्याथमधुयुक्तंलिहेत्सदा ७२ निष्कमात्रेंहरेन्मेहान्मेहबद्धरसोमहान् । महानिम्बस्यबीजानि पिष्ट्वाषट्सम्मितानिच ७३ पलंतण्डुलतोयेनघृतनिष्कद्वयेनच । एकीकृत्यपिबेच्चानुहन्तिमेहंचिरन्तनम् ७४ चतुःसूतस्यगन्धोष्टौरजनीत्रिफलाशिवा । प्रत्येकंचद्विभागंस्यात्त्रिव्रज्जैपालचित्रकम् ७५ प्रत्येकंचत्रिभागंस्यात्त्र्यूषंदन्तीचजीरकम् । प्रत्येकमष्टभागंस्यादेकीकृत्यविचूर्णयेत् ७६ जयन्तीस्नुक्पयोभृङ्गवह्निवातारितैलकैः । प्रत्येकेनक्रमाद्भाव्यंसप्तवारंपृथक्पृथक् ७७ महावह्निरसोनामनिष्कमुष्णजलैःपिबेत् । विरेचनंभवेत्तेनतक्रभक्तंससैन्धवम् ७८ दिनान्तेदापयेत्पथ्यंवर्जयेच्छीतलंजलम् । सर्वोदरहरःप्रोक्तोमूढवातहरःपरः ७९ गन्धकंतालकंताप्यंमृतताम्रंमनःशिला । शुद्धंसूतंचतुल्यांशंमर्दयेद्भानयेद्दिनम् । पिप्पल्यास्तुकषायेणवज्री

त्रिफला, झरबेरीकी गुदी ॥७१॥ कँथा और हल्दी इन सबका चूर्ण भँगरेके रसमें घोटै जब सूखजाय तब शहद मिलाय चाटै ॥ ७२ ॥ ४ माशे नित्यखाय तो प्रमेह नाशहोय इस रस को मेहबद्ध नाम कहते हैं बकायन के बिया छः पीसि लेय ॥ ७३ ॥ चारि पैसाभर चावल का धोवन आठमाशे घी सब मिलायकै पियै तो बहुत दिनों प्रमेह दूर होताहै ॥ ७४ ॥ (जलोदर पर वह्निरस) पारा पल चार, गन्धक पल आठ, हल्दी, त्रिफला व हड ये सब दो २ पल, निशोथ, जेपाल और चीता ॥ ७५ ॥ ये सब तीन २ पल, त्रिकुटा, जमालगोटे की जड़ और श्वेत जीरा आठ २ पल सब मिलाय खरलकरै ॥ ७६ ॥ अरणी का रस सहुड़दूध भँगरा चीतारस वा कादा रेंड़ीका तेल इनमें क्रमसे सातसात भावनादे ॥ ७७ ॥ यह महावह्निरस चार माशे मुँहमें धरि गरमपानी से उतारि जाय तब मल गिरै सन्ध्याको रेचन के पीछे पथ्य मट्ठा भात सैंधवलोन देकर गरम जल पियै सब पेटके रोग दूरहोयँ व मूढवात दूरहो ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ (गुल्मपर विद्याधररस) शुद्ध गन्धक, हरताल, सोनामाखी, मरातावा,

क्षीरेणभावयेत् ; ८० निष्कार्द्धंभक्षयेत्क्षौद्रैर्गुल्मंप्लीहादिकं जयेत् । रसोविद्याधरोनामगोमूत्रंचपिबेदनु ८१ टङ्कणं हारिणंशृङ्गंस्वर्णंशुल्वंमृतंरसम् । दिनैकमार्द्रकद्रावैर्मर्द्यंरुद्ध्वापुटेपचेत् ८२ त्रिनेत्राख्योरसःसोयंमाषंमध्वाज्यकैर्लिहेत् । सैन्धवंजीरकंहिङ्गुमध्वाज्याभ्यांलिहेदनु । पक्तिशूलं हरत्याशुमासमात्रंनसंशयः ८३ शुद्धंसूतंद्विधागन्धंयामैकंमर्द्दयेद्दृढम् । द्वयोस्तुल्यंशुद्धताम्रंसम्पुटेतंनिरोधयेत् ८४ ऊर्ध्वाधोलवणंदत्त्वामृद्भाण्डेधारयेद्भिषक् । ततोगजपुटेपक्त्वास्वाङ्गशीतंसमुद्धरेत् ८५ सम्पुटंचूर्णयेत्सूक्ष्मं पर्णखण्डेद्विगुञ्जकम् । भक्षयेत्सर्वशूलार्त्तोहिङ्गुशुण्ठीसजीरकम् ८६ वचामरिचजंचूर्णंकर्षमुष्णजलैःपिबेत् । असाध्यं नाशयेच्छूलंरसोयंगजकेशरी ८७ शुद्धसूतंविषंगन्धमजमोदांफलत्रयम् । सर्जक्षारंयवक्षारंवह्निसैन्धवजीरकौ ८८

मैनशिल और पारा सब समानले खरलकरि फिर पीपरि काथमें दिनभर खरल करै एक दिन सेंहुड दूध में खरल करै ॥ ८० ॥ दो मासे शहद संग चाटै तौ गुल्म व प्लीहा दूरहोय यह विद्याधर रस खाय ऊपर से गोमूत्र पियै ॥ ८१ ॥ (त्रिनेत्ररस पक्तिशूलपर) सुहागा, हरिणशृंग, सोना, तांबा और पारामरा एक दिन अदरकके रसमें घोटि गजपुटमें फूंकदे ॥ ८२ ॥ यह त्रिनेत्ररस माशा भर घृत शहद में चाटै तिसपर सैंधव, जीरा, हींग, घृत और शहद चाटै यों मास भर चाटनेसे पसुरी की समस्त पीडा दूरहोय ॥ ८३ ॥ (शूलपर गजकेशरी रस) शुद्धपारा व दूना शुद्ध गन्धक दोनों बलपूर्वक घोटि, तिसके समान शुद्ध तानेके कुटके करि कजली में मिलाय सम्पुटकरै ॥ ८४ ॥ फिर माटी के पात्रमें नोन बीचमें सम्पुटगाडि गजपुट आंचदे ठंढाभये निकाले ॥ ८५ ॥ तब खरल करि पानमें दो गुंजारस खवावै तौ पेटका शूल मिटै और ऊपरसे भुनीहींग, सोंठ, जीरा ॥ ८६ ॥ बच और मरिच इनका चूर्ण उष्णोदकके साथ पियै तौ असाध्य शूल भी नाश होजाय यह गजकेशरी रस कहाता है ॥ ८७ ॥ (मन्दाग्नि पर अग्नितुण्डीरस) शुद्ध पारा, विष, गन्धक, अजमोद, त्रिफला, सज्जी

सौवर्चलंविडङ्गानिसामुद्रंत्र्यूषणंसमम्। विषमुष्टिंसर्व्व तुल्यंजम्बीराम्लेनमर्दयेत्। मरिचाभांवटींखादेद्वह्निमान्द्य प्रशान्तये ८९शुद्धसूतंविषंगन्धंसमंसर्वंविचूर्णयेत्। मरिच्चंसर्वतुल्यांशं कण्टकार्य्याःफलद्रवैः। मर्दयेद्भावयेत्स र्वमेकविंशतिवारकम् ९० चटींगुञ्जात्रयंखादेत्सर्वाजीर्णप्र शान्तये। अजीर्णकण्टकश्चायंरसोहन्तिविसूचिकाम् ९१ मृतंसूतंमृतंताम्रंहिङ्गुपुष्करमूलकम्। सैन्धवंगन्धकंतालंक टुकींचूर्णयेत्समम् ९२ पुनर्नवादेवदालीनिर्गुण्डीतन्दुली यकैः। तिक्तकोशातकीद्रावैर्दिनैकंमर्दयेद्दृढम् ९३ माषमा त्रंलिहेत्क्षौद्रैरसंमन्थानभैरवम्। कफरोगप्रशान्त्यर्थंछिन्ना क्वाथंपिबेदनु ९४ सूतहाटकवज्राणिताम्रंलोहंचमाक्षिकम्। तालंनीलाञ्जनंतुत्थमहिफेनंसमांशकम् ९५ पञ्चानांलवणा नांचभागमेकंविमर्दयेत्। वज्रीक्षीरैर्दिनैकंतुरुद्ध्वातंभूधरे

जवाखार, चीता, सैंधव, जीरा ॥ ८८ ॥ कालानोन, विडङ्ग, पागालोन और त्रिकुटा ये सब समान भागले और सबके समान कुचलाले जंभीरीके रसमें घोटि मरिच सम गोली बांधि खाय इस अग्निमुख रससे मन्दाग्नि दूर होजाती है ॥ ८९ ॥ (विसूचिका (हैजा) पर अजीर्णकंटकरस) पारा, सिंगिया और गन्धक ये तीनों शुद्ध सबसम भागले खरल करि सबके समान मरिचदे भटकटैया फलके रसमें भिजोय इकीसबार घोटि ॥ ९० ॥ तीनरत्ती भर वटी बनाय कर खावे तो इस अजीर्णकण्टकवटी के खाने से सब अजीर्ण शान्त होंय और विसूचिका को हने ॥ ९१ ॥ (अथ मन्थानभैरव) मृतक पारा व तांबा, हींग, पुष्करमूल, सैंधव, शुद्ध गन्धक, हरताल और कुटकी ये सब सम भाग खरल करि ॥ ९२ ॥ गदापुरैना, देवदाल, मेवड़ी, चौराई और कडुवीतोरई इन सबके रसमें एक एक दिन बलपूर्वक क्रमसे घोटि ॥ ९३ ॥ माशाभर शहद युक्त नित्य खाय यह मंथानभैरवरस कहाता है इसपर कफरोगनाशार्थ गुर्चे का क्वाथ पिये ॥ ९४ ॥ (अथ वातनाशकरस) शुद्धपारा, शुद्धसोना, शुद्धहीरा, शुद्धलोह, शुद्धसोनामाखी, शुद्धरताल, शुद्धसुरमा, शुद्धतूतिया और अफीम ये

पचेत् ९६ माषैकमार्द्रकद्रावैर्लेहयेद्वातनाशनम्। पिप्प
लीमूलजंक्वाथंसकृष्णमनुपाययेत्। सर्वान्वातविकारांस्तु
निहन्त्याक्षेपकादिकान् ९७ कनकस्याष्टभागाःस्यु सूतो
द्वादशभिर्मतः। गन्धोपिद्वादशप्रोक्तस्ताम्रंशाणद्वयोन्मि
तम् ९८ अभ्रकस्यचतुःशाणंमाक्षिकस्यद्विशाणिकम्।
वङ्गोद्विशाणःसौवीरंत्रिशाणंलोहमष्टकम् ९९ विषंत्रिशा
णिकंचैवलाङ्गलीपलसम्मिता। मर्दयेद्दिनमेकञ्चरसैरम्ल
फलोद्भवैः २०० दद्यान्मृदुपुटंवह्नौततश्चूर्णंतुकारयेत्।
माषमात्रोरसोदेयः सन्निपातेसुदारुणे १ आर्द्रकस्वरसे
नैवरसोनस्यरसेनवा। किलासंसर्वकुष्ठानिविसर्पंचभगन्द
रम्। ज्वरंगरमजीर्णंचहरेद्रोगहरोरसः २ रसोगन्धस्त्रि
त्रिकर्षौकुर्य्यात्कज्जलिकांद्वयोः। ताराभ्रताम्रवङ्गाहि
साराश्चैकैककार्षिकाः ३ शिग्रुज्वालामुखीशुण्ठीबिल्वेभ्य

समानभाग ॥ ९५ ॥ एक भागमें पांचोंलोन ये सब द्रव्यले एकदिन सेहुंड़के दूध में खरलकरै संपुट में राखि भूधरयंत्रमें पचावै ॥ ९६ ॥ माशेभर रस अदरकके रसमें मिश्रितकरि खावै तौ सब वायु नाश होयँ अथवा पिपरामूल क्वाथ में पीपरि मिलायके देय तौ सब वात विकार आक्षेपकादि निलाय जायँ॥९७॥(सन्निपात पर कनकसुन्दर रस) आठभाग सोनाभस्म, बारहभाग पाराभस्म, शुद्धगन्धक बारहभाग, दोशाण ताम्रभस्म॥ ९८ ॥ अभ्रकभस्म ४ शाण, सोनामाखी भस्म २ बङ्ग २ सुरमाभस्म ३ लोहाभस्म ८ ॥ ९९ ॥ विष ३ पल, करियारी पलभर ये द्रव्य और रस एक दिन जम्बीरी नींबू में खरलकरै ॥ २०० ॥ संपुटकरि थोडी आंचदै फूंकि फिर खरलकरै माशाभर खिलावै तौ अत्यन्त कठा हुआ सन्निपात दूरहोय ॥ १ ॥ अदरक वा लहसुन के रसमें खिलावै तौ किलास, सर्वकुष्ठ, विसर्प, भगंदर,ज्वर, विषविकार और अजीर्ण इन रोगों को यह कनकसुन्दर रस हरताहै॥ २॥ (सन्निपात पर भैरवरस) पारा ३-कर्ष व गन्धक ३ कर्ष इनदोनोंको घोटि कजलीकरि तारा, चांदी,पीतर, बंग और पोलाद ये पाचोंभस्म कर्षभर॥३॥ सहिंजन ज्वालामुखी व सोंठि का काढा बेलके फल

रतन्दुलीयकात् ॥ प्रत्येकंस्वरसैःकुर्याद्यामैकैकंविमर्दये
त् ४ कृत्वागोलंदृढंवस्त्रैर्लवणैःपूरितंन्यसेत् । काचभाण्डे
ततःस्थाल्यांकाचकूपींनिवेशयेत् । वालुकाभिःप्रपूर्याथ
वह्नियामद्वयंभवेत् ५ ततउद्धृत्यतंगोलंचूर्णयित्वाविमि
श्रयेत् । प्रवालचूर्णकर्षेण शाणमात्राविषेणच । कृष्णस
र्पस्यगरलैर्दिवसंभावयेत्तथा ६ तगरंमुशलीमांसीहिमाह्वा
वेतसःकणा । नीलिनीपत्रकंचैलाचित्रकश्चकुटेरकः ७श
तपुष्पादेवदालीधत्तूरागस्त्यमुण्डिकाः । मधूकजातिमद
नारसैरेषांविमर्दयेत् । प्रत्येकमेकवेलंचततःसंशोष्यधारये
त्८वीजपूरार्द्रकद्रावमरिचैःषोडशोन्मितैः । रसोद्विगुञ्जाप्र
मितःसन्निपातेषुदीयते । प्रसिद्धोयंरसोनाम्नासन्निपातस्य
भैरवः ९ तारमौक्तिकहेमानिसारश्चैकैकभागिकाः । द्विभा
गोगन्धकःसूतस्त्रिभागोमर्दयेदिमान् १०कपित्थस्वरसैर्गा
ढंमृगशृङ्गेततःक्षिपेत् । पुटेन्मध्यपुटेनैवसमुद्धृत्यचमर्दये

का रस चौराईरस इन रसमें पहरपहरभर घोटि ॥ ४ ॥ गोलाबांधि कपड़ौटीकरि दो कांचके प्याले एकमें लोनभरि गोला धरि दूसरा लोन पूरित प्याला ढांकि कपड़ौटीकरि तब माटी पात्र के बालुकायंत्रमें धरि दोपहरकी आंचदेय ॥ ५ ॥ ठंढा भये निकारि खरलकरि फिरि मूंगा चूर्ण कर्षभर, विष शाणभर व काले सांपका जहरयुक्त एक दिन खरलकरै फिर कांचकी शीशीमें भरि बालुकायंत्रमें दोपहरकी आंचदे ठंढाभये निकारि चूर्णकरै ॥ ६ ॥ तगर, मुशली, जटामांसी, चोक, जगन्नाथी पीपरि, नीलकीपाती, इलायची, चीता, कटसरैया ॥ ७ ॥ सौंफ, घनतोरई, धतूरा, अगस्त्य, मुंडी, महुआ, चमेली और मैनफल इनसबका रस वा काढ़ा करि क्रम से एकएकवार घोटि सुखाय राखे ॥ ८ ॥ जंभीरीरस वा अदरकरस १६ मरिचों से दोगुंजा प्रमाण रसके साथ सन्निपात में देय यह प्रसिद्ध सन्निपातभैरवनाम रस कहाताहै ॥ ९ ॥ (अथ ग्रहणीकपाटरस) चांदी, मोती, सोना और लोहा इनकी भस्म एक एक भाग, शुद्धगंधक दो भाग और शुद्ध पारा तीन भाग ये सब खरलकरि ॥ १० ॥ फिर कैथेके रसमें खरलकरि हरिणके सींगमेंभरि कपड़ौटी

त् ११ वत्लारसैः सप्तवेलमपामार्गरसैस्त्रिधा॥ लोध्रं प्रतिविषा मुस्तं धातकीन्द्रयवाः स्मृताः । प्रत्येकैः स्वरसैर्नित्यं भावना स्यात्त्रिधा त्रिधा १२ माषमात्रो रसो देयो मधुना मरिचैस्तथा । हन्यात्सर्वानतीसारान्ग्रहणीं सर्वजामपि । कपाटो ग्रहणीरोगे रसोऽयं वह्निदीपनः १३ मृतसूताभ्रकं गन्धं यवक्षारं सटङ्कणम् । अग्निमन्थं वचां कुर्यात्सूततुल्यानिमान्सुधीः १४ ततो जयन्तीजम्बीरभृङ्गद्रावैर्विमर्दयेत् । त्रिवासरं ततो गोलं कृत्वा संशोष्य धारयेत् । लोहपात्रे शरावञ्च दत्त्वोपरि विमुद्रयेत् १५ अधो वह्निं शनैः कुर्याद्यामार्द्धं तत उद्धरेत् । रसतुल्यां प्रतिविषां दद्यान्मोचरसं तथा । कपित्थविजया द्रावैर्भावयेत्सप्तधा भिषक् १६ धातकीन्द्रयवामुस्तं लोध्र म्बिल्वं गुडूचिका । एतद्रसैर्भावयित्वा वेलैकैकं च शोषयेत् १७ रसं वज्रकपाटाख्यं शाणैकं मधुना लिहेत् । वह्निं शुण्ठीं विडं बिल्वं लवणं चूर्णयेत्समम् । पिबेदुष्णाम्बुना चानुसर्वं

करि तीस गोयँदा की आचदे ठंढाभये निकारि निकारि खरलकरि ॥ ११ ॥ चरिपारारसमें सातवार खरलकरि फिर तीनवार चिरचिरारसमें खरलकरि फिर लोध, अतीस, मोथा, धवपुष्प, इन्द्रयव और गुर्च इनके रसमें तीन तीनवार क्रमसे खरल करि ॥ १२ ॥ माशाभर रस शहद मरिच मिलाय चाटै तो सब अतीसार व ग्रहणी को दूरिकरै यह ग्रहणीकपाट अग्निको दीपन करताहै ॥ १३ ॥ वज्र कपाटरस ग्रहणी पर) पाराभस्म, अभ्रकभस्म, शुद्धगन्धक, जवाखार, सुहागा, अरणी बीज और बालवच ये सब समानभागले ॥ १४ ॥ यह रस जैंति, जंभीरी व भंगरा इनके रसमें तीन तीन दिन घोटि गोलाकरि सुखाय लोहेकी कढैया में धरि माटी पात्रसे बंदकरि ॥ १५ ॥ मंद मंद चार घड़ी आंचदे उतारिलेय तब उस रस के समान अतीस व मोचरस डालि कैथा व भांग के रसमें वैद्य सातसात बारघोटै ॥ १६ ॥ फिर धवपुष्प, इन्द्रयव, मोथा, लोध, बेल और गुर्च इनके रसमें एकएक बार घोट सुखायले ॥ १७ ॥ यह वज्रकपाटरस शाणभर शहद के संगखाय ऊपर से चीता, सोंठि, पागानोन, बेल और सैंधव इन सबका समभाग चूर्णकरि उष्णजलके

जांग्रहणींजयेत् १८ तारंवज्रंसुवर्णंचताम्रंसूतंचगन्धकम्। लोहंक्रमविवृद्धानिकुर्यादेतानिमात्रया। १९ विमर्द्यकन्यकाद्रावैर्न्यसेत्काचमयेघटे। विमुच्यपिठरीमध्येधारयेत्सैन्धवैर्भृते। पिठरींमुद्रयेत्सम्यक्ततश्चुल्ल्यांनिवेशयेत् २० वह्निंशनैः शनैः कुर्याद्दिनैकंततउद्धरेत्। स्वाङ्गशीतंचसंचूर्ण्यभावयेदर्कदुग्धकैः २१ अश्वगन्धाचकाकोलीवानरीमुशलीक्षुरी। त्रित्रिवेलंरसैरासांशतावर्याश्चभावयेत्। पद्मकन्दकसेरूणांरसैःकासस्यभावयेत्२२ कस्तूरीव्योषकर्पूरकङ्कोलैलालवङ्गकम्। पूर्वचूर्णादष्टमांशमेतच्चूर्णंविमिश्रयेत् २३ सर्वैःसमांशर्करांचदत्त्वाशाणोन्मितांभजेत्। गोदुग्धद्विपलेनैवमधुराहारसेवकः। तरुणीरमयेद्बह्वीःशुक्रहानिर्नजायते २४ सूतोवज्रमणिर्मुक्तातारंहेमसिताभ्रकम्। रसैःकर्पमितानेतान्मर्दयेदरिमेदजैः २५ प्रवालचूर्णंगन्धश्चद्विद्विकर्षंविमिश्रयेत्। ततोऽश्वग

माय खाय तौ सब ग्रहणी दूरिहोयँ ॥ १८ ॥ (मदन कामदेवरस) चांदी हीरा, सोना और तांबा इन चारोंकी भस्म तथा पारा, गंधक व लोहा ये तीनों शुद्ध इन सातोंको क्रमसे वढती भागले ॥ १९ ॥ घीकुवारके रसमें घोटि शीशीमें धरि कपड़ौटीकरि माटीपात्र में नीचे ऊपर नोनधरि बीचमें शीशीधरि संपुटकरि चूल्हेपर धरि ॥ २० ॥ दिनभर मंद मंद आंच वारि फिर निकारि मदारकेदूधमें खरलकरि॥ २१ ॥ असगंध काकोली विना भी असगंध, किमाच, मुशली, तालमखाना और शतावरि इनके रसमें तीन तीन भावना दे फिर कमलकी जड़ कसेरू व कांस इनकी तीन तीन भावनादेय ॥ २२ ॥ कस्तूरी, त्रिकुटा, कपूर, शीतलचीनी, इलायची और लवंग पीसि पूर्वचूर्ण जो भावनादिसे सिद्धकिये का अष्टमांश कस्तूर्यादिचूर्णयुक्त करि ॥ २३ ॥ सबके समान शक्कर मिलाय शाणभरि खाय आठ पैसाभरि दूधपिवै पथ्य मधुरकरै इसके खानेसे बहुत स्त्रियों से गमनकरै परन्तु धातु न घटै ॥ २४ ॥ (अथ कंदर्पसुन्दररस) शुद्धपारा, हीरा, मोती, चांदी, सोना व कृष्णाभ्रक ये पांच भस्म सब कर्ष कर्ष भरले खैरकाथमें एकदिन घोटै ॥ २५ ॥ मूंगेका चूर्ण

न्धास्वरसैर्विमर्द्यमृगशृङ्गके। क्षिप्त्वामृदुपुटेपक्त्वाभावये
द्धातकीरसैः २६ काकोलीमधुकंमांसीवलात्रयविशेङ्गुद
म्। द्राक्षापिप्पलिवन्दाकंवरीपर्णीचतुष्टयम् २७ परूषकं
कंसेरुश्चमधुकंवानरी तथा। भावयित्वारसैरासांशोषयि
त्वाविचूर्णयेत् २८ एलात्वक्पत्रकंमांसीलवङ्गागुरुकेशर
म्। मुस्तंमृगमदःकृष्णाजलंचन्द्रश्चमिश्रयेत् २९ एत
च्चूर्णैःशाणमितैरसंकन्दर्पसुन्दरम्। खादेच्छाणमितंरात्रौ
सिताधात्रीविदारिका ३० एतासांकर्षचूर्णेनसर्पिःकर्षेण
संयुतम्। तस्यानुद्विपलंक्षीरंपिबेत्सुस्थितमानसः। रम
णीरमयेद्बह्वीर्हानिकापिनगच्छति ३१ शुद्धरसेन्द्रभागै
कंद्विभागंशुद्धगन्धकम्। क्षिपेत्कज्जलिकांकुर्यात्तत्रती
क्ष्णभवंरजः। क्षिप्त्वाकज्जलिकातुल्यंप्रहरैकंविमर्दयेत्
३२ तत्रकन्याद्रवैर्घर्मेत्रिदिनंपरिमर्दयेत्। ततःसञ्जायते
तस्यसोष्णोधूमोद्गमोमहान् ३३ अथतत्पिण्डितंकृत्वाता

व शुद्धगंधक दोदो कर्ष मिलाय असगंध के रसमें एकदिन घुटाय मृगसींग में भर कपड़ौटी करि थोड़ी आंचमें धरि फूंकदे फिर धवफूलके रस वा क्वाथमें भावनादे॥ २६॥ फिर काकोली तिना आसन, मुलेठी, जटामासी, वरियारा, गुलशकरी, ककई, मसीड़, हिंगवट, मुनक्का, पीपरका वादा, कटसरैया, वनमूंग, क्षुद्रगपर्णी, मापपर्णी॥ २७॥ फालसा, कसेरू, महुआ और किमाचबीज इनसबों के रसमें एक एक भावनादे सुखाय खरलकरि धरिराखै॥ २८॥ इलायची, तज, पत्रज, जटामांसी, लौंग, अगर, केशर, मोथा, कस्तूरी, पीपरि, सुगन्धवाला और कपूर इनका चूर्णकरि॥ २९॥ शाणभरले और शाणभर पूर्वोक्त कन्दर्पसुन्दररस और खांड़, आँवरा व विदारीकंद॥ ३०॥ इन सबको मिलाय कर्षभर घी रातिको खाय विषयीपुरुष दूधपियै सो पुरुष बहुत स्त्रीसंग भोगकरै तौ वीर्यहानि नहीं होतीहै॥ ३१॥ (क्षयीपर लोहरसायन) शुद्धपारा एकभाग व शुद्धगंधक एक भाग इन दोनों को घोटि कजली करि तीन भाग शुद्ध पोलादका चूर्ण कजली संग पहरभर घोटि॥ ३२॥ फिर घीकुआरके रसमें ३ दिन घाममें बैठि घोटै तब घाम और घोटनेकी गरमीसे बहुत

स्वपात्रेनिधायच । मध्येधान्यकुशूलस्यत्रिदिनंधारयेद्बु-
धः ३४ उद्धृत्यतस्मात्खल्वेतुक्षिप्त्वाघर्मेनिधायच। रसैः
कुठारच्छिन्नायास्त्रिवेलंपरिभावयेत् ३५ संशोष्यघर्मेकाथै-
श्चभावयेत्त्रिकटोस्त्रिधा। वासामृताचित्रकाणांरसैर्भाव्यंक्र-
मात्त्रिधा ३६ लोहपात्रेततःक्षिप्त्वाभावयेत्त्रिफलाजलैः।
निर्गुण्डीदाडिमत्वग्भिर्वर्षाभूभृङ्गकुरण्टकैः ३७ पलाशकद-
लीद्रावैर्बीजकस्यशृतेनच। नीलिकालम्बुषाद्रावैर्बब्बूलफ-
लिकारसैः ३८ भावयेत्त्रिस्त्रिवेलंच ततोनागबलारसैः। श-
तावरीगोक्षुरकैः पातालगरुडीरसैः। त्रिस्त्रिवेलंयथालाभं
भावयेदेभिरौषधैः ३९ ततःप्रातर्लिहेदाज्यमधुभ्यांकोलमा-
त्रकम्। पलमात्रंबलाकाथंपिबेदस्यानुपानकम् ४० मास-
त्रयाच्छीलितंस्याद्वलीपलितनाशनम्। मन्दाग्निश्वास-
कासौचपाण्डुत्वाकफमारुतौ ४१ पिप्पलीमधुसंयुक्तंहन्या-
देतन्नसंशयः। वातास्रंमूत्रकृच्छ्रंचग्रहणींचोदरंतथा ४२

धुआं उठैगा ॥ ३३ ॥ जब कड़ाहो गोला बांधि रेंडपत्र लपेट तांबे के पात्र में रख मुख मूंदि धानमें तीन दिन गाड़रक्खै ॥ ३४ ॥ फिर निकारि खैंच घाममें घरि सगुजाके रसमें तीन भावनादे ॥ ३५ ॥ जब सूखिजाय तब सोंठि, मिर्च व पीपरि तीनोंके वीनकाथ करि तीन भावना दे फिर रूसा, गुर्च व चीता इन्हें एक एक के रसमें तीन तीन भावनादे ॥३६॥ जलसे निकारि लोहपात्रमें घरि त्रिफलामें घोटि मेवड़ी, अनारका छिलका, भसींड, भंगरा, कटसरैया ॥ ३७ ॥ पलाश, केलाडण्डरस व विजयसार के रसका काथ, नीलमुण्डीरस, बबूरकी छाल ॥ ३८ ॥ ये सब इन के रस वा काथमें तीन तीन भावनादे फिर बरियारा, शतावरि, गुखुरू व छरहट इनके रसमें तीन तीन भावना देना जो मिलै ॥ ३९ ॥ प्रभात समय आठमाशे रस घृत शहद में खिलावै तिसपर बरियाराकाथ पलभर पिये यह अनुपान है ॥ ४० ॥ तीन महीना सेवनकरै श्वेत बार न होयँ और त्वचाकी झुरीपड़ना दूरहोय मन्दाग्नि, श्वास, खांसी, पांडु, कफ और वायुविकार इनके अर्थ ॥ ४१ ॥ पीपरि, शहदयुक्त खाय तौ वातरक्त, मूत्रकृच्छ्र, ग्रहणी, जलोदर ॥ ४२ ॥

अण्डवृद्धिंजयेदेतच्छिन्नासत्वमधुप्लुतम् । बलवर्णकरंवृ
ष्यमायुष्यंपरमंस्मृतम्४३कूष्माण्डंतिलतैलंचमाषान्नंरा
जिकांतथा। मद्यमम्लरसंचैवत्यजेल्लौहस्यसेवकः २४४॥

इति श्रीशार्ङ्गधरेमध्यखण्डेरसशोधनमारणं
द्वादशोऽध्यायः १२ ॥

इति शार्ङ्गधरस्यद्वितीयखण्डस्समाप्तः ॥

तथा अंडवृद्धि न रहै गुर्चका सत और शहदयुक्त देवे तौ बल सुन्दरता व आयुको बढ़ाता है ॥ ४३ ॥ श्वेत कुम्हड़ा, तिल-तैल, उर्दद, राई, मद्य और खटाई इन पदार्थों को लोह खानेवाला त्याग देवै ॥ २४४ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरेमध्यखण्डेभाषाटीकायाद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरस्यवार्तिकभाषासमेतोद्वितीयखण्डस्समाप्तिमगादितिशिवम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

शार्ङ्गधरसंहिता

भाषाटीकासमेता ॥

(तृतीयखण्डः)

प्रथमाध्यायः ॥

स्नेहश्चतुर्विधः प्रोक्तोघृतंतैलंवसातथा । मज्जाचतत्पिबेन्मर्त्यः किञ्चिदभ्युदितेरवौ १ स्थावरोजङ्गमश्चैवद्वियोनिः स्नेहउच्यते । तिलतैलंस्थावरेषुजङ्गमेषुघृतंवरम् । द्वाभ्यांत्रिभिश्चतुर्भिस्तैर्यमकस्त्रिवृतोमहान् २ पिबेत्त्र्यहंचतुरहंपञ्चाहंषडहंतथा । सप्तरात्रात्परंस्नेहः सात्मीभवतिसेवितः ३ दोषकालाग्निवयसांबलंदृष्ट्वाप्रयोजयेत् । हीनांचमध्यमांज्येष्ठांमात्रांस्नेहस्यबुद्धिमान् ४ अमा

(अथोत्तरखण्डःप्रारभ्यते) प्रथम स्नेहपानक्रिया-स्नेह चारिभांतिका कहिये घृत १ तेल २ वसा कहे "मांसमें मिली चर्बी" ३ हाड़के भीतरकी मज्जा ये चारों स्नेह वैद्य सूर्योदय होते मनुष्य को पिलावै ॥ १ ॥ वे स्नेह दोमकारके हैं स्थावर और जंगम स्थावरकहिये(अचर)जहां उपजै वहीं स्थिररहै ऐसे स्नेह अनेक मकार केहैं उनमेंसे तिलका तेल श्रेष्ठहै जंगमकहे(चर)जो श्वासासहितहैं तिनसे उत्पत्ति घृतादि अनेकनमें घृत श्रेष्ठहै (अथ स्नेहभेद) घी,तेल वैद्य तिसे यम कह घी तेल वसा मिलावै तौ त्रिवृत्कहैं घी,तेल,वसा, मज्जासंयुक्तहो तौ महान्कहतेहैं ॥ २ ॥ (अथ स्नेहपानक्रम) घृत रोगीको तीनदिन पिलावै तेल चारदिन वसा पांच दिन मज्जा छहदिन घृतादि स्नेह सात दिनसे अधिक से अधिक पान करने से आहार होजाता है औषध सदृश गुण नहीं करता है ॥ ३ ॥ (अथ स्नेहमात्रा मकार) वातादि दोष, ऋतुकाल, जठराग्नि, अवस्था और निर्बल, सबल व

त्रयातथाकालेमिथ्याहारविहारतः। स्नेहःकरोतिशोफार्शं तन्द्रांनिद्रांविसंज्ञिताम् ५ अकालेचातिमात्रंवाअसात्म्यं यच्चभोजनम्। विषमाशनयत्प्रोक्तंमिथ्याहारः सकथ्यते ६ स्यादीप्ताग्नयेमात्रास्नेहस्यपलसम्मिता। मध्यमांयत्त्रि कर्षास्याज्जघन्याचद्विकर्षिका ७ अथवास्नेहमात्राः स्युस्तिस्त्रोन्याः सर्वसम्मताः। अहोरात्रेणमहतीजीर्यत्यद्धि तुमध्यमा ८ जीर्यत्यल्पादिनार्द्धेचसाविज्ञेयासुखावहा। अल्पास्याद्दीपनीवृष्यास्वल्पदोषेचपूजिता ९ मध्यमास्नेहनीज्ञेयावृंहणीश्रमहारिणी। ज्येष्ठाकुष्ठविषोन्मादग्रहापस्मारनाशिनी १० केवलंपैत्तिकेसर्पिर्वातिकेलवणान्वित

म्। पेयंबहुकफेवापिव्योषक्षारसमन्वितम् ११ रूक्षक्ष तविषार्त्तानांवातपित्तविकारिणाम्। हीनमेधास्मृतीनांच सर्पिःपानंप्रशस्यते १२ कृमिकोष्ठानिलाविष्टाः प्रवृद्धक फमेदसः। पिबेयुस्तैलसात्म्यायेतैलंदीप्ताग्नयस्तुये १३ व्यायामकर्शिताः शुष्करेतोरक्तमहारुजः। महाग्निमारु तप्राणावसायोग्यानराः स्मृताः १४ क्रूराशयाःक्लेशसहा वातार्तादीप्तवह्नयः। मज्जानंचपिबेयुस्तेसर्पिर्वासर्वतो हितम् १५ शीतकालेदिवास्नेहमुष्णकालेपिबेन्निशि। वातपित्ताधिकेरात्रौवातश्लेष्माधिकेदिवा १६ नस्याभ्य ञ्जनगण्डूषमूर्द्धकर्णाक्षितर्पणे। तैलंघृतंवायुञ्जीतदृष्ट्वादो षबलाबलम् १७ घृतेकोष्णंजलंपेयंतैलेयूषः प्रशस्यते।

घृत, कफवालेमें सोंठ, मिर्च, पीपरि व जवाखार पीसि घृतमें युक्तकरि प्यावै॥ ११॥ (अपर रोगोंपरघृत) रुखाई, उरःक्षत, विषार्त, वात पित्त दोष, हीन-बुद्धि और सुधि भूलना इनमें अवश्य घृत पिलाना श्रेष्ठ कहाहै॥ १२॥ (तैल योग्य रोगी) कृमिविकार, वायुवृद्धि, शरीर कफ और मेदवृद्धि इनमें तेल पिलावै जो तेल उसे स्वाभाविक अहित न हो तो अग्नि दीप्त करेगा॥ १३॥ (वसापान योग्य) जो मनुष्य दंड कसरत व कुश्तीआदि तथा परिश्रम करि दुर्बल और पीड़ितहो धातुक्षीण शुष्करक्त शरीरपीड़ा भस्मक आक्षेपकादि वायु पीड़ित इनमें वसा पिलाना योग्य है॥ १४॥ (अस्थि मज्जा योग्य) दुष्ट कोष्ठको क्लेशित को वायुपीड़ित को प्रबलाग्नि को मज्जा पिलाना योग्य है तथा घी सर्व शरीर को हितदायक है॥ १५॥ (अथ स्नेहपान समय) शीत कालमें दिनको पिलावै उष्णकालमें रात को वात पित्त अधिकवाले को रातको वात कफ अधिकवालेको दिनमें पिलावै॥ १६॥ (घृतादिक कर्म विशेषपर नामके कारण) मर्दनको कुल्लीको मस्तकमें दाबने का कान आंखिमें डालने

१ [illegible] मज्जा मांससारादिपसारयोरिति [illegible] मज्जोक्तामज्जयास इतिद्विरूपकाशकेति॥।

२ आम, अग्नि, पक्व व मूत्र इनके आशय, यकृत् और प्लीहा तथा हृदय, उदर और पुप्फुस य नव कोष्ठ कहात हैं॥

वसामज्ज्ञोः पिवेन्मण्डमनुपानं सुखावहम् १८ स्नेहद्विषः शिशून्वृद्धान्सुकुमारान्कृशानपि। तृष्णातुरानुष्णकाले सह भक्तेन पाययेत् १९ सर्पिष्मती बहुतिला यवागूः स्वल्पतण्डुला। सुखोष्णा सेव्यमाना तु सद्यः स्नेहस्य कारिणी २० शर्कराचूर्णसम्मृष्टे दोहनस्थे घृते तु गाम्। दुग्ध्वा क्षीरं पिबेदुष्णं सद्यः स्नेहनमुच्यते २१ मिथ्याहाराद्विहाराद्वा यस्य स्नेहो न जीर्यति। विष्टभ्य वापि जीर्येत वारिणोष्णेन वामयेत् २२ स्नेहस्याजीर्णशङ्कायां पिबेदुष्णोदकं नरः। तेनोद्गारो भवेच्छुद्धो भक्तं प्रति रुचिस्तथा २३ स्नेहेन पैत्तिकस्याग्निर्यदा तीक्ष्णतरीकृतः। तदास्योदीरयेत्तृष्णां विषमां तस्य पाययेत्। शीतं जलं वामयेच्च पिपासा तेन शाम्य

को घृत वा तेल वातादि दोप सबल निर्बल विचारि वैद्य युक्तकरै॥ १७॥ (अथ स्नेहपानानुपान) घृत उष्णोदकके संगपिये तेल यूपसंयुक्त चरबी हाड़ मज्जा मांड युक्त पिये तौ सुखदहोय यूप मांड़ विधि मध्यखण्डमें देखिकरनी॥ १८॥ स्नेहद्वेषी कहे जिसे स्नेह न भावे तिसे अन्न के संग देना और बालक, बूढ़ा, सुकुमार, दुर्बल व तृष्णायुक्त ऐसे मनुष्यको भातके साथ गरमी में देना॥ १९॥ (स्नेह यवागू) तिल भलेप्रकार कूटि थोड़ाचावलका चरोटारि थोड़ाछान और जल देकर पतला पकायले तब गुनगुना खाय तौ तुरन्त धातु को उत्पन्न करताहुआ शरीर को चिकना करता है॥ २०॥ (अथ घारोष्णे दुग्धविधिः) दोहनी के भीतर मिश्री पीसि घृत मिलाय लिप्तकरै तिस में दुग्ध दुहाय तुरन्त गर्म गर्म पिये तौ तुरन्त धातु उत्पन्न होजावै॥ २१॥ स्नेह पिये पर परिश्रम करने वा कफकृत पदार्थ खानेसे स्नेह न पचाहो वा मलारोध किया हो तौ उष्ण जलसे वमन करावै तौ अजीर्णका दोप मिटता है॥ २२॥ जो स्नेह अजीर्ण की शंका हो तौ तातजल प्यावै अब शुद्धडकार आवै व अन्नपर इच्छाकरै तब जानै कि अजीर्ण शान्त भया॥ २३॥ (स्नेह जन्य पित्तकोप यत्न) पित्तप्रकृतिवाले को स्नेहपान से गरमी होती है प्यास विशेष लगती है उसे ठण्ढाजल पिला वमन करावै तौ प्यासकी उष्मा (गरमी)

यामभारांश्चसेवेतामयमुक्तये ५ येषांनस्यंविधातव्यंव स्तिश्चापिहिदेहिनाम् । शोधनीयाश्चयेकेचित्पूर्वंस्वेद्या श्चतेमताः ६ पश्चात्स्वेद्यागतेशल्येमूढगर्भगदेतथा । स्वे द्याःपूर्वंत्रयःप्लीहभगन्दर्यर्शसांतथा ७ अश्मर्याश्चातुरो जन्तुःशमयेच्छस्त्रकर्मणा । सर्वान्स्वेदान्निवातेचजीर्णाहारे चकारयेत् ८ स्वेदाद्धातुस्थितादोषाः स्नेहक्लिन्नस्यदेहि नः । द्रवत्वंप्राप्यकोष्ठान्तर्गतायान्तिविरेकताम् ९ स्विद्य मानशरीरस्यहृदयंशीतलैःस्पृशेत् । स्नेहाभ्यक्तशरीरस्य शीतैराच्छाद्यचक्षुषी १० अजीर्णीदुर्बलोमेहीक्षतक्षीणः पिपासितः । अतीसारीरक्तपित्तीपाण्डुरोगीतथोदरी ११

कराय बोझ उठवाय ऐसी युक्तियों से कफ मेदयुक्त वायुरोग दूर होताहै ॥ ५ ॥ और नासयोग्य वस्तियोग्य रेचनयोग्यको प्रथम स्वेद निकलाय उपाय करै ॥ ६ ॥ जिस स्त्रीके पेटके भीतर गर्भका शालहो वा मूढगर्भहो इन दोंका गर्भ जब बाहर होजाय तब स्वेदकरै जिस मनुष्यकी प्लीह भगंदर अर्श ॥ ७ ॥ और अश्मरी इन चारों रोगाचों को प्रथम स्वेदन करि शस्त्र उपाय करना उचितहै स्वेदकर्म करने का समय स्थान आहारपचने के अनन्तर जिस स्थान में पवनका प्रवेश न होसकै तहां बैठायके स्वेदकर्मकरै ॥ ८ ॥ "स्वेदकिये पुरुषको बड़े पात्रमें तेलभरि बैठावै तौ वातादिक दोष और रसादि सप्तधातु के विकार मलको पतला करिके उसके साथ निकलजाते हैं यह अन्य ग्रंथका मतहै" और शार्ङ्गधर मत (राय) से स्वेदी मनुष्य के पसीना निकलतेही रसादि सप्तधातुमें स्थित वातादि विकार मलको पतलाकरि निकलजाते हैं ॥ ९ ॥ (स्वेदीके चित्त स्वस्थकरनेका यत्न) जिसका स्वेदकरि पसीना निकालनेसे मल पतलाहो चित्त सावधानहो तौ छाती पर चंदन लगाने से सावधानहोगा जिसका शरीर तेलमें भिजोया गयाहै और मल पतला गिरजाइ उसकी आंखोंपर कदली वा केवड़ाके जलमें वस्त्र भिजोयके धरने से चित्त स्वस्थ होगा ॥ १० ॥ स्वेद अयोग्य अजीर्णी दुर्बल प्रमेही उरः क्षतपीड़ित प्यासातुर अतीसारयुक्त रक्तपित्त रोगी पांडुशरीरी उदररोगी ॥ ११ ॥

१ शल्यतंत्र में चीरफार करने के प्रयोगको शस्त्रकर्म कहतेहैं ॥
२ गुदामें पिचकारी लगाने के कर्मको वस्ति कहते हैं ॥

मदार्तोगर्भिणीचैवनहिस्वेद्याविजानता। एतानपिमृदुस्वेदैःस्वेदसाध्यानुपाचरेत् १२ मृदुस्वेदंप्रयुञ्जीततथाहृन्मुष्कदृष्टिषु। अतिस्वेदात्सन्धिपीडादाहतृष्णाक्लमोभ्रमः १३ पित्तासृक्पिटकाकोपस्तत्रशीतैरुपाचरेत्। तेषुतापाभिधःस्वेदोवालुकावस्त्रपाणिभिः १४ कपालकन्दुकांगारैर्यथायोग्यंप्रयुज्यते। ऊष्मस्वेदःप्रयोक्तव्योलोहपिण्डेष्टिकादिभिः १५ प्रतप्तैरम्लसिक्तैश्चकायेवस्त्रावचेष्टिते। अथवातविनाशार्हद्रव्यक्काथरसादिभिः १६ उष्णेघटंपूरयित्वापार्श्वेछिद्रंविधायच। विमुद्यास्यंत्रिखण्डांचधातुजांकाष्ठवंशजाम् १७ षडङ्गुलास्याङ्गोपुच्छान्नाडींयुञ्ज्याद्विहस्तिकाम्। सुखोपविष्टंस्वभ्यक्तंगुरुप्रावरणावृतम् १८ हस्तिशुण्डिकयानाड्यास्वेदयेद्वातरोगिणम्। पुरुषा

मदार्त्त गर्भिणी ऐसे रोगी को स्वेदन न करै जो अवश्य करनाहो तो सूक्ष्म स्वेदले ॥ १२ ॥ (अल्पस्वेदनविधि) हृदय अंडवृद्धि नेत्ररोग इनरोगों में थोड़ा स्वेदले अतिस्वेदोपद्रव सन्धिपीडा, दाह, तृष्णा, ग्लानि, भ्रम ॥ १३ ॥ रक्त पित्तसे फुंसी इनके शमन करने के लिये शीतोपचारकरै शान्तिहोय (अथतापस्वेद) ताप, वालू, कपड़ा ॥ १४ ॥ हाथ कपडे की गेंद बनायकै और अँगार ये छः भाँतिके तापस्वेद कहे जैसा जहां योग्यहो तैसाकरै (अथोष्मविधिः) पत्थरादि तप्तकरि सेंकने को ऊष्मकहै लोहेका गोला वा ईट वा पत्थर तपाय ॥ १५ ॥ उसपर खट्टा पदार्थ थोड़ा छिड़क सुखोष्ण भये लेवै कंबल उढाय स्वेदनकरै दूसरा वातहारी कहे दशमूलादि काथ वा रस ॥ १६ ॥ उष्णकरि घड़े में भरि मुख मूंदि बगल छेदि धातु की वा बांस की टो, हाथ लम्बी नल बनावै गोपूंछ की सूरति तिसके खण्ड तीनकरै एक छः अंगुल बाकीके दो समान पतली ओरसे उस छः अंगुलके टुकड़े का मोटा मुख घड़े के छेद में प्रवेशकर उस में मध्यखण्ड ऊंचा करिजोरै ॥ १७ । १८ ॥ फिर तीसराखण्ड सौंरालगाय गजशुण्ड सा करि तीनों सन्धि मूंदि तब रोगी को घी व तेल लगाय व लेप करि कम्बल उढाय सब ओर से ढक निस्सन्धि

यामृमात्रींवाभूमिमुत्कीर्यखादिरैः १९ काष्ठैर्दग्ध्वातथाभ्यु
दयक्षीरधान्याम्लवारिभिः । वातघ्नपत्रैराच्छाद्यशयानंस्वे
दयेन्नरम् २० एवंमाषादिभिःस्विन्नैःशयानःस्वेदमाचरे
त् । अथोपनाहस्वेदंचकुर्याद्वातहरौषधैः २१ प्रदिह्यदेहं
वातार्तंक्षीरमांसरसान्वितैः।अम्लपिष्टैःसलवणैःसुखोष्णैः
स्नेहसंयुतैः२२ततोग्राम्यानूपमांसैर्जीवनीयगणेनच । द
धिसौवीरकक्षारैर्वीरतर्वादिनातथा २३ कुलित्थमाषगोधू
मैरतसीतिलसर्षपैः । शतपुष्पादेवदारुशेफालीस्थूलजी
रकैः २४ एरण्डमूलबीजैश्चरास्नामूलकशिग्रुभिः । मिशि
कृष्णाकुठेरैश्चलवणैरम्लसंयुतैः २५ प्रसारण्यश्वगन्धा

करि तब उस गजपुटिड का मुख कम्बलके भीतरःखोलि स्वेदनकरै तो पसीना निकसै (तृतीय) रोगा के शरीर से बीताभर अधिक लम्बा चौड़ा गढ़ाखोदि द्वादशांगुल गहिरा खैरकी लकड़ी भरि ॥ १९ ॥ फूंकि क्षारझारि गढ़े में दूध व कांजी वा मट्ठा छिड़क वायुहारी रण्डपत्र बिछाय रोगी को सुलाय भारी वस्त्र उढ़ावै तो पसीना निकलै ॥ २० ॥ (चौथा) पूर्वप्रकार गढ़ा तपाय उर्द आदि पानीले छिड़क रण्ड बड़पातादिसे शय्या रचि पूर्ववत् स्वेदनकरै ॥ २१ ॥ (अथ ग्रन्थान्तरे) वातहारी द्रव्य घड़े में धरि जलभरि मुंहबन्दकरि चारघड़ी आंच दे उतारिलेय रोगीको उष्णतेल मल खरहरीखाटपर सुलाय कपड़ा उढ़ाय नीचे घड़ाधरि नितम्ब की ओर घटमुखछोर वाफदे पसीना पोंछि पोंछि ले इस उष्ण संज्ञक स्वेदसे रसादिक सातौ धातु के वातादिक दोष पसीने साथ सब निकल जाते हैं ॥ २२ ॥ (अथोपनाहक्रिया) दशमूलादि वातहारी द्रव्यों का चूर्णकर उसमें दूध व हरिणादिकों का मांस मिलाय कुछ गर्म कर वायुपीड़ित जो अंगहो उसमें गाढ़ा लेपकर वस्त्र ओढ़ाय पसीना निकाले इस क्रिया को उपनाह कहते हैं (अथोपनाह महाशाल्वण क्रिया अर्थात् पोटलिकासिक्तविधि) ग्रामीमांस, जलचरमांस, जीवनीयगण द्रव्य, गोदधि, खञ्जी, जवाखार, खारालोन, वीरतर्वादि गण वा गुलुरूपून ॥ २३ ॥ कुलथी, उड़द, गेहूं, अलसी, तिल, सरसों, सौंफ, देवदारु, निरगुण्डी, मगरैला ॥ २४ ॥ रेंडी, रासन, मूल, सहिंजना, सोवाबीज, पीपरि, नागरोई पांचो

भ्यांबलाभिर्दशमूलकैः।गुडूचीवानरीबीजैर्यथालाभंसमा
हृतैः२६स्विन्नैश्चवस्त्रसम्बद्धैःसदासंस्वेदयेन्नरम्।महाशा
ल्वणसंज्ञोयंयोगः सर्वानिलार्त्तिहृत् २७ द्रवस्वेदस्तुवात
घ्नंद्रव्यक्वाथेनपूरिते । कटाहेकोष्ठकेवापिसूपविष्टोवगाहये
त् २८ सौवर्णेराजतेवापिताम्रआयसदारुजे । कोष्ठकं
तत्रकुर्वीतोच्छ्रायेषट्त्रिंशदङ्गुलम् २९ आयामेनतदेव
स्याच्चतुरष्कसृणितथा । नाभेःषडङ्गुलंयावन्मग्नःक्वाथस्य
धारया ३० कोष्ठकेस्कन्धयोःसिक्तस्तिष्ठेत्स्निग्धतनुर्नरः।
एवंतैलेनदुग्धेनसर्पिषास्वेदयेन्नरम्। एकान्तरेद्व्यन्तरेवा
स्नेहोयुक्तोवगाहने ३१ शरीरेबलमाधत्तेयुक्तस्नेहोवगाह
ने।शिरामुखैरोमकूपैर्धमनीभिश्चतर्पयेत् ३२ जलसिक्त
स्यवर्द्धन्तेयथामूलेङ्कुरास्तरोः। तथाधातुविवृद्धिस्तुस्नेह
सिक्तस्यजायते ३३ नातःपरतरःकश्चिदुपायोवातनाश

लोन ॥ २५ ॥ अनार, कटसरैया, असगन्ध, वरियारा, दशमूल, दुर्वे और किमाचविया इनमें जितने मिलैं ॥ २६ ॥ उन्हें जलमें पीसि तपाय पोटली बांधे सेंकै ठण्ढी परे गरम तवेपर तपाय तपाय सेंकै इस शाल्वण-प्रयोग से सब वायु पीड़ा दूर होती है ॥ २७ ॥ (अथ द्रवस्वेदविधि) दशमूलादि वायुहर्ता द्रव्यों का क्वाथ बनाय रोगी कढाउ वा चौकोन कोठर ॥ २८ ॥ सोने, चांदी, तांवा, लोहा वा काठ छत्तीस अंगुल ऊंचा बनाय बैठाय ॥ २९ ॥ वह काढाको रोगी के ऊपर पतली धार से नावै नाभिके छः अंगुल ऊंचे आवैं तब हाथ को हटावै इसीप्रकार एक वा दो दिन टार टार करै इसी भांति तेल, दूध, घृत और द्रवस्वेदन भी करै फिर पवन को बचावै ऐसे दो तीनदिन घृत वा तेल लगाय करै सब नसें और रोमों का मुख खुलि जाता है जो पवन प्रवेश करने पावे तो उनके मुख से स्नेहादि पदार्थ प्रवेश के वायु को निकाल देते हैं शरीर को तृप्त और बलवान् करते हैं ॥ ३० । ३१ । ३२ ॥ दृष्टान्त जैसे जड़में जल सींचनेसे वृक्ष बढ़कर पुष्टहोजाता है तैसेही द्रवसंज्ञक स्वेद से मनुष्य का रोग नाशहोता व उमर बढ़ती है तैसेही रसादि सततधातुओं में वातदोष बढ़ने से

नःशीतशूलांद्युपरमेस्तम्भगौरवविग्रहे।दीप्तेग्नौमार्दवेजा
तेस्वेदनाद्विरतिर्मता ३४ सम्यक्स्विन्नंविमृदितंस्नानमु
ष्णाम्बुभिश्शनैः। भोजयेच्चानभिष्यन्दिव्यायामंचनकार
येत् ३५ इति श्रीशार्ङ्गधरेस्वेदविधिर्द्वितीयोऽध्यायः २॥

शरत्कालेवसन्तेचप्रावृट्कालेचदेहिनाम्। वमनंरेच
नंचैवकारयेत्कुशलोभिषक् १ बलवन्तंकफव्याप्तंहृल्लासा
दिनिपीडितम्। तथावमनसात्म्यंचधीरचित्तंचवामयेत्
२ विषदोषेस्तन्यरोगेमन्देग्नौश्लीपदेर्बुदे। हृद्रोगकुष्ठ
वीसर्पमेहाजीर्णभ्रमेषुच ३ विदारिकापचीकासश्वासपी
नसवृद्धिषु। अपस्मारेज्वरोन्मादेतथारक्तातिसारके ४
नासाताल्वोष्ठपाकेषुकर्णस्रावेद्विजिह्वके। गलशुण्ड्याम
तीसारेपित्तश्लेष्मगदेतथा ५ मेदोगदेरुचौचैववमनंका
रयेद्भिषक्। नवामनीयस्तिमिरीनगुल्मीनोदरीकृशः। ना

पेट वा मलमार्ग में भरभराहटहो तो तेलस्वेदकरै ॥ ३३ ॥ इससेपरे वातनाशक और यत्न नहीं जबताईं स्वेदकरै कि वायुशूल देह जकड़ना भारीपन दूरहोय अग्निदीप्त देह कोमल हलकी हो तब न करै ॥ ३४ ॥ स्वेदकरे पर तेल लगाय सुखोष्ण जलसे न्हाय कफकारी भोजन करै ॥ ३५ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरेउत्तरखण्डेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

शरद्, वसन्त और प्रावृट्काल के आदि चतुरवैद्य वमन (छर्दि) व विरेचन (दस्त) को करावै क्योंकि अश्विनीकुमार संहितादि सब ग्रन्थकार ऐसेही कहते आये हैं इसमें मनुष्य की प्रकृति शुद्ध रहती है ॥ १ ॥ (वमन योग्य) जिसे वमन करने की सामर्थ्यहो कफ व्याप्तहो हुलसे लार बहती हो जिसे वमन हितहो धीरचित्तहो उसे वमन करावै ॥ २ ॥ विषरोग, स्तन्यरोग, मंदाग्नि, फीलपांव, अर्बुद, हृद्रोग, कुष्ठ, विसर्प, प्रमेह, अजीर्ण, भ्रम ॥ ३ ॥ विदारी, अपची, कास, श्वास, पीनस, अण्डवृद्धि, अपस्मार, ज्वर, उन्माद, रक्तातीसार ॥ ४ ॥ नासा, ओष्ठ, तालुपाक, कर्णस्राव, द्विजिह्वक, गलगण्ड, अतीसार, पित्त, श्लेष्म ॥ ५ ॥ मेद् और अरुचि इन रोगोंमें वैद्य वमन करावै (वमन अयोग्य) तिमिरी, गुल्मरोगी,

तिवृद्धोगर्भिणीचनस्थूलोनक्षतातुरः ६ मदार्तोबालको रूक्षःक्षुधितश्चनिरूहितः । उदावर्त्यूर्ध्वरक्तीचदुश्छर्दिः केवलानिली ७ पाण्डुरोगीकृमिव्याप्तः पठनात्स्वरघातकः । एतेप्यजीर्णव्यथितावाम्यायेविषपीडिताः ८ कफव्याप्ताश्चतेवाम्यामधुकक्वाथरयपानतः । सुकुमारंकृशंबालंवृद्धंभीरुंनवामयेत् ९ पीत्वायवागूमाकण्ठंक्षीरतक्रदधीनिच । असात्म्यैःश्लेष्मलैर्भोज्यैर्दोषानुत्क्लिश्यदेहिनः १० स्निग्धस्विन्नायवमनंदत्तंसम्यक्प्रवर्त्तते । वमनेषुचसर्वेषुसैन्धवंमधुनाहितम् ११ वीभत्संवमनंदेयंविपरीतंविरेचनम् । क्वाथ्यद्रव्यस्यकुडवं श्रपयित्वाजलाढके १२ अर्द्धभागावशिष्टंचवमनेष्ववचारयेत् । क्वाथपाने नवप्रस्था ज्येष्ठामात्राप्रकीर्त्तिता १३ मध्यमाषण्मि

उदररोगी, कृश (दुर्बल), अतिबूढा, गर्भिणी, मोटा, घावसे व्याकुल ॥ ६ ॥ मदपीडित, बालक, रूक्षदेही, भूखा, निरूहण बस्ति क्रिया, उदावर्ती, ऊर्ध्वरक्ती, छर्दिरोगी, केवल वातार्त्ती ॥ ७ ॥ पाडुरोगी, कृमी और बहुत पढनेके श्रमसे स्वरभङ्गी ऐसे रोगियों को वमन करावै और अजीर्णयुक्त व विषपीडित ॥ ८ ॥ तथा कफव्याप्त इन मनुष्यों को मुलेठी व महुआकी छालका क्वाथ पिलाय वमन करावै और सुकुमार, दुबला, बालक, बूढा और भयभीत इनको कभी वमन न करावै ॥ ९ ॥ (वमन के पूर्व उपचार) जिसे वमन करानाहो उसे पहिले पेटभर यवागू, दूध, मट्ठा, दही, मनभावन पदार्थ और कफकारी पदार्थ इनके खाने से दोष ऊपर उभरआते है ॥ १० ॥ तब वमनकी औषध देय तौ वमन अच्छे प्रकार होताहै और स्नेह पानक्रियेको अच्छेप्रकार होताहै वमन योग्य पदार्थ सब वमन प्रयोग में सैंधव वा शहद युक्त औषध हितकारक होती है ॥ ११ ॥ जो तूतिया वा तांबा घृत युक्त देते हैं वह बीभत्स वमनहै जिसे बीभत्स वमन दिये पर रेचनदेना हो तौ घृत न खानेदेय वमन औषध यदि क्वाथका प्रमाण क्वाथकी द्रव्य कुडव भरि कूटिके आढकभर जलमें औटाय ॥ १२ ॥ आधा जलजाय तब उतारिलेय फिर वमन करनेवाले मनुष्यको पिलावे (वमन क्वाथ पानके का प्रमाण) वमन क्रियाका क्वाथ नवप्रस्थ पिलावै सो ज्येष्ठमात्राहै ॥ १३ ॥

ताप्रोक्तात्रिप्रस्थाचकनीयसी। कल्कचूर्णावलेहानांत्रि पलंश्रेष्ठमात्रया १४ मध्यमांद्विपलांविद्यात्कनिष्ठांपलस म्मितां।वमनेचाविरेकेचास्युरष्टौपित्तान्तमुत्तमाः १५ षड् वेगामध्यमावेगाश्चत्वारस्त्ववरामताः। वमनेचविरेकेच तथाशोणितमोक्षणे १६ सार्द्धत्रयंदशपलंप्रस्थमाहुर्मनी षिणः। कफंकटुकतीक्ष्णोष्णैःपित्तंस्वादुहिमैर्जयेत्।सस्वा दुलवणाम्लोष्णैस्संसृष्टंवायुनाकफम् १७ कृष्णाराठफलैः सिन्धुकफेकोष्णजलैःपिबेत्। पटोलवासानिम्बैश्चपित्तेशी तजलंपिबेत् १८ सश्लेष्मवातपीडायांसक्षीरंमदनंपिबे त्। अजीर्णेकोष्णपानीयंसिन्धुपीत्वावमेत्सुधीः १९ वम

छःप्रस्थ पिलावे सो मध्यममात्रा है तीन प्रस्थ पिलावै सो छोटी मात्राहै वमन कार्य में कल्कादिक औषध का प्रमाण वमन में कल्क चूर्ण अवलेह तीन तीन पल देना सो वडी मात्राहै ॥ १४ ॥ दो दो पलकी मध्यममात्रा है एक एक पलकी लघुमात्रा जानना वमन कार्य उत्तम, मध्यम व कनिष्ठ तीन भांतिका होताहै (वेगका प्रमाण) जिस मनुष्य को वमन की औषध देय उसके सात वारताई सब दोष गिरैं आठवींवार पित्तगिरै तौ उत्तम वेगहै ॥ १५ ॥ पांचवार में सब दोषगिरि छठींवार पित्त गिरै वह मध्यमवेगहै तीनवार में सब दोषगिरि चौथी वार पित्त गिरे वह कनिष्ठ वेगहै वमनादिक में प्रस्थप्रमाण वमन और रेचन तथा सिरारक्त-मोक्षण अर्थात् फस्तलेने में ॥ १६ ॥ प्रस्थ साढ़ेतेरह पलका जानना दोषविशेष में वमनोपचार द्रव्य कटु तीक्ष्ण उस पदार्थ से वमनकराने से कफार्ती का कफ नाश होताहै मधुर व शीतल पदार्थकरि वमनकराने से पित्त नाश होताहै मधुर खार खटाई उष्ण पदार्थ से कफयुक्त वात नाश होताहै सोंठ, मिर्च व पीपरि ये तीक्ष्णहैं मुनक्का अनारादि मधुर हैं ॥ १७ ॥ (कफमें वमनविधि) कफप्रकृति को पीपरि, मैनफल व सेंधव चूर्णकरि उष्णजल में पिलाने से वारवार कफ गिरैगा पित्तप्रकृति को परवर नीमपत्र चूर्णकरि ठण्डे पानी में पिलानेसे वार वार पित्त गिरैगा ॥ १८ ॥ और कफ, वातपीड़ित को मैनफल दूधमें पिलाने से कफ वात दूर होताहै और सेंधव उष्णजल में पिलाने से अजीर्ण मिटता है ॥ १९ ॥

नंपाययित्वाचजानुमात्रासनेस्थितम्। कण्ठमेरण्डनालेन स्पृशन्तंवामयेद्भिषक् २० ललाटंवमतःपुंसःपार्श्वेद्वौचप्र पीडयेत्। प्रसेकोहृद्ग्रहःकोठःकण्डूदुश्छर्दिताद्भवेत् २१ अतिवान्तेभवेत्तृष्णाहिक्कोद्गारौविसंज्ञता। जिह्वानिःसर्प णंचाक्ष्णोर्व्यावृत्तिर्हनुसंहतिः २२ रक्तच्छर्दिःष्ठीवनंचक ण्ठेपीडाचजायते। वमनस्यातियोगेतुमृदुकुर्याद्विरेचनम्। वदनान्तःप्रविष्टायांजिह्वायांकवलग्रहः २३ स्निग्धाम्ल लवणैर्हृद्यैर्घृतक्षीररसैर्हितः। फलान्यम्लानिखादेयुस्त स्यचान्येग्रतोनराः २४ निःसृतांतुतिलद्राक्षाकल्कलि प्त्वाप्रवेशयेत्। व्यावृत्तेक्षिणघृताभ्यक्तेपीडयेच्चशनैःश नैः २५ हनुमोक्षेस्मृतःस्वेदोनस्यंचश्लेष्मवातहृत्।

वमन करने की रीति वमन औषध पीके दोनों घुटने तोरिके बैठे और रेंड पत्र की डण्डी शुद्धकरि गरे में प्रवेश करै तौ वमन होगा और वमन करनेवाले का मस्तक और दोनों ओरकी पसुरी सहराताजाय इसी रीतिसे वैद्यलोग वमन कराते हैं ॥ २० ॥ (वमन कोपलक्षण) जो वमन अच्छी तरह न होय तौ रोगीके मुखसे लार बहै हृदय में पीड़ारहै कोठे में खुजली ये उपद्रव होतेहैं ॥ २१ ॥ (अति वमन उपद्रव) तृष्णा अधिक, हिचकी, डकार, अज्ञानता, जीभ निकलना, नेत्र चंचलता, संभ्रमचित्त, ठोड़ी जकड़ना ॥ २२ ॥ मुख से रुधिर गिरना, वारवार थूकना और कण्ठपीड़ा ये अतिवमन के लक्षण हैं ॥ (अतिवान्त चिकित्सा) जो वमन अधिकहो तौ उसे मृदुरेचनकरै ॥२३॥ (वमनमें जिह्वा ऐंठनेपर चिकित्सा) अति उबकाई,अति जीभ ऐंठजातीहै उसे जो पदार्थ अच्छा लगताहो चिकना वा खट्टा वा सलोना सो घीयुक्त को खवाय उसके मुखमें रखदेना वा दूध, दही व घृत इनमें से कोई में सानि मुखमें राखै और उसके सम्मुख अन्य मनुष्य को खट्टे फलादि खिलावै तो उसे देखने से वामनी की जीभमें पानी छूटै तौ जीभ कोमल होजाती है औरप्रकृति स्वस्थ होती है ॥ २४ ॥ (अतिवान्त से जीभ बाहर निकल आवै उसका यत्न) जो उबकाते उबकाते जीभ निकल आवै तौ तिल व द्राखपीसि जीभपर लेपकर बैठायदेय और जो आंखे चंचल भईहों तौ आंखपर घी लगाय धीरे धीरे

रक्तपित्तविधानेनरक्तच्छर्दिमुपाचरेत् २६ धात्रीरसाञ्जनो
शीरलाजाचन्दनवारिभिः । मन्थंकृत्वापाययेच्चसघृतंक्षौद्र
शर्करम् । शाम्यन्त्यनेनतृष्णाद्याःपीडाश्छर्दिसमुद्भवाः
२७हृत्कण्ठशिरसांशुद्धिर्दीप्ताग्निंचैवलाघवम् । कफपित्त
विनाशश्चसम्यग्वान्तस्यचेष्टितम् २८ ततोपराह्णेदीप्ता
ग्निंमुद्गषष्टिकशालिभिः । हृद्यैश्चजाङ्गलरसैःकृत्वायूषंच
भोजयेत् २९तन्द्रानिद्रास्यदौर्गन्ध्यंकण्डूश्चग्रहणीविषम् ।
सुवान्तस्यनपीडायैभवन्त्येतेकदाचन ३० अजीर्णंशीत
पानीयंव्यायामंमैथुनंतथा । स्नेहाभ्यङ्गंप्रकोपंचदिनैकंव
र्जयेत्सुधीः ३१ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥
स्निग्धस्विन्नस्यवान्तस्यदद्यात्सम्यग्विरेचनम् । अ

सहराय देय ॥ २५ ॥ (वमन में हनुस्तम्भ उपचार) जो वमन के अन्त में ठोढ़ी जकड़ जाय तो सेंकने व कफवातहारी द्रव्यों के सूंघने से खुलजाती है (वमन के अन्तमें रक्तगिरने का यत्न) जो वमांत में रुधिर आनेलगे तो मध्यखण्डमें कहा रक्तपित्तोपचार करै ॥ २६ ॥ (अति वमन से प्यास पड़ने का यत्न) जो तृष्णा बढ़ै आंवले का रस, रसौत, खस, धानकी खीलें व लालचन्दन ये पांचों पल भर चारपल ८६ पानीमेंमथिके घी, शहद संयुक्त मिश्री डालिकै पिलावै तो शांति होय (रसांजन करे रसोत बनाने की विधि) दारुहल्दीका क्वाथ करि तिसके समान बकरी का दूध मिलाय औटै गाढ़ा करि सुखाय ले उसे रसाञ्जन कहते हैं ॥ २७ ॥ (वमन उत्तम होने का लक्षण) जो वमन अच्छा हो तो हृदय, कण्ठ व मस्तक के कफादिकों दोष न रहैं अग्नि दीप्तहो अंग हलका हो कफपित्तजनित विकार नाश होयँ ॥ २८ ॥ (वमनपर पथ्य) मूंग सा साठी के चावलादा यूषदेना वा हिरन का मास अथवै खसी मासका यूष दे ॥ २९ ॥ सम्यक् वमन भये तंद्रा, निद्रा, मुखमें दुर्गंध, खाज, संग्रहणी व विषदोष ये रोग नहीं रहते न होते हैं ॥ ३० ॥ (वमन पर संयम) भारी व गरिष्ठ पदार्थ, ठंढा जल, परिश्रम, मैथुन, तेलमर्दन व क्रोध जिसदिन वमन करै तो इनसे बचारहै ॥ ३१ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेउत्तरखण्डेतृतीयोऽध्याय ॥ ३ ॥

(वमनान्तमें विरेचन) प्रथम मनुष्य स्नेह पानादिक कर्मकरि स्नेह कर्मकरै

वान्तरयत्वधःस्रस्तोग्रहणीछादयेत्कफः १ मन्दाग्निगौरवंकुर्य्याज्जनयेद्वाप्रवाहिकाम्। अथवापाचनैरामंबलासंचविपाचयेत् २ स्निग्धस्यस्नेहनैःकार्य्यंस्वेदैःस्विन्नस्यरेचनम्। शरदृतौवसन्तेचदेहशुद्धौविरेचयेत्। अन्यदात्ययिकेकालेशोधनंशीलयेद्बुधः ३ पित्तेविरेचनंदद्यादामोद्भूतेगदेतथा।शरीरजानांदोषाणांक्रमेणपरमौषधम्।वस्तिर्विरेकोवमनंतथातैलघृतंमधु ४ दोषाःकदाचित्कुप्यन्तिजितालङ्घनपाचनैः। येतुसंशोधनैःशुद्धानतेषांपुनरुद्भवः ५ बालवृद्धावतिस्निग्धःक्षतक्षीणोभयान्वितः। श्रान्तस्तृषार्त्तःस्थूलश्चगर्भिणीचनवज्वरी ६ नवप्रसूतानारी

फिर वमन करै तब रेचनकरै सो रेचन उत्तम प्रकार है और प्रथम कर्महीन रेचन करे,कफ नीचेजाय ग्रहणी कहे पित्तधरा अग्निधरा ढाइलेताहै ॥ १ ॥ इसकारण से अग्निमंद, देहभारी, देह जकडना, प्रवाहिका कहे दारुण अतीसार ये रोग उत्पन्न होते हैं जो कर्महीन रेचन शीघ्रदियाचाहै तौ नीचे गिरनेवाला कफ और आव तिसे सूने रंडकीजड़ आदि सेवन कराय पचाय रेचनकरै और भेड, चरक, सुश्रुत व वाग्भट इनका मत यहहै कि प्रथम वमन कराय छःदिन विताय तीन दिन स्नेहपान कराय फिर तीन स्वेद साधित तीन बाद सोरहे दिनमें लङ्घन दे रेचनकरावै ॥ २ ॥ (रेचनका दूसरा प्रकार) जो घृत दूधकरि स्निग्ध मनुष्य वा मट्टीके गोला व ईंट करि स्वेदित मनुष्य तिसे रेचन और कन्ता क्वार, कातिक, चैत व वैशाखमें रेचन कर्म किये देह शुद्ध होजाती है और जो वैद्य रोगीका रोग विचार तिनके निवारणार्थ अनुक्तकालमें भी विरेचन करै ॥ ३ ॥ विशेष रेचन योग्य पित्त विकार, आमवायु, उदररोग,नाभान, वायुकोष्ठबद्ध इनरोगों को विशेष शुद्धकरि कराय परमौषध क्रमसे जानना वस्तिकर्म, रेचनकर्म, वमनकर्म, तेल, घृत, शहद यथारोग यत्नकरै ॥ ४ ॥ (दोष निवारण में उत्कर्ष रेचन) वातादि दोष लङ्घन पाचनकरि दवजाते हैं परन्तु थोड़े कुपथ किये ते उभर आते हैं और जो रेचनकरि वातादि दोषों से शुद्ध किये शरीर वेग नहीं उभरते ॥ ५ ॥ (रेचन के अयोग्य) बालक, वृद्ध, अतिस्नेह पानपर उरःक्षत, क्षीणमनुष्य, भययुक्त, श्रमित, तृषित, स्थूलशरीर,

चमन्दाग्निश्चमदात्ययी ॥ शल्यार्दितश्चरूक्षश्चनविरेचयाविजानता ७ जीर्णज्वरीगरव्याप्तोवातरक्तीभगन्दरी । अर्शःपाण्डूदरोग्रन्थीहृद्रोगारुचिपीडिताः ८ योनिरोगःप्रमेहार्त्तागुल्मप्लीहव्रणार्दिताः । विद्रधिच्छर्दिविस्फोटविसूचीकुष्ठसंयुता ९ कर्णनासाशिरोवक्त्रगुदमेढ्रामयान्विताः । प्लीहशोफाक्षिरोगार्ताःकृमिक्षारानिलार्दिताः । शूलिनोमूत्रघातार्त्ताविरेकार्हानरामताः १० बहुपित्तोमृदुःप्रोक्तोबहुश्लेष्माचमध्यमः । बहुवातःक्रूरकोष्ठोदुर्विरेच्यःसकथ्यते ११ मृद्वीमात्रामृदौकोष्ठेमध्यकोष्ठेचमध्यमा । क्रूरेतीक्ष्णामताद्रव्यैर्मृदुमध्यमतीक्ष्णकैः १२ मृदुर्द्राक्षापयश्चञ्चुतैलैरपिविरिच्यते । मध्यमस्त्रिवृतातिक्ताराजवृक्षैर्विरिच्यते । क्रूरःस्नुक्पयसाहेमक्षीरीदन्तीफलादिभिः १३

गर्भिणी, नवज्वरी ॥ ६ ॥ तुरन्त पुत्रजनिता स्त्री, मन्दाग्नि, अतिमदपीड़ित, शल्यवेधित, क्षतयुक्त और रूक्ष कहे निस्तेज मनुष्य इनको रेचन नहीं देना ॥ ७ ॥ (रेचनयोग्य) जीर्णज्वरी, विषपीड़ित, वातरक्त व भगंदर रोगी, अर्शरोगी, पाडुरोगी, उदररोगी, ग्रन्थिरोगी, हृदयरोगी, अरुचिसे पीड़ित ॥ ८ ॥ योनिरोग, प्रमेह, गुल्म, प्लीहा, व्रणी, विद्रधि, छर्दि, विस्फोटक, विसूची, कुष्ठ ॥ ९ ॥ कानरोग, नाकरोग, मस्तकरोग, मुखरोग, गुदारोग, गरमी, यकृत्, सूजन, नेत्ररोग, कृमिरोग, सोम्लादि रोग शूल और मूत्राघात इन रोगन करि पीड़ित मनुष्य को रेचन देवै ॥ १० ॥ (रेचन तीन प्रकार) कोमल मध्यम व कराल कोष्ठवेधक जिस मनुष्यकी कोमल प्रकृतिहो उसका कोठा मृदुहै जिसकी केवल प्रकृतिहै, उसका कोठा मध्यम है जिसकी केवल वात प्रकृति हो उसका कठोर कोठा है सो कड़े कोठेवाला रेचन विषम में दुःखपाताहै उसे रेचन करने से मलस्राव शीघ्र नहीं होताहै ॥ ११ ॥ कोमल कोठा समुझि मृदुरेचन करावै मध्यम कोठावाले को मध्यम मात्र विरेचन करावै मृदु मध्यमादिककोष्ठी को मृदु मध्यमादि औषधदे कोमलकोष्ठी को दाख, दूध व रेंडी का तेलयुक्त करि रेचन दे मध्यमकोष्ठी को निशोथ, कुटकी व अमलतास इनका रेचन दे क्रूरकोष्ठी को सेंहुड़ का दूध वा जमालगोटा इनका रेचन दे ॥ १२ । १३ ॥

मात्रोत्तमाविरेकस्यत्रिंशद्वेगैःकफान्तिका । वेगैर्विंशतिभिर्मध्या हीनोक्तादशवेगिका १४ द्विपलंश्रेष्ठमाख्यातं मध्यमंचपलंभवेत् । पलार्द्धंचकषायाणां कनीयस्तुविरेचनम् १५ कल्कमोदकचूर्णानां कर्षमध्वाज्यलेहतः । कर्षद्वयंपलंवापि वयोरोगाद्यपेक्षया १६ पित्तोत्तरेत्रिवृच्चूर्णं द्राक्षाक्काथादिभिःपिबेत् । त्रिफलाक्काथगोमूत्रैःपिबेद्व्योषंकफार्दितः १७ त्रिवृत्सैन्धवशुण्ठीनां चूर्णमम्लैःपिबेन्नरः । वातार्दितोविरेकायजाङ्गलानांरसेनवा १८ एरण्डतैलंत्रिफलाक्काथेनद्विगुणेनवा । युक्तम्पीत्वापयोभिर्वा नचिरेणविरिच्यते १९ त्रिवृताकौटजंबीजं पिप्पलीविश्वभेजम् । मृद्वीकायारसक्षौद्रं वर्षाकालेविरेचनम् २० त्रिवृद्दुरालभामुस्ताशर्करादिव्यचन्दनम्।

उत्तम, मध्यम और कनिष्ठ रेचन प्रमाण मल गिरते गिरते अन्त में कफ गिरे ऐसे तीस वेग आवें सो उत्तम मात्रा है वेगकहे दस्त जिसमें बीस वेग तक अन्तमें कफ गिरे वह मध्यम है जिसमें दश वेग तक कफ गिरे वह हीनरेचन मात्राहै ॥ १४ ॥ (रेचन क्काथादि प्रमाण) रेचन में काढ़ा की मात्रा दो पल उत्तम एक मध्यम आधापल कनिष्ठमात्रा है ॥ १५ ॥ (रेचन कल्कादिक प्रमाण) कल्क मोदक चूर्ण तीनों का कर्ष कर्ष प्रमाणहै और शहद घृतयुक्त रेचन देय वा रोगीका रोग, अवस्था व बलको देखि दो कर्ष से पलभर तक यथोचित मात्रा देना ॥ १६ ॥ (रेचनमें द्रव्यप्रकार) पित्तमें निशोत चूर्ण दाख काथमें गुलकन्द गुलाब फल वडी सौंफके काढे में देय कफ दोषमें सोंठ, मिर्च पीपरि चूर्ण व त्रिफला काथमें पियावें कफदोष दूर होइ ॥ १७ ॥ वातकोप में निशोथ, सोंठ, सैंधव चूर्ण, नींबूरस वा कांजी वा जंगली जन्तुके मांसका यूषयुक्त देइ तो रेचन अच्छाहो वायुकोप शान्तहो ॥ १८ ॥ (अपर औषध रेचनपर) रेंडी तेल से दूना त्रिफलाकाथ प्यावै वा दूनादूध उक्त प्यावै झाडा जल्दहो ॥ १९ ॥ (रेचन ऋतु भेदसे) निशोथ, इन्द्रयव, पीपरि, सोंठ व दाखके काथ शहद डारि वर्षामें प्यावे ॥ २० ॥ (शरद में)

द्राक्षाम्बुनासयष्ट्याह्वंशीतलंघनात्यये २१ त्रिवृत्ताचि त्रकंपाठाह्यजाजीसरलावचा। हेमक्षीरीचहेमन्तेचूर्णमु ष्णाम्बुनापिबेत् २२ पिप्पलीनागरंसिन्धुंश्यामात्रिवृता सह। लिहेत्क्षौद्रेणशिशिरेवसन्तेचविरेचनम्। त्रिवृताश र्करातुल्याग्रीष्मकालेविरेचनम् २३ अभयामरिचंशुण्ठी विडङ्गामलकानिच। पिप्पलीपिप्पलीमूलंत्वक्पत्रंमुस्त मेवच २४ एतानिसमभागानिदन्तीचत्रिगुणाभवेत्। त्रिवृदष्टगणाज्ञेयाषड्गुणाचात्रशर्करा २५ मधुनामोद कंकृत्वाकर्षमात्रप्रमाणतः। एकैकंभक्षयेत्प्रातःशीतंवानु पिबेज्जलम् २६ तावद्विरिच्यतेजन्तुर्यावदुष्णंनसेव्यते। पानाहारविहारेषुभवेन्नियन्त्रणंसदा २७ विषमज्वरम न्दाग्निपाण्डुकासभगन्दरान्। दुर्नामकुष्ठगुल्मार्शोगल गण्डभ्रमोदरान् २८ विदाहप्लीहमेहांश्चयक्ष्माणंनयना मयान्। वातरोगंतथाध्मानंमूत्रकृच्छ्राणिचाश्मरीम् २९

निशोथ, जवासा, मोथा, सुगन्धवाला, मिश्री श्वेतचन्दन, मुलेठी, दाख क्वाथमें प्यावै तौ रेचनहो ॥ २१ ॥ (हेमन्तमें) निशोथ, चीता, पाढ़ा, जीरा, देवदारु, वच और चूक इनका चूर्ण उष्णजलके साथ पियै तौ रेचनहो ॥ २२ ॥ (शिशिर व वसन्त में) पीपरि, सोंठ, सैंधव, विधारा, निशोथ इनका चूर्ण शहद युक्त चाटै तौ रेचनहो ग्रीष्म में निशोथ का चूर्ण शक्कर समभाग युक्तकरि फाकै तौ रेचनहो ॥ २३ ॥ (रेचन पर अभयादिक मोदक) हड़, मिर्च, सोंठ, विड़ंग, आंवला, पीपरि, पीपरामूल, तज, पत्रज व मोथा ॥ २४ ॥ ये सब समान भागले जमालगोटा की जड़ त्रिगुण निशोथ अठगुणा शक्कर छ:गुणी ॥ २५ ॥ शहद में मल कर्ष कर्ष भरकी गोली बांधि प्रभात एकखाय शीतलजल पियै ॥ २६ ॥ जब वेग मल को रोंकाचाहै तब तप्तजलपियै और खान पान विहार यत्न से परहेज रक्खे ॥ २७ ॥ तौ विषमज्वर मंदाग्नि, पाण्डु, कास, भगन्दर, दुर्नाम, कुष्ठ, गुल्म, अर्श, गलगण्ड, भ्रम, उदररोग ॥ २८ ॥ दाह, प्लीह, प्रमेह, यक्ष्मा,

अभयामोदकाह्येतेरसायनवराःस्मृताः। पृष्ठपार्श्वोरुज घनकट्यूदररुजंजयेत् । सततंशीलनादेषांपलितानिप्र णाशयेत् ३० पीत्वाविरेचनंशीतजलैःसंसिच्यचक्षुषी । सुगन्धिकिञ्चिदाघ्रायताम्बूलंशीलयेन्नरः ३१निर्वातस्थो नवेगांश्चधारयेन्नस्वपेत्तथा । शीताम्बुनस्पृशेत्क्वापिको ष्णंनीरंपिबेन्मुहुः ३२ वलादौषधपित्तानिवायुर्वान्तेयथा व्रजेत् । रेकात्तथामलंपित्तंभेषजंचकफोव्रजेत् ३३ दुर्वि रक्तस्यनाभेस्तुस्तब्धत्वंकुक्षिशूलता । पुरीषवातसङ्गश्च कण्डूमण्डलगौरवम् । विदाहोरुचिराध्मानंभ्रमश्छर्दि श्चजायते३४तंपुनःपाचनैःस्नेहैःपक्त्वासंस्नेह्यरेचयेत् । तेनास्योपद्रवायान्तिदीप्ताग्नेर्लघुताभवेत् ३५ विरेक

नेत्ररोग, वातरोग, पेटफूलना, मूत्रकृच्छ्र, पथरी ॥ २९ ॥ पीठ, पसुरी, छाती, जांघ, कटि और पेट इनके रोग दूरहों इस अभयामोदक सेवनसे तुरतही वाल पकना मिटै यह रसायनश्रेष्ठहै ॥ ३० ॥ (रेचनअच्छेप्रकार होनेका यत्न) रेचनौषध पीकै ठंढे जल से आंखें व मुख पोंछै व सुगन्धादि फूल सूंघ पानखा- या करै इस योग के करने से चित्त स्वस्थ रहता है व अच्छी तरह वेग आतेहैं॥ ३१ ॥ (रेचन समय साधना) पवन व मलमूत्र को न रोकै न सोवै ठंढा जल न छुवैज्यौंज्यों वेग होय त्यौंत्यौं वारवार तत्तापानी पियै इससे खुलकर मल गिरैगा ॥ ३२ ॥ सम्यक् रेचन में जैसे सम्यक् वमन में कफ और खाईहुई औ- षध से पित्त, वायु व सबदोष मुख से गिरते हैं तैसेही ये सब मलमार्ग से गिरते हैं ॥ ३३ ॥ (रेचन देने पर वेग न होय तिसके उपद्रव) जिस मनुष्य को रेचन देने से वेग अच्छी तरह न आवै उसकी नाभिके नीचे कड़ापन और कोष में शूल मल में वायु मिलजाय खजुली, मण्डल, देह जकड़ना, दाह, अ- रुचि, पेटफूलना, भ्रम व छर्दि ये उपद्रव उत्पन्न होते हैं ॥ ३४ ॥ (अशुद्ध रेचनयत्न) जिसे रेचन अच्छी तरह न हुआ उसे रातका आरग्वधादि पा- चन दे फिर स्नेहविधि से घृत पिलाय कोठा चिकना करि रेचन देने से शुद्ध रेचन होगा सब उपद्रव शान्त होंगे और जठराग्नि दीप्तहो व देह हलकी होजती।

स्यातियोगेनमूर्च्छाभ्रंशोगुदस्यच।शूलंकफातियोगःस्या
न्मांसधावनसन्निभम् । मेदोनिभञ्जलाभासं रक्तंवापिवि
रिच्यते ३६ तस्यशीताम्बुभिःसिक्तंशरीरंतन्दुलाम्बु
भिः । मधुमिश्रैस्तथाशीतैःकारयेद्वमनंमृदु ३७ सहकार
त्वचः कल्कोदध्नासौवीरकेणवा । पिष्टोनाभिप्रलेपेनह
न्त्यतीसारमुल्बणम्३८अजाक्षीरंपिवेद्वापिवैष्किरंहारिणं
तथा । शालिभिःषष्टिकैःस्वल्पंमसूरैर्वापिभोजयेत् ३९
शीतैःसंग्राहिभिर्द्रव्यैःकुर्यात्संग्रहणंभिषक् । लाघवेमनस
स्तुष्टावनुलोमेगतेनिले ४० सुविरिक्तंनरंज्ञात्वापाचनं
पाययेन्निशि । इन्द्रियाणांवलंबुद्धेःप्रसादोवह्निदीपनम् ।
धातुस्थैर्य्यंवयस्थैर्य्यंभवेद्रेचनसेवनात् ४१ प्रवातसेवा
शीताम्वुस्नेहाभ्यङ्गमजीर्णताम् । व्यायामंमैथुनंवापिनसे
वेतविरेचितः ४२ शालिषष्टिकमुद्गाद्यैर्यवागूंभोजयेत्कृता

है ॥ ३५ ॥ (अतिविरेक में उपद्रव) मूर्च्छा, कांच निकरना, पेटमें शूल, कफ अधिक गिरना, मांस के धोवन सदृश गिरना, चरबी सी वा पानी व रुधिर गिरै ॥ ३६ ॥ (अतिविरेकोपद्रव यत्न) ठण्डे जल से शरीर पोंछै व गुलाब केवडा छिरके व वस्त्र से पोंछे वा चावलका धोवन शहदयुक्त पीवै और शर्द्द औषध दे मृदुवमन करावै इससे उपशमन होताहै ॥ ३७ ॥ आम की छाल गोदधि व सौवीर इन्हें पीसि कल्ककरि नाभिपर लगावै तो वेग वन्दहो अथवा सौवीर में आम की छाल पीसि नाभि पर लगावै "सौवीर की क्रिया मध्यखण्ड में कही है" ॥ ३८ ॥ (झाडा वन्द करने को) बकरी का दूध, शकुनीचिडिया का मांस यूप, भात व मसूरी सत साठीचावलका भात खाय ॥ ३९ ॥ और अनार व ठंडे पदार्थका सेवन करै वेग वन्दहोय (स्वल्प विरेकमें लक्षण) शरीर हलका प्रसन्नचित्त स्वस्थ गमन वायु ॥ ४० ॥ ऐसे लक्षण देखि रातिको पाचन देना वा पाचनार्थ 'रेंडमूल, सोंठ, धनियेंका क्वाथ दे" रेचन सेवने से इन्द्रियां बलवान् हों बुद्धि प्रसन्नरहै अग्नि दीप्तहो धातुपुष्टहो व अवस्था बढकर स्थिर होती है ॥ ४१ ॥ (रेचन पर वर्जित) बयार, ठण्डा जल

म्। जाङ्गलैर्विष्किराणांवारसैःशाल्योदनंहितम् ॥ ४२ ॥
इति शार्ङ्गधरेउत्तरखण्डेरेचनाऽध्यायश्चतुर्थः ॥ ४ ॥

वस्तिर्द्विधानुवासाख्योनिरूहश्चततःपरम् । वस्ति
भिर्दीयतेयस्मात्तस्माद्वस्तिरितिस्मृतः १ यःस्नेहैर्दीयते
सस्यादनुवासननामकः । कषायक्षीरतैलैर्योनिरूहःसनि
गद्यते २ तत्रानुवासनाख्योहिवस्तिर्यःसोत्रकथ्यते । पू
र्वमेवततोवस्तिर्निरूहाख्योभविष्यति ३ निरूहादुत्तरंचै
ववस्तिःस्यादुत्तराभिधः । अनुवासनभेदश्चमात्रावस्ति
रुदीरितः ४ पलद्वयंतस्यमात्रातस्मादर्द्धापिवाभवेत् ।
अनुवासस्तुरूक्षःस्यात्तीक्ष्णाग्निःकेवलानिली ५ नानुवा
स्यस्तुकुष्ठीस्यान्मेहीस्थूलस्तथोदरी । अस्थाप्यानानुवा
स्याःस्युरजीर्णोन्मादतृड्युताः । शोकमूर्च्छारुचिभयश्वा

तैलस्पर्श, अजीर्ण, श्रम व मैथुन इनसे बचारहे ॥ ४२ ॥ (रेचनपर पथ्य) चावल, मूंग की यवागू वा हरिणादि मांसका यूप वा लवा बदेर तीतर मांसका यूप भात में दे ॥ ४३ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरसुधाकरे उत्तरखण्डे चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

(अथ वस्तिकर्म) गुदाके भीतर अण्डकोशकी लड़ताई द्रव्यभरि पिच- कारी देनेको वस्ति कहते हैं सो दो प्रकारकी है अनुवासन १ निरूहण २ जिस में घी तैलादि चिकनी वस्तु भरि दीजै उसे अनुवासनवस्ति कहते हैं और काढ़ा, दूध व तेल मिश्रित पिचकारी भरि पीड़ितकरै वह निरूहणवस्ति कहाती है ॥ १ । २ ॥ सो प्रथम अनुवासन वस्ति है पीछे निरूहण है इसी से निरू- हण को उत्तरवस्ति भी कहते हैं ॥ ३ । ४ ॥ (अनुवासन की द्रव्यका प्रमाण) स्नेहादि दो पल व एक पलका प्रमाण जानना ऐसे पिचकारी के भेद हैं (अनुवासन योग्य) रूक्षप्रकृती वा स्नेहपानरहित को वा अग्नि दीप्त करनेको केवल वातरोगी को ये अवश्य अनुवासन योग्यहैं ॥ ५ ॥ (अयानुवा- सन अयोग्य निरूहण योग्य) कुष्ठी, प्रमेही, मोटा शरीर और उदर रोगी ये अनुवासन योग्य नहीं हैं और अजीर्ण, उन्मादी, तृषी, शोक, मूर्च्छा-

सकासक्षयातुराः६नेत्रंकार्यंसुवर्णादिधातुभिर्वृक्षवेणुभिः। नलैर्दन्तैर्विषाणाग्रैर्मणिभिर्वाविधीयते ७ एकवर्षात्तुषड्वर्षंयावन्मानंषडंगुलम् । ततोद्वादशकंयावन्मानंस्याद्ष्टसम्मितम् । ततःपरंद्वादशभिरङ्गुलैर्नेत्रदीर्घता८मुद्गच्छिद्रंकलायाभं छिद्रंकोलास्थिसन्निभम् । यथासंख्यंभवेन्नेत्रंश्लक्ष्णंगोपुच्छसन्निभम् ९ आतुराङ्गुष्ठमानेनमूलेस्थूलंविधीयते । कनिष्ठिकापरीणाहमग्रेचगुटिकामुखम्१०तन्मूलेकर्णिकेद्वेचकार्येभागाच्चतुर्थकात् । योजयेत्तत्रवस्तिंचवन्धद्वयविधानतः ११ मृगाजशूकरगवांमाहिषस्यापिवाभवेत् । मूत्रकोशस्यवस्तिस्तुतदलाभेनचर्मजः। कषायरक्तःसुमृदुस्तीक्ष्णः स्निग्धोदृढोहितः १२

अरुचि, भय, श्वास, कास व क्षय इनसे पीडित को निरूहण वस्ति अयोग्य है ॥ ६॥ परन्तु अनुवासन योग्य है वस्ति कहे (पिचकारी निर्माण विधि) नेत्राहे पिचकारी की नल जो गुदामें प्रवेशी जाय सो सुवर्णादि धातुकी, बांस, नरकुल, गजदन्त व मृगसींग की हो और उसका अग्रभाग पन्ना व बिल्लौरका बनावै ॥ ७ ॥ नली योग्य अवस्था जो वर्ष एक से छः वर्षताईं बालक के वस्ति की नली छःअंगुल बनावै और छः वर्ष से बारह वर्षताईं की आठअंगुलकी बनावै और बारह वर्षसे ऊपरवाले की नली बारह अंगुलकी बनावै ॥८॥ (नली छिद्रप्रमाण और निर्माणविधि) छ अंगुलकी नलीका मंचार करनेवाला मुख मूंग समान करै नीचेका छोटी अंगुली समान और आठ अंगुलकी मटरसा दूसरा मध्य अंगुलीसा बारह अंगुलवाली का झरबेरी के बेर समान दूसरी अंगुली समानराखै नली बहुत चिकनी रहै गोपुच्छ सदृश ॥ ९ ॥ एकओर पतली दूसरी ओर मोटी मोटी ओरके चौथाई भाग में दो छल्ले जड़ेहों तिसमें थैली हरिणादि के मूतने की चढ़ाइ पूर्वोक्त छल्लोंका मय थैली समेत बहुत पुष्ट करै जिसमें थैली औषध न और राहसे निकले तब पिचकारी ठीक जानो ॥ १० । ११ ॥ थैली निर्मित जानो-हरिण, छाग, बराह, बैल व भैंसा इनके मूत्रकी थैली उस नली में लगावैं जो ये न मिलें तो इनके चमडे को कमलपत्र सम काटि

व्रणवस्तेस्तुनेत्रंस्याच्छ्लक्ष्णमष्टाङ्गुलोन्मितम्। मुद्गच्छिद्रंगृध्रपक्षनलिकापरिणाहिच १३ शरीरोपचयंवर्णंबलमारोग्यमायुषः। कुरुतेपरिवृद्धिंचवस्तिःसम्यगुपासितः १४ दिवसान्तेवसन्तेचस्नेहवस्तिःप्रदीयते। ग्रीष्मवर्षाशरत्कालेरात्रौस्यादनुवासनम् १५ नचातिस्निग्धमशनंभोजयित्वानुवासयेत्। मदंमूर्च्छांचजनयेद्द्विधास्नेहःप्रयोजितः १६ रूक्षंभुक्तवतोत्यन्तंबलंवर्णंचहीयते। युक्तस्नेहमतोजन्तुंभोजयित्वानुवासयेत्। हीनमात्रावुभौवस्तीनातिकार्यकरौस्मृतौ १७ अतिमात्रौतथानाहक्लमातीसारकारकौ। उत्तमस्यपलैः षड्भिर्मध्यमस्यपलैस्त्रिभिः १८ पलाधर्द्धेनहीनस्ययुक्तामात्रानुवासने। शताह्वासैन्धवाभ्यांचदेयंस्नेहेचचूर्णकम् १९ तन्मात्रोत्तमम

दोनों ओर छीलि साफ़ करि थैली समान बनाय नलीपर चढ़ावै॥ १२॥ (व्रणादि पिचकारी का प्रमाण) घाव फोड़ा नासूरादि की पिचकारी आठ अंगुल लम्बी मूंग पैठने मुवाफ़िक छेद रहै गृध्र के पक्षसदृश मोटी अतिचिकनी पतली छोटी नासूर व्रणयोग है॥ १३॥ (वस्तिगुण) वस्ति अच्छेप्रकार हो तौ शरीर पुष्ट औ कांति, बल, आरोग्य व आयुवृद्धि करै॥ १४॥ (वस्ति सेचनकाल) वसन्तऋतुमें सन्ध्यासमय स्नेहवस्ति करै अनुवस्ति करना ग्रीष्म वर्षा शरद् में रात को करना॥ १५॥ रोगी को उष्ण चिकना भोजन रात को खिलाय अनुवासन करने से मद या मूर्च्छा उत्पन्न होती हैं और रूखे भोजन से बल व कांति की हानि होय ये दोनों तरह वस्तिकर्म करै ये रोग होते हैं॥ १६॥ १७॥ (वस्तिकर्म में न्यूनाधिकमात्रादोष) अनुवासन वा निरूहण में हीन मात्रा देने से रोग नहीं जाता अति मात्रा देने से आनाह, ग्लानि व अतीसार ये उपजते हैं वस्तिकी उत्तम मात्रा छः पलकी पली को अनुवासन देना मध्यम पलको तीन पलकी॥ १८॥ बलहीन को हीन मात्रा डेढ़पल देना स्नेह में और द्रव्य मात्रा शतावरि सेंधव का चूर्ण छः मासे की उत्तम मात्रा चारि मासे की मध्यम दोमासे की कनिष्ठ जानना (विरेचन पर वस्तिप्रकार) विरे-

ध्यान्ताः पट्चतुर्द्वयमाषकैः । विरेचनात्सप्तरात्रेगतेजात वलायच २० भुक्तान्नायानुवास्यायवस्तिर्देयोनुवासनः । अथानुवास्यंस्वभक्तमुष्णाम्बुस्वेदितंशनैः २१ भोजयित्वायथाशास्त्रकृतंचङ्क्रमणंततः । उत्सृष्टानिलविण्मूत्रंयोजयेत्स्नेहवस्तिना २२ सुप्तस्यवामपार्श्वेनवामजङ्घाप्रसारिणः । कुञ्चितापरजङ्घस्यनेत्रंस्निग्धगुदेन्यसेत् २३ बद्ध्वावस्तिमुखंसूत्रैर्वामहस्तेनधारयेत् । पीडयेद्दक्षिणेनैव मध्यवेगेनधीरधीः २४ जृम्भाकासक्षुतादींश्चवस्तिकाले नकारयेत् । त्रिंशन्मात्रामितःकालःप्रोक्तोवस्तेस्तुपीडने २५ ततःप्रणिहितःस्नेहउत्तानोवाक्छतंभवेत् । जानुमण्डलमावेष्ट्यकुर्याच्छोठिकयायुतम् २६ एकामात्रा भवेदेपासर्वत्रैषविनिश्चयः । प्रसारितैःसर्वगात्रैर्यथावीर्यंप्रसर्पति २७ ताडयेत्तलयोरेनंत्रीन्वारांश्चशनैःशनैः ।

चन किये को सात दिन बिताय बल आने पर ॥ १९ । २० ॥ भोजन कराय अनुवासन वस्तिकरना (पिचकारी पीड़ित प्रकार) अनुवासन कर्म के प्रथम तेल लगाय गरम पानी से नहवाय ॥ २१ ॥ यथालिखित भोजन कराय कुछ टहलाय पवन, मल व मूत्र की शङ्का मिटाय ॥ २२ ॥ बाईं करवट पौढाय दहिना गोड़ सिकोड़ बायां पसारि मलमार्ग में घी लगावै ॥ २३ ॥ तब पिचकारी थैली में यथा लिखित स्नेह मात्रा भरि थैलामुख बस्ति का मुख सूत्र से बांधि बायें कर धारि धीरे धीरे मलमार्ग में दो अंगुल प्रवेशै ॥ २४ ॥ तब दहिने हाथ से द्रव्यभरी थैली मन्द मन्द पीड़ित करै जिसमें भीतर पिचकारी देते हैं उस समय जँभाई छींक खांसी न आवै (रोगीको वस्तिप्रदसमय) पिचकारी दे तीस मात्रा साईं रोकै इतनी देर में स्नेहादिक अन्दर प्रवेश होजायगा फिर सौ मात्रा तक सीधा सुलावै (मात्राप्रमाण) जंघ मण्डल कहे "कटि से घुटनी पर्यन्त" तिसके चारों ओर चुटकी बजाता हाथ घुमावै ॥ २५ । २६ ॥ तो एकमात्राहोय यह सब ग्रन्थन में निश्चय है (वस्तिके पीछे कृत्य) वस्ति पीड़ित करि रोगी के पांव हाथ व शरीर फैलाय लम्बा करदे इससे सातों धातु अपने अपने स्थानमें फैल

स्फिजौ चैवं ततः श्रोणीं शय्यां चैवोत्क्षिपेत्ततः ॥२८॥ जाते
विधाने तु ततः कुर्यान्निद्रां यथासुखम् ॥ सानिलः सपुरीष
श्च स्नेहः प्रत्येति यस्य तु ॥ उपद्रवं विना शीघ्रं स सम्यग
नुवासितः ॥२९॥ जीर्णान्नमर्थसायाह्ने स्नेहे प्रत्यागते पु
नः ॥ लघ्वन्नं भोजयेत्कामं दीप्ताग्निस्तु नरो यदि ॥३०॥ अनु
वासिताय देयं स्याद् द्वितीयेऽह्नि सुखोदकम् । धान्यशुण्ठी
कषायो वा स्नेहव्यापत्तिनाशनम् ॥३१॥ अनेन विधिना षड्वा
सप्त वाष्टौ नवाथवा ॥ विधेया बस्तयस्तेषामन्ते चैव निरूह
णम् ॥३२॥ दत्तस्तु प्रथमो बस्तिः स्नेहयेद्बस्तिवङ्क्षणौ। सम्य
ग्दत्तो द्वितीयस्तु मूर्द्धस्थमनिलं जयेत् ॥३३॥ बलं वर्णं च
जनयेत्तृतीयस्तु प्रयोजितः॥ चतुर्थपञ्चमौ दत्तौ स्नेहयेतां
रसासृजौ ॥३४॥ षष्ठो मांसं स्नेहयति सप्तमो मेद एव च ॥ अष्ट

मेतेवमरश्चापिमज्जानंचयथाक्रमम् २५ एवंशुक्रगतान्दो
षान्द्विगुणःसाधुसाधयेत् । अष्टादशाष्टादशकान्बस्तीन्
योनिषेवते ३६ सकुञ्जरबलोश्वस्त्रंजयेत्तुल्योमरप्रभः । रू
क्षायबहुवातायस्नेहबस्तिंदिनेदिने ३७ दद्याद्वैद्यस्तथान्ये
षामन्यांवाधामपाहरेत् । स्नेहोल्पमात्रोरूक्षाणांदीर्घकाल
मनात्ययः ३८ तथानिरूहःस्निग्धानामल्पमात्रःप्रशस्य
ते । अथवायस्यतत्कालंस्नेहोनिर्यातिकेवलः ३९ तस्यान्यो
न्यतरोदेयोनहिस्निग्धस्यतिष्ठति । अशुद्धस्यमलोन्मिश्रः
स्नेहोनैतियदापुनः ४० तथाशैथिल्यमाध्मानंशूलंश्वास
श्चजायते । पक्काशयेगुरुत्वंचतत्रदद्यान्निरूहणम् ४१ ती
क्ष्णंतीक्ष्णौषधैर्युक्ताफलवर्तिर्हितायत्र । यथानुलोमनंवा
युर्मलंस्नेहश्चजायते ४२ तथाविरेचनंदद्यात्तीक्ष्णंनस्यंच

होतेहैं ॥ ३५ ॥ इस प्रकार से नव द्विगुनी अठारह वेग देने से शुक्रधातुका दोष नाश होजाता है ॥ ३६ ॥ और जिसे छत्तीस वेगहों तिसे हाथी घोड़े सदृश बलहो और देवतासमान कांतिहो (अन्यमत में) जो रूक्ष वातकरि अधिक पीड़ित हो उसे अनुवासन बस्ति जब जब प्रयोजन जाने तब तब देय ॥ ३७ ॥ और चिकने वा मोटे मनुष्यको जब जब उचित जानै तब तब निरूहणबस्ति देय तो रोग नाश होताहै, भूखे मनुष्य को स्नेहबस्ति हलकी हलकी नित्य-प्रति देय ॥ ३८ ॥ और जो रोग चिरकाल का होय तो निरूहण बस्ति हलकी हलकी नित्यप्रति देय (स्नेह शीघ्र निकलनेपर) जब स्नेहादि शीघ्र निकलारे तब निरूहणबस्ति करै इसी रीतिसे जितने वेग देय सबके अंतमें बृंहण देता जाय (स्नेहस्राव न होनेपर उपद्रव) जो विरेचन वमनकरि शुद्ध किया बस्तिकर्म किया तिसमें स्नेहादिक रुकनेसे ये उपद्रव होते हैं ॥ ३९।४० ॥ शिथिल गात्र, पेटफूलना, शूल, श्वास, ओझरी कठोर इन उपद्रवके दूरकरने को तीक्ष्ण निरूहण देना ॥ ४१ ॥ तीक्ष्ण औषध युक्त फलवर्ती जिसमें वायु अधोगामी हुई मल युक्त स्नेहको गिरावै तिसे तीक्ष्ण रेचन तीक्ष्ण नास देने से शमन होते हैं ॥ ४२ ॥ जो स्नेहबस्ति करने से कोई उपद्रव न होय और स्नेहादि भीतर रहे

मानिकृतानिमुनिपुङ्गवैः १ निरूहस्यापरंनामप्रोक्तमास्थापनंबुधैः स्वस्थानस्थापनाद्दोषधातूनांस्थापनंमतम् २ निरूहस्यप्रमाणंतुप्रस्थंपादोत्तरंमतम् । मध्यमंप्रस्थमुद्दिष्टंहीनंचकुडवास्त्रयः ३ अतिस्निग्धोत्क्लिष्टदोषौक्षतोरस्कःकृशस्तथा । आध्मानच्छर्दिहिक्कार्शःकासश्वासप्रपीडितः ४ गुदशोफातिसारार्तोविसूचीकुष्ठसंयुतः । गर्भिणीमधुमेहीचनास्थाप्यश्चजलोदरी ५ वातव्याधावुदावर्तेवातासृग्विषमज्वरे । मूर्च्छातृष्णोदरानाहमूत्रकृच्छ्राश्मरीषु च ६ वृद्धासृग्दरमन्दाग्निप्रमेहेषुनिरूहणम् । शूलेऽम्लपित्तहृद्रोगेयोजयेद्विधिवद्बुधः ७ उत्सृष्टानिलविण्मूत्रंस्निग्धस्विन्नमभोजितम् । मध्याह्नेगृहमध्येचयथायोग्यंनिरूहयेत्

के अनेक भेद हैं जहां जैसा देना चाहिये तहां मुनीश्वरोंने तैसाही नाम धरा है यथा लेखनवस्ति दोषउत्क्लेशन व दोषशमनवस्ति यह नाम प्रकार जानना ॥ १ ॥ निरूहणका दूसरा नाम आस्थापनवस्ति कहते हैं इस कारण से कि उत्पन्न हुये दोषसंयुक्त रसादिक धातु अपने स्थान में प्राप्त हैं उनके वातादिक दोष वा रोगों को दूरकरि शुद्ध धातुओं को स्थितकरती है ॥ २ ॥ (निरूहमें क्वाथ प्रमाण) निरूह सवाप्रस्थ की उत्तममात्रा है प्रस्थभरकी मध्यम तीन कुडव की कनिष्ठमात्रा कहा है ॥ ३ ॥ (निरूहमें अयोग्य) अतिस्निग्ध, कोठेवाला, उत्क्लेशित दोषवाला, उरःक्षती, कृशी, आध्मानी, छर्दिरोगी, हिक्की, अर्शी, कासाती, और श्वासी ऐसे मनुष्य ॥ ४ ॥ गुदाके निकट पीड़ित, शोथी, अतीसारी, शीत, रक्त, कुष्ठी, गर्भिणी, मधुमेही और जलोदरी इन रोगियों को निरूहण देना योग्य नहीं ॥ ५ ॥ (निरूहवस्ति योग्य) वात, उदावर्त, वातरक्त, विषमज्वर, मूर्च्छा, तृष्णा, उदर, आनाह, मूत्रकृच्छ्र, पथरी ॥ ६ ॥ पुराना रक्तस्राव मन्दाग्नि, प्रमेह, शूल, अम्लपित्त और हृदयरोग इन रोगों से युक्त को निरूह देना योग्य है ॥ ७ ॥ (निरूहवस्तिविधान) जिसे निरूह देनीहो जिसे मल मूत्रकी शंका निवारण कराय पश्न छूटनेकी शंका मिटाय कोठा शुद्धकरि देह में तैलमर्दन तप्तजल से अथवा पोटली से थोड़ा सेदित करि दुपहर समय से भोजन त्यागि जिसे जहां देना होय तैसी ओषधि प्रतिकारकरि और पूर्वोक्त

त् ८ स्नेहबस्तिविधानेनबुधःकुर्यान्निरूहणम् । जातेनिरूहेचततोभवेदुत्कटकासनः ९ तिष्ठेन्मुहूर्तमात्रंतुनिरूहागमनेच्छया । अनायातंमुहूर्त्तात्तुनिरूहंशोधनैर्हरेत् १० निरूहैरेवमतिमान्क्षारमूत्राम्लसैन्धवैः । यस्यक्रमेणगच्छन्तिविट्पित्तकफवायवः । लाघवंचोपजायेतसुनिरूढंतमादिशेत् ११ यस्यस्याद्बस्तिरल्पाल्पवेगोहीनमलानिलः । मूत्रार्तिजाड्यारुचिमान्दुर्निरूढंतमादिशेत् १२ विविक्ततामनस्तुष्टिःस्निग्धताव्याधिनिग्रहः । आस्थापनस्नेहबस्त्योस्सम्यग्दानेतुलक्षणम् १३ अनेनविधिनायुञ्ज्यान्निरूहंबस्तिदानवित् । द्वितीयंवातृतीयंवाचतुर्थंवायथोचितम् १४ सस्नेहएकःपवनेपित्तेद्वौपयसासह । कषायकटुरूक्षाश्चकफेकोष्णास्त्रयोमताः १५ पित्तश्लेष्मानिलाविष्टेक्षीरयूषरसैःक्रमात् । निरूहंयोजयित्वाचततस्तदनुवासयेत् १६

अनुवासन वस्तिविधानसे निरूहणवस्ति करै ॥ ८ ॥ ९ ॥ फिर औषध बाहर निकलने के कारण मुहूर्त्त कहे "दोघड़ी" कोंठी "उकडू" बैठावे इतने में औषध गिरै तो अच्छा जो न गिरै तो शोधन कहे रेचन ॥ १० ॥ या भी न गिरै तो जवाखार, गोमूत्र, खट्टे का रस व सैंधव मिलाय फिर निरूहकी देनेसे गिरैगी (अच्छी निरूहलक्षण) निरूह अच्छी होय तो क्रमसे मल, पित्त, कफ व वायु गिरै और शरीर हलका होजाय तो निरूह भला जानिये ॥ ११ ॥ (अशुद्धवस्तिलक्षण) जिसके वस्तिदेने से थोड़ाथोड़ा विकार और मल नहीं निकलगये उसके मूत्रमार्ग में पीड़ा तथा जड़ता और अरुचि होय ॥ १२ ॥ (निरूहस्नेहवस्तिलक्षण) देह हलकी, मन मगन, स्नेह चिकना रोगनाश ये अच्छी वस्ति के लक्षण हैं ॥ १३ ॥ जो चतुर वस्तिकर्म जाननेवाले वैद्य यो निरूहवस्ति करै नहीं तो वस्ति विरुद्ध होती है (निरूहवस्तिदानप्रमाण) निरूहवस्ति एक वा दो वा तीन वा चार बार जैसा दोष वैसा दे ॥ १४ ॥ वातरोग में स्नेहयुक्त निरूह एकवार दे पित्त में दूध दो बार कफ में कषायकटु रूक्षादियुक्त सुखोष्ण कारि तीनवार दे ॥ १५ ॥ त्रिदोषमें क्वाथ दूध मांसरसयुक्त

सुकुमारस्यवृद्धस्यबालस्यचमृदुर्हितः । वस्तिस्तीक्ष्णः प्रयुक्तस्तुतेषांहन्याद्बलायुषी १७ दद्यादुत्क्लेशनंपूर्वमध्ये दोषहरंततः । पश्चात्संशमनीयंचदद्याद्वस्तिंविचक्षणः १८ एरण्डबीजंमधुकंपिप्पलीसैन्धवंवचा । हवुषाफलकल्कश्च वस्तिरुत्क्लेशनःस्मृतः १९ शतावरीमधुकंबिल्वंकौटजंफलमेवच । सकाञ्जिकःसगोमूत्रोवस्तिर्दोषहरःस्मृतः २० शोधनंद्रव्यनिष्क्राथस्तत्कल्कैःस्नेहसैन्धवैः । युक्त्याखजेनसमथितावस्तयःशोधनाःस्मृताः २१ प्रियङ्गुर्मधुकोमुस्तातथैवचरसाञ्जनम् । सक्षीरःशस्यतेवस्तिर्दोषाणांशमनेस्मृतः २२ त्रिफलाक्वाथगोमूत्रक्षौद्रक्षारसमायुताः । ऊषकादिप्रतीवापैर्वस्तयोलेखनास्स्मृताः २३ बृंहणद्रव्यनिष्काथः

क्रमसे घारबार देना तिस पीछे स्नेहवस्ति देना ॥ १६ ॥ सुकुमार वा वृद्ध वा बालक को हलकी निरूह देना, सुकुमारादि की तीक्ष्णवस्ति से बल और आयु घटती है इंद वा आरग्वधादि कडुई कुलथी व यवादि रूक्ष ये द्रव्य आदि मध्यान्त क्रमसे देना प्रथम दोष उभारना मध्य से दोष नाशन व अन्त में दोष क्षीण करि शमनकारक देना ॥ १७ ॥ १८ ॥ (दोष उभारन द्रव्य) रेंडी बीज, महुआछाल, पीपरि, सैंधव, वच और हाऊबेर इनकी पिचकारी में दोष उभरताहै ॥ १९ ॥ (दोपनाशकद्रव्य)-शतावरि, मुलेठी, बेल और इन्द्रयव, इनको काञ्जी में पीसि गोमूत्र युक्त पिचकारी रोगहारक देना ॥ २० ॥ (दोषशमन औषध) निशोथ आदिक शोधन द्रव्यका क्वाथकरि तैल वा सैंधव डारि मथिके दोष शोधन निमित्त इसीका अथवा और द्रव्यको कल्क भी मथिके पिचकारी देना ॥ २१ ॥ मकरापूल, महुआछाल, नागरमोथा और रसौत ये सब समभाग दूधमें पीसि दोषशमनार्थ देना ॥ २२ ॥ (लेखनवस्ति) त्रिफलाक्वाथमें गोमूत्र, शहद व, जवाखार ये द्रव्य समान भागले ऊषकादिगण द्रव्य मिश्रितकरि लेखनवस्ति देना लेखन कहे "जो मेद दूषित तिन रोगिनको दुबलाकरै" ॥ २३ ॥ (बृहणवस्ति) मुसली, गुलरू व केवाचबीज इत्यादि बृंहण द्रव्य है सो धातुको बढाती है इनको क्वाथकरि महुआ की छाल दाख व

१ महोरागादिकों का जो द्रव्य, कर्मा और लेखनवस्ति कहते हैं ॥

कल्कैर्मधुरकैर्युतः। सर्पिर्मांसरसोपेतावस्तिर्योबृंहणोम
तः॥ २४ बदरैरावतीशेलुशाल्मलीधन्वनागरैः। क्षी
रसिद्धःक्षौद्रयुक्तानाम्नापिच्छिलसंज्ञितः २५ अजोरभ्रै
णरुधिरैर्युक्तादेयाविचक्षणैः। मात्रापिच्छिलवस्तीनांपलै
र्द्वादशभिर्मता २६ दत्त्वादौसैन्धवस्याक्षंमधुनाप्रसृति
द्वयम्। विनिर्मथ्यततोदद्यात्स्नेहस्यप्रसृतित्रयम् २७
एकीभूतेततःस्नेहेकल्कस्यप्रसृतिंक्षिपेत्। सम्मूर्च्छिते
कषायेतुचतुष्प्रसृतिसम्मितम् २८ निक्षिप्यविमथ्यदद्या
च्छनिरूहकुशलोभिषक्। वातेचतुष्पलंक्षौद्रंदद्यात्स्नेह
स्यषट्पलम् २९ पित्तेचतुष्पलंक्षौद्रंस्नेहस्यचपलत्र
यम्। कफेषट्पलिकंक्षौद्रंस्नेहस्यैवचतुष्पलम् ३० एर
ण्डकाथतुल्यांशंमधुतैलंपलाष्टकम्। शतपुष्पापलार्द्धेन
सैन्धवार्द्धेनसंयुतम् ३१ मधुतैलकसंज्ञोयंवस्तिर्देयोविलो

अनारादि मधुर द्रव्य का कल्क और घृत तथा मांसरस ये सब पूर्वोक्त क्वाथ में डालि धातु बढाने को पिचकारी देय॥ २४ ॥ (पिच्छिलवस्ति) बेरकी छाल, इलायची, लसोडेकी छाल, सेमर, जवासा व सोंठ ये सब समान भाग ले दूध में पीसि शहद॥ २५॥ छाग, मेढा व हरिण इनका रुधिर मिश्रितकरि चतुर वैद्य दोष पिघलाने के लिये पिच्छिलवस्ति को देते हैं इस की मात्रा का प्रमाण बारहपल है (निरूहणवस्ति प्रमाणविधि) प्रथम सैंधव कर्ष की एकही संझाई सेंधव कर्षभर, शहद चारपल मर्दन करि छहपल घी दे॥ २६ । २७॥ एकत्र करै इस में दोपल पूर्वोक्त कल्क द्रव्य मिलावै अथवा पूर्वोक्त कल्कद्रव्यका काथ कहे (काढा) करि लीजिये ॥ २८॥ आठपल प्रमाण कुशल वैद्य इकट्ठी करि मथि निरूहवस्ति देय निरूहवस्ति की साधारण विधि जानो (विशेष विधान) वातमें ४ पल मधु ६ पल स्नेह इकट्ठा करि पिचकारी देना॥२९॥ पित्त में ४ पल मधु ३ पल स्नेह इकट्ठाकरि पिचकारी देय कफ में छहपल मधु ४ पल स्नेह एकत्रकरि देना ॥ ३०॥ (मधुतैलवस्ति) एरण्डमूलकाथ ८ पल शहद तेल आठ आठ पल बडी सौंफ व सेंधव आधा आधा पल ये सब एकत्रकरि

डितः। मेदोगुल्मकृमिप्लीहमलोदावर्तनाशनः ३२ बल वर्णकरश्चैववृष्योबृंहणदीपनः। ओद्राज्यक्षीरतैलानांप्रसृतिःप्रसृतिर्भवेत् ३३ हपुषाक्षेन्धवाभ्यांशोनस्तिःस्याद्दीपन-परः। एरण्डमूलनिष्काथोमधुतैलंससैन्धवम् ३४ एष युक्तरसोवस्तिः सवचापिप्पलीफलः। पञ्चमूलस्यनिष्काथस्तैलंमागधिकामधु ३५ ससैन्धवःसमधुकः सिद्धवस्तिरितिस्मृतः। स्नानिमुष्णोदकैःकुर्याद्दिवास्वप्नमजीर्णताम्। वर्जयेदपरंसर्वमाचरेत्स्नेहवस्तिवत् ३६॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेउत्तरखण्डेनिरूहणविधिःषष्ठोऽध्यायः ६॥

अतःपरंप्रवक्ष्यामिवस्तिमुत्तरसंज्ञितम्। द्वादशाङ्गुलकंनेत्रंमध्येचकृतकर्णिकम् १ मालतीपुष्पवृन्ताभंछिद्रंसर्षपनिर्गमम्। पञ्चविंशतिवर्षाणामधोमात्राद्विकार्षिकी २ तदूर्ध्वंपलमानंस्यात्स्नेहस्योक्तंविचक्षणैः। अथास्थापन

तगभर मधि॥ ३१॥ यह मधुतैल वस्ति है इसे देने से मेदरोग, गुल्म, कृमि, प्लीह, मल वा उदावर्त ये रोग नाश होते हैं॥ और बल कांति, श्री, इच्छा, धातुवृद्धि अग्नि दीप्त होय (दीपन करैं) शहद, घी, दूध ये तिल ये जो पल॥ ३३॥ हाऊबेर व सेंधव करके करै सूक्ष्म पीसि सबै मिलाय पिचकारी दिये से अग्नि दीप्त होय (युक्तरसवस्ति) रेंडमूलक्वाथ शहद तेलमें सेंधव॥ ३४॥ वच, पीपरि, मैनफल, चारों समभाग चूर्णकरि मिलायै पिचकारी देय यह युक्तरसवस्तिसब रोगों पर दीजाती है (सिद्धवस्ति पंचमूल क्वाथ) तेल और मधु मुलेठी क्वाथमें पीपरि व सैंधव मिलाय देय यह सिद्धवस्ति सब रोगनपर देते हैं (वस्ति में सेव्य निषेध पदार्थ) वस्तिसेवक उष्ण जल से नहाइ दिन में न सोवे अजीर्ण न होय और स्नेहवस्ति के समान सब आचरण करै॥ ३५॥ ३६॥

इति श्रीशार्ङ्गधरसंहिताकोउत्तरखण्डेषष्ठोऽध्यायः॥ ६॥

(अथोत्तरवस्तिविधान) उत्तर वस्ति कहे "मूत्रमार्ग में पिचकारी देने की विधि" तिस मे नेत्र बारह अंगुल लम्बी तिसके मध्य में पखुरी॥ १॥ चमेली के पुष्प डंडी व चमेली पुष्पकी डंडी समान मोटी रहे (मात्राप्रमाण) मनुष्य के २५ वर्षताई स्नेहमात्रा दो कर्षकी देय॥ २॥ पचीसके उपर पलभर

शुद्धस्यतर्तस्यस्नानभोजनैः ३ स्थितस्यजानुमात्रेचपीठेत्विष्टशलाकया। स्निग्धयामेढ्रमार्गेचततोनेत्रंनियोजयेत् ४ शनैश्शनैर्घृताभ्यक्तंमेढ्रमध्येङ्गुलानिषट् । ततोवपीडयेद्वस्तिंशनैर्नेत्रंचनिर्हरेत् ५ ततःप्रत्यागतेस्नेहेस्नेहवस्तिक्रमोहितः । स्त्रीणांकनिष्ठिकास्थूलंनेत्रंकुर्याद्दशाङ्गुलम् ६ मुद्गप्रवेशंयोज्यंचयोन्यंतश्चतुरङ्गुलम् । द्व्यङ्गुलंमूत्रमार्गेचसूक्ष्मनेत्रंनियोजयेत् ७ मूत्रकृच्छ्रविकारेषुबालानांत्वेकमङ्गुलम् । शनैर्निष्कम्पमाधेयंसूक्ष्मंनेत्रंविचक्षणैः ८ योनिमार्गेषुनारीणांस्नेहमात्राद्विपालिकी । मूत्रमार्गेपलोन्मानाबालानांचद्विकार्षिकी ९ उत्तानायैस्त्रियैदद्यादूर्ध्वजान्वैविचक्षणः । अप्रत्यागच्छतिभिषग्वस्ता

देना (अथास्थापनवस्तिविधि) स्थापन कहे उत्तर सेवक को शुद्ध स्नान भोजन करायं ॥ ३ ॥ घुटने टेकाय बैठावै वा घुटनेको टेकि खड़ारहे तब इष्ट शलाका चांदीका दो अंगुल मुंहपरघुरा ८ अंगुलसीधा सरसोंतिकरिजाने माफिक छेद होता है उस में घी वा तेल लगाय मूत्रमार्ग में ॥ ४ ॥ धीरे धीरे छः तथा आठअंगुल प्रवेशकरे यत्नपूर्वक जिसमें पीड़ा न करै जब मूत्र थैलीतक पहुंचि खटखट बजै तो जानो इसके पथरीहै ॥ ५ ॥ इसी शलाका से बन्द मूत्रभी खुलजाता है शलाकाछिद्र से वहिजाता है और जो पिचकारी देनी हो तो शलाकाकी पेंदी पर थैली चढाय औषधभरि पूर्ववत् पीडितकरै इस से मूत्रकृच्छ्रादि दूरहोते हैं यह उत्तरवस्ति क्रम है ॥ ६ ॥ (स्त्रीकेउत्तरवस्तिविधान) स्त्री की योनि में दो छिद्र होते हैं एक मूत्रमार्ग दूसरा गर्भमार्ग योनि यही है उसकी शलाका छंगुनिया की मुटाई दशांगुल की मूंग निकसने माफिक छेद राखि चारि अंगुल योनि में प्रवेश पिचकारी दे और मूत्रमार्ग में सूक्ष्म शलाका दो अंगुल प्रवेश ॥ ७ ॥ बालक के अंगुल एक शलाका प्रवेशै चतुर वैद्य क्षतिपहीन बालक के रसायन से देय पिचकारी पीडने में हाथ न कँपै ॥ ८ ॥ (स्त्रियों की वस्ति की मात्रा प्रमाण योनिमार्गे) पिचकारी देने की मात्रा दो पल औषध लेना मूत्रमार्ग की मात्रा एकपल है बालक वस्तिकी दो कर्षहै ॥ ९ ॥ निपुणवैद्य स्त्रीको उताना

वित्तरसंज्ञिते १० भूयोवस्तिंनिदध्याच्चसंयुक्तैः शोधनैर्गुणैः । फलवर्तिनिदध्याद्वायोनिमार्गेदृढंभिषक् ११ सूत्रैर्विनिर्मितांस्निग्धांशोधनद्रव्यसंयुताम् । दह्यमानेतथा वस्तौदद्याद्बस्तिंविचक्षणः १२ क्षीरवृक्षकषायेणपयसा शीतलेनच । वस्तिःशुक्ररजःपुंसां स्त्रीणामार्तवजारुजः १३ हन्यादुत्तरवस्तिस्तुनोचितोमेहिनांक्वचित् । सम्यग्दत्तस्यलिङ्गानिव्यापदःक्रमएवच १४ वस्तेरुत्तरसंज्ञस्यशमनंस्नेहवस्तिना । घृताभ्यक्तेगुदेक्षेप्याश्लक्ष्णेस्वाङ्गुष्ठसन्निभा । मलप्रवर्त्तिनीवर्त्तिःफलवर्त्तिश्चसास्मृता १५ ॥ इति श्रीदामोदरसूनुनाशार्ङ्गधरेणविरचितायांसंहितायांचिकित्सास्थानेउत्तरखण्डेउत्तरवस्तिविधानन्नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

नस्यंतत्कथ्यतेधीरैर्नासाग्राह्यंयदौषधम् । नावनंन

पीड़ाय पिचकारी पीडितकरै फिर उकुड्डूबैठाय दियाहुआ स्नेह गिरावै ॥ १० ॥ (शोधनद्रव्य मूत्रकृच्छ्रादि में शोधनद्रव्य) रेंडी तेलादि द्रव्यभरि पिचकारी देय अथवा फलवर्ति रेंडबीजादि सूत वा वस्त्रकी कडीवर्त्ती बनाय रेंड तेलादि में तसररि भिजोय उसपर रेंडी पीसि चुपरि योनि में राखै ॥ ११।१२॥ जो वस्ति किये नाभितरे वस्तिस्थान अधिक उष्णहोय तौ बड़ व गूलर की छाल के क्वाथ की पिचकारी देना व ठंढे दूध की इन से वस्ति शुद्ध होती है और शुक्रसंबंधी पीडा और स्त्रीके आर्तवसम्बन्धी रोगपीडा दूरहोय ॥ १३ ॥ प्रमेहीको उत्तरवस्ति कभी अयुक्तनहीं (उत्तरवस्तिलक्षण) उत्तरवस्ति में स्नेहवस्ति हुई तब शुक्र सम्बन्धी प्रमेहादिक पीड़ा दूर होती है उसके ये लक्षणहैं ॥ १४ ॥ (मलमार्गे फलवस्तिविधान) मलमार्ग में ढीलगाय मल गिराने के कारण रेचन द्रव्य रेंडबीजादि कड़ी वत्तीपर लेपि गुदा में धरै इसे फलवर्ति कहते हैं ॥ १५ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरसुधाकरेउत्तरखण्डेसप्तमोऽध्याय ॥ ७ ॥

(अथ नस्यकर्म) नाक की राह औषध देनेको नास कहते हैं इसके दो नाम

स्यकर्मेति तस्यनामद्वयंमतम् १ नस्यभेदोद्विधाप्रोक्तो रेचनंस्नेहनंतथा। रेचनंकर्षणंप्रोक्तंस्नेहनंबृंहणंमतम् २ कफपित्तानिलध्वंसे पूर्वमध्यापराह्णके । दिनस्यगृह्यते नस्यं रात्रावप्युत्कटेगदे ३ नस्यंत्यजेद्भोजनान्ते दुर्दिने चापतर्पणे । तथानवप्रतिश्यायीगर्भिणीगरदूषितः ४ अजीर्णीदत्तबस्तिश्चपीतस्नेहोदकासवः । क्रुद्धश्शोकाभिभूतश्च तृषार्तोवृद्धबालकौ ५ वेगावरोधीस्नातश्च स्नातुकामश्चवर्जयेत् ६ अष्टवर्षस्यबालस्य नस्यकर्म समाचरेत् । अशीतिवर्षादूर्ध्वंचनावनंनैवदीयते ७ अथ वारेचनंनस्यं ग्राह्यंतैलैःसुतीक्ष्णकैः । तीक्ष्णभेषजसिद्धैर्वास्नेहैःक्वाथैरसैस्तथा ८ नासिकारन्ध्रयोरष्टौ षट्चत्वा

हैं नावन एक नस्य दो ॥ १ ॥ नस्य रीति दो विधिकी है एक रेचन दूसरी स्नेहन और रेचनको कर्षण भी कहिये सो वातादि लखनको कर्षण करनेवाली है और स्नेहन नस्य धातुको वृद्ध करती है इससे बृंहण कहिये ॥ २ ॥ (नस्यकर्म समय) कफदूषितको प्रात नस्यदेना पित्तदूषितको मध्याह्न में देना वायुदूषितको संध्या के भीतरदेना और जो अतिपीड़ितहो तौ रात्रिकोदेना ॥ ३ ॥ (अथ नस्यनिषेधः) नस्यकर्म ऐसे को वर्जितहै भोजन करचुके पर तुरतही न दे दुर्दिन कहे आंधी वा पवन अति चलै वा मेघाच्छादितहो और लंघनी को पीनसके आरम्भ में गर्भिणीको विषदूषित को ॥ ४ ॥ अजीर्णपर वस्तिकृतको स्नेहपीतको पानी वा मद्यपीको तर्पणकृतको क्रोधशोकार्ता वृद्ध और बालकको ॥ ५ ॥ मलमूत्र वायु अवरोधीको तुरत स्नान कियेपर स्नानाकांक्षीको ऐसे मनुष्यन को और इन कर्मन कियेपर नस्यकर्म न करै ॥ ६ ॥ (नस्यकर्मणि योग्यायोग्य) आठवर्ष के उपरान्त अस्सीवर्षपर्यंत नासकर्म करना ॥ ७ ॥ (रेचन नासाविधि) रेचनकारक द्रव्यकी नास देनाचाहै तौ सराई वा सरसोंका तेल तीक्ष्ण है तिसकी नासदेना वा तीक्ष्ण द्रव्य में सिद्ध किया तेल वा तीक्ष्णद्रव्य का क्वाथ वा तीक्ष्णद्रव्यका स्वरसले तेल घृत सिद्धकरि नासदेना ॥ ८ ॥ (रेचने नस्यप्रमाणम्) रेचनसम्बन्धी औषधकी आठबूंद दोनों नथुनों में नास

रश्चबिन्दवः। प्रत्येकंरेचनेयोज्यंमुखमध्यान्त्यमात्रया ९ नस्यकर्मणिदातव्यंशाणैकंतीक्ष्णमौषधम्। हिङ्गुस्याद्यव मात्रन्तु माषैकंसैन्धवंमतम् १० क्षीरंचैवाष्टशाणंस्या त्पानीयंचत्रिकार्षिकम्। कार्षिकंमधुरंद्रव्यं नस्यकर्मणि योजयेत् ११ अवपीडःप्रधमनंद्वौभेदावपरौस्मृतौ। शि रोविरेचनस्थानेतौतुदेयौयथायथम् १२ कल्कीकृतादौ षधाद्यः पीडितोनिस्सृतोरसः। सोवपीड:समुद्दिष्टस्ती क्ष्णद्रव्यसमुद्भवः १३ षडङ्गुलाद्विवक्त्राया नाडीचूर्णंततो धमेत्। तीक्ष्णंकोलमितंवक्त्रं वातैःप्रधमनंहितम् १४ ऊर्ध्वजत्रुगतेरोगे कफजेस्वरसंक्षये। अरोचकेप्रतिश्या ये शिरःशूलेचपीनसे १५ शोफापस्मारकुष्ठेषु नस्यंवैरे चनंहितम्। भीरुस्त्रीकृशबालानांनस्यंस्नेहेनदीयते १६ गलरोगेसन्निपाते निद्रायांविषमज्वरे। मनोविकारेकृमि षुयुज्यतेचावपीडनम् १७ अत्यन्तोत्कटदोषेषुविसंज्ञेषुच

देय तौ उत्तममात्रा है छःबूंदकी मध्यम चारिबूंदकी कनिष्ठमात्रा कहाती है ॥९॥ (नस्यद्रव्यप्रमाणम्) नासदेनेको तेलादि सिद्धकरने में तीक्ष्ण औषध एक शाण देना हींग यवभरि सेंधव मापभरि ॥ १० ॥ दूध आठ शाण पानी तीन कर्ष प्रमाण मीठीद्रव्य कर्षप्रमाण देना ॥ ११ ॥ (मस्तकरेचनविधि)मस्तकरेचन दो प्रकारका है एक अवपीडन दूसरा प्रधमन ये मस्तकरेचन जानना ॥ १२ ॥ (अवपीडन वा प्रधमन विधान) तीक्ष्ण द्रव्य पीसिकै स्वरसलेनेको अवपीडन कहते हैं ॥ १३ ॥ दूसरी छः अंगुल प्रमाण नली दो मुखकी बनाई एकपर तीक्ष्ण द्रव्यका चूर्णधरि नाकमें प्रवेशकरि दूसरे मुखमें मुंहलगाय फूंके उसे प्रधमनकहते हैं तीक्ष्णद्रव्य सोंठि,मिर्च व पीपरि इसे त्रिकुटा कहते हैं ॥१४॥ (रेचन वा स्नेहन नासयोग्य) ऊर्ध्वगत कहे भृकुटी, मस्तक,कपाल,दशमद्वार पर्यंत गतरोग कफ-जन्य,स्वरभंग,अरोचक,नाक बपकना,माथेकी पीड़ा,पीनस,सूजन,मृगी और कुष्ठ इनमें रेचन उचितहै स्त्री,दुर्बल व बालक इन्हें स्नेह उचित नहीं है ॥ १५ । १६ ॥ (अवपीडनयोग्य) कंठरोग,सन्निपात, निद्रा, विषमज्वर व मनोविकार इनमें

दीयते । चूर्णंप्रधमनंधीरैस्तद्वितीक्ष्णतरंयतः १८ न
स्यंस्याद्गुडशुण्ठीभ्यांपिप्पल्यासैन्धवेनच । जलपिष्टे
र्नतेनाक्षिकर्णनासाशिरोगदाः १९ हनुमन्यागलोद्भूतान
श्यन्तिभुजपृष्ठजाः । मधूकसारकृष्णाभ्यांवचामरिचसैन्ध
वैः २० नस्यंकोष्णजलेपिष्टंदद्यात्संज्ञाप्रबोधने । अप
स्मारेतथोन्मादेसन्निपातेऽपतन्त्रके२१ सैन्धवंश्वेतमरिचं
सर्षपाःकुष्ठमेवच । वस्तमूत्रेणपिष्टानिनस्यंतन्द्रानिवारण
म् २२ रोहीतमत्स्यपित्तेनभावितंसैन्धवंवचा । मरिचंपि
प्पलीशुण्ठीकङ्कोलंलशुनंपुरम् । कट्फलंचेतितच्चूर्णंदेयंप्र
धमनंबुधैः २३ अथ बृंहणनस्यस्यकल्पनाकथ्यतेऽधुना ।
मर्शश्चप्रतिमर्शश्चद्वौभेदौस्नेहनेमतौ २४ मर्शस्यतर्प
णीमात्रामुख्यशाणैःस्मृताष्टभिः । मध्यमाचचतुःशाणै

अवपीड़न नासयोग्यहै ॥१७॥ (प्रधमन योग्य) मूर्च्छा, अपस्मार व संन्यासादि अचेतन रोगमें अत्यन्त तीक्ष्ण चूर्णादि करि नासदेना ॥१८॥ (अथ रेचन संज्ञकनस्य) गुड सोंठि औटिकै व अद्रकरस गुड़घोलि नासदे पीपरि व सेंधा औटिकै दे तिससे नेत्र, कान, नाक, माथा॥ १९ ॥ ठोड़ी, कंध, गल, हाथ व पांय की पीड़ा अच्छीहोय (पुनःप्रकार) महुवे की छालका गाभा, पीपरि, बच, मिर्च व सेंधानमक ॥ २० ॥ इन्हें पीसि तप्त जलसे नासदेय तौ मृगी, उन्माद सन्निपात व अपतन्त्र ये सब रोग मिटें शरीर हलका हो बुद्धि सावधानहो तो जानना॥२१॥ (पुनस्तृतीय प्रकार) सेंधव, श्वेत मिरच, सरसों व कूट ये सब छाग मूत्रमें पीसि नास देने से तन्द्रा नेत्रालस्य दूरहोइ॥२२॥(अथ प्रधमननस्य) सेंधव, बच, मिरच, पीपरि, सोंठि, कंकोल, लहसुन, गुग्गुल व कायफर इनका चूर्ण रोहू मछली के पित्तामें पुटदेइ एकनली के मुंहमेंधरि, दूसरा मुख नाक में प्रवेशि औषध की ओर से फूंकदेय तो तंद्रादि अचेतनरोग नाशहोयँ इस चूर्ण का प्रधमन नाम है ॥ २३ ॥ (अथ बृंहणनस्यविधान) बृंहणकहे धातुको पुष्ट करै व बढ़ावै इस बृंहणनास की मात्रा-बृंहणता के दो भेद है एकमर्श दूसरा प्रतिमर्श ये दोनों बृंहण हैं ॥ २४ ॥ इनके योग्य, मर्श में, तर्पणी नस्यकी मात्रा

नशाम्यन्तिरोगाश्चैवोर्ध्वजत्रुजाः ४१ वलीपलितनाश श्चवलमिन्द्रियजंभवेत् । बिभीतनिम्बकंभारीशिवाशेलु श्चकामिनी। ४२ एकैकंतैलन्नस्येनपलितंनश्यतिध्रुवम् । अथनस्यविधिंवक्ष्येनस्यग्रहणहेतवे । देशेवातरजोमुक्ते कृतदन्तनिघर्षणम् ४३ विशुद्धंधूमपानेन स्विन्नंभालंगलं तथा । उत्तानशायिनंकिञ्चित्प्रलम्बशिरसंनरम् ४४ आ स्तीर्णहस्तपादंचवस्त्राच्छादितलोचनम् । समुन्नमितना साग्रंवैद्योनस्येनयोजयेत् ४५ कोष्णमच्छिन्नधारंचहेम तारादिशुक्तिभिः । शुक्त्यावापत्रशुक्त्यावाप्रोतैर्वानस्य माचरेत् । नस्यष्वासिच्यमानेषशिरोनैवप्रकम्पयेत् ४६ नकुप्येन्नप्रभाषेतनोछिन्द्येन्नहसेत्तथा । एतर्हिविहितस्ने होनैवान्तः सम्प्रपद्यते ४७ ततःकासप्रतिश्यायशिरोक्षि गदसम्भवः । शृङ्गाटकमभिप्लाव्यस्थापयेन्नागिलेद्द्रवम् ४८ पञ्चसप्तदशैवस्युर्मात्रानस्यस्यधारणे । उपविश्याथ निष्ठीवेन्नासावक्त्रगतंद्रवम् ४९ वामदक्षिणपार्श्वाभ्यांनि

नास) बहेडा नींब, संभारी, हड, लसोड़ा व काकतुण्डी ॥ ४१ । ४२ ॥ इनके बीजनका तेल भिन्न भिन्न चाहि नास देय तौ बाल कारे होवैं (नस्यविधि) पवन व धूरि वर्जित स्थानमें मनुष्य दातूनकरि ॥ ४३ ॥ हुक्का पी गला मस्तक शुद्धकरि नाममें उत्ताना पौढे पीछे शिर झुकाय नाक ऊंची रहै ॥ ४४ ॥ हाथ पाव फैलाय कपड़े स आंखेंढाकि नाकका अग्रभाग नवाय वैद्य नहीं धीरेसे एक एकओर नस्य देय ॥ ४५ ॥ (नस्य देने का पात्र) सोने,रूपे, तावे वा सीसे का होय वा सीपीपत्र द्रोण वा कपड़ेकी पोटलीसे नासदेय नासलेनेवाला माथा न कँपावै ॥ ४६ ॥ क्रोध न करै बोले नहीं मारवी, मच्छड़ व खटकीरादि काटनें न पावैं हसे नहीं ऐसे लक्षणविना नस्यद्रव्य भीतर नहीं होती ॥ ४७ ॥ खासी आजाती है तो खराबहो मस्तक में आंखिन में कंठपीड़ा उत्पन्न करतीहै ॥ ४८ ॥ (नस्ये- साधारणप्रकार-) नास देनेसे शृंगाटक में औषध प्रवेशनार्थ पांच वा सात वा दशमात्रा ताईं नास धारणकरे जब मुँहमें उतर आवै तब परेपरे ॥ ४९ ॥ दाहिने

ष्ठीवेत्संमुखेनहि। नस्येनीतेमनस्तापं रजःक्रोधंचसन्त्य जेत् ५० शयीतनिद्रांत्यक्त्वाचउत्तानोवाक्कतंनरः। तथावैरेचनस्यान्तेधूमोवाकवलोहितः ५१ नस्येत्रीण्युप दिष्टानि लक्षणानिसमासतः। शुद्धहीनातियोगानिवि शेषाच्छास्त्रचिन्तकैः ५२ लाघवंमनसःशुद्धि स्रोतसां व्याधिसंक्षयः। चित्तेन्द्रियप्रसादश्चशिरसःशुद्धिलक्षण म् ५३ कण्डूपदेहौगुरुतास्रोतसांकफसंस्रवः। मूर्ध्निहीन विशुद्धेतुलक्षणंपरिकीर्त्तितम् ५४ मस्तलुङ्गागमोवात वृद्धिरिन्द्रियविभ्रमः। शून्यताशिरसश्चापिमूर्ध्निगाढवि रेचयेत् ५५ हीनातिशुद्धेशिरसिकफवातघ्नमाचरेत्। स म्यग्विशुद्धेशिरसिसर्पिर्नस्येनिषेचयेत् ५६ कफप्रसक्तः शिरसोगुरुतेन्द्रियविभ्रमः। लक्षणंतदातिस्निग्धंरूक्षंतत्र प्रदापयेत् ५७ भोजयेच्चानभिष्यन्दिनस्याचारिकमादि

सामें थूकदे सम्मुख थूकके थूकने से औषध गिरजाती है शृगाटक उसे कहते हैं जो नाकके दोनों छेद मोंहतक पहुँच दो गलेको चलेगये हैं ॥ ५० ॥ एक दहिनी एकबाई भृकुटी के नीचेही कपाल को चलेगये हैं (नस्य बाद्जल) नास लेकर संताप न करे धूलि, क्रोध, बैठना व निद्रा सीधाया डाई इनसे बचै उताना परारहै धुवां न पीवै थूक न लीलै ॥ ५१ ॥ (नस्यशुद्ध आदिभेद) नास विषे तीन लक्षण शास्त्रज्ञ कहतेहैं शुद्ध, हीन व अतियोग सो मैं संक्षेप से कहताहूं ॥ ५२ ॥ उत्तम शुद्धयोग भये से देह हलकी, मनशुद्ध, मुख, नाकरंध्र शुद्ध शिर रोगरहित चित्त इंद्रिय प्रसन्न ये शुद्धयोग के लक्षणहैं ॥ ५३ ॥ (हीनयोग) लघुयोग भये देह खुजली, गुरुत्व, मुख व नाकसे कफ गिरे ये हीनयोग के लक्षण हैं ॥ ५४ ॥ (अतियोग लक्षण) मस्तक की मज्जा नाकसे गिरे वायु वृद्धि, इंद्रिय संभ्रम व माथा खाली ॥ ५५ ॥ (हीनशुद्धयोगयत्न) कफवायुहारक द्रव्यकी भलीभांति नास दे फिर घी की नासदेय ॥ ५६ ॥ (अतिस्निग्ध लक्षण) जो नस्यकर्म से स्निग्धता अधिक हो तौ कफ अधिक गिरै माथा भारी इंद्रिय भ्रम ऐसे मनुष्य को रूक्ष नासदेना ॥ ५७ ॥ (नासमें

येत्। वमनंरेचनंनस्यंनिरूहमनुवासनम्। एतानिपञ्च कर्माणिकथितानिमुनीश्वरैः ५८॥

इति श्रीशार्ङ्गधरेउत्तरखण्डेनस्यविधिरष्टमोऽध्यायः॥८॥

धूमस्तुषड्विधःप्रोक्तःशमनोबृंहणस्तथा। रेचनःकासहाचैववामनोव्रणधूपनः १ शमनस्यतुपर्यायोमध्यःप्रायोगिकस्तथा। बृंहणस्यापिपर्यायोस्नेहनोमृदुरेवच २ रेचनस्यापिपर्यायोशोधनस्तीक्ष्णएवच। अधूमार्हाश्च खल्वेतेश्रान्तोभीरुश्चदुःखितः ३ दत्तबस्तिर्विरिक्तश्चरात्रौजागरितस्तथा। पिपासितश्चदाहार्तस्तालुशोषीतथोदरी ४ शिरोभितापीतिमिरीछर्द्याध्मानप्रपीडितः। क्षतोरस्कःप्रमेहार्त्तःपाण्डुरोगीचगर्भिणी ५ रूक्षःक्षीणोभ्यवहृतक्षीरक्षौद्रघृतासवः। भुक्तान्नदधिमत्स्यश्चबालोवृद्धःकृशस्तथा ६ अकालेचातिपीतश्चधूमःकुर्यादुपद्रवान्।

पथ्य) आभिष्यंदकारकद्रे "दद्ध्यादि भक्षण" त्यागे सुष्टु पूर्वोक्त आचार करै (पञ्चकर्म संख्या) वमन, विरेक, नस्य, निरूहवस्ति और अनुवासनवस्ति ये पंचकर्म मुनीश्वरों ने कहे हैं॥ ५८॥

इति श्रीशार्ङ्गधरसुधाकरेउत्तरखण्डेअष्टमोऽध्यायः॥ ८॥

(अथ धूमपानविधानम्) धूमपान छः प्रकारके हैं शमन, बृंहण, विरेचन, कासहा, वामन और व्रणधूपन ये छः प्रकार जानना॥ १॥ (शमनादि धूमोंके पर्याय) शमन धूमपान की पर्याय संज्ञा मध्य और प्रायोगिक बृंहण पर्याय स्नेह और मृदु॥ २॥ रेचन पर्याय शोधन और तीक्ष्ण धूम में अयोग्य थकित भयभीत दुःख पीड़ित॥ ३॥ धूमसेवन अयोग्य प्राणी वस्तिक्रिया दस्त आते को रातिजागे को प्यासेको दाहसे पीडित को तालु उदर सूखनेवालेको॥ ४॥ शिररोगी को तिमिररोगी को वमनकी रोगीको आध्मानरोगी को पेट फूलने को उरःक्षतीको प्रमेही पाडुरोगीको गर्भिणी को॥ ५॥ रूक्षको क्षीणको दूध, शहद, घृत स्वरस, मद्य, दही वा मछली इनके भोजन किये को बालक वृद्ध दुर्बल इनको धूमपान योग्य नहीं॥ ६॥ और असमय धूमपान करने से उपद्रव उत्पन्न

तत्रेष्टंसर्पिषःपानंनावनाञ्जनतर्पणम् ७ सर्पिरिक्षुरसंद्राक्षापयोवाशर्कराम्बुवा। मधुराम्लौरसौवापिशमनायप्रदापयेत् ८ धूमश्चद्वादशाद्वर्षादूर्ध्वञ्चतेऽशीतिकान्नरः। कासश्वासप्रतिश्यायान्मन्याहनुशिरोरुजः ९ वातश्लेष्मविकारांश्च हन्याद्धूमःसुयोजितः। धूमोपयोगात्पुरुषः प्रसन्नेन्द्रियवाङ्मनाः १० दृढकेशद्विजश्मश्रुसुगन्धवदनोभवेत्। धूमनाडीभवेत्तत्रत्रिखण्डाचत्रिपर्विका ११ कनिष्ठिकापरीणाहाराजमाषागमान्तरा। धूमनाडीभवेद्दीर्घा शमनेरोगिणोङ्गुलैः १२ चत्वारिंशन्मितैस्तद्वद्द्वात्रिंशद्भिर्मृदौस्मृता। तीक्ष्णेचतुर्विंशतिभिःकासघ्नेषोडशोन्मितैः १३ दशाङ्गुलैर्वामनीयेतथास्याद्व्रणनाडिका॥ कलायमण्डलंस्थूलाकुलित्थागमरन्ध्रिका १४ अथोपिकांस्यलि

होते हैं (अकाले धूमपानादि कृत उपद्रव की चिकित्सा) धूमपानमें भये उपद्रव में घी पिलावै नास देय अंजन करै अर्थात् शरीर तृप्ति करने को दाखका यूप दे ॥ ७ ॥ घृत, ऊखरस, दाख, दूध, मिश्री व शक्कर घोलि खिलावै वा इनका रस शहद युक्त पिलावै व और मधुर वस्तु वा खटमिठा पदार्थ दे तो धूमउपद्रव शांतहो ॥ ८ ॥ (धूमपानावस्था समय) धूमसेवन बारह वर्ष से अस्सी वर्ष पर्यन्तके मनुष्य को करावै जो धूमपान अच्छा बनै तो श्वास, कास, नाक बहना, गले व माथे की पीडा ॥ ९ ॥ वात कफजन्य विकार सब दूर हों (धूमपानविषे उपयोगी की प्रकृति) अच्छे धूमपान भये चक्षुरादि इन्द्रिय व अन्तःकरण तथा वाणी ये प्रसन्न होती हैं ॥ १० ॥ और केश, दन्त व डोढी दृढहो धूमनाडी तीन खण्ड तीन पर्व की ॥ ११ ॥ छगुनिया सी मोटी मटरसाछेदहो दीर्घहो ॥ १२ ॥ शमनधूमपान की नली ४० अंगुल लम्बी ले मृदुसंज्ञककी ३२ अंगुल लम्बी तीक्ष्णसंज्ञककी २४ अंगुल लम्बी कासघ्न की १६ अंगुल लम्बी ॥ १३ ॥ वामनीसंज्ञक की १० अंगुल लम्बी और व्रण कहे घाव में धूनी देने की १० अंगुल की लम्बी परन्तु व्रणकी नली पूर्वोक्त नलियों से महीन हो और छेद कुलथी प्रवेश करने लायकहो रहे

म्पेच्चसगलदणांद्वादशाङ्गुलम् । धूमद्रव्यस्यकल्केनलेपश्चाष्टाङ्गुलःस्मृतः १५ कल्कंकर्षमितंलिप्त्वाछायाशुष्कंनकारयेत् । ईषिकामपनीयाथस्नेहाक्तांवर्तिमादरात् १६ अङ्गारैर्दीपितांकृत्वाधृत्वानेत्रस्यरन्धके । वदनेनपिवेद्धूमं वदनेनैवसन्त्यजेत् १७ नासिकाभ्यांततःपीत्वामुखेनैववमेत्सुधीः । सरावसम्पुटेक्षिप्त्वाकल्कमङ्गारदीपितम् १८ छिद्रेनेत्रंविवेश्याथव्रणंतेनैवधूपयेत् । एलादिकल्कंशमनेस्निग्धंसर्जरसंमृदौ १९ रेचनेतीक्ष्णकल्कंचकासघ्नेक्षुद्रिकोषणम् । वामनेस्नायुचर्माद्यंदद्याद्धूमस्यपानकम् २० व्रणेनिम्बवचाद्यंचधूपनंसंप्रशस्यते । अन्येपिधूमगेहेषुकर्तव्यारोगशान्तये २१ मयूरपिच्छंनिम्बस्यपत्राणिवृहतीफलम् । मरिचंहिङ्गुमांसीचबीजंकार्पाससम्भवम् २२

तौ व्रण धूनित होवैगा ॥ १४ ॥ (धूमपानस्पैकविधानम्) द्वादश अंगुल की सींक छिलके समेत धूमद्रव्य कल्क चढाय छांह में सुखाय सींक निकारि बकला कल्क लिप्त रहिजाय ॥ १५ । १६ ॥ उसके छेदमें घृतबोरी महीन बत्ती मनेरा जलाय देय दूसरा छोर मुँह में ले धुवा खैंचे और मुँहसे धुवा छोडै ॥ १७ ॥ और बुद्धिमान् नाकसे पी मुँह से छोडै (धूनी विधान) दो सकोरे एक संपुट करै ऊपर छेदरहै उस छेद से संपुट में अग्नि धरि कल्क सुलगावै तब दुमुहीं नलीले एक संपुटके छिद्रमें दूसरे मुँहसेव्रणपर धुवां देय (कल्कधूमद्रव्याणि) शमन धूमपान में एलादि गणका कल्क देय मृदु में घृतादि स्नेह राल मिलाय कल्ककरि देय ॥ १८ । १९ ॥ तीक्ष्णमें सरसौं व मधु आदिकोंको कल्ककरि देय कास में मरिच भटकटैयादि कल्ककरि देय वमन हेतु चर्मादिका सुघादेना ॥ २० ॥ व्रण में नींन बचादि कल्ककरिदेय (वाग्भटोक्त एलादिगण) उभय इलायची, शिलारस, कूट, कसेरू मूल, मकरा, जटामांसी, खस, रोहिषतृण वा अगिया खर, कपूर, कचरी, बिरमानी, अजवायन, तज, तमालपत्र, तगर, मोथा, चमेली, केसर, सीपी, नागचम्पा, देवदारु, अगर, केसर हिमाचमूल, गूगल, राल, कपूर, चम्पागुरु ये एलादिगण हैं ॥ २१ ॥

छागरोमाहिनिर्मोकंविप्रावैडालकीतथा। गजदन्तैश्चतच्चूर्णंकिञ्चिद्घृतविमिश्रितम् २३ गेहेषुधूपनंदत्तंसर्वान्बालग्रहाञ्जयेत्। पिशाचान्राक्षसाञ्जित्वासर्वज्वरहरंभवेत् २४ परिहारस्तुधूमेषुकार्योरेचननस्यवत्। नेत्राणिधातुजान्याहुर्नलवंशादिजान्यपि २५ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेउत्तरखण्डेधूमपानविधिर्नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

चतुर्विधःस्याद्गण्डूषःस्नैहिकःशमनस्तथा।शोधनोरोपणश्चैवकवलश्चापितद्विधः १ स्निग्धोष्णैःस्नैहिकोवाते स्वादुशीतैःप्रसादनः। पित्तेकट्वम्ललवणैरूक्षैःसंशोधनःकफे २ कषायतिक्तमधुरैःकटूष्णोरोपणोव्रणे। चतुःप्रकारोगण्डूषःकवलश्चापिकीर्तितः ३ असञ्चारीमुखेपूर्णैर्गण्डूषाःकवलश्चरः।तत्रद्रव्येणगण्डूषःकल्केनकवलःस्मृतः ४

(बालग्रह निवारण धूप) मोरपंख, निम्बपत्र, भटकटैया, मरिच, हींग जटामांसी, विनवर ॥ २२ ॥ केंचुरी, बिलारनीद और हाथी दांत इन ग्यारहों के चूर्ण में घृत मिलाय ॥ २३ ॥ घर धूपित करने से सब बालग्रह पिशाच व राक्षसों के उपद्रव और इन सम्बन्धी सर्व ज्वर नाशहोवें ॥ २४ ॥ (धूमपान में परिहार) रेचन नस्य सदृश करना धुआं पीनेकी नली धातुमय वा बांसकी में पिये ॥ २५ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेउत्तरखण्डेनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

(गंडूष कवल व प्रतिसारणकी विधि) गंडूष ४ प्रकारके हैं स्नेहिक शमन, शोधन व रोपण योंहीं ४ प्रकार के कवल भी हैं ॥ १ ॥ (स्नैहिक गंडूष भेद) चिकना उष्ण पदार्थ स्नैहिकहै वायु प्रबलता में दीजै ठंढा पदार्थ शमन में पित्त विकार में कडुवा खट्टा लवण शोधन में कफ विकार में ॥ २ ॥ कषाय कटु मधुर तसकारि रोपण में देना व्रणादि में ऐसेही कवल में जानना ॥ ३ ॥ (गंडूष कवलरीति) जो गीला काढादि मुंहमें भरि खूब गुलगुलावै

१ द्रवपदार्थों से कुल्ले करनेका प्रकार ॥

२ पदार्थों को मुख में धर चबानेका प्रकार ॥

दद्याद्द्रवेषुचूर्णंचगण्डूषेकोलमात्रकम् । कर्षप्रमाणःक
ल्कश्चदीयतेकवलोबुधैः ५ धार्यन्तेपञ्चमाद्वर्षाद्गण्डूषकव
लादयः । गण्डूषात्सुस्थितःकुर्यात्स्विन्नभालगलादिकः६
मनुष्यस्त्रीस्तथापञ्चसप्तवादोषनाशनात् । कफपूर्णास्य
तांयावच्छेदोदोषस्यवाभवेत् ७ नेत्रघ्राणस्रुतिर्यावत्तावद्ग
ण्डूषधारणम् । तिलकल्कोदकंक्षीरंस्नेहोवास्नैर्हिकेहितः
८ तिलानीलोत्पलंसर्पिःशर्कराक्षीरमेवच । सक्षौद्रोहनुव
क्त्रस्थोगण्डूषोदाहनाशनः ९ वैशद्यंजनयत्यास्येसन्दधा
तिमुखव्रणान् । दाहतृष्णाप्रशमनंमधुगण्डूषधारणम् १०
विषक्षारोग्निदग्धेचसर्पिर्धार्यंपयोथवा।तैलसैन्धवगण्डूषो
दन्तचालेप्रशस्यते ११ शोषंमुखस्यवैरस्यंगण्डूषःकाञ्जि
कोजयेत्।सिन्धुत्रिकटुराजीभिरार्द्रकेणकफेहितः १२त्रिफ

उसे गंडूष कहैं जो कल्ककरि मुँहमें धरि फेराकरै सो कवल है ॥ ४ ॥ (उभयोर्द्रव्यप्रमाणम्) गंडूष के कार्यमें द्रव्य प्रमाण कोल कवल में कर्ष वर्ष देना ॥ ५ ॥ (गंडूष व कवलयोग्य अवस्था) पाचवर्ष के ऊपर सावधान करि रोगनिवारणार्थ कपाल, गला व मुख कुछ सेंक तीन वा पाच वा सात दोषनाशक गंडूष (कुल्ले) करै (पुनःप्रमाण) जा मुखमें कफ भरआवै वा तीनों दोष शान्तितक ॥ ६ । ७ ॥ वा नेत्र नाकसे जल टपकनेतक गंडूषकरै वातरोग स्नेह गंडूष तिलकल्क पानी दूध वा तिलादि स्निग्ध ये देना ॥ ८ ॥ (पित्त शमन-गंडूषम्) तिल, नीलकमल, घृत, खाड, दूध व शहद युक्त कुल्ले करने से पित्तजदाह ठोढी और मुखसे दूरहोय ॥ ९ ॥ (व्रणादि पर गंडूष) शहदके कुल्ले करनेसे मुख निर्मल, मुखमें घाव,दाह व प्यास ये उपद्रव दूरहों मुख शुद्धहो॥१०॥ (विषादिपर गंडूष) घृत वा दूध के कुल्ले करने से विष विकार चूने से फटा अग्निसे जरामुख अच्छाहो दात हलनेपर तिल तैल सेंधव युक्त कुल्ले करने से दात हलना दूर होताहै ॥ ११ ॥ (मुखशोषपर) मुख सूखना व फीका रहना काजीके कुल्लेसे शाति होय (कफदोषपर) अदरख के रसमें सैंधव, त्रिकुटा व राई पीसि मिलाय कुल्ले करने से कफ दोष मिटजाता है ॥ १२ ॥

क्षौद्रमधुगण्डूषः कफासृक्पित्तनाशनः। दार्वीगुडूचीत्रिफला द्राक्षाजात्यश्चपल्लवाः १३ यवासश्चेतितत्क्वाथःषडंगः क्षौद्रसंयुतः। शीतोमुखेधृतोहन्यान्मुखपाकंत्रिदोषजित् १४यस्यौषधस्यगण्डूषस्तस्यैवप्रतिसारणम्।कवलश्चापितस्यैवदेयोऽत्रकुशलैर्नरैः। केसरंमातुलुङ्गस्यसैन्धवव्योषसंयुतम् १५ हन्यात्कवलतोजाड्यमरुचिंकफवातजाम्।कल्कोवलेहश्चूर्णंचत्रिविधंप्रतिसारणम्१६अङ्गुल्यग्रगृहीतंचयथास्वंमुखरोगिणाम्। कुष्टंदार्वीसमङ्गाचपाठातिक्ताचपीतिका १७ तेजनीमुस्तलोध्रंचचूर्णंस्यात्प्रतिसारणम्। रक्तस्रुतिदन्तपीडांशोथंदाहंचनाशयेत् १८ हीनयोगात्कफोत्क्लेशोरसाज्ञानारुचीतथा। अतियोगान्मुखेपाकःशोषस्तृष्णाक्लमोभवेत् १९ व्याधेरवचय

(कफ रक्तपित्तपर) त्रिफला चूर्ण शहद में डारि कुल्ला करनेसे कफ, रक्त पित्त दोष मुखमें न रहै (मुखरोगपर) दारुहल्दी, गुर्च, त्रिफला, दाख, चमेली ॥ १३ ॥ और जवासा ये समान भागलेकाथकरि छठवा भाग शहददे ठंढे कुल्ले करनेसे त्रिदोष मुखपाक मिटताहै ॥ १४ ॥ गंडूष करनेवाली द्रव्य प्रतिसारण (मंजन) और कवल भी कुशली जनों को जानना चाहिये (कवल विधान) केसर, बिजौरा मूली, सैंधव व त्रिकुटा ॥ १५ ॥ इन सबका कौर बनाय मुख में मिलोवै तौ मुख की कठोरता और कफ व वात की अरुचि दूर हो (प्रतिसारण प्रकार) प्रतिसारण में तीन प्रकार औषध देनेकेहैं कल्क, अवलेह व चूर्ण ॥ १६ ॥ जैसा मुख में दोष देखै तैसी औषध अंगुली के अग्रभाग से मुखके भीतर मलै (प्रतिसारण चूर्ण) कूट, दारुहल्दी, धवपुष्प, पाढ़ा, कुटकी, हल्दी ॥ १७ ॥ तेजबल, नागरमोथा व लोध इनका चूर्ण जीभ और दांत की जड में वा सार मलै गिरावै इस प्रतिसारण से दांतपीडा, रक्त गिरना, मसूढा सूजन और दाह ये रोग दूरहोवें ॥ १८ ॥ (गण्डूषादि हीन युक्तभये से उपद्रव के लक्षण) हीन भये कफ अधिक, स्वाद अज्ञानता होती है अन्न से अरुचि, अतियोग से मुख पकना, पिड़िकी होना, मुखशोष,

स्तुष्टिर्वैशद्यंवक्त्रलाघवम् । इन्द्रियाणांप्रसादश्चगण्डूषैः शुद्धिलक्षणम् २० ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेउत्तरखण्डेगण्डूषादिविधिर्दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

आलेपकस्यनामानिलिप्तोलेपश्चलेपनम् । दोषघ्नो विषहावर्ण्योमुखलेपस्त्रिधामतः १ त्रिप्रमाणश्चतुर्भाग स्त्रिभागार्द्धाङ्गुलोन्नतः । आर्द्रोव्याधिहरःस्याच्छुष्को दूषयतिच्छविम् २ पुनर्नवादारुशुण्ठीसिद्धार्थशिग्रुमेव च । पिष्टांचैवारनालेनप्रलेपःसर्वशोथहा ३ विभीतफल मज्जाक्तलेपोदाहार्तिनाशनः । शिरीषंमधुयष्टींचतगरंर क्तचन्दनम् ४ एलामासीनिशायुग्मंकुष्ठंबालकमेवच । इ तिसंचूर्ण्यलेपोयंपञ्चमांशघृतप्लुतः ५ जलेनक्रियतेसुद्धे दशाङ्गइतिसंज्ञितः । विसर्पान्विषविस्फोटाञ्छोथान्दुष्टव्र

प्यास व ग्लानि ये उपद्रव होते हैं ॥ १९ ॥ (सम्यक् गण्डूष लक्षण) मुख व्याधिनाश, चित्त प्रसन्न, मुख निर्मल, हलका व इन्द्रियों की प्रसन्नता ये लक्षण होते हैं ॥ २० ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेउत्तरखण्डेदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

(अथ लेपविधानम्) लेपके तीन नामहैं, लिप्त, लेप व लेपन लेपदोषघ्न व विषघ्न होकर वर्ण्यमदहै ॥ १ ॥ मुखलेप तीन प्रकारका है उसका प्रमाण तीन भांति है जो अंगुलभर मोटा लेपहो सो दोषघ्न है, पौन अंगुल मोटा लेप चढ़ावे सो विषघ्न है, अर्द्धांगुललेप वर्ण्य है ऐसे तीन प्रमाण हैं ओदालेप रोगहर्ता है सूखा कांतिहर्ता है ॥ २ ॥ (दोषघ्न लेप) गदापुरैना, देवदारु, सोंठ, सफेद सरसों और सहिंजने की छाल ये पांचों समान भागले कांजी में पीसि सूजन पर लेपनकरै नयी सूजन दूरहोंगी ॥ ३ ॥ बहेड़े की मींगीके लेपसे दाह व पीड़ा नाशहो (दशांगलेप) सिरस की छाल, मुलेठी, तगर, लालचन्दन ॥ ४ ॥ इलायची, जटामासी, हरदी, दारुहल्दी, कूट और नेत्रबाला ये दशौ सम्मभाग चूर्णकरि पंचमाश घृत मिलाय ॥ ५ ॥ पानीमें पीसि लेपकरनेसे विसर्प, विषदोष, विस्फोटक, सूजन व दुष्ट फोड़ा ये सब पराजयहों इसका दशांगलेप

णाञ्जयेत् ६ अजादुग्धतिलैर्लेपोनवनीतेनसंयुतः । शो
थमारुष्करंहन्तिलेपोवाकृष्णमृत्तिकैः ७ लाङ्गल्यतिवि
षालावृजालिनीमूलबीजकैः । लेपोधान्याम्बुसम्पिष्टःकीट
विस्फोटनाशनः८रक्तचन्दनमञ्जिष्ठालोध्रंकुष्ठप्रियङ्गवः ।
वटाङ्कुरांमसूराश्चव्यङ्गघ्नामुखकान्तिदाः९ मातुलुङ्गज
टासर्पिःशिलागोशकृतोरसः।मुखकान्तिकरोलेपःपिटिका
व्यङ्गकीलजित् १० लोध्रधान्यवचालेपस्तारुण्यपिटि
कापहः । तद्वद्गोरोचनायुक्तम्मरिचंमुखलेपनात् ११ सि
द्धार्थकवचालोध्रसैन्धवैश्चप्रलेपनम् । व्यङ्गेषुचार्जुनत्व
ग्वामञ्जिष्ठावासमाक्षिका १२ लेपःसनवनीतोवाश्वेताश्व
खुरजामषी । अर्कक्षीरहरिद्राभ्यांमर्दयित्वाविलेपनात् १३

नाशहै ॥ ६ ॥ (विषघ्नलेप) बकरीके दूधमें तिलोंको पीसि माखनयुक्त लेप करै वा कारीमाटी व तिलका लेपकरै तो विषसंभव सूजन व भिलावें सूजन दूर होय ॥ ७ ॥ (पुनर्लेप) कलिहारी, अतीस, कडुदूध या कडुतुरई मूरी तीनों के बीज पांचों के समान कांजी में पीसिकै कीटदंश व विस्फोट पर लगाने से रोग मिटते हैं ॥ ८ ॥ (कांतिकारकलेप) रक्तचन्दन, मँजीठ, लोध, कूट, माल-कंगनी, वटांकुर व मसूर ये सब समान भागले जलमें पीसि लेपकरै व्यंग (झांई) रोग मिटै व कांतिवढै ॥९॥ (पुनः) बीजपूर की जड़,घृत, मैनशिल, गोवरका रस मिलाय लेपै कांति बढै मुहाँ और झाईरोग ये सब दूरहोवैं ॥ १० ॥ (तारुण्यपिटिका (मुहांसे) पर लेप) जो तरुण मनुष्य के मुँहपर छोटी २ पिड़िकी उभरें वह तारुण्यपिड़िकाहै (लेप) लोध, धनियां और वच ये तीनों समभाग ले पीसि लेपकरै तथा गोरोचन व कालीमिर्च पानी में पीसि लगावै ॥ ११ ॥ अथवा सरसों, वच, लोध और सेंधा ये समभाग ले जलमें पीसिलेपै ये तीनप्रकार के लेपहैं इनके लगाने से मुँहपर की तरुणपन की पिड़िका अच्छी होयँ (व्यंग रोगपर लेप) अर्जुनवृक्ष की छाल वा मँजीठ वा श्वेत घोड़ेके नखकी भस्म इन तीनों में से कोई द्रव्य शहद संयुक्त लेपकरै तो व्यंगरोग मिटै (मुखपर की झाईंपर लेप) मदार के दूध में हल्दी को घिस लगावै ॥ १२ । १३ ॥

मुखकाष्र्ण्यंशमंयाति चिरकालोद्भवंध्रुवम् । वटस्यपा
ण्डुपत्राणिमालतीरक्तचन्दनम् १४ कुष्ठंकालीयकंलोध्रमे
भिर्लेपंप्रयोजयेत् । तारुण्यपिटिकाव्यङ्गनीलिकादिवि
नाशनम् १५ पुराणमथपिण्याकंपुरीषंकुक्कुटस्यच । मूत्र
पिष्टःप्रलेपोयंशीघ्रंहन्यादरुंषिकाम् १६ खदिरारिष्टज
म्बूनांत्वग्भिर्वामूत्रसंयुतैः । कुटजत्वक्सैन्धवंवालेपोहन्या
दरुंषिकाम् १७ प्रियालबीजमधुककुष्ठमाषैःससैन्धवैः । का
र्योदारुणकेमूर्ध्निप्रलेपोमधुसंयुतः १८ दुग्धेनखाखसं
बीजंप्रलेपाद्दारुणंजयेत् । आम्रबीजस्यचूर्णंतुशिवाचूर्णं
समंद्वयम् १९ दुग्धपिष्टःप्रलेपोयंदारुणंहन्तिदारुणम् ।
रसस्तिक्तपटोलस्यपत्राणांतद्विलेपनात् २० इन्द्रलुप्तंश
मंयातित्रिभिरेवदिनैर्ध्रुवम् । इन्द्रलुप्तापहोलेपोमधुनाबृ
हतीरसः २१ गुञ्जामूलफलंवापिभल्लातकरसोपिवा ।
गोक्षुरस्तिलपुष्पाणितुल्येनमधुसर्पिषी २२ शिरःप्रलेप

तो बहुत दिनकी भई मुखपरकी झाईं निश्चय दूरहोयँ (तारुण्य पिटिकापर लेप) बटके पीलेपत्ते, चमेली, रक्तचन्दन ॥ १४ ॥ कूट, दारुहल्दी और लोध इन सबोंको एक में पीसि लेपै तो तरुणपिटिका व्यंग (झाईं) दूरहोयँ ॥ १५ ॥ (रूसी पर लेप) पुराने तिलोंकी खली व कुक्कुट (मुर्गा) की बीट दोनों गोमूत्र में पीसि लेपकरै रूसी दूरहोय ॥ १६ ॥ (पुनःप्रकार) खैर, नींब व जामुन इन तीनोंकी छाल गोमूत्रमें पीसि लेपकरै रूसी नाशहोय (दारुणरोग पर लेप) चिरौंजी, मुलेठी, कूट उड़द और सेंधव ये पांचों समानभागले पीसि शहदयुक्त लेपकरै दारुणरोग मिटै ॥ १७ । १८ ॥ (पुनर्लेप) खसखस पीस दूधमें लेपकरै वा आमकी बिजुरी छोटीहड़ ॥ १९ ॥ दूधमें पीसिलेपै तो दारुणरोग नाशहोय (इन्द्रलुप्त पर लेप) कडुवे परवलकी पत्तीका रस तीन दिनलेपै तो बादखोरा दूरहो (पुनः) भटकटैया और शहदका लेंपकरै ॥ २० । २१ ॥ व घुंघचीकी जड़ वा फलके रसका शहदके साथ लेपकरै वा भिलावेंका रस शहदके साथ लेपकरने से बादखोरा दूर हो (केशवर्द्धन लेप) गुखुरू व तिलपुष्प

नंतेनकेशसंवर्द्धनंपरम्। हस्तिदन्तमषींकृत्वाछागीदुग्धंर सांञ्जनम् २३ रोमाणितेनजायन्तेलेपात्पाणितलेष्वपि। यष्टीन्दीवरमृद्वीकातैलाज्यक्षीरलेपनैः २४ इन्द्रलुप्तःशमं यातिकेशाःस्युःसघनादृढाः। चतुष्पदानांत्वग्रोमनखशृ ङ्गास्थिभस्मभिः २५ तैलेनसहलेपोयंरोमसञ्जननःपरः। इन्द्रवारुणिकाबीजतैलेनाभ्यङ्गमाचरेत् २६ प्रत्यहंतेन कालाग्निसन्निभाःकुन्तलाह्यलम्। अयोरजोभृङ्गराजत्रि फलाकृष्णमृत्तिका २७ स्थितमिक्षुरसेमासंलेपनात्पलि तंजयेत्। धात्रीफलत्रयंपथ्येद्वेतथैकंविभीतकम् २८ पञ्चा म्रमज्जालोहस्यकर्षैकंचप्रदीयते। पिष्टालोहमयेभाण्डेस्था पयेदुषितंनिशि २९ लेपोयंहन्तिनचिरादकालपलितंमह त्। त्रिफलानीलिकापत्रंलोहंभृङ्गरजःसमम् ३० अजा मूत्रेणसम्पिष्टंलेपात्कृष्णीकरंस्मृतम्। त्रिफलालोहचूर्णंच

इनका समान चूर्ण करिके समान घृत व शहद में फेंटि ॥ २२ ॥ लगावै तो बालगांई बालजमे पर हाथीदातको जलाय रसौत और बकरीके दूधमें पीसिलेप करै ॥ २३ ॥ जहां बाल न हों यथा हथेली में तौ तारजगें और अङ्गमें क्यों न जमेंगे (रसौतविधि) निरूहण बस्तिमें कही है (इंद्रलुप्तपर लेप) मु- लेठी, कमल व दासको तिलतेल, घृत व गऊके दूधमें पीसि लेपकरै ॥ २४ ॥ बादखोरा दूरहोय बाल सघनहों (पुनः) चतुष्पद जीवोंकी चर्म, रोम, नख, सींग और हाड़ इनकी भस्म ॥ २५ ॥ तिल तेलमें फेंटि लेपकरै तौ नष्ट बाल जामें (केश कृष्णीकरण) इंद्रायनके बीजका तेल पाताल यंत्रसे निकारि सफेदबालों में लगावै तौ काले होजावें (पुनः) लोह, चून, भंगरा, त्रिफला, कालीमाटी ये छवों समान चूर्ण करि ॥ २६ । २७ ॥ ऊख रस में सानि मास भर राखि कुछ दिनोंमें लेपकरै तौ अकालके श्वेतबाल काले होवें (तृ- तीयः) आंवरा तीन बहेड़ा दो ॥ २८ ॥ आमकी गिठुली पांच लोहचून एक कर्ष ये सब कड़ाही में अतिसूक्ष्म घोटै उसी में दिन रात रहने दे ॥ २९ ॥ फिर लेपकरै तौ श्वेत केश काले हों (चतुर्थः) त्रिफला, नीलपत्र, लोह,

दाडिमत्वगिवसंतथा ३१ प्रत्येकंपञ्चपलिकंचूर्णंकुर्याद्वि
चक्षणः । भृङ्गराजरसस्यापिप्रस्थषट्कंप्रदापयेत् ३२
मासमेकंततःकुर्य्याच्छागीदुग्धेनलेपनम् । कूर्चेशिरसिरा
त्रौचसंवेष्टयेरण्डपत्रकैः ३३ स्वपेत्प्रातस्ततःकुर्यात्स्ना
नंतेनप्रजायते । पलितस्यविनाशश्चत्रिभिर्लेपैर्नसंशयः
३४ शङ्खचूर्णस्यभागौद्वौहरितालञ्चभागिकम् । मनः
शिलाचार्द्धभागास्वर्जिकाचैकभागिका ३५ लेपोयंवारि
पिष्टस्तुकेशानुत्पाट्यदीयते । अनयालेपयुक्त्याचसप्तवे
लंप्रयुक्तया ३६ निर्मूलकेशस्थानंस्याल्लक्षपणस्यशिरोय
था । तालकंशाणयुग्मंस्यात्षट्शाणंशङ्खचूर्णकम् ३७
द्विशाणंचपलाशस्यक्षारंदत्त्वाप्रमर्दयेत् । कदलीदण्डतो
येनरविपत्ररसेनवा ३८ अस्यापिसप्तभिर्लेपैर्लोमशातन

चून और भंगरा ये सम भागले ॥ ३० ॥ बकरी के मूत्रमें पीसि पकेबालों पर लगाये तो काले होयँ (पंचपलेप) त्रिफला, लोहचून, अनारकी छाल और कमलका कन्द ॥ ३१ ॥ ये पांचों औषध पांच पल और भंगरेका रस छः प्रस्थ निचोरि पूर्वोक्त द्रव्य एकत्र करि लोहेकी कड़ाही में सूक्ष्म करि घोटे ॥ ३२ ॥ एक मासभरि राखै तिस पीछे निकारि बकरी के दूधमें घिस श्वेत बालोंपर लेपकरै और ऊपर से रेंडके पत्ता बांधै ॥ ३३ ॥ रातिभरि बांधेरहै प्रभात स्नान करते समय धोय डारै योंही तीन दिन लेप करने से सफेद बाल काले होयँ ॥ ३४ ॥ (अथ लोमशातन प्रकार बाल गिरानेका लेप) शंखचूर्ण दोभाग, हरताल एक भाग, मैनशिल अर्द्धभाग, सज्जी एक भाग ॥ ३५ ॥ ये सब दवाई पानी में पीसि जहांके बाल गिराने मंजूरहों वहां लेप करै बाकी बालोंको कपड़े से ढका राखै लेप के पहिले बाल दूर करिकै तब उस ठौरमें यह लेप सातवार करै ॥ ३६ ॥ सब बाल गिरैं फिर न होयँ जैसे बाल बनाये पर यह रोमशातन अतिउत्तम है (पुनः) हरताल दो शाण, शंख चूर्ण छःशाण ॥ ३७ ॥ पलाशक्षार दोदो शाण केले के दण्डके पानी में वा आकपत्र के रसमें पीसि ॥ ३८ ॥ सातबार लेप करने से बाल गिरजायँ बाल

मुत्तमम् । सुवर्णपुष्पीकासीसं विडङ्गानिमनःशिलाः ३९ रोचनासैन्धवंचैवलेपनाच्छ्वित्रनाशनम् । वायस्येडगजा कुष्ठकृष्णाभिर्गुटिकाकृता ४० वस्तमूत्रेणसम्पिष्टाप्रले पाच्छ्वित्रनाशिनी । वाकुचीवेतसोलाक्षाकाकोदुम्बरिका कणा ४१ रसाञ्जनमयश्चूर्णंतिलाःकृष्णास्तदेकतः । चू र्णयित्वागवांपित्तैःपिष्टाचगुटिकाकृता ४२ अस्याःप्रले पाच्छ्वित्राणिप्रणश्यन्त्यतिवेगतः । धात्रीसर्जरसश्चैवय वक्षारश्चचूर्णितः ४३सौवीरेणप्रलेपोयंप्रयोज्यःसिध्मना शने । दार्वीमूलकबीजानि तालकंसुरदारुच ४४ ताम्बूल पत्रंसर्वाणिकार्षिकाणिपृथक्पृथक् । शङ्खचूर्णंशाणमात्रं तुर्वाण्येकत्रचूर्णयेत् ४५ लेपोयंवारिणापिष्टःसिध्मनाश करःपरः । हरीतकीसैन्धवंचगैरिकंचरसाञ्जनम् ४६ विडा लकोजलेपिष्टःसर्वनेत्रामयापहः।रसाञ्जनंव्योपयुतंसम्पि

गिराने को यह लेप उत्तम है (सफेद कुष्ठपर लेप) पीली चमेली, गजपी· परि, कसीस, विंडग, मैनशिल ॥ ३९ ॥ गोरोचन, सैंधव दनों समभाग गो- मूत्र में पीसि लेप करै श्वेत कुष्ठ दूरहोय (पुनः) कौवाठोढी, कूट और पीपरि ये सब समान भागले ॥४०॥ सपी (बकरे) के मूत्र में पीसि लेपकरे श्वेत कुष्ठ दूरहोय (तीसरा) बकुची, अमलवेतस, लाख, कठगुलरी, पीपरि ॥ ४१ ॥ रसौंत लोहचून, काले तिल आठों समभाग गोपित्तमें पीसि लेपकरै ॥ ४२ ॥ तो श्वेत कुष्ठ अतिशीघ्र दूरहोय (सेहुआं परलेप) आंवरा, राल व जवा- खार ये तीन ॥ ४३ ॥ सौवीर वा कांजी में पीसि लेप करै सेहुआं दूरहोय "सौवीर और कांजी का विधान रेचनाध्याय से जानना" (पुनः) दारुहल्दी, मूरी के बीज, हरताल, देवदारु ॥ ४४ ॥ और पान ये सब कर्ष कर्षः भर शंख चूर्ण शाणभर सब ॥ ४५ ॥ पानी में पीसि लेपकरै सिध्म जो सेहुआं सो दूर होय (नेत्रलेप) हड़, सेंधव, गेरू और रसौंत ये चारों समान भागले ॥ ४६ ॥ पानी में पीसि पलकपर लेपकरै तो सर्व नेत्ररोग दूरहोवँ, (पुनः) र- सौत, सोंठ, मिर्च और पीपरि ये चारों समान भाग ले पानी में पीसि गोली

लानांचमूलैःकुर्यात्प्रलेपनम् ६२ शिरोर्त्तिंपित्तजांहन्यां द्रक्तपित्तरुजंतथा । हरेणुनतशैलेयमुस्तैलागुरुदारु भिः ६३ मांसीरास्नोरुबूकैश्चकोष्णोलेपःकफार्तिनुत् । शुण्ठीकुष्ठप्रपुन्नाटदेवकाष्ठैःसरोहिषैः ६४ मूत्रपिष्टैःसुखो ष्णैश्चलेपःश्लेष्मशिरोर्त्तिनुत् । सारिवाकुष्ठमधुकवचाकृ ष्णोत्पलैस्तथा ६५ लेपस्सकाञ्जिकस्नेहःसूर्यावर्त्तार्द्धभेद के । वरीनीलोत्पलंदूर्वातिलाःकृष्णाःपुनर्नवाः ६६ शङ्खके नन्तवातेचलेपःसर्वशिरोर्त्तिजित् । अथलेपविधिश्चान्यः प्रोच्यतेसुज्ञसम्मतः ६७ द्वौतस्यकथितौभेदौप्रलेपाख्यप्र देहकौ । चर्मार्द्रमाहिषंयद्वत्प्रोन्नतंसमितिस्तयोः ६८ शीत स्तनुविशोषीचप्रलेपःपरिकीर्त्तितः । आर्द्रोघनस्तथोष्णः

दूबकी जड़, खस और नरकट की जड़ ये नवों द्रव्य समान भाग ले पानी में पीसि माथेपर लेप कियेसे ॥ ६२ ॥ पित्तसम्बन्धी और रक्त पित्त सम्बन्धी मस्तक पीड़ा दूरहो (कफसम्भव शिरपीड़ापर) मेंवड़ी बीज, तगर, बाल-छड़, नागरमोथा, इलायची, अगर, देवदारु ॥ ६३ ॥ जटामांसी, रासन और रण्डमूल ये दश द्रव्य पानी में पीसि गरम करि माथे पर लेपै तौ कफसम्बन्धी पीड़ा दूरहो (पुनः) सोंठ, कूट, चकौड़ी बीज, देवदारु, रोहिष बिना अगिया घास ये पांचों द्रव्य समान भागले ॥ ६४ ॥ गोमूत्र में पीसि सुखोष्ण माथेपर लेपेसे कफजन्य पीड़ा दूरहो (सूर्यावर्त्त आधाशीशी पर) सरिवन, कूट, मुलेठी, वच, पीपरि और नीलकमल ॥ ६५ ॥ ये कांजी में पीसि रण्डतैलयुक्त लेप कियेसे सूर्यावर्त्त (आधाशीशी) दूरहो (शंखक अनन्तवात सर्व शिरोरोग पर) विदारीकन्द, नीलकमल, दूब, कारे तिल और गदापुरैना ये पांचों समान भागले पानीमें पीसि ॥ ६६ ॥ लेप किये से शंखक अनन्तवात व सब शिरपीड़ा मिटै पुनर्विधान) ज्ञानी वैद्योंकी सम्मतिसे लेपका दूसरा विधान कहाजाता है ॥ ६७ ॥ (एक प्रलेपाख्य दूसरा प्रदेहक इनकी उँचाई का प्रमाण) ये दोनों लेप भैंसेके गीले चमड़े की मुटाईकी तरहरहै तो गुणदायक हैं ॥ ६८ ॥ शीतवीर्य सूक्ष्मप्रदेश बाधारहित है और घनाप्रलेप

स्यात्प्रलेपःश्लेष्मवातहा ६९ रोमाभिमुखमादेयोप्रलेपा
ष्णप्रदेहकौ ।वीर्यंमभ्यग्निवशत्याशुरोमकूपैःशिरामुखैः
७० नरात्रौलेपनंकुर्याच्छुष्यमाणंनधारयेत् ।शुष्यमाणमु
पेक्षेतप्रदेहंपीडनंप्रति ७१ तमसापिहितोह्यूष्मारोमकूप
मुखेस्थितः । विनालेपेननिर्यातिरात्रौनलेपयेत्ततः ७२
रात्रावपिप्रलेपादिविधिःकार्योविचक्षणैः । अपाकिशोथेग
म्भीरेरक्तश्लेष्मसमुद्भवे ७३ आदौशोथहरोलेपोद्वितीयो
रक्तसेचनः ।तृतीयश्चोपनाहःस्याच्चतुर्थःपाटनक्रमः ७४
पञ्चमःशोधनोभूयात्षष्ठोरोपणइष्यते । सप्तमोवर्णकरणो
व्रणस्यैतेक्रमामताः ७५ बीजपूरजटामांसीदेवदारुमहौष
धम् । रास्नाग्निमन्थोलेपोऽयंवातशोथविनाशनः ७६ म
धुकंचन्दनंमूर्वानलमूलंचपद्मकम् । उशीरंवालकंपद्मं

जानो उष्णप्रदेहके कफ व वात को हरता है ॥ ६९ ॥ ये दोनों लेप रोम दूर करायके लगावे रोम दूर होनेसे रोममुख खुलके अच्छीतरह से लेप गुण प्रवेश करताहै ॥ ७० ॥ (लेपमें निषेध) रातको लेप न करै और वारका लेप सूखै न पावै क्योंकि सूखने से रोम उचरैं तौ देह में अधिक पीडा करैं ॥ ७१ ॥ (रात्रिलेप निषेधकारण) रात्रिको तम वेगसे शरीर की उष्णता दवाय रोम मुखपर आय रहती है विना लेप निकर जाती है इस कारण रात्रिको लेप न करै ॥ ७२ ॥ (रात्रिके लेपकी विधि) रात्रिको लेप चतुर वैद्य निश्चय करै जहां व्रण चिरकाल तक पकता नहीं और गम्भीर शोथहो वा रक्त कफ सम्भव हो ॥ ७३ ॥ (व्रणोपचार सप्तप्रकार लेपक्रम) प्रथम लेप सूजन दूर करने को दूसरा जगह में रुधिर को यथास्थान में मिलाके फैलाने को तीसरा व्रणपर की खाल को मृदु और पतली करने को चौथा व्रण फोर के बहाने को ॥ ७४ ॥ पांचवां शुद्ध करनेको जो पीव न रहनी रहै छठवां घाव पूरने को सातवां घाव के चर्मको शरीर की रंगति करने को जो चीन्ह न रहै ॥ ७५ ॥ (व्रणमें वातशोथनिवारण लेप) बिजौरामूल, जटामांसी, देवदारु, सोंठ, रासन और अरणीमूल ये सब समान, भांगके पानी मे पीसि लेपकरे वातशोथ शान्त हो ॥ ७६ ॥ (पित्तशोथ पर) मुलेठी, रक्तचन्दन, मूर्वा, नरसलकी

पित्तशोथेप्रलेपनम् ७७ कृष्णापुराणपिण्याकंशिग्रुत्व क्सिकताशिवा। मूत्रपिष्टःसुखोष्णोयंप्रदेहःश्लेष्मशोथ हृत् ७८ द्वेनिशेचन्दनेद्वेचशिवादूर्वापुनर्नवा। उशीरंपद्म कंलोध्रंगैरिकञ्चरसाञ्जनम् ७९ आगन्तुकेरक्तजेचशोथे कुर्यात्प्रलेपनम्। शणमूलकशिग्रूणांफलानितिलसर्षपाः ८० सक्तवःकिण्वमतसीप्रदेहःपाचनःस्मृतः। दन्तीचित्र कमूलत्वक्स्नुह्यर्कपयसीगुडः ८१ भल्लातकश्चकाशीश सैन्धवंदारणेस्मृतः। चिरविल्वोग्निकोदन्तीचित्रकोहय मारकः ८२ कपोतकङ्कगृध्राणांमलंलेपेनदारणम्। स्वर्जि कायावशूकाढ्याःक्षारालेपेनदारणाः ८३ हेमक्षीर्यास्तथा लेपोव्रणेपरमदारणः ८४ तिलसैन्धवयष्ट्याह्वनिम्बपत्रानि

जड़, पद्माक, खस, नेत्रबाला और कमल ये आठों समानभागले पानी में पीसि लेप करे तो पित्तशोथ दूरहो ॥ ७७ ॥ (कफशोथपर लेप) पीपरि, पीना, सहिंजनेकी छाल, बालू वा खांड और हड़ इन पांचोंको गोमूत्रमें पीसि गुनगुना लेप करे यह प्रदेह संज्ञक लेप कफशोथको दूर करता है ॥ ७८ ॥ (आगन्तुक और रक्तशोथपर लेप) हल्दी, दारुहल्दी, रक्त व श्वेतचन्दन हड़, दूब, गदापुरैना, खस, पद्माक, लोध, गेरू और रसौंत ये सरसमभागले पानीमें पीसि ॥ ७९ ॥ लेप करने से आगन्तुक और रक्तजशोथ दूरहो (व्रणपकाने पर लेप) सनकी जड़, मूली, सहिंजने के बीज, तिल, सरसों ॥ ८० ॥ सत्तू, लोहकीट, अलसी के बीज ये आठो समानले पानीमें पीसि प्रदेह संज्ञक लेपसे व्रणपकैगा (व्रण फोरनेपर लेप) जमालगोटा, चीताकी जड वा छाल—सेहुँड़ व मदारका दूध, गुड ॥ ८१ ॥ भिलावां, कसीस और सेंधव ये औषध दोनों दूधमें पीसि व्रणपर लेपकरनेसे फूटे (पुनः) करंजमींगी, भिलावां, दन्तीकीजड़, चीताछाल कनेरकी जड़ ये पांचों चूर्णकरे ॥ ८२ ॥ तथा कबूतर सफेद चील वा गिद्धके वीटमें समान मिलाय लेपकरे फोड़ा फूटै (तीसरा लेप) सज्जी व जवाखार इन दोनोंका लेपकरै ॥ ८३ ॥ अथवा हेमक्षीरी (चोकनी) जड़की छालका लेप करै फोड़ा फोड़नेमें बहुत प्रबलहै ॥ ८४ ॥ (व्रणशोधन लेप) तिल, सेंधव, मुलेठी, नींबपत्र, हल्दी, दारुहल्दी और निसोथ ये सब समभागले चूर्ण

शायुगैः। तद्वद्घृतयुतैःपिष्टैःप्रलेपोव्रणशोधनः ८५ नि
म्बपत्रघृतक्षौद्रदार्वीमधुकसंयुतः। तिलैश्चसहसंयुक्तोले
पःशोधनरोपणः ८६ करञ्जारिष्टनिर्गुण्डीलेपोहन्याद्व्र
णकृमीन्।लशुनस्याथवालेपोहिङ्गुनिम्बमथोथवा८७ नि
म्बपत्रंतिलादन्तीत्रिवृत्सैन्धवमाक्षिकम्। दुष्टव्रणप्रशम
नोलेपःशोधनरोपणः८८ मदनस्यफलंतिक्तांपिष्ट्वाकाञ्जि
कवारिणा। कोष्णंकुर्यान्नाभिलेपंशूलशान्तिर्भवेत्ततः ८९
शिग्रुशेफालिकैरण्डयवगोधूममुद्गकैः। सुखोष्णोबहुलोले
पःप्रयोज्योवातविद्रधौ९० पैत्तिकेसर्पिषालाजमधुकैःशर्क
रान्वितैः। प्रलिम्पेत्क्षीरपिष्टैर्वापयस्योशीरचन्दनैः९१ इ
ष्टिकासिकतालोहकिट्टगोशकृतासह।सुखोष्णश्चप्रदेहोयं

करि घीमें घेपि फूटे फोड़ेपर लगावै वा इनके कल्क की टिकिया बनाय घीमें छोड़ जलावै जब टिकिया जलजाय तब उतार घी राखिछांड़ै टिकिया फेंकि देय ये दोनों प्रकार व्रण शुद्धकरै ॥ ८५ ॥ (व्रणशोधन व रोपणपर लेप), नींबपत्र, घृत, शहद, दारुहल्दी, मुलेठी, तिल इन सबको पीसि के लेप किये ते व्रण शुद्ध होके पूरआताहै ॥ ८६ ॥ (कृमिनिवारण लेप) करंज, नींब और बकायन इन तीनों को पीसि कृमि के स्थान में भरै तौ कृमि मरजायँ वा लहसुन वा हींग पीसिभरै वा हींग वा नींबपत्र भरै तौ कृमिनाशैं ॥ ८७ ॥ (व्रण शोधन व रोपण पर लेप) नींबपत्र, तिल, दन्तीकी जड और सैधव ये सब समान पीसि शहदयुक्त लेप किये ते व्रण शुद्ध होकै पूरि आवै ॥ ८८ ॥ (पेट पीर पर नाभिलेपन) मैनफल व कुटकी इन दोनों को कांजी में पीसि कुछ गरम करि नाभिपर लेप किये से पेटशूल मिटता है ॥ ८९ ॥ (वातविद्रधि पर) सहिंजने की छाल बकायनपत्र, रेंडमूल, यव, गेहूं और मूंग ये सब पीसि सुखोष्ण लेप करेसे वातविद्रधि दूरहोती है ॥ ९० ॥ (पित्तविद्रधिपर) लाव, मुलेठी व शक्करको घीमें लेपकरेसे वा असगंध, खस और रक्तचंदनको दूधमें पीसि लेपकरे से पित्तविद्रधि दूरहो ॥ ९१ ॥ (कफविद्रधि पर) ईंट, बालू, लोह, कीट और गोबर इनचारोंको गोमूत्रमें पीसि लेपकरै इस प्रदेह लेपसे कफविद्रधि-

सूत्रैःस्याच्छेणमविद्रधौ ९२ रक्तचन्दनमञ्जिष्ठानिशामधुकगैरिकैःक्षीरेणविद्रधौलेपोरक्तागन्तुनिमित्तजे ९३ निचुलःशिग्रुबीजानिदशमूलमथापिवा। प्रदेहोवातगण्डेषुसुखोष्णःसंप्रदीयते ९४ देवदारुविशालेचकफगण्डेप्रलेपयेत्। सर्षपारिष्टपत्राणिदग्ध्वाभल्लातकैःसह ९५ छागमूत्रेणसम्पिष्टमपचीघ्नम्प्रलेपनम्। सर्षपाशिग्रुबीजानिशणबीजातसीयवान् ९६ मूलकस्यचबीजानितक्रेणाम्लेनपेषयेत्। गण्डमालार्बुदंगण्डंलेपेनानेनशाम्यति ९७ लक्षयित्वाक्षुरेणाङ्गंकेवलानिलपीडितम्। तत्रप्रदेहंदद्याच्चपिष्टंगुञ्जाफलैःकृतम् ९८ तेनापबाहुजापीडाविश्वाचीगृध्रसीतथा। अन्यापिवातजापीडाप्रशमंयातिवेगतः ९९ धत्तूरैरण्डनिर्गुण्डीवर्षाभूशिग्रुसर्षपैः। प्रलेपःश्लीपदंहन्ति

दूर होजाती है॥ ९२॥ (आगन्तुक विद्रधि पर) रक्तचंदन, मँजीठ, हल्दी, मुलेठी और गेरू ये सब समानभागले दूध में पीसि चोट या रुधिरविकारपर लेपकरे अच्छाहो॥ ९३॥ (वातगलगंड पर) बेत और सहिंजने के बीज इनदोनों को समानभागले जलमें पीसि शीत गरम प्रदेहमुख लेप करै तैसे ही दशमूल पीसि लेपकरै॥ ९४॥ (कफगलगंड पर) देवदार व इंद्रायण की जड़ इन दोनोंको पीसि प्रदेहकलेप कफ व गडमालाको दूरकरै (अपची पर) सरसों, नींबपत्र और मिलावा इन तीनोंको समभाग राखिकरि॥ ९५॥ बकरे के मूत्रमें लेपकरै तो अपची दूरहो (गंडमाला अर्बुद व गलगंडपर लेप) सरसों, सहिंजनके बीज, सनई के बीज, अलसी, यव॥ ९६॥ और मूली के बीज ये सब औषध समानभागले खटाये भये मट्ठे में पीसिकै लेपकरै तो गंडमाला, अर्बुद और गलगंड ये रोग दूरहोवें॥ ९७॥ (अपबाहुकपरलेप) केवल वातपीडित रोगी अंग अपने स्वाभाविक कर्म में पीड़ाकरै तहां के रोम दूर करि घुंघुचीको पीसि सुखोष्ण लेप करने से अपबाहुक वायु विश्वाची हाथकी वायु और गृध्रसी जंघाकी वायुसंभव पीड़ा दूरहोवें॥ ९८।९९॥ (फीलपांव परलेप) धतूरा, रेंड और मेंउड़ी इन तीनों की पत्ती, गदहपूरना व सहिंजनेकी छाल और सरसों ये सबको पीसि पतिरा करके भये फीलपाव पर लेप किये अच्छे

चिरोत्थमपि दारुणम् १०० अजाजीहवुषाकुष्ठमेरण्डवद-
रान्वितम् । काञ्जिकेनतुसंपिष्टंकुरण्डघ्नम्प्रलेपनम् १ क
रवीरस्यमूलेनपरिपिष्टेनवारिणा । असाध्यापिव्रजत्यस्तं
लिङ्गोत्थारुक्प्रलेपनात् २ दहेत्कटाहेत्रिफलांसामर्षीमधु
संयुताम् । उपदंशेप्रलेपोयंसद्योरोपयतिव्रणम् ३ रसाञ्ज
नंशिरीषेणपथ्ययाचसमन्वितम् । सक्षौद्रंलेपनंयोज्यमुपदं
शगदापहम् ४ अग्निदग्धेतुगाक्षीरीप्लक्षचन्दनगैरिकैः । सा
मृतैःसर्पिषास्निग्धैरालेपंकारयेद्भिषक् ५ तिन्दुकीत्वक्का
यैर्वाघृतमिश्रैःप्रलेपनात् । यवान्दग्ध्वामषीकार्यातैलेनयु
तयातया ६ दद्यात्मर्वाग्निदग्धेषुप्रलेपोव्रणरोपणः । पला
शोदुम्बरफलैस्तिलतैलसमन्वितैः ७ मधुनायोनिमालि
म्पेद्गाढीकरणमुत्तमम् । माकन्दफलसंयुक्तमधुकर्पूरलेप
नात् ८ गतेपियौवनेस्त्रीणांयोनिर्गाढातिजायते । मरिचसै

होय ॥ १०० ॥ (कुरण्ड "अण्डवृद्धि" रोगपर) कालाजीरा, हाऊबेर, कूट
रण्डकी जड़ और बेरछाल ये पांचों समानभागले कांजी में पीसि अण्डकोश पर
लेप किये अच्छे होयँ ॥ १ ॥ (उपदंश कहे गरमीपर लेप) कनेर की जड़
पानी में पीसि इन्द्रियपर लेपै तौ उपदंशसम्बन्धी असाध्य पीडा दूरहोय ॥ २ ॥
(पुनः) त्रिफलाको कड़ाही में जलाय राखकरि शहदमें फेंटिकरि लेपकरै तौ गरमी
के घाव शीघ्र पूरे आते हैं ॥ ३ ॥ (पुनः) रसौत, सरसों व हड इन तीनों को
समानभागले पीसि शहद में घोरि उपदंशसम्बन्धी दाह रहते व्रणपर लेपकरै
तौ उपदंश को हरता है ॥ ४ ॥ (अग्निदग्धपर लेप) वंशलोचन, पाकरि,
रक्तचन्दन, गेरू और गुर्च ये पांचों पीसि घी मिला जलेपर लगावै ॥ ५ ॥ अथवा घी
को चोरोईकाथ में मिलाय लेप करै तौ जलेकी व्यथा शांतहोय (पुनः) यवको
जारि तिलके तेलमें ... ॥ ६ ॥ लगावै तौ दग्ध व्रण पूरि आवै (योनि
संकोचनलेप) पलाश (ढाक) के फूल, गूलरफल तिलके तेलमें पीसि ॥ ७ ॥
शहद मिलाय योनिमें लेपकरै दृढ संकुचित होय (पुनः) आमफल व कपूर को
पीसि शहदमें फेंटि लेपकरै ॥ ८ ॥ गिरीहुई योनि दृढहोवै (पुनः इन्द्रिय

न्धवंकृष्णातगरंबृहतीफलम् ९ अपामार्गस्तिलाःकुष्ठंय वामाषाश्चसर्षपाः। अश्वगन्धाचतच्चूर्णमधुनासहयोजये त् १० अस्यसन्ततलेपेनमर्द्दनाच्चप्रजायते । लिङ्गवृद्धिः स्तनोत्सेधःसंहतिर्भुजकर्णयोः ११ सिताश्वगन्धासिन्धू त्थच्छागक्षीरैर्घृतंपचेत्। तल्लेपान्मर्द्दनाल्लिङ्गवृद्धिःसञ्जाय तेपरा १२ इन्द्रवारुणिकापत्ररसैःसूतंविमर्द्दयेत्। रक्तस्यक रवीरस्यकाष्ठेनचमुहुर्मुहुः १३ तल्लिप्तलिङ्गसंयोगाद्योनिद्रा वोभिजायते। ताम्बूलपत्रचूर्णंतुचूर्णंकुष्ठशिवाभवम् १४ वारिणालेपनंकुर्याद्गात्रदौर्गन्ध्यनाशनम्।कुलित्थसक्तवः कुष्ठंमांसीचन्दनजंरजः १५ सक्तवश्चणकस्यैवत्वचंचै कत्रकारयेत् । स्वेददौर्गन्ध्यनाशश्चजायतेस्यावधूलना त् १६ वचासौवर्चलंकुष्ठंरजन्यौमरिचानिच । एतल्लेप प्रभावेणवशीकरणमुत्तमम् १७ अभ्यङ्गःपरिषेकश्चपि

कठोर करनेका लेप) मरिच, सैंधव, पीपरि, तगर, भटकटैया के फल ॥ ९ ॥ लटजीरा के बिया, काले तिल, कूट, यव, उड़द, सरसों और असगन्ध ये सब समान पीसि शहद मिश्रितकरि ॥ १० ॥ नित्य इन्द्रिय पर मलाकरै तौ इन्द्रिय मोटीहोय व स्त्री के स्तनपर लगाया करै तौ कठोर पड़जायँ और पुरुषके भुजदण्ड व कानपर मर्दन करना भलाहै ॥ ११ ॥ (पुनर्लेप) श्वेत फूलका असगन्ध व सैंधव इन दोनोंको सूक्ष्म पीसि चौगुना घृत व घृतका चौगुना भेड़ीका दूध एक करि आचपर दूध जलाय वा छानि इन्द्रियपर लगावै तो इन्द्रिय मोटीहोय ॥१२॥ (योनिद्रव लेप) इन्द्रायण पत्रका रसले पारा रक्त कनेर के सोंटेमें घोटि वार वार रस डाले ॥ १३ ॥ जब कजरी पीठी सम होजाय तब इन्द्रिय पर लेपि स्त्री प्रसंग करै तो स्त्री सुख पावै पहिले वीर्यपातकरै (देहदुर्गन्धनिवारण लेप) पान, कूट व हड़को पानीमें पीसि लेपकरे दुर्गंध दूरहोय (पुनः) कुलथी भूंजि कूट, जटामासी व श्वेतचन्दन का बुरादा ॥ १४ ॥ व भूंजे चने इन सबको पीसि कपड़छानकर धूराकरै तो देहदुर्गंध दूरहो ॥ १५ ॥ (वशीकरण लेप) वच, कालालोन, कूट, हल्दी, दारुहल्दी और मिर्च ये सब समान भागले पानीमें पीसि

चुर्वस्तिरितिक्रमात् । मूर्द्धतैलंचतुर्द्धास्याद्बलवच्चयथोत्तरम् १८ त्रयोभ्यङ्गादयःपूर्वंप्रसिद्धाःसर्वतःस्मृताः । शिरोवस्तिविधिश्चात्रप्रोच्यतेसुज्ञसम्मतः १९ शिरोवस्तिश्चर्मणःस्याद्द्विमुखोद्वादशाङ्गुलः । शिरःप्रमाणस्तंबद्ध्वामस्तकेमाषपिष्टकैः २० सन्धिरोधंविधायादौ स्नेहैःकोष्णैःप्रपूरयेत् । तावद्धार्यस्तुयावत्स्यान्नासानेत्रमुखस्रुतिः २१ वेदनोपशमोवाविमात्राणांवासहस्रकम् । विनाभोजनमेवात्रशिरोवस्तिःप्रशस्यते २२ प्रयोज्यस्तुशिरोवस्तिःपञ्चसप्ताहमेववा । विमुच्यशिरसोवस्तिंगृह्णीयाच्चसमन्ततः २३ ऊर्ध्वकायंततःकोष्णनीरैःस्नानंसमाचरेत्। अनेन दुर्जयारोगावातजायान्तिसंक्षयम् २४ शिरःकम्पादय

देहमें लोकवश होने के निमित्त लगावै तो अच्छा है ॥ १६ । १७ ॥ (मस्तक में तेल लगानेकी विधि) अभ्यङ्ग कहे "तैलमर्दन" परिषेक कहे "तेल चुपड़ना" पिचु कहे "रुई के पहलको तेलमें बोरि माथे में बांधे" वस्ति कहे "माथे में चौफेर चर्म बांधि तेलभरै" ये चार प्रकार हैं सो क्रमसे उत्तरोत्तर बलवान् कहाते हैं ॥ १८ (शिरोवस्तिविधान) अभ्यङ्ग, परिषेक और पिचु ये तीनों सर्वत्र प्रसिद्ध हैं और शिरोवस्तिविधि तथा मात्रा यहां नहीं कही सो आगे श्लोक में कहेंगे ॥ १९ ॥ (शिरोवस्तिप्रकार) मस्तकपर औषध धारण करने को शिरोवस्ति कहते हैं बारह अंगुल चौड़ी व हाथभर लम्बी शिरके समान इफाकर हरिणचर्मकी सी लेइ दोनों ओर खुली ढील न हो सो माथेपर चढ़ाय भीतर से चारों ओर उर्द के पीठेसे ॥ २० ॥ निस्संधि करै फिर नीचे चढ़े भये चमड़ेको अंगुलभर पीठेसे चारों ओर निस्संधि करि सुखोष्ण तेलभरै (शिरोवस्तिप्रमाण) जबतक नाक, नेत्र व मुखसे जल न बहै ॥ २१ ॥ अथवा मस्तकव्यथा न मिटै वा हजार मात्रा तक वस्ति स्थित रहै (मात्राप्रमाण) अनुवासनवस्ति में कहिआये हैं (शिरोवस्तिकाल) भोजनके प्रथम पांच व सातदिन शिरोवस्ति करै (शिरोवस्तिके पीछे क्रिया) माथेपर धारण कीहुई वस्तिके चारोंतरफ एकसां उचारकर पटक देवे जब वस्तिको उतार चुके तो ॥ २२।२३ ॥ सुखोष्ण जल से माथा धोवाय नहावै (शिरोवस्तिगुण) वातजन्य शिरःकम्पादि दुर्जय

स्तेनसर्वकालेषुयोजयेत् । स्वेदयेत्कर्णदेशंतुकिंचित्पा
र्श्वशायिनः २५ मूत्रैःस्नेहैरसैःकोष्णैस्ततःकर्णंप्रपूरये
त् । कर्णंतुपूरितंरक्षेच्छतंपञ्चशतानिच २६ सहस्रंचापि
मात्राणांश्रोत्रकण्ठशिरोगदे । स्वजानुनःकरावर्तंकुर्याच्छो
टिकयायुतम् २७ एषामात्राभवेदेकासर्वत्रैवैषनिश्चयः ।
रसाद्यैःपूरणंकर्णेभोजनात्प्राक्प्रशस्यते २८ तैलाद्यैःपूर
णंकर्णेभास्करेस्तमुपागते । पीतार्कपत्रमाज्येनलिप्त्वाव
ह्नौप्रतापयेत् २९ तद्रसःश्रवणेक्षिप्तःकर्णशूलहरःपरः ।
कर्णशूलातुरेकोष्णंबस्तमूत्रंससैन्धवम् ३० निक्षिपेत्तेन
शाम्यन्तिशूलपाकादिकारुजः । शृङ्गवेरंचमधुकंमधुसैन्ध
वमामलम् ३१ तिलपर्णीरसस्तैलंटङ्कणंनिम्बुकद्रवम् ।
कटूष्णंकर्णयोर्देयमेतद्वेदनापहम् ३२ कपित्थमातुलु
ङ्गाम्लशृङ्गवेररसैःशुभैः । सुखोष्णैःपूरयेत्कर्णौकर्णशूलो

रोग दूर होते हैं इस से वैद्य सदा इस रोग में शिरोबस्ति करावै ॥ २४ । २५ ॥
(कर्णोपचार) मनुष्यको कुछ स्वेद करि तुरन्त गोमूत्र व तेल व स्वरस कुनकुना
कान में पूरै ॥ २६ ॥ (कर्णमें द्रव्यधारण प्रमाण) कान, कंठ व शिरोरोगों के
निवारणार्थ सौ मात्रा व पांचसौ व हजार मात्रातक राखै (मात्राप्रमाण)
घुटनों पर चुटकी बजाते हाथघुमै चौफेर सो मात्रा प्रमाण है (कर्णपिचार
समय) कान में औषध भोजनके प्रथम रसादिक पूरै ॥ २७ । २८ ॥ और
तेल आदि संध्यासमय पूरै (कर्णव्यथापर औषध) अर्कवृक्ष में जो गये
पीलेपड़जाते हैं तिन्हें लेकर उनपर घृत लगावे तब ताथारी आगि में सेंक लेय
जब गरम होय तब निकालि ॥ २९ ॥ कानमें छोड़ै तो सब कर्णशूल दूरहोयँ
(पुनः) छागमूत्र में सेंधा डारि कुछ तचा ॥ ३० ॥ करि कान में पूरै तो कान
के भीतरकी पिटिका दूर होय (तृतीय) अदरकका रस मुलेठी, शहद, सेंधव,
आंवरा ॥ ३१ ॥ तिलपर्णी " दून में होती है और गुलुलकीसी सब सूरति पंची
सफेद फली तिलसदृश होती है वह तिलपर्णी है " सरसों का तेल, सुहागा व
नींबूका रस ये सब पीसि कान में डालै तौ कानकी पीड़ा दूरकरै ॥ ३२ ॥ कैथा

पशान्तये ३३ अर्काङ्कुरानम्लपिष्टांस्तैलाक्ताँल्लवणान्वि
तान् । सन्निदध्यात्स्नुहीकाण्डेकोरितेतच्छदावृते ३४ पु
टपाकक्रमंकृत्वारसैस्तत्रप्रपूरयेत् । सुखोष्णैरतेनशाम्य
न्तिकर्णपीडाःसुदारुणाः ३५ महतःपञ्चमूलस्यकाण्डा
न्यष्टाङ्गुलानितु ।क्षौमेणावेष्ट्यसंसिच्यतैलेनादीपयेत्ततः
३६ यत्तैलंच्यवतेतेभ्यःसुखोष्णंतेनपूरयेत् । ज्ञेयंतद्दीपि
कातैलंसद्योगृह्णातिवेदनाम् ३७ एवंस्याद्दीपिकातैलंकुष्ठे
देवतरौतथा।तैलंश्योनाकमूलेनसन्देश्नोपरिपाचितम् ३८
हरेदाशुत्रिदोषोत्थंकर्णशूलंप्रपूरणात् । कल्कक्काथेनय
ष्ट्याह्वाकाकोलीमाषधान्यकैः ३९शूकरस्यवसांपक्त्वाकर्ण
नादार्तिहारिणी।स्वर्जिकामूलकंशुष्कंहिङ्गुकृष्णासमन्वि

और कैथफलका रस बिजौरारस,अमलबेतकेरस बिना चूकरस और अदरकरस ये चारों सुखोष्ण कान में डालने से कर्णशूल नाश होय ॥ ३३ ॥(पंचम) मदारका कोमल टिंगुसा नींबूरस में पीसि तिलका तेल व सेंधानोन मिलाय गोला बांध सेहुँडा के मोटे खण्ड में पोलाकरि गोला धरै अच्छी भांति दाबि उसीके पत्र लपेटि कपडौटी करि माटी चढाय मधुरी आंच में पकाय पुटपाक सदृश पकजाय तब निकालि माटी कपडा उतारि कूटके रस निचोरलेय फिर इस रसको सुखोष्णकरि कान में डारै तौ कानकी दारुणशूल शान्तहोय ॥ ३४ । ३५ ॥ (कर्णशूलपर दीपिकातेल) महापञ्चमूलकी जड़ आठ अंगुल रुई वा वस्त्र लपेट दीपमें बारि चिमटी से पकरि कटोरी में टपकावै,बड़ी,गुनगुना तैल कानमें डालनेसे कानकी तपक दूर होतीहै तथा शहद, पञ्चमूल, देल, रण्ड, टेंटी,शिवनी और पाटल इनकी जड़को कहते हैं ॥ ३६ । ३७ ॥ (पुनः) टेंटू तेल व टेंटूमूल को पानी में पीसि कल्क करि चौगुना तिल तेलको मिलाय समान जल देय जलजलाय उतारि सहता सहता॥३८॥कानमें डालनेसे त्रिदोष-जन्य कर्णशूल मिटै (कर्णनादपर तेल) मुलेठी, असगन्ध,माष और धनियां इनचारोंका क्वाथ व कल्क ॥ ३९ ॥, शूकर की चर्बी में पकाय जब चर्बी रहिजाय तब कान में डालै तौ कर्णनाद को निकालै (कर्णनादपर श्रेष्ठतेल)

तम् ४० शतपुष्पाचतत्तैलंपक्वंशुक्तंचतुर्गुणम्। प्रणादंशू लबाधिर्यंस्रावंकर्णस्यनाशयेत् ४१ अपामार्गक्षारजलेत त्क्षारंकल्कितंक्षिपेत्। तेनपक्वंजयेत्तैलंबाधिर्यंकर्णनादक म् ४२ शम्बूकस्यतुमांसेनपचेत्तैलंतुसार्षपम्। तस्यपूरण मात्रेण कर्णनाडीप्रशाम्यति४३चूर्णंपञ्चकषायाणांकपि त्थरसमेवच। कर्णस्रावेप्रशंसन्तिपूरणंमधुनासह ४४ ति न्दुकान्यभयालोध्रंसमङ्गाचामलक्यपि। ज्ञेयाःपञ्चकषाया स्तुकर्मण्यस्मिन्भिषग्वरैः४५स्वर्जिकाचूर्णसंयुक्तंबीजपूर रसंक्षिपेत्। कर्णस्रावरुजोदाहाःप्रणश्यन्तिनसंशयः ४६ आम्रजम्बूप्रवालानिमधुकस्यवटस्यच।एभिःसंसाधितंतै लंपूतिकर्णोपशान्तिकृत् ४७ पूरणंहरितालेनगवांमूत्रयुते

सज्जी, सूखी मूली, हींग, पीपरि ॥ ४० ॥ और सौंफ ये पांचों समभाग ले चौगुने तिल तेलमें समान मध्यखण्डोक्त शुक्तमें पचावै जब केवल तेल रहजाय तब कान में चुवावै तौ कर्णनादशूल बधिरत्व व कान बहन इन रोगों को नशाता है ॥ ४१ ॥ (बधिरत्व पर अपामार्गक्षारतेल) लटजीरे की राख चौगुने पानी में घोलि घँगोलि रातिभर धर प्रातः निर्मल जलले चौथाई तेलदे पचाय पानी जलाय कान में डालै तौ बधिरत्व (बहिरापन) मिटै सुनने लगे ॥ ४२ ॥ (कर्णव्रण पर शंबूकतेल) घोंघेका मांस चौगुने तेलमें डालकरि पचाय ले यह तेल कान में डालै तो व्रण दूरकरै ॥ ४३ ॥ (कर्णस्राव पर औषध) पञ्चकषाय का चूर्ण, कैथरस और शहद मिलाय कान में डालै तौ कान बहना बन्द होजाय ॥ ४४ ॥ (पञ्चकषायवृक्ष) तेंदू, हड़, लोध, मँजीठ और आंवला इनपाचों में से हड़ व आंवलाका फल बाकीकी छाललेना चाहिये इस कर्म में श्रेष्ठ वैद्योंको पञ्चकषायसंज्ञक वृक्ष जानना चाहिये ॥ ४५ ॥ (पुनः कर्णस्राव पर) सज्जीको बिजौरा रसमें घोटि कान में डाले तो कान का बहना बन्द होय ॥ ४६ ॥ (पुनः) आम, जामुन, महुआ व बरगद इन चारों के कोंपल की लुगदी चौगुने तिल तेलमें जराय तेल कानमें डालने से पीव बहना बन्द होय ॥ ४७ ॥ (कर्णकीटपर तेल) हरिताल पीसि गोमूत्र

नच। अथवासार्षपंतैलंकर्णकीटहरंपरम् ४८ स्वरसंशिग्रु मूलस्यसूर्यावर्त्तरसंतथा। त्र्यूषणंचूर्णितंचैवकपिकच्छूरसंतथा। कृत्वैकत्रक्षिपेत्कर्णेकर्णकीटहरम्परम् ४९ सद्योमद्योनिहन्त्याशुकर्णकीटंसुदारुणम्। सद्योहिङ्गुनिहन्त्याशुकर्णकीटंसुदारुणम् ५० इति श्रीशार्ङ्गधरेउत्तरखण्डेलेपादिकर्णपूरणविधिरेकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

शोणितंस्रावयेज्जन्तोरामयंप्रसमीक्ष्यच। प्रस्थंप्रस्थार्द्धकंचापिप्रस्थार्द्धार्द्धमथापिवा १ शरत्कालेस्वभावेनकुर्याद्रक्तस्रुतिंनरः। त्वग्दोषग्रन्थिशोथाद्यानस्यरक्तस्रुतेर्यतः २ मधुरंरक्तलोवर्णमशीतोष्णंतथागुरु। शोणितंस्निग्धविस्रंस्याद्विदाहश्चास्यपित्तवत् ३ विस्रताद्रवतारागश्चलनंविलयस्तथा। भूम्यादिपञ्चभूतानामेतेरक्तगुणाःस्मृताः ४ रक्तेदुष्टेवेदनास्यात्पाकोदाहश्चजायते। रक्त

वा कडुवे तेलमें मिलावे तो कर्णजन्तु दूरहोय ॥ ४८॥ (पुनः) सहिंजन मूल का रस, सूर्यमुखीका रस, सोंठ, मिर्च व पीपरिको पीसि वन बयमाच की जड़ का रस ये सब मिलाय फेंटि कानमें छोड़ै तो कर्णकीट मरें ॥ ४९ ॥ हींग और शराब इन दोनों में से किसी वस्तुको कान में डाले तो शीघ्रही कर्णकीट को विनाशताहै ॥ १५० ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेउत्तरखण्डेएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

(अथ रुधिरमोक्षणप्रयत्न) मनुष्य के शरीर में रक्तजन्यविकार से कुष्ठादि रोग जानि रुधिर निकलवाने का प्रमाण कहते हैं,प्रस्थभर वा अर्द्धप्रस्थ व चौथ्याई प्रस्थ करै कुड़व भर ॥ १ ॥ (रुधिरमोक्षणकाल) देह से रुधिर निकलाने से त्वचापर के रोग, फोड़ा,फुंसी व शोथादिक रोग दूर होते हैं इस कारण शरद् काल में मनुष्य को रुधिर निकलाना उचित है ॥ २ ॥ (रुधिर गुण) रुधिर मधुर है लाल व कुछ गरम, गरुआ, चिकना, विसायँध गन्धी, पित्त समान उष्णलोहू का रूप गुण है ॥ ३ ॥ और रक्त पञ्चतत्त्वमय है विसायँधी गंध पृथ्वीगुण, गीलापन जलगुण, उष्णस्पर्श अग्निगुण, चलना वायुगुण,नीला होना और श्यामता लाना आकाशका गुण है ॥४ ॥ (रुधिर दुष्ट

मण्डललताकण्डूःशोथश्चपिटिकोद्गमः ५ वृद्धेरक्ताङ्गनेत्रत्वं शिराणांपूरणंतथा । गात्राणांगौरवंनिद्रामदोदाहश्चजायते ६ क्षीणेऽम्लमधुराकांक्षीमूर्च्छाचत्वचिरूक्षता । शैथिल्यं चशिराणांस्याद्वाताद्रुन्मार्गगामिता ७ अरुणंफेनिलंरूक्षंपरुषंतनुशीघ्रगम् । अस्कन्दिसूचिनिस्तोदंरक्तंस्याद्वातदूषितम् ८ पित्तेनपीतंहरितंनीलंकृष्णंचविस्रगम् । अस्कन्द्युष्णंमक्षिकाणांपिपीलीनामनिष्टकम् ९ शीतञ्चबहुलं स्निग्धंगैरिकोदकसन्निभम् । मांसपेशीप्रभंस्कन्दिमन्दगं कफदूषितम् १० द्विदोषदुष्टंसंसृष्टंत्रिदुष्टंपूतिगन्धकम् । सर्वलक्षणसंयुक्तंकाञ्जिकाभंचजायते ११ विषदुष्टंभवेच्छ्यावं नासिकोन्मार्गगंतथा । विस्रंकाञ्जिकसंकाशंसर्वंदुष्टकरंच

होनेके लक्षण) रुधिर दुष्टभये देह में पीड़ा, व्रण, दाह, रक्तमण्डल, खाज, शोथ व देह पर फुंसी होतीहै ॥ ५ ॥ (रक्त बढ़ने का लक्षण) रुधिर बढ़ै तो देह व नेत्र लाल रहैं और नसें रक्तपूरित होकर फूल जाती हैं देह गरू रहती है नींद विशेष, मद व दाह ये उपद्रव होते हैं ॥ ६ ॥ (क्षीणरक्तलक्षण) जिसके रुधिर शरीरप्रमाण से घटजाताहै उसकी रुचि खट्टे व मीठेपर अधिक रहती है और मूर्च्छा, त्वचा रूखी, शिथिल शरीर और वायु ऊर्ध्वगामी होजाता है ऐसे लक्षण जानो ॥ ७ ॥ (वायु करिके रक्त उपद्रव लक्षण) वायु कुपित रुधिर लाल रंग, फेनसहित हो, रूखा, कर्कश, हलका, शीघ्रगामी, पतला व देहमें सुई समान कोंचता है ॥ ८ ॥ (पित्तकरि दुष्ट रुधिर लक्षण) पित्त कुपित रुधिर—पीला, हरित, नीला व काला, पके आमकी गन्धवाला व उसपर चींटी माखी न खावैं ॥ ९ ॥ (कफकरि दुष्टरुधिरलक्षण) कफ कुपित रक्तका स्पर्श ठण्ढा, चिकना, गेरूका रङ्ग मांस व कुन्की मिश्रित व गाढ़ा होकर स्थिर होता है ॥ १० ॥ (दो वा तीन दोष कुपित रुधिर लक्षण) दो दोषकरि दूषित लोहूमें दो दोषके लक्षण पाये जाते हैं त्रिदोषदूषित में पीवकी गन्ध होती है और सब लक्षण तीनोंके पाये जाते हैं और कांजी सदृश रंग होता है ॥ ११ ॥ (अतिदुष्ट रक्तलक्षण) विषकारक रक्त उपद्रव से नाककी राह गिरता है आमकी सी बास (गन्ध) होती है व कांजी सदृश रंग धातुओं को

हु। इन्द्रगोपप्रभंज्ञेयंप्रकृतिस्थमसंहतम् १२ शोथेदाहे
ङ्गपाकेचरक्तवर्णेसृजःस्रुतौ। वातरक्तेतथाकुष्ठेसपीडेदुर्ज
येनिले१३पाणिरोगेश्लीपदेचविषदुष्टेचशोणिते। ग्रन्थ्य
र्बुदापचीक्षुद्ररोगरक्ताधिमन्थिषु १४ विदारीस्तनरोगेषु
गात्राणांसादगौरवे। रक्ताभिष्यन्दतन्द्रायांपूतिघ्राणास्य
देहके १५ यकृत्प्लीहविसर्पेषुविद्रधौपिटिकोद्गमे। कर्णौष्ठ
घ्राणवक्त्राणांपाकेदाहेशिरोरुजि १६ उपदंशेरक्तपित्तेरक्त
स्रावःप्रशस्यते। एषुरोगेषुशृङ्गैर्वाजलौकालाबुकैरपि १७
अथवापिशिरामोक्षैःकुर्याद्रक्तस्रुतिंनरः। नकुर्वीतशिरामो
क्षंकृशस्यातिव्यवायिनः १७ क्लीबस्यभीरोगर्भिण्याःसूति
कापाण्डुरोगिणाम्। पञ्चकर्म्मविशुद्धस्यपीतस्नेहस्यचा
र्शसाम् १९ सर्वाङ्गशोथयुक्तानामुदरश्वासकासिनाम्।
छर्द्यतीसारयुक्तानामतिस्विन्नतनोरपि २० ऊनषोडशव
र्षस्यगतसप्ततिकस्यच । आघातस्रुतिरक्तस्यशिरामो

बहुत दुष्ट करता है (शुद्धरक्तलक्षण) शुद्धरक्त बीरवहूटी के रंगवाला हो
कर पतला होताहै स्पर्श में उष्ण व शीघ्रचारी कहाताहै ॥ १२ ॥ (रक्तमो
क्षणयोग्य) शोथमें दाहमें अंगपाक में रक्तवर्ण अंग में नाक से बहने में
वातरक्त, कुष्ठ, कष्टसाध्य पीड़ा वातसंयुक्त में ॥ १३ ॥ हाथरोग में पीलपाऊँ-
वा विषकरि गिरे रक्तमें ग्रंथि, अर्बुद, अपची, क्षुद्ररोग, रक्ताधिमन्थ ॥ १४ ॥
विदारी,कुचरोग, देहजकड़ना, रक्ताभिष्यन्द, तंद्रा, दुर्गंध ॥ १५ ॥ यकृत्, प्लीह,
विसर्प, विद्रधि, पिटिका, कान, ओठ, नाक व मुख पकने में दाह, माथे की पीड़ा ॥
१६ ॥ उपदंश व रक्तपित्त इनरोगों में रुधिर निकलाना उचित है (रक्तमो-
क्षणप्रकार) सिंगी, जोंक, तोंबी और फस्त इन चारों से रक्त निकलावै ॥
१७ ॥ वा शिरामोक्षों से मनुष्य रक्तनिकलावै (शिराछेदनअयोग्य) दुर्बल,
विषयी ॥ १८ ॥ नपुंसक, भीत (डरपोक), गर्भिणी, गोदवाली, पांडुरोगी,
वमनादिपंचकर्मकृती, स्नेहादिकर्मकृती, अर्शरोगी ॥ १९ ॥ सर्वांगशोथयुक्त,
उदर,स्वास,कास, उवाकी,अतीसारी और अतिस्वेदी॥ २० ॥ व सोलहकेभीतर

क्षोनशस्यते २१ एषांचात्ययिकेयोगेजलौकाभिस्तुनिर्हरेत्। तथापिविषयुक्तानांशिरामोक्षोपिशस्यते २२ गोशृङ्गेणजलौकाभिरलाबुभिरपित्रिधा। वातपि० कफैर्दुष्टंशोणितंस्रावयेद्बुधः २३ द्विदोषाभ्यांतुसंसृष्टंत्रिदोषैरपिदूषितम्। शोणितंस्रावयेद्युक्त्याशिरामोक्षे०पदेस्तथा २४ गृह्णातिशोणितंशृङ्गंदशाङ्गुलमितंबलात्। जलौकाहस्तमात्रंचतुम्बीचद्वादशाङ्गुलम्२५ पदमङ्गुलमात्रेणशिरासर्वाङ्गशोधिनी। शीतेनिरन्नेमूर्च्छातितन्द्राभीतिमदश्रमैः २६ युतानांनस्रवेद्रक्तंतथाविण्मूत्रसङ्गिनाम्। अप्रवर्तिनिरक्तेचकुष्ठचित्रकसैन्धवैः २७ मर्दयेद्व्रणवक्त्रंचतेन सम्यक्प्रवर्तते। तस्मान्नशीतेनात्युष्णेनस्विन्नेनातितापिते २८ पीत्वायवागूंतस्यशोणितंस्रावयेद्बुधः।

तथा सत्तर के ऊपर अवस्था (उमर) वाले को अकस्मात् नाकसे रक्तगिरे तो ऐसे मनुष्य अयोग्यके कदाचित् फोड़ा फुंसी हो तौ जोंक लगावै ऐसे रोगियोंका विषाद संयोग से रक्त अतिदुष्ट हो तौ शिरामोक्षण करै २१। २२॥ (दोषादिकमें रक्तनिकालनेका विधान) वायु दूषित रक्त सिंगीसे लेय,पित्तदूषित जोंक से लेय,कफदूषित तोंबीसे लेय॥ २३॥ दो वा तीन दोषों से दूषित दुष्ट रुधिर शिराछेदन करि लेय॥ २४॥ (सिंगी आदिसे रुधिर खिंचने का प्रमाण)सिंगी जित्त और लगातीहै उसके चारोंओर दशअंगुलताईका रक्त खैंचती है जोंक हाथभरताई तोंबी बारह अंगुलताई॥ २५॥ सूक्ष्मशिरा अंगुलभरकी और मोटी शिरा जो सब नसोंको रक्तदेय वह सब शरीरके रुधिरको शुद्ध करती है (रुधिरमोक्षणअयोग्य) शीतकाल में उपास में तंद्रा में मदमें व परिश्रम में॥ २६॥ तथा मलमूत्रनिरोधमें ऐसे मनुष्यके शरीरसे रुधिर नहीं निकलता (शिरारक्त न देनेका यत्न) जो नस छिदकै रुधिर भलीभांति न द्रवै तौ कूट, चीता और सैंधव ये समान भागले पीसि॥ २७॥ उस छेदपर रगड़ने से अच्छे प्रकार रक्त देयगी (रक्तमोक्षणकाल) न जाड़ाहो न गरमीहो न स्वेद किये को न उष्णशरीरी को॥ २८॥ जो रक्त निकालै तौ प्रथम यवागू

अतिस्विन्नेसोष्णकालेतथैवातिशिराव्यधात् २९ अति प्रवर्ततेरक्तंतत्रकुर्यात्प्रतिक्रियाम् । अतिप्रवृत्तेरक्तेचलोध्र सर्जरसाञ्जनैः ३० यवगोधूमचूर्णैर्वाधवधन्वनगैरिकैः । सर्पनिर्मोकचूर्णैर्वाभस्मनाक्षौमवस्त्रयोः ३१ मुखंव्रणस्यव द्ध्वाथशीतैश्चोपचरेद्व्रणम् । विध्येदूर्ध्वंशिरान्तांवादहेत्क्षा रेणवाग्निना ३२ व्रणंकषायःसन्धत्तेरक्तंस्कन्दयतेहिमम् । व्रणास्यंपाचयेत्क्षारोदाहःसङ्कोचयेच्छिराम् ३३ वामाण्ड शोथेदक्षस्यकरस्याङ्गुष्ठमूलजाम् । दहेच्छिरांव्यत्ययेतु वामाङ्गुष्ठशिरांदहेत् ३४ शिरादाहप्रभावेणशुष्कशोथः प्रशाम्यति । विसूच्यांपाददाहेनजायतेग्नेःप्रदीपनम् ३५ सङ्कुचन्तियतस्तेनरसश्लेष्मवहाःशिराः । यदार्द्धर्यक्त रक्तीह्रोःशिशोःसञ्जायतेसृजः ३६ तदातत्स्थानदाहेनस

दे तसकर लोहू निकलावै (अतिरुधिरस्राव) जिसे स्वेद किये वा ऊष्मासे स्थूल नस से ॥ २९ ॥ रक्तअधिक आवै बन्द न हो तिसके हित यत्न आगेवाले श्लोकमें कहतेहैं रुधिर न थँभनेपर ॥ जो शिरामोक्षसे रक्त न बन्दहो तौ लोध, राल व रसौंत इन तीनों का चूर्ण ॥ ३० ॥ वा यव गेहूं का चूर्ण वा धव, जवासा और गेरु का चूर्ण वा सर्पकी कैंचुल वा रेशमी लत्ताकी भस्म इन में कोई ॥ ३१ ॥ फस्त के मुखपर बलकरि दाबदे उसपर चन्दनादि शीतोपचार करै शीतल लेपकरै जो इसमें बन्द न होय तौ उसके कुछ ऊपर बांधिके फस्त दे वा अग्निसम खार उसके मुँहपर लगावै वा अग्निसे दागदे तौ बन्द होगा॥ ३२ ॥ इससे क्यों बन्द हो सो कहते हैं लोधादि से घाव मुख अमलाताहै शीतल लेप से रक्त थँभता है क्षारादि से क्षत पचताहै जलानेसे नसका मुख सिकुड़ताहै ॥ ३३ ॥ (दग्धकृतरोगशांति)जिसका दहिना अण्डकोशफूलै उसके बायें हाथ के अंगूठे की जड़दागै जो बाम अण्डकोश फूलै तौ दहिने हाथ के अंगूठा की मूल दागै ॥ ३४ ॥ जो यह आरम्भ में करै तो अवश्य अच्छा होय और जिसे शीतरस हो उसके गोड़के तलवे अत्यन्तसेंके,तौ रसवाहिनीव कफवाहिनी के मुख सिकुड़जाते हैं व अग्निदीप्त होती है ॥ ३५।३६ (दुष्टरक्त

ह्रुकुचन्त्यसृजःशिराः। रक्तेदुष्टेवशिष्टेपिव्याधिर्नैवप्रकुप्यति ३७ अतःस्रावंसावशेषंरक्तेनातिक्रमोहितः। आन्ध्यमाक्षेपकंतृष्णांतिमिरंशिरसोरुजम् ३८ पक्षाघातंश्वासकासौहिक्कांदाहंचपाण्डुताम्। कुरुतेविस्रुतंरक्तंमरणंवाकरोतिच ३९ देहस्योत्पत्तिरसृजादेहस्तेनैवधार्यते। विनातेनचजेञ्जीवोरक्षेद्रक्तमतोबुधः ४० शीतोपचारैःकुपितेस्रुतरक्तस्यमारुते। कोष्णेनसर्पिषाशोथंसर्वतःपरिषेचयेत् ४१ क्षीणस्यैणशशोरभ्रहरिणच्छागमांसजः। रसः समुचितःपानेक्षीरंवाषष्टिकाहिताः ४२ पीडाशान्तिर्लघुत्वंचव्याधेरुद्रेकसङ्क्षयः। मनःस्वास्थ्यंभवेच्चिह्नंसम्यग्विस्राविते ऽसृजि ४३ व्यायाममैथुनक्रोधशीतस्नानप्रवात

अशेष न होनेपर (दुष्ट रुधिर काढनेमें कुछ बाकी रहिजाय तौ रोग भी कोप न करैगा ॥ ३७ ॥ और अशेष होने वा ज्यादा निकलनेमें उपद्रव उत्पन्न होतेहैं अन्धता, आक्षेपक वायु, तृष्णा, तिमिर, माथे में पीड़ा ॥ ३८ ॥ पक्षाघात वायु, श्वास,कास,हुचकी,जलन और पांडु ये रोग होते हैं और सब रुधिर निकलजाने पर मरनेका भी आश्चर्य नहीं होताहै ॥ ३९ ॥ क्योंकि रक्तसे शरीर की उत्पत्ति है और वही देहका आधारहै रक्त रहने से जीवतहै इसीकारण बुद्धिमान् वैद्य रुधिरकी रक्षा करतेहैं ॥ ४० ॥ (रुधिरमोक्षणपर दोषकोप) रुधिर निकले पर घाव पर पित्तकोप दीखै तौ शीतलचन्दनादि लेपकरै व वायुकोप दीखै तौ वा घावपर सूजन होय पीड़ा करै तौ सुखोष्ण घी लगावै तौ रोग नाश होय ॥ ४१ ॥ (रुधिरमोक्षणपर पथ्य) जो रक्त निकालने परनिर्बल भयाहो तौ खरगोश, भेड़, काला हरिण वा छाग इनका मांस खिलावै वा गोदूधमें साठी के चावलकी खीर करि खिलावै वा गऊके दूधसाथ भातको खिलावै ये पथ्य हितकारक हैं ॥ ४२ ॥ (सम्यक्रक्तमोक्षणलक्षण) पीड़ाविगत, शरीर हलका, रोगका नाश व प्रसन्नमन ऐसे लक्षणहों तौ रक्तमोक्षण अच्छा भया ॥ ४३ ॥ (रक्तमोक्षणपरनिषेध) परिश्रम, मैथुन, क्रोध, ठंढे पानीसे नहाना, बाहर जाना एकबार खाना व दिन में सोना तथा अजीर्णकार, खटाई व

कात्। एकाशनंदिवानिद्रांक्षाराम्लकटुभोजनम् । शोकं वादमजीर्णञ्चत्यजेदावलदर्शनात् ४४ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेउत्तरखण्डेरक्तमोक्षणविधिर्नामद्वादशोऽध्यायः १२॥

सेकआश्च्योतनंपिण्डीबिडालस्तर्पणंतथा। पुटपाकोऽञ्जनंचैभिःकल्कैर्नेत्रमुपाचरेत् १ सेकस्तुसूक्ष्मधाराभिः सर्वस्मिन्नयनेहितः। मीलिताक्षस्यमर्त्यस्यप्रदेयश्चतुरङ्गुलम् २ सचापिस्नेहनोवातेरक्तेपित्तेचरोपणः । लेखनश्चकफेकार्यस्तस्यमात्राऽधुनोच्यते ३ षड्वाक्छतैः स्नेहनेषुचतुर्भिश्चैवरोपणे । वाक्छतैश्चत्रिभिःकार्यःसेकोलेखनकर्मणि। कार्यस्तुदिवसेसेकोरात्रौचात्ययिकेगदे ४ एरण्डत्वक्पत्रमूलैःश्टतमाजंपयोहितम्। सुखोष्णंसेचनं नेत्रवाताभिष्यन्दनाशनम् ५ परिषेकोहितोनेत्रेपयःकोष्णंससैन्धवम् ॥ रजनीदारुसिद्धंवासैन्धवेनसमन्वितम्६

कडुवे पदार्थोंको त्यागै शोक, वकना, अजीर्ण और जिसमें जोर पड़ता देखै उस को न करै ॥ ४४ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरसुधाकरेउत्तरखण्डेद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

(अथ नेत्रोपचारप्रकार) नेत्ररोगपर सात प्रकारकी औषध कहते हैं सेक, आश्च्योतन, पिण्डी, बिडाल, तर्पण, पुटपाक और अञ्जन ये सात प्रकार नेत्ररोगमें कहे हैं ॥ १ ॥ (सेकविधान) दूध, घृत व रस आदिक रोगीकी आंखें मुँदवाय चार अंगुल ऊपरसे महीन धारदे औषध गिरावै इसे सेककहतेहैं॥२॥ (सेकभेद) वातदूषित नेत्ररोग में स्नेहन सेक देय, रक्तपित्तपर रोपण सेक देय, कफदूषित में लेखन सेक देय, दूध घृतादि स्नेहन द्रव्य है, लोध, मुलेठी व त्रिफलादि ये रोपण द्रव्य है इन्हें दूधमें पीसिलै सोंठ, मिर्च व पीपरि ये लेखन द्रव्य कहाते हैं अब आगे इनकी मात्रा कहतेहैं ॥ ३ ॥ स्नेहन सेककी मात्रा छहसे रोपण सेककी चारसै लेखनकी तीनसै मात्रा ताई राखै (सेकादिकालभेदन) दिनमें करै व रात्रिको तेज रोगमें करै ॥ ४ ॥ (वाताभिष्यन्दपर सेक) रण्डकी छाल, पत्र, मूल व क्वाथ तथा बकरीका दूध सुखोष्ण करि सेकै तो वात अभिष्यन्द नेत्रमें दूरहो ॥ ५ ॥ (पुनः) अर्थात् वा दूध सैंधव डालि सुखोष्ण

वाताभिष्यन्दशमनंहितंमारुतपर्यये। शुष्काक्षिपाकेचहि
तमिदंसेचनकंतथा ७ शाबरंमधुकंतुल्यं घृतभृष्टंसुचू
र्णितम्। छागक्षीरेस्थितंसेकात्पित्तरक्ताभिघातजित् ८
त्रिफलालोध्रयष्टीभिः शर्कराभद्रमुस्तकैः। पिष्टैःशीता
म्बुनासेकोरक्ताभिष्यन्दनाशनः ९ लाक्षामधुकमञ्जिष्ठा
लोध्रकालानुसारिवा। पुण्डरीकयुतःसेकोरक्ताभिष्यन्दना
शनः १० श्वेतंलोध्रंघृतेभृष्टंचूर्णितंपटविस्रुतम्। उष्णाम्बु
नाविमृदितंसेकाच्छूलघ्नमम्बके ११ अथाश्च्योतनकंका
र्यंनिशायांनकथंचन। उन्मीलितेक्षिणदद्याच्चबिन्दुभिर्द्व्य
ङ्गुलाद्धितम् १२ बिन्दवोष्टौलेखनेषुस्नेहनेदशबिन्दवः।
रोपणेद्वादशप्रोक्तास्तेशीतेकोष्णरूपिणः १३ उष्णेचशी
तरूपाःस्युःसर्वत्रैवैषनिश्चयः। वातेतिक्तंतथास्निग्धंपित्ते

करि सेंकै या हल्दी देवदारु व सेंधवको डालि छगरीपयते सेंकै॥ ६॥ तो अभिष्यन्द, वातपर्यय व शुष्काक्षिपाक ये रोग दूरहोवैं॥ ७॥ (पित्तरक्त व अभिघातपर सेक) लोध व मुलेठी इन दोनोंके समान घृतमें भूंजि दूधमें मिलाय तप्तकरि सेककरै तौ पित्त, रक्तविकार व अभिघातजनित दोष दूरहोवैं॥ ८॥ (रक्ताभिष्यन्दपर सेक) त्रिफला, लोध, मुलेठी, शक्कर व नागरमोथा ये सब समान भागले पीसि ठंढे पानीमें सेक किये से रक्त अभिष्यन्द दूरहोय॥ ९॥ (रक्ताभिष्यन्दपर) लाख, मुलेठी, मँजीठ, लोध, कालासारिवा और कमल ये सब पीसि पानीमें सेक करै तौ नेत्रनमे रक्ताभिष्यन्द दूरहो॥ १०॥ (नेत्र शूलपर) सफेद लोधको घृतमें भूंजि चूर्णकरि पोटलीमें बांधि उष्णजलमें बोरि बोरि आंखकी पलकन पर फेरै तौ नेत्रशूल दूरहो॥ ११॥ (आश्च्योतन विधान) आश्च्योतन कहे बिंदु चुवावना आंखिखोलि दूध क्वाथ स्वरसादि द्रव पदार्थ दो अंगुलीसे बोरि आंखिमें चुवाय देय इसको "आश्च्योतन" कहते हैं इसको निशासमय कभी न करै॥ १२॥ (लेखनादि आश्च्योतन में बिंदु डालने का प्रमाण) लेखनकर्म में आठ बिंदु (बूंद) नेत्र में देय स्नेहन में दश रोपण में बारह शीतकाल में सुखोष्ण॥ १३॥ उष्ण

मधुरशीतलम् १४ तिक्तोष्णरूक्षंचकफेक्रमादाश्च्योतनं
हितम् । आश्च्योतनानांसर्वेषांमात्रास्याद्वाकुछतंहितम्
१५ निमेषोन्मेषणंपुंसामङ्गुल्योश्छोटिकाथवा । गुर्वक्षरो
च्चारणंवावाङ्मात्रेयंस्मृताबुधैः १६ बिल्वादिपञ्चमूलेनबृह
त्येरण्डशिग्रुभिः । क्वाथआश्च्योतनेकोष्णोवाताभिष्यन्द
नाशनः १७ अम्बुपिष्टैर्निम्बपत्रैस्त्वचंलोध्रस्यंलेपयेत् । प्र
ताप्यवह्निनापिष्टवातद्रसोनेत्रपूरणात् १८ वातोत्थंरक्त
पित्तोत्थमभिष्यन्दंविनाशयेत् । त्रिफलाश्च्योतनंनेत्रेस
र्वाभिष्यन्दनाशनम् १९ स्त्रीस्तन्याश्च्योतनंनेत्रेरक्तपि
त्तानिलार्तिजित् । क्षीरंतैलंघृतंवापिभ्रातरक्षरुजंजयेत् २०
पिण्डीकवलिकाप्रोक्तावध्यतपट्टवल्कैः । नेत्राभिष्यन्द
योग्यासात्रणेष्वपिनिबध्यते २१ अभिष्यन्देऽधिमन्थेच

(वातादि में आश्च्योतन योग्य)

सञ्जातेश्लेष्मसम्भवे। स्निग्धस्विन्नोत्तमाङ्गस्याशिरस्तो द्रणैर्विरेचयेत्. २२ अधिमन्थेपसर्वेषुललाटेवेधयेच्छिराम्। अशान्तेमर्वथामन्थेभ्रुवोरुपरिदाहयेत्. २३ अभिष्यन्देषुसर्वेषुबध्नीयात्पिण्डिकांबुधः । वाताभिष्यन्दशान्त्यर्थेस्निग्धोष्णापिण्डिकाभवेत्। एरण्डपत्रमूलत्वङ्निर्मिता वातनाशिनी २४ पित्ताभिष्यन्दनाशायधात्रीपिण्डीसुखावहा । महानिम्बफलोद्भूतापिण्डीपित्तविनाशिनी २५ शिग्रुपत्रकृतापिण्डीश्लेष्माभिष्यन्दनाशिनी । निम्बपत्रकृतापिण्डीश्लेष्मपित्तहराभवेत् २६ त्रिफलापिण्डिकाप्रोक्तानाशिनीश्लेष्मपित्तयोः । पिष्ट्वाकाञ्जिकतोयेनघृतभृष्टाचपिण्डिका २७ लोध्रस्यहरतिक्षिप्रमभिष्यन्दमसृग्भवम्। शुण्ठीनिम्बदलैःपिण्डीसुखोष्णास्वल्पसैन्धवैः २८ धार्याचक्षुषिसंयोगाच्छोथकण्डूव्यथापहा । विडालकोवहि

(नेत्राभिष्यन्दपर शिरोरेचन) जिसे कफकृत अभिष्यन्द व अधिमन्थहो उसके मस्तकमें तेललगाय पसीना निकलाय नासलेय यह मस्तक शुद्ध करनको भलाहै ॥ २२ ॥(सर्वाधिमन्थपर)सब अधिमन्थ में शिरकी फस्तले अधिमन्थ में भौंह दग्ध करै तो आराम होय ॥२३॥ (अभिष्यन्दादि पर) सर्वाभिष्यन्द में वही द्रव्यका कल्क नेत्रपर बांधै वाताभिष्यन्दमें चिकनी व उष्णद्रव्यकी पिण्डी बांधै (वात व पित्ताभिष्यन्दपर) रेंडके पत्र मूल वा छालको पीसि पिंडी करि नेत्र पर बांधने से वाताभिष्यन्द दूरहोय ॥ २४ ॥ आंवरे की पिण्डी बांधने से पित्ताभिष्यन्द दूरहोय (पुनः पित्ताभिष्यन्दपर) बकायनके फलकी पिंडी बांधे से पित्ताभिष्यन्द दूरहोय ॥ २५ ॥ (कफाभिष्यन्दपर) सहिंजनके पत्तों की पिंडी बांधे से कफाभिष्यन्द दूर होय (कफपित्ताभिष्यन्दपर) नींबपत्र वा त्रिफलेकी पिंडी बांधे तो कफपित्ताभिष्यन्द दूरहोय (रक्ताभिष्यन्दपर) लोधको काजीमें बांटि घृतमें भूनि पिंडीकरि बांधनसे ॥ २६ । २७॥ रक्ताभिष्यन्द विनाशहोय (नेत्रकी सूजन खुजलीपर सोंठ, नींबपत्र व थोड़ासा सेंधा मिलाय गुनगुनी पिंडी बांधै ॥ २८॥ तो सूजन खुजली दूरहोय॥ (बिडालकादि-

लेपोनेत्रपक्ष्मविवर्जितः । तन्मात्रासापरिज्ञेयामुखलेप विधानवत् २९ यष्टीगैरिकसिन्धूत्थदार्वीतार्क्ष्यैः समांश कैः। जलपिष्टैर्बहिर्लेपः सर्वनेत्रामयापहः ३० रसाञ्जनेन वालेपः पथ्याविश्वदलैरपि । कुमारिकाग्निपत्रैर्वादाडिमी पल्लवैरपि ३१ वचाहरिद्राविश्वैर्वातथानागरगैरिकैः। दग्ध्वाग्नौसैन्धवंलोध्रंमधूच्छिष्टयुतेघृते ३२ पिष्टमञ्ज नलेपाभ्यांसद्योनेत्ररुजापहम् । लोहस्यपात्रेसंघृष्टोरसो निम्बफलोद्भवः ३३ किञ्चिद्घनोबहिर्लेपोनेत्रबाधां व्यपोहति । संचूर्ण्यमरिचंकेशराजस्वरसंमर्दनात् ३४ लेपनादर्मणांनाशंकरोत्येषप्रयोगराट् । स्विन्नांभित्त्वा विनिष्पीड्यभिन्नामञ्जननामिकाम् ३५ शिलैलानत सिन्धूत्थैःसक्षौद्रैःप्रतिसारयेत् । अथतर्पणंवच्मिनेत्र तृप्तिकरंपरम् ३६ यद्रूक्षंपरिशुष्कञ्चनेत्रंकुटिलमाविल

भान) थांसि मूँद रहे ऊपरकी पलकपर लेपकरै पलकी बरायदे इसे बिडाल कहैं इसकी मात्रा मुखलेप समान जानौ ॥ २९ ॥ (सर्वाक्षिरोग पर बिडाल) मुलेठी, गेरू, सेंधव, दारुहल्दी व रसवत ये पांचों समान पानीमें पीसि लेपकरै तौ सब नेत्राभिष्यन्द जायँ ॥ ३० ॥ (पुनः) रसौंत जलमें पीसि लेपकरै अथवा हड़, सोंठ घीकुवार, चीता, अनारपत्र ॥ ३१ ॥ अथवा वच, हल्दी व सोंठ वा सोंठ, गेरू ये भिन्न २ पानी में पीसि लेप कियेसे सब नेत्ररोग दूरहोयँ (पुनः) सेंधव व लोधको भूने मोम घीमें रगरि अंजन करि लेप भी करै तौ शीघ्रही नेत्ररोग अच्छे होयँ (पुनः) नींबूरसको लोहपात्रमें रगरि ॥ ३२ । ३३ ॥ गाढासये लेप किये से नेत्रबाधा हत होय (अर्मरोगपर लेप) भंगरेके रसमें मरिचको रगरि ॥ ३४ ॥ लेप करै तौ सब अर्मरोग नाशकरै यह राजयोग है (प्रतिसारण अंजन-नामिका पिडिका पर) यह आंखिनकी कोरपर होतीहै इस पिडिकाको पर पकजाने फोरि रंगुली से दाबि निकार ॥ ३५ ॥ मैनशिल, इलायची, तगर, सेंधव पीसि शहदमें रगरि लगावै तौ पिडिकाको दूरकरै ॥ (नेत्रपर तर्पण) नेत्रके संतुष्ट करने को वर्णन करते हैं ॥ ३६ ॥ तर्पण योग्य जो नेत्र

म् । शीर्णपक्ष्मशिरोत्पातकृच्छ्रोन्मीलनसंयुतम् ३७ तिमिरार्जुनशुक्राद्यैरभिष्यन्दाधिमन्थकैः । शुक्राक्षिपाकशोथाभ्यायुक्तंवातविपर्ययैः ३८ तन्नेत्रंतर्पणीयं ज्यंनेत्रकर्मविशारदैः । दुर्दिनात्युष्णशीतेषु चिन्तायासभ्रमेषु च ३९ अशान्तोपद्रवेचाक्ष्णितर्पणंनप्रशस्यते । वातातपरजोहीनेदेशेचोत्तानशायिनः ४० आधारौमाषचूर्णेनक्लिन्नेनपरिमण्डलौ । समौदृढावसम्बाधौ कर्तव्यौनेत्रकोशयोः ४१ पूरयेद्घृतमण्डेन विलीनेनसुखोदकैः । अथवाशतधौतेन सर्पिषाक्षीरजेनवा ४२ निमग्नान्यक्षिपक्ष्माणि यावत्स्युस्तावदेवहि । पूरयेन्मीलितेनेत्रे ततउन्मीलयेच्छनैः ४३ धारयेद्वर्त्मरोगेषुवाङ्मात्राणांशतंबुधः । स्वच्छेकफेसन्धिरोगेमात्रापञ्चशतंहितम् ४४ शुक्लेचषट्शतंकृष्णरोगेसप्तशतंमतम् । दृष्टिरोगेष्वष्ट

रूखे २ कठोरता व गुरुता युक्त हों झरित बरुनी शिर उत्पात, कृच्छ्रोन्मीलन कहे जल्दी पलकें लगें ॥ ३७ ॥ तिमिर, अर्जुन, फुल्ली, अभिष्यन्द, अधिमन्थ शुक्राक्षिपाक, सूजन और वातसंबन्धी व्यथा ॥ ३८ ॥ ये रोग तृप्तियोग्य हैं (तर्पण वर्जित) दुर्दिनमें अति उष्णकाल में अतिशीतकाल में चिन्ता परिश्रम और भ्रमों में ॥ ३९ ॥ और यदि नेत्र उपद्रव शान्त न हों तो ये तर्पण लायक नहीं कहाते हैं (तर्पणविधान) जिस स्थानमें बयारि, गरमी व धूरि न जाय इनके बचावको ठौर रोगी उताना पौढ़े ॥ ४० ॥ तब उसके नेत्रों के चारों ओर जो हड्डी है तिसपर उड़दकी पीठीले मेंडबाधै जैसे कटोरी दिवली होती है तब आंखि मुँदवाय उसमें पिघला घी वा औषधों का मंड करि वा सुखोष्ण जल वा सौवारका धोया घृत वा दूधका फेन वा नवनीत (नयनू) इनमें से कोई भरे ॥ ४१ । ४२ ॥ कुछ बेरमें धीरे धीरे पलक मिनमिलावै जिसमें सूक्ष्मसी औषध भीतर भी जाय ॥ ४३ ॥ (तर्पणमात्रा) जो पलक वा पोटे के रोगों पर तर्पण हो तौ सौ वाङ्मात्रा ताईं औषध भरी राखै जो कफादिजन्य नेत्रमें कोई रोगहो तौ पांचसै मात्रा पर्यन्त औषध स्थिर रहै ॥ ४४ ॥ सफेदी के

शतमधिमन्थेसहस्रकम् ४५ सहस्रंवातरोगेषुधार्यमेवंहि तर्पणे। स्विन्नेनयवपिष्टेनस्नेहवीर्येरितंततः ४६ यथास्वंधूमपानेनकफमस्यविशोधयेत्। एकाहंवात्र्यहंवापि पञ्चाहंचेष्यतेपरम् ४७ तर्पणेतृप्तलिङ्गानिनेत्रस्येमानि भावयेत्। सुखस्वप्नावबोधत्वंवैशद्यंवर्णपाटवम् ४८ निवृत्तिर्व्याधिशान्तिश्चक्रियालाघवमेवच। अथसाश्रुगुरुस्निग्धंनेत्रंस्यादतितर्पितम् ४९ रूक्षमस्राविलंरुग्णं नेत्रंस्याद्धीनतर्पितम्। रूक्षस्निग्धोपचाराभ्यामेतयोः स्यात्प्रतिक्रिया ५० अतऊर्ध्वंप्रवक्ष्यामिपुटपाकस्य साधनम्। द्वौबिल्वमात्रौमांसस्यपिण्डौस्निग्धौसुपेषितौ ५१ द्रव्याणांबिल्वमात्रन्तुद्रवाणांकुडवोमतः। तदेकस्थंसमालोड्यपत्रैःसुपरिवेष्टितम् ५२ पुटपाकेनतस्य

रोग में छःसै ताईं काले डेले के रोगमें सातसै ताईं रहै पुतरी रोग में आठसै ताईं अधिमन्थ ॥ ४५ ॥ वा वात रोग में हजार मात्रा ताईं औषध भरे रहै (तर्पण में कफाधि के उपाय) जो स्निग्ध तर्पण से कफ उत्पन्नहो तो यव पीसि धूमपान कराय कफका शोधनकरै (तर्पणमें दिनप्रमाण) तर्पण एक दिन व तीन दिन व पांच दिन करै ॥ ४६ । ४७ ॥ (सम्यक् तर्पणलक्षण) तर्पण अच्छाहो तो सुखसे सोवै जागै नेत्र निर्मलहों और कांति बढ़ै ॥ ४८ ॥ दृष्टि शुद्धहो रोग नाश पलकैं हलकी ये लक्षण अच्छे तर्पण के हैं (अतितर्पणलक्षण) अतितर्पण से नेत्र पानी बहावैं भारी रहैं व चिप चिपावैं ॥ ४९ ॥ (हीनतर्पणलक्षण) नेत्र तेज लाल मीड़ी युक्त व रोग करान्वितहो (नेत्र सूक्ष्म स्निग्ध यत्न) जो नेत्र चिकने हों तो रूक्ष उपाय करै रूखेहों तो स्निग्ध उपायकरै ॥ ५० ॥ (पुटपाक की रीति कहते हैं) हरिणादि मांस दोपल महीन करि एकपल घृतादि स्निग्ध मिलाय ॥ ५१ ॥ द्रव्यन मूली औषध दूध व द्रवपदार्थ कुडवभर ये सब मिलाय गोला बांधि पत्ता कार्य पत्र से वेष्टितकरि ॥ ५२ ॥ काढ़ौटी माटी पतरा इत्यादिक करलेप कर गोला

---

१ तर्पणरूप औषध को नेत्र मुँदाय ऊपरसे डालते हैं। २ [illegible] इसका नेत्र [illegible] आप बीचोबीच गेरते हैं कोरा इसनारी नेत्र पातालरा है॥

क्त्वांगृह्णीयात्तद्रसम्बुधः। तर्पणोक्तविधानेनयथावदुपचा
रयेत् ५३, दृष्टिमध्येनिषेच्यःस्यान्नित्यमुत्तानशायिनः।
स्नेहनोलेखनश्चैवरोपणश्चेतिसत्रिधा ५४ हितःस्नि
ग्धोतिरूक्षस्यस्निग्धस्यापिहिलेखनः। दृष्टेर्बलार्थमित
रःपित्तासृग्व्रणवातनुत् ५५ सर्पिर्मांसवसामज्जामेदः
स्वाद्वौषधैःकृतः। स्नेहनःपुटपाकश्च धार्योद्वेवाक्छते
दृशोः ५६ जाङ्गलानांयकृन्मांसैर्लेखनद्रव्यसंयुतैः। कृ
ष्णलोहरजस्ताम्रशङ्खविद्रुमसिन्धुजैः ५७ समुद्रफेनं
कासीसस्रोतोजदधिमस्तुभिः। लेखनोवाक्छतंधार्यस्त
स्यतावद्विधारणम् ५८ स्तन्यजाङ्गलमध्वाज्यतिक्तकद्र
व्यपाचितः। लेखनात्त्रिगुणोधार्यः पुटपाकस्तुरोपणः
५९ वितरेत्तर्पणोक्तांतु क्रियांव्यापत्तिदर्शने। अथसम्य

निकालि रस निचोरि नेत्रपर मेसला बांधि रसभरै ॥ ५३ ॥ (नेत्रपुटपाक रस धारण विधान) पुटपाक रस स्नेहन, लेखन व रोपण भेदकरि ये तीन प्रकारका है रोगी को उताना सुलाय नेत्र खोलिकै भीतर डारै ॥ ५४ ॥ (स्नेहादि भेद ॥ पुटपाककिया) रूखे नेत्रपर चिकना चिकनेपर रूखा पुटपाक करना सबलदृष्टि पर रोपण पुटपाक योग्यहै जो नेत्रमें दृष्टरोग व रक्तपित्तव्रण व वायु उपद्रवहो तो आनेवाले श्लोक में कही द्रव्य द्वारेण पुटपाक करौ ॥ ५५ ॥ (स्नेहन पुटपाक) घृतमें हरिणादि मांस, वसा, मज्जा, मेदा और स्वाद्वौषध "काकोल्यादिगणका चूर्ण" शराव एककरि पीसि गोलाबांधि पुटपाक करि रसले नेत्रमें देय दोसै मात्रा तक राखै इसे पुटपाक कहते हैं ॥ ५६ ॥ लेखन पुटपाक यथोचित करै मृगोंका यकृत्, मांस, लोहचून, तांबा, शंख, मूंगा, सेंधव ॥ ५७ ॥ समुद्रफेन, कसीस, सुरमा व बकरी के दहीका पानी, पूर्वोक्त रीति पुटपाकरस नेत्रमें सौमात्रालाई राखै यह लेखन पुटपाक कहाताहै ॥ ५८ ॥ (रोपण पुटपाक) स्त्रीका दूध, मृगमांस, मधु, घृत व कुटकी ये सब मिलाय पुटपाककरि रसले आंखों में देय यह रोपण पुटपाक है तीनसै मात्रातक राखै जो पुटपाक न्यूनाधिक होय तो नेत्र भारी रहैं व निमेषका दोष उत्पन्न होय

कदोपस्य प्राप्तमञ्जनमाचरेत् ६० हेमन्तेशिशिरेचैवं मध्याह्नेञ्जनमिष्यते । पूर्वाह्णेचापराह्णेच ग्रीष्मे शरदि चेष्यते ६१ वर्षास्वनभ्रेनात्युष्णेवसन्तेचसदाहितः । लेखनंरोपणंचैव तथास्यात्स्नेहनाञ्जनम् ६२ लेखनं क्षारतीक्ष्णाम्लरसैरञ्जनमिष्यते । कषायतीक्ष्णरसयुक् सस्नेहंरोपणंमतम् ६३ मधुरस्नेहसम्पन्नमञ्जनंचप्रसादनम् । गुटिकारसचूर्णानित्रिविधान्यञ्जनानिच ६४ कुर्याच्छलाकयाङ्गुल्याहीनानिचयथोत्तरम् । श्रान्तेप्ररुदिते भीतेपीतमद्येनवज्वरे ६५ अजीर्णेवेगघातेचनाञ्जनंसंप्रशस्यते । हरेणुमात्रांकुर्वीतवर्तिन्तीक्ष्णाञ्जनेभिषक् ६६ प्रमाणंमध्यमेध्यर्द्धंद्विगुणंतुमृदौभवेत् । रसक्रियातूत्तमा

तब पके हुये सदृश तर्पणक्रिया करै तो पूर्वोक्तहोय (संपक दोष अंजन) जिसकी आंखिदेसैं भलीभांति पकचुकीहों तो उसके नेत्रों में अंजन लगाना फिर पँचयें दिन लगावै ॥ ५९ । ६० ॥ और साधारण में हेमंत व शिशिरऋतु में मध्याह्न में लगावै तथा ग्रीष्म व शरद् में पहर दिन चढ़े और पहर दिनरहे लगावै ॥ ६१ ॥ वर्षा में बरसता न हो बदरी न हो ऊष्मा अधिक न हो तब लगावै वसन्त में सब समय अंजनलगाना हितहै (अञ्जन भेद) अञ्जन लेखन, रोपण और स्नेहन भेदसे तीन प्रकारकाहै॥ ६२ ॥ सो तीक्ष्ण खट्टा, दो रस लेखन अञ्जन जानना कषाय कटु स्नेहन युक्त दो रस रोपण जानो ॥ ६३ ॥ मधुर रस स्नेह युक्त प्रसादन स्नेह जानो (अञ्जन प्रकार) गोली अञ्जन, रस अञ्जन, चूर्ण अञ्जन ॥ ६४ ॥ गोलीसे रसाजन श्रेष्ठ रससे चूर्णाजन श्रेष्ठ ये एकसे एक उत्तमहैं सो सलाई व अंगुली से लगावे (अञ्जन अयोग्य) थकित, रोनेवाला, भयभीत, मद्यपिये, नवीनज्वरी ॥ ६५ ॥ अजीर्णी व मूत्रादिरोधी इन्हें अञ्जन अयोग्यहै (तीक्ष्णांजन की वर्ती) मेउजीजीज सम मोटी बनावै ॥ ६६ ॥ मध्यम में डेढ़ बीज सम मृदु में दो बीज समं गीले अञ्जन में मानो तीन विडंगसम उत्तमहै दो विडंगसम मध्यमहै एक विडंग समान छोटी मानाहै (शुष्क वैरेचनांजन प्रमाण) वैरेचन अञ्जन

स्यात्त्रिविडङ्गमिताहिता ६७ मध्यमाद्विविडङ्गास्याद्धीनास्त्वेकविडङ्गका। वैरेचनिकचूर्णंतुद्विशलाकंविधीयते ६८ मृदौतुत्रिशलाकंस्याच्चतस्रःस्नैहिकेञ्जने। मुखयोःकुण्ठिताश्लक्ष्णाशलाकाष्टाङ्गुलोन्मिता ६९ अश्मजाधातुजावास्यात्कलायपरिमण्डला। ताम्रलोहाश्मसञ्जाताशलाकालेखनेमता ७० सुवर्णरजतोद्भूताशलाकास्नेहनेमता। अङ्गुलीचमृदुत्वेनकथितारोपणेबुधैः ७१ सायंप्रातश्चाञ्जनंस्यात्तत्सदानैवकारयेत्। नातिशीतोष्णवाताभ्रवेलायांसम्प्रशस्यते ७२ कृष्णभागादधःकुर्यादपाङ्गंयावदञ्जनम्। शङ्खनाभिर्विभीतस्य मज्जापथ्यमनःशिला ७३ पिप्पलीमरिचंकुष्ठंवचाचेतिसमांशकम्। छागीक्षीरेणसम्पिष्यवर्तिंकुर्याद्यवोन्मिताम् ७४ हरेणुमात्रांसंघृष्य जलैःकुर्यादथाञ्जनम्। तिमिरंमांसवृद्धिञ्चकाचंपटलमर्बुदम् ७५ रात्र्यन्धंवार्षिकंपुष्पंवर्तिश्चन्द्रोदयाभवेत्।

सलाई से नेत्रमें दोवार देय ॥ ६७। ६८ ॥ मृदु अञ्जन का चूर्ण तीन वार फेरे घृतादि युक्त चूर्ण वारंवार देय, वैरेचन कहे जिसके लगाने से नेनन से पानी गिरै (शलाका प्रमाण) पत्थर वा धातु की सलाई आठ अंगुल की मृदंगाकार मुख दोनों तिल समान महीन अति चिकने लेखन शलाका प्रमाण लेखन सलाई तांबे वा लोहेकी बनावै ॥ ६९। ७० ॥ स्नेहन अञ्जनकी सोने वा चांदी की बनावै रोपण मृदुता से अंगुली बोरि नेत्रन में आंजै ॥ ७१ ॥ (अञ्जनसमय) अञ्जन सन्ध्या वा प्रभातकाल करै सदा समय न करै न अतिशीत न उष्ण कालमें न अतिवायु में न वदरी में अंजन करै ॥ ७२॥ और नेत्र में काले भाग के तरे करै (चन्द्रोदयवर्ती) शंखधेंदी, बहेड़े की मींगी, हड़, मैनशिल ॥ ७३ ॥ पीपरि, मिर्च, कूट और वच ये आठों समानभाग ले बकरी के दूध में बहुत थोड़ि यवभरि ॥ ७४ ॥ मेवड़ी बीजके समान वटी बनाय पानी में रगरि नेत्र में आंजै तो तिमिर, मांसवृद्धि, काच बिंदु, पटलरोग, अर्बुद ॥ ७५ ॥ रतौंधी वर्षभरकी और फुली ये सब दूरहोयँ (शुक्रादिकपर

पलाशपुष्पस्वरसैर्बहुशःपरिभाविता ७६ करञ्जबीजव र्तिस्तुशुक्रादीञ्छस्त्रवल्लिखेत् । समुद्रफेनसिन्धूत्थशङ्ख शौण्डयण्डवल्कलैः ७७ शिग्रुबीजयुतैर्वर्तिःशुक्रादीञ्छस्त्र वल्लिखेत् । दन्तैर्दन्तवराहोष्ट्रगोहयाजखरोद्भवैः ७८ श ङ्खमुक्ताम्भोधिफेनयुतैःसर्वैर्विचूर्णितैः । दन्तवर्तिःकृता श्लक्ष्णंशुक्राणांनाशिनीपरा ७९ नीलोत्पलंशिग्रुबीजंना गकेसरकन्तथा । एतत्कल्कैःकृतावर्तिरतितन्द्राविनाश येत् ८० तिलपुष्पाण्यशीतिःस्युःषष्टिसङ्ख्याकणाभवे त् । जातीकुसुमपञ्चाशन्मरिचानिचषोडश ८१ सूक्ष्मंपि ष्ट्वाम्बुनावर्तिःकृताकुसुमिकाभिधा । तिमिरार्जुनशुक्राणां नाशिनीमांसवृद्धिहृत् ८२ एतस्याश्चाञ्जनेमात्राप्रोक्ता सार्द्धहरेणुका । रसाञ्जनंहरिद्रेद्वेमालतीनिम्बपल्लवाः ८३

लेखनवर्ती) ढाक के फूलका रस करंज की मींगी कईवार घोटि घोटि यत्र स्वरूप वर्ती बनाय पानी में रगरि नेत्रमें आजै तो फुल्ली व मासवृद्धि आदिको दूर करती है जैसे शस्त्र से शुद्ध होजाती है (पुनः) समुद्रफेन, सेंधव, शङ्ख, मुरगे के अण्डे का छिलका ॥ ७६ । ७७ ॥ सहिंजन के बीज ये पांचों समान भागले महीनकरि जलमें पीसि गोली बाय सुखाय पानीमें घिसि अञ्जनकरैतो शस्त्रादि का कुछ काम नहीं रहता (लेखनी दन्तवर्ती) हाथी, घोड़ा, वराह, ऊंट, बैल, बकरा, खर इन सातोंके ॥७८॥ दात शंख, मोती व समुद्रफेन इन सबोंका चूर्णकरि जलमें पीसि गोली बाधि सुखाय पानीमें घिसि अञ्जनकरे से फुल्ली गिरिजाती है ॥७९॥ (तन्द्रानिवारण लेखनीवर्ती) नीलकमल, सहिंजनबीज और नागकेसर ये तीनों सम अति महीन पानीमें पीसि गोली करि सुखाय पानीमेंघिसि आजै तो तंद्रा दूरहो ॥८०॥ (रोपणीकुसुमवर्ती) तिलपुष्प अस्सी ८० पीपरि दाना साठि ६० चमेली पुष्प ५० मिर्च १६ इन्हें महीन पीसि देढ मेंहदीबीज तुल्य बत्ती बनाइये इसे कुसुमिका वर्ती कहते हैं इसको आजै तो तिमिर, अर्जुन, फुल्ली व मासवृद्धि ये सब दूरहोवें ॥८१ । ८२॥ इसके आजनेकी मात्रा डेढमेंहदीबीज मात्र कही है (रसौंधिपर वर्ती) रसौंत

गोशकृद्रससंयुक्तावर्तिर्नक्तान्ध्यनाशिनी। धात्र्यक्षपथ्या बीजानिएकद्वित्रिगुणानिच ८४ पिण्डावर्तिर्जलैः कुर्या दञ्जनंद्विहरेणकम् । नेत्रस्रावंहरत्याशुवातरक्तरुजन्त था ८५ तुत्थमाक्षिकसिन्धूत्थसिताशङ्खमनःशिलाः। गै रिकोदधिफेनौचमरिचंचेतिचूर्णयेत् ८६ संयोज्यमधुना कुर्यादञ्जनार्थंरसक्रियाम्। वर्त्मरोगार्मतिमिरकाचशुक्रा पहारकम् ८७ वटक्षीरेणसंयुक्तंमुख्यःकर्पूरजंरजः। क्षिप्र मञ्जनतोहन्तिकुसुमंचद्विमासिकम् ८८क्षौद्राश्वलालासं घृष्टैर्मरिचैर्नेत्रमञ्जयेत्। अतिनिद्राशमंयातितमःसूर्योद यादिव ८९ जातीपुष्पंप्रवालंचमरिचंकटुकीवचा। सैन्ध वंबस्तमूत्रेणपिष्टंतन्द्राघ्नमञ्जनम् ९० शिरीषबीजगोमूत्र कृष्णामरिचसैन्धवैः।अञ्जनंस्यात्प्रबोधायसरसोनशिला

हल्दी,दारुहल्दी,चमेली पत्र और नौंबपत्र ये पांचों समान॥ ८३ ॥ गोबरकेपानी में गोली बनाय आंजेसे रतौंधी नाशहोयँ (नेत्रस्राव पर स्नेहवर्ती) आंवला मिंगी १ भाग बहेडा मिंगी २ भाग हर्डमिंगी ३ भाग॥ ८४ ॥ जलमें महीन पीसि दो मेवड़ी बीजसम गोलीकरि पानीमें घिसि आंजनेसे पानी बहना व वात रक्त जन्य पीडा मिटजातीहै॥ ८५॥ (रसक्रिया) तूतिया, सोनामाखी, सेंधव, मिश्री,शंख,मैनशिल,गेरू,समुद्रफेन और मिरच ये नव सम भागले सूक्ष्म पीसि ॥ ८६ ॥ शहद मिलाय गोली बांधि अञ्जन करेसे पलकरोग, तिमिर, अर्म, काच-बिन्दु और फुली ये रोग दूरहोयँ ॥ ८७ ॥ (शुक्रपर रसक्रिया) वटदुग्ध व शुद्धकपूर पीसि अञ्जनकरे दोमासकी फुली भी दूरहो ॥ ८८ ॥ (तन्द्रापर लेखनी रसक्रिया) शहद और घोडेकी लारसे मरिच घिसके अञ्जन करनेसे ऐसे तन्द्रा दूरहो जैसे सूर्यके उदयसे अन्धकार दूर होताहै ॥८९॥ (पुनरञ्जन) चमेली के पुष्प मूंगा, मरिच, कुटकी, बच और सेंधव ये सब समान भागले छागके मूत्रमें गोलीबांधि लगावै तो तन्द्रा निवारणहो ॥ ९० ॥ (सन्निपात परलेखन रसक्रिया) सिरसबीज, पीपरि, मरिच, सेंधव, लहसुन, मैनशिल और बच ये सातों समानभागले गोमूत्र में पीसि आंजै तो सन्निपात शान्त

स्रवैः ९१ दार्वीपटोलंमधुकंसनिम्बंपद्मकोत्पलम्। प्रपौण्डरीकंचैतानिपचेत्तोयेचतुर्गुणे ९२ विपाच्यपादशेषंतुशृतंनीत्वापुनःपचेत्। शीतेतस्मिन्मधुसितांदद्यात्पादांशकांनरः ९३ रसक्रियैषादाहाश्रुरक्तरोगरुजंहरेत्। रसाञ्जनंसर्जरसोजातीपुष्पंमनःशिला ९४ समुद्रफेनोलवणंगैरिकंमरिचानिच। एतत्समांशंमधुनापिष्ट्वाप्रक्लिन्नवर्त्मनि ९५ अञ्जनंक्लेदकण्डूघ्नम्पक्ष्माणिचप्ररोहति। गुडूचीस्वरसःकर्षःक्षौद्रंस्यान्माषकोन्मितम् ९६ सैन्धवंक्षौद्रतुल्यंस्यात्सर्वमेकत्रमर्दयेत्। अञ्जयेन्नयनेतेनविस्तारतिमिरंजयेत्। काचंकण्डूंलिङ्गनाशंशुक्लकृष्णगतान्गदान् ९७ दुग्धेनकण्डूंक्षौद्रेणनेत्रस्रावंचसर्पिषा। पुष्पंतैलेनतिमिरंकाञ्जिकेननिशान्धताम् ९८ पुनर्नवाजयेदाशुभास्करस्तिम

हो॥ ९१ ॥ (नेत्रदाहपर रसक्रिया) दारुहल्दी, पटोल, मुलेठी, नींब, पद्माख कमल और स्वेतकमल ये सातों समभागले कूटके चौगुने पानी में क्वाथकरि॥ ९२॥ चौथ्याई रहै तब उतारि छाने फिर औटाय गाढ़ाहोय जब सिराय तब मधु मिश्री मिलाय अंजनकरै तौ नेत्र जलना, बहना, रक्तविकार व नेत्ररोग दूरहोवें (बरुनी रोगपर रसक्रिया) रसौत, राल, चमेली फूल, मैनशिल ॥ ९३॥ ९४ ॥ समुद्रफेन, सेंधव, गेरू और मिरच ये आठों समानभागले शहददेकै अञ्जन करै तौ पाकरोग बंधै ॥ ९५ ॥ चिपचिपाहट और खाज ये सब दूरहों और पलक झरना न झरै फिर जमै (तिमिररोगपर रोपणी रसक्रिया) गुर्चका स्वरस कर्षभर मधु व सेंधव मासे मासे भर सब सूक्ष्म पीसि अंजन करै तौ पिल्लार्म, तिमिर, काचबिन्दु, खुजली, लिंगनाश, सफ़ेद कृष्ण डेले के सब रोग दूरहों ॥ ९६ ॥ (अंजनांते अनोपान) जो अञ्जन करे खाजहो तौ दूध घसि लगावै तौ खुजली मिटै शहद में लगावे तो जल बहना दूरहो घृतयुक्त से फुल्ली दूरहो तिल युक्त लगाये से तिमिररोग दूरहो कांजी में लगाये से रतौंधी दूरहो ॥ ९७ । ९८ ॥ जैसे सूर्योदय से अंधकार दूरहो तैसे गदापुर्नना से अधिपान सहाय से सब नेत्र रोग दूर होते हैं (नेत्रस्रावपर रोपणी रसक्रिया)

मिरंयथा॥तन्दूलदलनिष्काथोलेहीभूतस्तदञ्जनात् ९९ नेत्रस्रावंजयत्येषःमधुयुक्तोनसंशयः । हिज्जलस्यफलंघृष्ट्वापानीयेनित्यमञ्जनम् १०० चक्षुःस्रावोपशान्त्यर्थंकार्यमेतन्महौषधम्।कतकस्यफलंघृष्ट्वामधुनानेत्रमञ्जयेत् १ईषत्कर्पूरसहितंस्मृतंनेत्रप्रसादनम्। सर्पिःक्षौद्रंचाञ्जनंस्याच्छिरोत्पातस्यशान्तये २ कृष्णसर्पवसाशङ्खः कतकाफलमञ्जनम्।रसक्रियेयनचिरादन्धानांदर्शनप्रिया३ दक्षाण्डत्वक्छिलाकाचैःशङ्खचन्दनगैरिकैः । द्रव्यैरञ्जनयोगोयंपुष्पार्मादिविलेखनः ४ कणाच्छागयकृन्मध्येपक्त्वातद्रसपेषिता।अचिराद्धन्तिनक्तान्ध्यंतद्वत्सक्षौद्रन्यूषणम् ५ शाणार्द्धमरिचंद्वौचपिप्पल्यर्णवफेनयोः । शाणार्द्धंसैन्धवंशाणानवसौवीरकांजनात् ६ पिष्टंसुसूक्ष्मंचित्रायांचूर्णाजनमि

चहूरपनका छाय अतिगाडाभये ॥ ९९ ॥ शहद मिलाय आंजै तौ निश्चय नेत्र से पानी बहना दूरहो (पुनर्नेत्रस्राव पर) निर्मली फल पानी में रगरि लगावै तौ नेत्रसे पानी बहना बन्दहोय ॥ १०० ॥ (नेत्रशुद्ध होने के अर्थ स्नेहनी रसक्रिया) निर्मली शहदमें घसि किंचित् कपूर मिलाय आंजै तौ नेत्र अरोग होयँ ॥ १ ॥ (शिरोत्पातपर रसक्रिया) घृत व शहद मिलाय अंजनकरै तौ शिरोत्पातरोग दूर होयँ ॥ २ ॥ (धुंधपर रसक्रिया) काले सापकी चरबी, शंख और निर्मली ये सब खरलकरि आंजै तौ अँधियारा दिखाई देना दूरहोकर साफ दिखाई देय ॥ ३ ॥ (लेखनचूर्ण अञ्जन) मुर्गेके अण्डे का छिलका सफेद कांच, शंख, चन्दन, गेरू व सैंधव ये छवों समान अञ्जन करि आंजने से फूली मांसार्मादि नाशहों ॥ ४ ॥ (रतौंधी पर चूर्ण) छाग की करेजीपर पीपरि धरि पकाय पीपरि ले उसी मांसके रसमें रगरि आंजै वा सोंठि, मिर्च और पीपरि को शहद में घिसि आंजे तो रतौंधी न रहै ॥ ५ ॥ (फूलआदि पर) मरिच अर्द्धशाण, पीपरि व समुद्रफेन दोदो शाण सुरमा नव शाण ॥ ६ ॥ ये सब द्रव्य चित्रा नक्षत्रमें ले महीन सुरमा बनाय नेनों में आंजने से भारि खजुआना, कांचबिन्दु, कफजन्य पीडा व मल इनमें नेत्रको

दंशुभम्।कण्डूकाचकफार्तानांमलानांच्चविशोधनम् ७ शि
लायांरसकंपिष्ट्वासम्यगाप्लाव्यवारिणा। गृह्णीयात्तज्जलंस
र्वंत्यजेच्चूर्णमधोगतम् ८ शुष्कंचतज्जलंसर्वंपर्पटीसन्निभं
भवेत्।विचूर्ण्यभावयेत्सम्यक्त्रिवेलंत्रिफलारसैः ९ कर्पूर
स्यरजस्तत्रदशमांशेननिक्षिपेत्।अञ्जयेन्नयनेतेनसर्वदो
षहरंहितत् १० सर्वरोगहरंचूर्णंचक्षुषोःसुखकारिच । अ-
ग्नितप्तंचसौवीरंनिषिञ्चेत्त्रिफलारसैः ११ सप्तवेलंतथा
स्तन्यैः स्त्रीणांसिक्तंविचूर्णितम्।अञ्जयेन्नयनेतेनप्रत्यहं
चक्षुषोर्हितम् १२ सर्वानक्षिविकारांस्तुहन्यादेतन्नसंशयः।
गतदोषमपेताश्रुसंपश्येत्सम्यगाशुतत् १३ त्रिफलाभृङ्ग
शुण्ठीनांरसैस्तद्वच्चसर्पिषा।।गोमूत्रमध्वजाक्षीरैः सिक्तोना
गःप्रतापितः १४ तच्छलाकाहरत्येवसर्वांन्नेत्रभवान्गदा
न् । गतदोषमपेताश्रुसंपश्यन्सम्यगम्भसि १५ प्रक्षाल्या
क्षियथादोषंकार्यंप्रत्यञ्जनंततः । नचानिर्गतदोषेक्षिणधा

शुद्ध करै ॥ ७ ॥ (सर्व नेत्ररोगपर रुद्रचूर्णांजन) खपरियाले अति महीन खरलकरि वासन में पानी भरि घोलि थँबोइले पानी निकारि पात्रमें भरि घाँच में जरायकै खुरचि लेय सो खरल में डारि त्रिफलाक्काथकी तीनभावना देय ॥ ८ । ९ ॥ तब उसका दशवा अंश कपूर मिलाय फिर घोटै सो नेत्र में आजे से सब रोग दूरहों ॥ १० ॥ नेत्र सुख पावै (सर्वाक्षिरोगपर सौवीर अंजन) सुरमा सातबार खरल करि करि तपाय त्रिफलाक्काथ में बुझाय ॥ ११ ॥ वैसेही सातबार स्त्री के दूध में बुझाय अतिमहीन पिसाय नेत्राजन करैसे सब नेत्ररोग दूरहोय यह नेननको निःसंदेह हितकारकहै ॥ १२ । १३ ॥ (सीसशलाका विधान) त्रिफलाक्काथ, भंगरारस व सोंठिकाथ इनकी पुट दिया सीसा गलाय गलाय घी, गोमूत्र, शहद, छगरीदूध सबनमें सातसात वार बुझाय ॥ १४ ॥ शलाई बनाय नेत्रमें फेरैसे सबरोग दूरहों इसलिये और अंजनादि भी इससे लगाना भला है ॥ १५ ॥ (प्रत्यंजनविधि) जब सीस-शलाका फेरने से दोष दूरहोके नेत्रसे आंसू गिरते हैं तिसके पीछे शीतल बड़े

वनंसम्प्रयोजयेत् १६ प्रत्यञ्जनंतीक्ष्णतप्तेनेत्रेचूर्णःप्रसा
दनः। शुद्धनागेद्रुतेतुल्यंशुद्धंसूतंविनिक्षिपेत् १७ कृष्णा
ञ्जनंतयोस्तुल्यंसर्वमेकत्रचूर्णयेत्। दशमांशेनकर्पूरंतस्मि
श्चूर्णेप्रदापयेत् १८ एतत्प्रत्यञ्जनंनेत्रगदजिन्नयनामृ
तम्। जयपालस्यमज्जानंभावयेन्निम्बुकद्रवैः १९ एक
विंशतिवेलंतत्ततोवर्तिंप्रकल्पयेत्। मनुष्यलालयाघृष्ट्वात
तोनेत्रेतयाञ्जयेत् २० सर्पदष्टविषंजित्वासञ्जीवयतिमान
वम्। भुक्त्वापाणितलंघृष्ट्वाचक्षुषोर्यदिदीयते। जातरोगावि
नश्यन्तितिमिराणितथैवच २१ शीताम्बुपूरितमुखःप्रति
वासरंयःकालत्रयेणनयनंद्वितयंजलेन। आसिञ्चतिध्रुवम
सौनकदाचिदक्षिरोगव्यथाविधुरतांभजतेमनुष्यः २२ आ
युर्वेदसमुद्रस्यगूढार्थमणिसञ्चयम्। ज्ञात्वाकैश्चिद्बुधै

पात्रमें जलभरि शिरवोरि उस पानी में आंखि खोलि देखै फिर नेत्रधोय प्रत्यं-जन लगावै सो आगेकहेंगे ॥ १६ ॥ (सदोषनेत्रपर निषेध) जिस नेत्रमें दोषकी है तौ नेत्र धुवावै क्योंकि तीक्ष्णअंजन कर नेत्र सन्तप्तहों तिससे प्रत्यं-जन प्रसाधनकरै सो कहते हैं (प्रत्यञ्जन चूर्ण) शुद्ध सीसागलाय समभाग शुद्ध पारादे ॥ १७ ॥ तब दो भाग सुरमादे उतारिले सब खरलकरि दशवां अंश कपूर दे फिर घोटै ॥ १८ ॥ इसे प्रत्यंजन कहते हैं इससे सम्पूर्ण नेत्ररोग नाश होते हैं और यह आंखिको अमृत है (सर्पविषनिवारण अञ्जन) भीतरका अंकुर दूर किया जमालगोटा नींबूरस में इक्कीस पुटदे घोटि गोली बनाय मनुष्यकी लारसे घिस सर्प डसेकी आंखिमें आंजै ॥ १९ । २० ॥ तौ विष शान्तहो मनुष्य जिये भोजन करके हाथ में घसै और नेत्रों में लगावै तो नेत्रों के तिमिरादि रोग नाश होवैं ॥ २१ ॥ (शीतलजल प्रकार) जो मनुष्य नित्यप्रति तीन वेला शीतल जल से कुल्ले कियाकरै व मुख धोया करै और नेत्रों को छीटेदेकै सींचाकरै वा पात्रमें भरि नेत्र उन्मीलन किया करै उस मनुष्य को नेत्रबाधा कभी न होय ॥ २२ ॥ (अथ ग्रन्थप्रशंसा) आयुर्वे-दसमुद्र के विषय गूढार्थरूपी मणि संचित हैं तिनको अश्विनीकुमार व अग्नि-

स्तैस्तुकृताविविधसंहिताः २३ किञ्चिदर्थंततोनीत्वाकृते यंसंहितामया। कृपाकटाक्षविक्षेपमस्यांकुर्वन्तुसाधवः २४ विविधगदार्तिदरिद्रनाशनंयाहरिरमणीवकरोतियोगरलैः। विलसतुशार्ङ्गधरस्यसंहितासाकविहृदयेषुसरोजनिर्मलेषु २५ अल्पायुषामल्पधियामिदानींकृतंसमस्तंश्रुतिपाठशक्ति। तदत्रयुक्तम्प्रतिबीजमात्रमभ्यस्यतामात्महितंप्रयत्नात् २६ इति त्रयोदशोऽध्यायः १३॥ इति तृतीयःखण्डः॥

वेशादिक मुनियोंने सम्यक्प्रकार स्वसंहिता शुद्धकरि राखा॥ २३॥ किञ्चित् सारांश लै शार्ङ्गधर ने सञ्चय करी इसे साधुजन कृपाकरि देखैं॥ २४॥ (ग्रन्थपाठफलम्) जिन वैद्य कविनके निर्मल हृदयकमल में काथादि योगरत्न विलास करैं ते शार्ङ्गधरसंहिता लक्ष्मी इव धारण करैं हैं कैसी लक्ष्मी है कि रोगग्रसित दरिद्रनके दरिद्रको नाश करती है॥ २५॥ इस कलियुगने मनुष्यों की आयु और बुद्धिको अल्प करदिया इस कारण आयुर्वेद पढने की शक्ति नहीं इससे आत्मरक्षणार्थ इस आयुर्वेद बीजमात्र में अभ्यास करैं॥ २६॥

इति श्रीशार्ङ्गधरसुधाकरेउत्तरखण्डेजयपालकृतेत्रयोदशोऽध्यायः॥ १३॥
इति शार्ङ्गधरस्यतृतीयखण्डस्समाप्तः॥

२०२५५

(समाप्तोयंग्रन्थः)